संस्कृतम्

(दशमकक्षायाः पाठ्यपुस्तकम्)

माध्यमिकशिक्षापरिषद्, उत्तरप्रदेशः
प्रयागराजः

Royalty Paid Book

प्रथम संस्करण : 2023-24
द्वितीय संस्करण : 2025-26

© माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रकाशक : माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश
प्रयागराज–211001

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक किसी अन्य प्रकार से व्यापार, पुनर्विक्रय या किराये पर न दी जायेगी और न बेची जायेगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

मूल्य ₹ 17.00

पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में 80 जी.एस.एम. मैपलीथो पेपर IS मार्क नवीनतम् संशोधित BIS Specification 1848/2007 Updated Revised पेपर (सेतिया पेपर मिल्स लि., के. आर. पल्प एण्ड पेपर्स लिमिटेड, बिन्दल पेपर मिल्स लि., मोहित पेपर मिल्स लि., ट्राइडेन्ट लि.) के मानक का प्रयुक्त किया गया है।

मुद्रक एवं वितरक :

राजीव प्रकाशन

48/13A रामबाग, प्रयागराज

दूरभाष : 2402474, 2404980

पुरोवाक्

अतिहर्षावहो विषयोऽयं यद् उत्तरप्रदेशस्थप्रयागराजस्य माध्यमिकशिक्षापरिषदा माध्यमिकोच्चतर माध्यमिक–कक्ष्याणां कृते पाठ्यपुस्तकानां नूतनं संस्करणं प्रस्तूयते।

शिक्षा स्वविस्तृतार्थे शिक्षणस्यासौ प्रक्रिया या आजीवनं निरन्तरं प्रवर्तते, परं तु औपचारिकी शिक्षा मनुष्यस्य ज्ञानं कौशलं च विवर्धय्य तं सुयोग्यं नागरिकं विदधाति। शिक्षायाः प्रक्रियैषा व्यक्तेराचरणं व्यवहरणं बोधस्तरं भाषाबोधं चादधाति।

राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 अधुनातनवैश्विकपरिदृश्यानुरूपं ज्ञानेन सहैव कौशलस्य महत्त्वमादधाना विद्यालयीयशिक्षायामुच्चशिक्षायां च छात्रेभ्यः संस्कृतस्य तथा चान्यभारतीयभाषाणां विकल्पं प्रददाति। वर्तमाने प्रचलिताः सर्वाः भारतीयभाषाः आहोस्वित् संस्कृताद् विकसिताः उताहो तासु संस्कृतस्य व्यापकः प्रभावः। अथ च निखिलभारतीयभाषासाहित्येऽपि संस्कृतसाहित्यस्य अविनाशिप्रभावः। अतः संस्कृतभाषायाः तत्साहित्यस्य चाध्ययनं भाषाबोधसामर्थ्यं विवर्धयत् स्वाभिज्ञानमूलानि प्राचीनां श्रेष्ठसंस्कृतिं ज्ञानं विज्ञानं दर्शनं च प्रत्यभिज्ञापयत् गौरवस्यानुभूतिं राष्ट्रप्रेमजागरणं चानुतिष्ठति। संस्कृतं भारतीयानामैक्यबन्धावस्थापने दृढं सूत्रमस्ति। अपि च भाषेयं स्वव्याकरणेन शब्दसामर्थ्येन चाभिनवां प्रौद्योगिकीं व्यक्तीकर्तुं पूर्णरूपेण शक्ता। अतः संस्कृतस्याध्ययनम् अत्यन्तमुपयोगाय कल्पते।

विद्यार्थिनां समग्रविकासमभिलक्ष्य नवमदशमकक्ष्ययोः (कक्षा–9, 10) परीक्षासु सत्रार्धपाठ्यक्रमपरीक्षा (सेमेस्टर) पद्धतिः बहुविकल्पीयप्रश्नानां योजनादीनि परिवर्धनानि कृतानि सन्ति। तदनुसारं विदुषां परामर्शदातृणाम् अनुभवसम्पन्नानां विषयविशेषज्ञानां विभागीयसदस्यानां च समवेतप्रयत्नेन सिद्धानि सज्जितानि संस्कृतानि च संस्कृतपाठ्यपुस्तकानि शिक्षकाणामध्यापनाय सुखावहानि विद्यार्थिनां च सुखावबोधाय भवेयुः।

डॉ0 महेन्द्र देवः
निदेशकः (मा0)/सभापतिः
माध्यमिकशिक्षापरिषद्
उत्तरप्रदेशः, लखनऊ

पाठ्यपुस्तक–निर्माण–समिति

संरक्षक :

श्री दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव, माध्यमिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश शासन।

निर्देशक :

डॉ0 महेन्द्र देव, शिक्षा निदेशक (माध्यमिक), उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

संयोजक :

श्री दिब्यकान्त शुक्ल, सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

सह–संयोजक :

श्री अशोक कुमार गुप्ता, अपर सचिव (पा0पु0रा0), माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

श्रीमती श्रद्धा शुक्ला, उपसचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

श्रीमती मनीषा कुशवाहा, सहायक सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

परामर्शदातृमण्डल :

प्रो0 कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, संस्कृत, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।

डॉ0 आनन्द कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्राचार्य, सी0एम0पी0पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज।

डॉ0 उर्मिला श्रीवास्तव, पूर्व प्राचार्य, आर्य कन्या पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज।

प्रो0 मनोज कुमार मिश्र, अध्यक्ष, वेद–विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीरणवीर–परिसर, जम्मू।

विषय–विशेषज्ञ :

डॉ0 शम्भुनाथ त्रिपाठी 'अंशुल', पूर्व प्राचार्य, त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय, दारागंज, प्रयागराज।

डॉ0 वाचस्पति मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़।

डॉ0 यीश नारायण द्विवेदी, असिस्टेंट प्रोफेसर, सदानन्द डिग्री कॉलेज, फतेहपुर।

डॉ0 कमलेश कुमार, प्रवक्ता, गोपाल विद्यालय इण्टर कॉलेज, कोरांव, प्रयागराज।

डॉ0 अवधेश कुमार पाण्डेय, प्रवक्ता, आदर्श इण्टर कॉलेज, अवन्ती गौरी, आजमगढ़।

डॉ0 शत्रुधन प्रसाद मिश्र, प्रवक्ता, जवाहरलाल नेहरू स्मा0 इ0 कॉ0, जारी, प्रयागराज।

डॉ0 शालिकराम त्रिपाठी, स0अ0, राजकीय इण्टर कॉलेज, प्रयागराज।

डॉ0 प्रदीप नारायण शुक्ल, स0अ0, राजकीय हाईस्कूल, ममसी बुजुर्ग, चित्रकूट।

समन्वयक :

सुधा चौरसिया, साहित्यिक सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश प्रयागराज।

बबली पासी, साहित्यिक सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश प्रयागराज।

चित्राङ्कन :

आशीष नारायन।

भूमिका

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत विषय की अनिवार्य पाठ्य–सामग्री राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के आधार पर प्रस्तुत की जा रही है; जिसमें संस्कृतगद्यभारती, संस्कृतपद्यपीयूषम्, संस्कृतकथा–नाटककौमुदी एवं संस्कृत व्याकरण का समेकित सन्निवेश किया गया है। इस संकलन में इस तथ्य की ओर विशेष ध्यान दिया गया है कि पाठ्यसामग्री में संकलित विषयवस्तु विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुरूप रोचक एवं प्रेरणादायक हो।

संस्कृत भाषा अपनी प्राचीनता एवं सुस्पष्टता के लिए प्रसिद्ध है, इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए इस पाठ्य–पुस्तक में कई ऐसे महत्त्वपूर्ण पाठों का समावेश किया गया है, जिनके अध्ययन से विद्यार्थियों के चरित्र–निर्माण के साथ सम्यक् ज्ञान–सम्वर्धन भी सम्भव हो सके। समस्त पाठ्य–सामग्री प्रचलित काव्य विधाओं में विभक्त यथोपयुक्त विषय–वस्तु से परिपूर्ण है। अनावश्यक विस्तार के प्रति सचेष्ट रहकर सामग्री संचयन इस दृष्टि से किया गया है कि जिसमें मौलिक कथ्य एवं शिल्प की विद्यमानता के साथ सरलता, बोधगम्यता एवं उपादेयता भी समाविष्ट हो।

संकलन में संस्कृत गद्य भारती के अन्तर्गत 'कविकुलगुरुः कालिदासः', 'विश्वकविरवीन्द्रः', आदिशङ्कराचार्यः', 'मदनमोहनमालवीयः', 'लोकमान्यः तिलकः', 'गुरुनानकदेवः', 'दीनबन्धुः ज्योतिबा फुले' आदि संकलित पाठ, महापुरुषों के आदर्श जीवन के परिचायक हैं और छात्रों के लिए प्रेरणाप्रद भी। इसी प्रकार संस्कृत पद्य पीयूषम् में निबद्ध समस्त पाठ मानवता का भाव उत्पन्न करने में सहायक एवं राष्ट्रीय भावना के प्रेरक हैं। संस्कृतकथानाटककौमुदी के अन्तर्गत 'यौतुकं पापस×चयम्' जैसे शीर्षक के माध्यम से ज्वलन्त सामाजिक समस्याओं का भी स्मरण कराने का प्रयास हुआ है।

समग्र संकलित सामग्री द्वारा कहीं चित्त की एकाग्रता पर बल दिया गया है, कहीं क्षमाशीलता का पाठ पढ़ाया गया है तो कहीं सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता व आदर्श जीवन शैली की उत्तम शिक्षा दी गयी है। इसी श्रृंखला में पाठ्यक्रम के अनुरूप वांछित संस्कृत व्याकरण में शब्दरूप, धातुरूप, सन्धि, समास, कारक, प्रत्यय आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है,

तथा यथासम्भव यह प्रयास किया गया है कि छात्रों को विषय का सम्यक् बोध हो सके और वे अपने जीवन के दैनन्दिन आचार–व्यवहार में संस्कृत भाषा का प्रयोग कर सकें। पाठ्य–पुस्तक के प्रत्येक भाग में छात्रों के बोध के लिए सरलीकृत व्याकरणात्मक टिप्पणी, शब्दार्थ, अनुवाद, प्रश्न एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश किया गया है।

संक्षेप में यह कह सकते हैं कि इस संकलन का मुख्य उद्देश्य यही है कि विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के अध्ययन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो तथा संस्कृत साहित्य में समाहित भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं राष्ट्रीय भावना से भी छात्र पूर्णतया विज्ञ हो सकें। उनका उदात्त सामाजिक जीवन एक श्रेष्ठतम नागरिक की संज्ञा से संवलित हो सके।

पूर्ण विश्वास है कि यह पाठ्य–सामग्री छात्रों में नवीन चेतना जागृत करने एवं राष्ट्रीय भावना से सम्पृक्त करने में सार्थक होगी। यद्यपि इस संकलन में समस्त आवश्यक तत्त्वों का समावेश करने का यथासम्भव प्रयास किया गया है, तथापि आपके सृजनात्मक सुझावों के प्रति हम कृतज्ञ रहेंगे।

■

अनुक्रमणिका

पुरोवाक्		iii
भूमिका		v

खण्ड 'क' (गद्य, पद्य तथा आशुपाठ)

संस्कृत–साहित्य : एक परिचय		1-4

संस्कृतगद्यभारती

वैदिकमङ्गलाचरणम्		**7-8**
प्रथमः पाठः	कविकुलगुरुः कालिदासः	9-13
द्वितीयः पाठः	उद्भिज्ज–परिषद्	14-17
तृतीयः पाठः	नैतिकमूल्यानि	18-22
चतुर्थः पाठः	विश्वकविः रवीन्द्रः	23-27
प×चमः पाठः	कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्	28-32
षष्ठः पाठः	आदिशङ्कराचार्यः	33-36
सप्तमः पाठः	संस्कृतभाषायाः गौरवम्	37-40
अष्टमः पाठः	मदनमोहनमालवीयः	41-45
नवमः पाठः	जीवनं निहितं वने	46-49
दशमः पाठः	लोकमान्यः तिलकः	50-53
एकादशः पाठः	गुरुनानकदेवः	54-57
द्वादशः पाठः	दीनबन्धुः ज्योतिबाफुले	58-62

संस्कृतपद्यपीयूषम्

प्रथमः पाठः	लक्ष्यवेधपरीक्षा	65-71
द्वितीयः पाठः	वृक्षाणां चेतनत्वम्	72-78
तृतीयः पाठः	सूक्तिसुधा	79-82
चतुर्थः पाठः	क्षान्तिसौख्यम्	83-88
प×चमः पाठः	विद्यार्थिचर्या	89-93
षष्ठः पाठः	गीतामृतम्	94-98
सप्तमः पाठः	जीव्याद् भारतवर्षम्	99-102

संस्कृतकथानाटककौमुदी

प्रथमः पाठः	महात्मनः संस्मरणानि	105-108
द्वितीयः पाठः	कारुणिको जीमूतवाहनः	109-115
तृतीयः पाठः	धैर्यधनाः हि साधवः	116-119
चतुर्थः पाठः	यौतुकं पापस×चयः	120-124
प×चमः पाठः	भोजस्य शल्यचिकित्सा	125-128
षष्ठः पाठः	ज्ञानं पूततरं सदा	129-132
सप्तमः पाठः	वयं भारतीयाः	133-138

खण्ड 'ख' (व्याकरण, अनुवाद तथा रचना)

1.	प्रत्याहार एवं वर्णों का उच्चारण–स्थान	141-150
2.	सन्धि (हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि)	151-155
3.	शब्दरूप	156-166
4.	धातुरूप	167-181
5.	समास (अव्ययीभाव, द्विगु, बहुव्रीहि)	182-185
6.	कारक एवं विभक्ति	186-189
7.	प्रत्यय	190-198
8.	वाच्य–परिवर्तन	199-201
9.	अनुवादः	202-218
10.	संस्कृत–निबन्ध	219-228
11.	संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग	229-232

■

संस्कृत साहित्य : एक परिचय

संस्कृत शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है–'संस्कार की गयी भाषा'। संस्कृत भाषा के विकास के दो रूप साहित्य में उपलब्ध हैं–**वैदिक संस्कृत भाषा** तथा **लौकिक संस्कृत भाषा।** वैदिक भाषा में वेदों, ब्राह्मणों, पुराणों आदि की रचना हुई है। वाल्मीकीय रामायण से लौकिक भाषा अस्तित्व में आयी, महाभारत की भाषा से विकसित होते हुए यह लौकिक धारा कवि कालिदास, भारवि, हर्ष आदि कवियों से पुष्ट होकर आज भी अपना अस्तित्व संरक्षित किए हुए है। इन दोनों भाषाओं के स्वरूप में पर्याप्त अन्तर है, इसका परिचय आवश्यक है–

वैदिक संस्कृत– सरल शब्दों, लघु वाक्यों से युक्त वैदिककालीन साहित्य अत्यन्त मनोरम है। समासों की अल्पता एवं उदाहरणों की अधिकता से वैदिक साहित्य रसपेशल है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि कतिपय अलंकार तथा ह, वै आदि अव्यय, वाक्यों को रोचकता प्रदान करते हैं।

लौकिक संस्कृत– साधारण जनता के व्यवहार में प्रयोग की जाने वाली भाषा लोकभाषा कहलाई। यह भाषा वैदिक संस्कृत से भिन्न थी। भारत की साधारण जनता इसी भाषा में भाव तथा विचारों को प्रकट करती थी। धीरे–धीरे प्राकृत तथा पालि भाषाओं के प्रचलन से इसका व्यवहार कम हुआ परन्तु शिष्ट समाज में यह व्यवहार भाषा ही रही। महर्षि पाणिनि (ईसा पूर्व आठवीं शती) ने अष्टाध्यायी के नियमों से इसे संयमित तथा सुव्यवस्थित किया तथा इसी भाषा में काव्य नाटकों की रचना कवियों ने की।

संस्कृत वाङ्मय के उपलब्ध साहित्य को दो भागों में बाँट सकते हैं–दृश्य तथा श्रव्य।

दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्।

दृश्यकाव्य में रूपकों तथा उपरूपकों का ग्रहण होता है, क्योंकि इनका अभिनय किया जाता है। ये दर्शकों द्वारा देखे जाते हैं इसीलिए इनकों दृश्यकाव्य कहा जाता है। श्रव्यकाव्य उसे कहा जाता है जिसका सहृदय पाठकों के द्वारा पढ़कर तथा सुनकर रसानन्द प्राप्त होता है। श्रव्यकाव्य को तीन भागों में विभक्त किया जाता है–गद्य, पद्य और चम्पू।

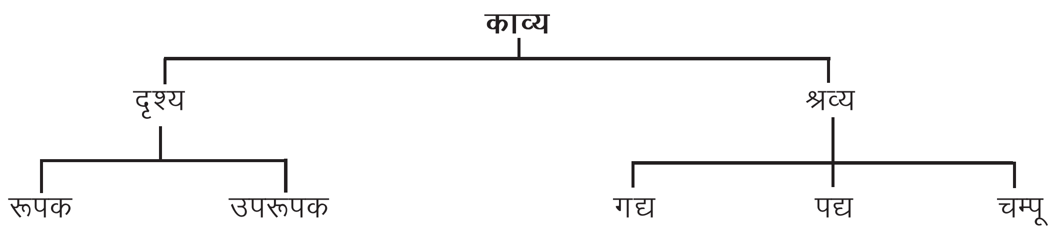

गद्यकाव्य– गद्यकाव्य भाषा का वह स्वरूप है जिसमें पद्य–बन्ध का परित्याग करते हुए भाव, भाषा एवं रस का समुचित परिपाक होता है, इसलिए दण्डी ने गद्य का लक्षण दिया है–**'अपादः पदसन्तानो गद्यम्'** अर्थात् पदबन्ध रहित वाक्य विन्यास को गद्य कहते हैं। गद्य का उद्भव और विकास वैदिक साहित्य–काल से ही माना जाता है। यजुर्वेद की भाषा मुख्यतः गद्यात्मक है, समग्र ब्राह्मणसाहित्य गद्य में ही रचा गया, उपनिषद् अधिकांशतः गद्यात्मक है। अतः स्पष्ट है कि वैदिक साहित्य में गद्य का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है।

पुराण साहित्य की भाषा वैदिक एवं लौकिक युग की मध्य कालीन भाषा है, उसमें कुछ प्रयोग वेद के समान हैं तो कुछ लौकिक संस्कृत के इसी काल में स्मृति ग्रन्थों, रामायण, महाभारत की रचना हुई।

संस्कृत कवियों ने इसी शैली में अपनी प्रतिभा का व्यापक उपयोग किया। आलोचकों ने गद्य को ही कवियों की प्रतिभा परख की माप माना–**'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'**। गद्य के इस रूप में समासों की बहुलता तथा ओज गुण का माधुर्य अनिवार्य माना गया। समासों के आधिक्य से वाक्यलघुता इस गद्य की विशेषता थी, इससे अधिक से अधिक अर्थ को कम शब्दों में प्रकट किया जाता था, ओज गुण के समावेश से भाव प्रवणता का संचार होता था जिससे गद्य का सम्पूर्ण सौन्दर्य अभिव्यक्त होता था, इसीलिए दण्डी कवि ने गद्य का यही लक्षण निर्धारित किया–**'ओजः समास–भूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्'**।

संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं–(1) कथा (2) आख्यायिका। 'कथा' कविकल्पित होती है, तथा कथा का वक्ता स्वयं नायक होता है, जबकि 'आख्यायिका' ऐतिहासिक घटना पर आधारित होती है, इसका विभाजन उच्छ्वासों में होता है। जैसे–बाणभट्ट की 'कादम्बरी' कथा है तथा 'हर्षचरितम्' आख्यायिका है।

पद्यकाव्य– पद्यकाव्य का आविर्भाव मानव मन के सुख–दुःख, करुणा–दया, क्रोध–क्षमा, भय–घृणा आदि विभिन्न मनोविकारों की दशा में होता है। जीवन के मार्मिक क्षणों में चित्तवृत्ति की इन अनुभूतियों पर आघात होने से संवेगों का जो ज्वार उठता है वह कवि की प्रतिभा का आश्रय लेकर पद्य रूप में अभिव्यक्त हो जाता है। राम द्वारा परित्यक्त सीता के विलाप और क्रौञ्च पक्षी के वध से आहत क्रौञ्ची के विलाप ने महर्षि वाल्मीकि के मर्मस्थल पर ऐसी चोट की कि उनके मुख से 'मा निषाद' पद्य काव्य की धारा फूट पड़ी जो आज भी संस्कृत साहित्य को समृद्ध कर रही है। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत काव्यधारा के आदि कवि हुए और रामायण आदिकाव्य।

संस्कृत पद्य साहित्य की रचना में रामायण को ही आधार मानकर अन्तःस्थल के भावों के वर्णन में सिद्ध कवि का काव्य प्रशंसित हुआ, वाह्य सौन्दर्य की अपेक्षा अन्तः सौन्दर्य का वर्णन करने वाला कवि ही सच्चा कवि कहलाया। रस का आधिक्य कवि के काव्य चातुर्य की कसौटी बना।

इस दशा में अलंकार विहीन काव्य भी उच्च कोटि का काव्य हुआ। माधुर्य गुण से भरपूर रससिक्त काव्य में अलंकार का स्थान गौण रहा। प्रतिभा सम्पन्न कवि की लेखनी से निःसृत कोमल तथा मधुर पदावली छन्दो में बंधकर भावों की सूक्ष्मता को व्यक्त करने में नितान्त सक्षम है यह कवि कालिदास के काव्य ग्रन्थों से नितान्त स्पष्ट है। पद्यकाव्य को रचना की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जाता है–(1) प्रबन्ध काव्य और (2) मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य में एक धारावाहिक कथा होती है और उसके श्लोक एक दूसरे से सम्बद्ध होकर रस की प्रतीति कराते हैं, जबकि मुक्तक काव्य के श्लोक एक दूसरे से सम्बद्ध न होते हुए स्वतंत्र रूप से रस की प्रतीति कराते हैं। प्रबन्ध काव्य के दो भेद होते हैं– महाकाव्य और खण्डकाव्य। महाकाव्य में जीवन की विस्तृत कथा होती है, इस प्रकार इसका विषय व्यापक होता है। काव्याचार्यों ने काव्यशास्त्र में महाकाव्य के लक्षणों की विस्तृत चर्चा की है। कविकुलगुरु कालिदास के 'रघुवंशम्' को महाकाव्य का श्रेष्ठ उदाहरण समझा जाता है। खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक अंश या घटना का धारावाहिक वर्णन होता है। खण्डकाव्य के उदाहरण के रूप में महाकवि कालिदासकृत 'मेघदूतम्' का उल्लेख किया जा सकता है। विषय भेद की दृष्टि से मुक्तक काव्य तीन प्रकार के होते हैं– (1) शृङ्गार, (2) नीति और (3) भक्ति। इनके उदाहरण के रूप में क्रमशः भर्तृहरिकृत 'शृङ्गारशतकम्', 'नीतिशतकम्' और 'वैराग्यशतकम्' का उल्लेख किया जा सकता है।

चम्पूकाव्य– गद्य और पद्य से मिश्रित रचना को चम्पू कहते हैं। चम्पूकाव्य का यही लक्षण कवि दण्डी ने निर्दिष्ट किया है– **''गद्यपद्यमयी काचित् चम्पूरित्यभिधीयते।''**

चम्पूकाव्य के अन्तर्गत कवि गद्य के माध्यम से अर्थ के गौरव तथा बाह्य वर्णन को निबद्ध करता है तो पद्य के माध्यम से सूक्ष्म मनोविकारों की अभिव्यक्ति करता है। इन दोनों विधाओं का मिश्र रूप, व्यवहार–भाषा और गेयता से एक नूतन चमत्कार की रचना करता है, जिससे चम्पूसाहित्य में कहीं मनोरम भावाभिव्यक्ति है तो कहीं चमत्कारपूर्ण शब्दावली, कहीं मधुर पदों की सुन्दर कल्पना है तो कहीं समस्त पदों और विशेषज्ञों का प्राचुर्य।

गद्य–पद्य की मिश्रित शैली का आरम्भ यजुर्वेद की कृष्ण शाखा में उपलब्ध है। अथर्ववेद में भी यदा–कदा इस शैली के दर्शन होते हैं तथापि इस मिश्रशैली के प्रति कविगणों का विशेष उत्साह नहीं है। सप्तमशती में दण्डी कवि से पूर्व विद्यमान इस मिश्र साहित्य को लोकप्रियता नहीं मिली। दशम शताब्दी में त्रिविक्रम भट्ट के नलचम्पू में इसका शुद्ध रूप देखने को मिलता है और तब से यह चम्पूधारा आज भी प्रवहमान है।

दृश्यकाव्य– नाट्य के लिए संस्कृत में पारिभाषिक शब्द 'रूपक' है, क्योंकि अभिनय की अवस्था में अभिनेता अपने ऊपर नाटकीय पात्र के स्वरूप का आरोप कर लेता है। रूपक के ही दस भेदों में से

एक भेद नाटक है। पाठकों के सहजबोध के लिए नाटक शब्द का प्रयोग किया गया है। रूपक के नाटक आदि दस भेद हैं और उपरूपक के नाटिका आदि अष्टादश (18) भेद हैं। दस रूपकों के नाम हैं–(1) नाटक, (2) प्रकरण, (3) भाण, (4) व्यायोग, (5) समवकार, (6) डिम, (7) ईहामृग, (8) अंक, (9) वीथी, (10) प्रहसन।

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश।।

दृश्यकाव्यों में श्रव्यकाव्यों की अपेक्षा हृदयग्राहिता, मनोरंजकता, आकर्षकता, भावाभिव्यंजकता और विषय की विविधता अधिक होती है, अतः श्रव्यकाव्य की अपेक्षा दृश्यकाव्य अधिक जनप्रिय होता है। इसीलिए कहा गया है–**'काव्येषु नाटकं रम्यम्'**।

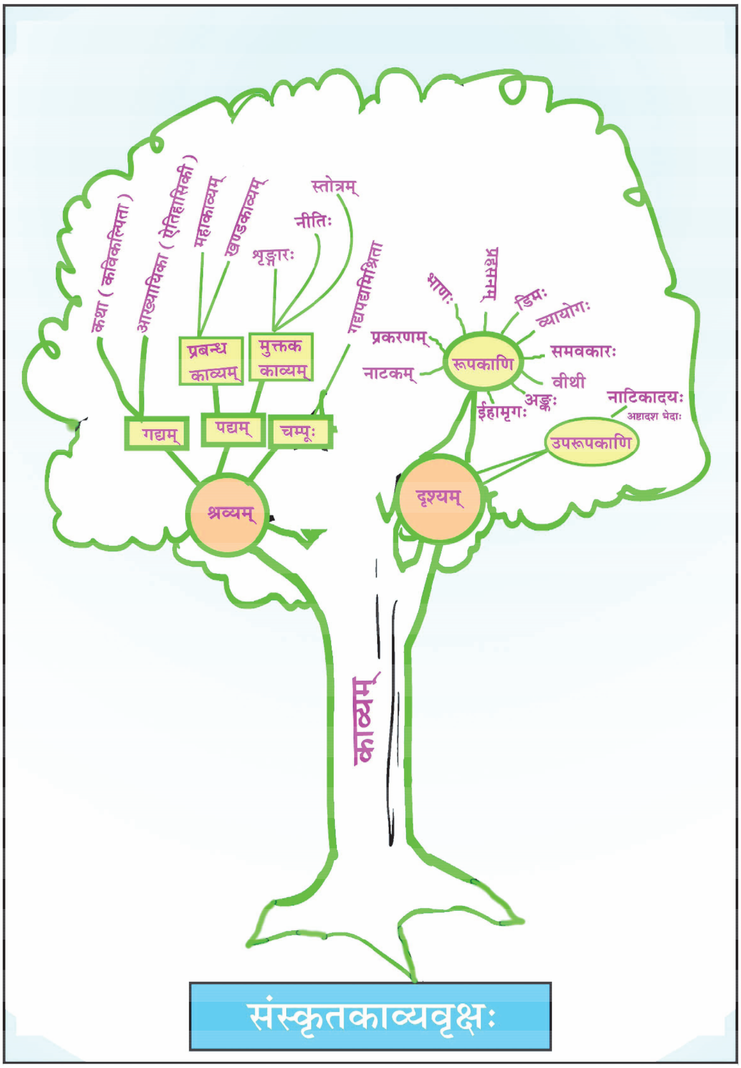

संस्कृतकाव्यवृक्षः

संस्कृतगद्यभारती

वैदिकमङ्गलाचरणम्

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ में यजुर्वेद के 36वें अध्याय का 17वाँ मन्त्र समुद्धृत है। किसी भी मङ्गल कार्य के आरम्भ में इसका पाठ किया जाता है। यह वैदिकमङ्गलाचरण '**शान्तिपाठ**' के नाम से भी लोक में प्रसिद्ध है। प्रस्तुत मंत्र को 'शान्तिमन्त्र' भी कहा जाता है। वैदिक ऋषि ने इसमें पृथ्वी, पर्यावरण से लेकर अन्तरिक्ष व स्वर्गादि लोकों की शान्ति तक की कामना करते हुए अन्त में जो सभी प्रकार की शान्ति का मूल है उस इन्द्रिय उपशम कामक्रोधादि निवृत्त रूप शान्ति की प्रार्थना की है।*

ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। (यजुर्वेद 36/17)

अन्वयः— ऊँ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिः आपः शान्तिः ओषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिः एव शान्तिः सा मा शान्तिः एधि ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थ— हे ब्रह्मन् ! द्युलोक (स्वर्गलोक) में शान्ति हो अर्थात् द्युलोक प्रकाशक हो। आकाश में (ग्रहो और उपग्रहों की) शान्ति हो। पृथ्वी पर सर्वत्र शान्ति हो। जल में शान्ति हो अर्थात् जल शान्त हो (प्रदूषणरहित शीतलता और सुख करने वाला हो)। ओषधियाँ (पेड़ पौधे) शान्त (पुष्टिकारक) हों। सभी देवता शुभकारी हों। ब्रह्म (परमात्मा) शान्तिस्वरूप हो (अपने आनन्दात्मक रूप को हृदय में प्रकाशित करें)। सब शान्त हो अर्थात् चारों ओर उत्पात—कलहादि का अभाव हो। जो वास्तविक शान्ति (कामक्रोधादिनिवृत्तिरूपा या इन्द्रियोपशमरूपा) है, वह शान्ति हो। वह पूर्वोक्त (कल्याणस्वरूपा) शान्ति मुझे प्राप्त हो। हे ब्रह्मन्! आधिभौतिक शान्ति (रोगादि से निवृत्ति व शारीरिक सुख) हो। आधिदैविक शान्ति (बाढ़, भूकम्प, महामारी, अतिवृष्टि, सूखा इत्यादि दैवी प्रकोप से मुक्ति) हो। आध्यात्मिक शान्ति (परम शान्ति या मोक्ष प्राप्ति) हो।

शब्दार्थः

ऊँ = ब्रह्मन् ! **द्यौः** = द्युलोक, स्वर्गलोक। **शान्ति** = चञ्चलता से निवृत्ति कोलाहल का अभाव, नीरवता। **उत्पातम्**—कलह का अभाव, चैन आराम, कामक्रोधादि से निवृत्ति, इन्द्रियोपशम, कल्याण आदि। **अन्तरिक्षम्** = आकाश (अन्तः मध्ये ऋक्षाः नक्षत्राणि यस्य तत्)। **आपः** = जल। **ओषधयः** = रोगनिवारक जड़ी—बूटियाँ। **वनस्पतयः** = पेड़-पौधे। **विश्वेदेवाः** = सभी देव, अग्नि। **ब्रह्म** = परमात्मा, वेद (बृंहति वर्धते इति ब्रह्म, बृंह् + मनिन्)। **सर्वम्** = सब। **सा** = वह। **मा** = मुझे। **एधि** = प्राप्त करे।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) द्यौः इत्यस्य कः अर्थः? (ख) पृथिव्यां का स्यात्? (ग) वनस्पतयः कीदृशाः भवेयुः?
(घ) सा शान्तिः कम् एधि? (ङ) 'आपः' इति पदस्य कः अर्थः?

2. उचितं विकल्पं चिनुत–

(i) 'वैदिकमङ्गलाचरणम्' इति पाठः कस्मात् वेदात् समुद्धृतः?
(क) ऋग्वेदात् (ख) यजुर्वेदात् (ग) सामवेदात् (घ) अथर्ववेदात्

(ii) यजुर्वेदस्य मन्त्रोऽयं कीदृशः पाठः उच्यते?
(क) रुद्रीपाठः (ख) देवी-माहात्म्यम् (ग) शान्ति-पाठः (घ) गीतापाठः

(iii) पृथिवी कीदृशी भवेत्?
(क) कोलाहलपूर्णा (ख) प्रदूषणमुक्ता (ग) शान्तिस्वरूपा (घ) वैभवपूर्णा

(iv) विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म ....।
(क) शान्तिः (ख) अशान्तिः (ग) कोलाहलः (घ) समृद्धिः

(v) 'विश्वेदेवाः' इति पदस्य कः अर्थः?
(क) इन्द्रः (ख) वरुणः (ग) यमः (घ) सर्वे देवाः

3. शान्ति-मन्त्रस्य हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत।

4. शान्ति-मन्त्रस्य संस्कृतेन अर्थं लिखत।

आन्तरिकं मूल्याङ्कनम्

1. छात्र यजुर्वेद के शिवसङ्कल्प सूक्त के मन्त्रों को लिखकर कण्ठस्थ करें।

योग्यताविस्तारः– चार वेदों के विषय में यह जानना चाहिए –

(1) **ऋग्वेद**–"ऋच्यन्ते स्तूयन्ते देवाः अनया इति ऋक्" अर्थात् जिनके द्वारा देवताओं की स्तुति की जाती है। उन मन्त्रों को ऋक् (ऋचा) कहते हैं। इसमें अग्नि, विष्णु, इन्द्र आदि 33 कोटि (प्रकार के) देवताओं की स्तुतियाँ हैं। इसकी 21 शाखाएँ बतायी गई हैं। ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त और $10580^1/_4$ मन्त्र हैं।

(2) **यजुर्वेद**–"गद्यात्मको यजुः" अर्थात् गद्यात्मक मन्त्रों को यजुस् कहते हैं। इसमें यज्ञ के मन्त्र हैं। इसकी 100 शाखायें बताई गयी हैं। यजुर्वेद के दो भाग हैं–कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता में कुल 40 अध्याय 303 अनुवाक् और 1975 कण्डिकाएँ (मन्त्र) हैं।

(3) **सामवेद**–"गीतिषु सामाख्या" अर्थात् गेय मन्त्रों का संग्रह होने के कारण इसे सामवेद कहते हैं। इसकी 1000 शाखाएँ कही गयी हैं। इसकी कौथुम शाखा में पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक भाग के मन्त्रों को मिलाकर कुल 1875 मन्त्र हैं।

(4) **अथर्ववेद**–अथर्वा ऋषि द्वारा दृष्ट मन्त्रों का संग्रह होने के कारण इसे अथर्ववेद कहते हैं। इसमें सांसारिक कल्याण से सम्बन्धित कृषि, व्यापार, चिकित्सा, विवाह, सन्तानोत्पत्ति, रथ, शंख इत्यादि विषयों की जानकारी है। इसकी 9 शाखाएँ हैं। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार अथर्ववेद में कुल 20 काण्ड, 731 सूक्त और 5987 मन्त्र हैं। ■

प्रथमः पाठः

कविकुलगुरुः कालिदासः

पाठपरिचयः

संस्कृत साहित्याकाश में प्रकाशमान कविकुलगुरु कालिदास का स्थान अति महत्त्वपूर्ण है। महाकवि कालिदास की अतिशय लोकप्रियता संस्कृत कवि, हृदय से स्वीकार करते हैं। केवल भारत में ही नही पाश्चात्य देशों में भी संस्कृत भाषाविद् कालिदास की वन्दना करते हैं। ऐसे विश्ववन्दनीय कविकुलललाम महाकवि कालिदास के जन्म स्थान एवं जन्म के काल के सम्बन्ध में विद्वानों के विभिन्न मत प्राप्त होते हैं, अर्थात् उनके जीवन–चरित्र के विषय में निश्चित और प्रामाणिक सामग्री प्राप्त नहीं होती है, इसका मुख्य कारण यह है कि कालिदास ने अपने किसी भी ग्रन्थ में अपने जीवन से सम्बद्ध किसी बात का उल्लेख नहीं किया है। अधिकांश विद्वान कालिदास को चन्द्रगुप्त द्वितीय के समकालीन मानते हैं जिन्हें विक्रमादित्य की उपाधि प्राप्त हुई थी। कालिदास को विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक माना जाता है। महाकवि कालिदास ने दो महाकाव्य, 'रघुवंशम्' एवं कुमारसम्भवम्' दो खण्डकाव्य 'ऋतुसंहारम्' एवं 'मेघदूतम्' तथा तीन नाटक, 'मालविकाग्निमित्रम्', विक्रमोर्वशीयम् एवं 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' सहित सात रचनाएँ की। जिनमें से 'अभिज्ञाानशाकुन्तलम्' सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। कहा भी जाता है–

"काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला, तत्रापि चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्।"

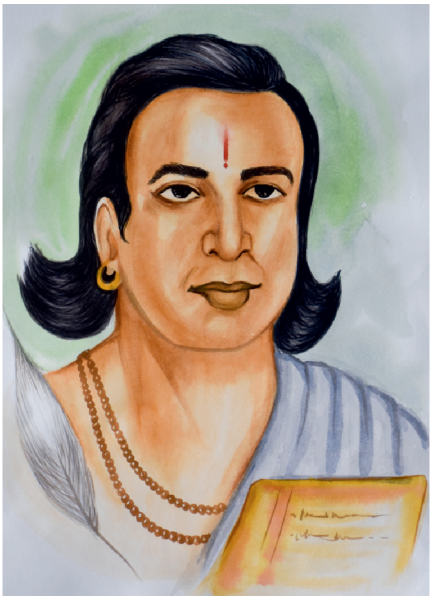

महाकविकालिदासः संस्कृतकवीनां मुकुटमणिरस्ति। न केवलं भारतदेशस्य अपितु समग्रविश्वस्योत्कृष्टकविषु स एकतमोऽस्ति। तस्यानवद्या कीर्तिकौमुदी देशदेशान्तरेषु प्रसृतास्ति। भारतदेशे जन्म लब्ध्वा स्वकविकर्मणा देववाणीमलङ्कुर्वाणः स न केवलं भारतीयः कविः अपि तु विश्वकविरिति सर्वैराद्रियते।

वाग्देवताभरणभूतस्य प्रथितयशसः कालिदासस्य जन्म कस्मिन् प्रदेशे, काले कुले चाभवत्, किञ्चासीत् तज्जन्मवृत्तम् इति सर्वमधुनापि विवादकोटिं नातिक्रामति। इतरकवय इव कालिदासः आत्मज्ञापने स्वकृतिषु प्रायः धृतमौन एवास्ति। अन्येऽपि कवयस्तन्नामसंकीर्तनमात्रादेव स्वीयां वाचं धन्यां मत्वा मौनमवलम्बन्ते। तथापि अन्तर्बहिस्साक्ष्यमनुसृत्य समीक्षकाः कविपरिचयं यावच्छक्यं प्रस्तुवन्ति।

एका जनश्रुतिः अतिप्रसिद्धास्ति यया कविकालिदासः विक्रमादित्यस्य सभारत्नेषु मुख्यतमः इति ख्यापितः। परन्तु अत्रापरा विडम्बना समुत्पद्यते। विक्रमादित्यस्यापि स्थितिकालः सुतरां स्पष्टो नास्ति। केचिन्मन्यन्ते यत् विक्रमादित्योपाधिधारिणो द्वितीयचन्द्रगुप्तस्य समकालिक आसीत् कविरसौ। कालिदासस्य मालविकाग्निमित्रनाटकस्य नायकोऽग्निमित्रः शुङ्गवंशीय आसीत्। स एव विक्रमादित्योपाधिं धृतवान् यस्य सभारत्नेष्वेकः कालिदासः आसीत्। तस्य राज्ञः स्थितिकालः ख्रीष्टाब्दात्प्रागासीत्। स एव स्थितिकालः कवेरिति सिध्यति। कविकालिदासस्य जन्मस्थानविषयेऽपि नैकमत्यमस्ति। एतावान् कवेरस्य महिमास्ति यत् सर्वे एव तं स्व–स्वदेशीयं साधयितुं तत्परा भवन्ति। कश्मीरवासिविद्वांसः कश्मीरोद्भवं तं मन्यन्ते, वङ्गवासिनश्च वङ्गदेशीयम्। अस्ति तावदन्योऽपि समीक्षकवर्गः यस्य मतेन कालिदासः उज्जयिन्यां लब्धजन्मासीत् उज्जयिनीं प्रति कवेः सातिशयोऽनुराग एतन्मतं पुष्णाति।

देशकालवदेव कालिदासकुलस्यापि स्पष्टः परिचयो नोपलभ्यते। तस्य कृतिषु वर्णाश्रमधर्मव्यवस्थायाः याथातथ्येन प्रतिपादनेन एतदनुमीयते यत् तस्य जन्म विप्रकुलेऽभवत्। भावनया स शिवानुरक्तश्चासीत् तथापि तस्य धर्मभावनायां मनागपि सङ्कीर्णता नासीत्। शिवभक्तोऽपि तत् रघुवंशे स रामं प्रति स्वभक्तिभावमुदारमनसा प्रकटयति। कालिदासस्य जीवनवृत्तं सर्वथा अज्ञानान्धकाराच्छन्नमस्ति।

संस्कृतकाव्यस्य विविधेषु प्रमुखप्रकारेषु स्वकौशलं प्रदर्श्य स सर्वानतीतानागतान् कवीनतिशिश्ये। रघुवंशं कुमारसम्भवञ्च तस्य महाकाव्यद्वयम्, मेघदूतम् ऋतुसंहारश्च खण्डकाव्ये, मालविकाग्निमित्रं विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलञ्च नाटकानि सन्ति। तत्र रघुवंशाभिधं महाकाव्यं कविकुलगुरोः सर्वातिशयिनी कृतिरस्ति। अस्मिन् महाकाव्ये दिलीपादारभ्य अग्निवर्णपर्यन्तम् इक्ष्वाकुवंशावतंसभूतानां नृपतीनामवदाननिरूपणमस्ति।

एकोनविशंसर्गात्मकमिदं महाकाव्यं रमणीयार्थप्रतिपादकं सत् सचेतसां हृदयं सततमाह्लादयति। कुमारसम्भवे स्वामिकार्तिकेयस्य जन्मोपवर्णितम्। इदमपि काव्यम् अष्टादशसर्गात्मकमस्ति। केचन समीक्षका अष्टमसर्गपर्यन्तमेव काव्यमिदं कालिदासप्रणीतमिति मन्यते। मेघदूते यक्षयक्षिण्योः वियोगमाश्रित्य विप्रलम्भशृङ्गारस्य पूर्णपरिपाको दृश्यते। ऋतुसंहारे अन्वर्थतया षण्णामृतूनां वर्णनमस्ति। मालविकाग्निमित्रनाटके अग्निमित्रस्य मालविकायाश्च प्रेमाख्यानमस्ति। पञ्चाङ्कात्मके विक्रमोर्वशीये पुरुरवसः उर्वश्याश्च प्रेमकथा वर्णिता। अभिज्ञानशाकुन्तलं स्वनामधन्यस्य अस्य कवेः श्रेष्ठा नाट्यकृतिरस्ति। नाटकेऽस्मिन् सप्ताङ्काः सन्ति। मेनकया प्रसूतोज्झितायाः शकुन्तैश्च पोषितायाः तदनु कण्वेन परिपालितायाः शकुन्तलायाः दुष्यन्तेन सहोद्वाहस्य कथा वर्णितास्ति। शाकुन्तलविषये प्रथितैषा भणितिः–

'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला'।

वस्तुतः कालिदासः मूर्धन्यतमः भारतीयः कविरस्ति। एकतस्तस्य कृतिषु काव्योचितगुणानां समाहारः दृश्यते अपरतश्च भारतीयजीवनपद्धतेः सर्वाङ्गीणता तत्र राराजते। काव्योत्कर्षदृष्ट्या तस्य काव्येषु मानवमनसः सूक्ष्मानुभूतीनामिन्द्रधनुः कस्यापि सहृदयस्य चित्तमाकर्षयितुं पारयति। प्रकृतिरपि स्वजडत्वं विहाय सर्वत्र मानवसहचरीवाचरति। रघुवंशे दिग्विजयार्थं प्रस्थितस्य रघोः सभाजनं वनवृक्षाः प्रसूनवृष्टिभिः सम्पादयन्ति। मेघे विरहोत्कण्ठितस्य यक्षस्य प्रेमविह्वलतायाः अद्वितीया सृष्टिः परिलक्ष्यते। तत्र बाह्यान्तः प्रकृत्योः मर्मस्पृग्वर्णनमस्ति। कविदृष्ट्या मेघः धूमज्योतिस्सलिलमरुतां सन्निपातो न भूत्वा एकः संवेदनशीलः मानवोपमः प्राणी अस्ति। स रामगिरेः आरभ्यालकां यावत् यस्य कस्यापि सन्निधिं लभते तस्मै हर्षोल्लासौ वितरति। शाकुन्तलनाटके पतिगृहगमनकाले आश्रमपादपाः स्वभगिन्यै शकुन्तलायै आभरणानि समर्पयन्ति। हरिणार्भकः तस्या मार्गावरोधं कृत्वा स्वकीयं निश्छलं स्नेहं प्रकटयति। एवमेव नद्यः प्रेयस्य इवाचरन्ति। सूर्यः अरुणोदयवेलायां स्वप्रियतमायाः नलिन्याः तुषारबिन्दुरूपाणि अश्रूणि स्वकरैः परिमृजति।

कालिदासकाव्येषु अङ्गीरसः शृङ्गारोऽस्ति। तस्य पुष्ट्यर्थं करुणादयोऽन्ये रसाः अङ्गभूताः। रसानुरूपं क्वचित् प्रसादः क्वचिच्च माधुर्यं तस्य काव्योत्कर्षे साहाय्यं कुरुतः। वैदर्भी रीतिः कालिदासस्य वाग्वश्येव सर्वत्रानुवर्तते। अलङ्कारयोजनायां कालिदासोऽद्वितीयः। यद्यपि उपमाकालिदासस्येत्युक्तिः उपमायोजनायामेव कालिदासस्य वैशिष्ट्यमाख्याति तथापि उत्प्रेक्षार्थान्तरन्यासादीनामलङ्काराणां विनियोगः तेनातीव सहजतया कृतः। कालिदासस्य नाट्यकृतिषु विशेषतः शाकुन्तले वस्तुविन्यासः अनुपमः, चरित्रचित्रणं सर्वथानवद्यं संवादशैली सम्प्रेषणीयास्ति। सममेव भारतीयसंस्कृत्यनुमतानां धर्मार्थकाममोक्षमूलानां मानवमूल्यानां प्रकाशनं कालिदासस्य वैशिष्ट्यमस्ति। आश्रमवासिनीं शकुन्तलां निर्वर्ण्य मनसि कामप्ररोहमनुभूय दुष्यन्तः तावच्छान्तिं न लभते यावत्तां क्षत्रियपरिग्रहक्षमां विश्वामित्रस्य दुहितेयमिति नावैति। कण्वस्यानुज्ञां विना गन्धर्वविधिना कृतः विवाहः उभावपि तावत्प्रताडयति यावदेकतः शकुन्तला मारीचाश्रमे तपश्चरणेन अवज्ञाजनितं कलुषं न क्षालयति, अपरतः दुष्यन्तः अङ्गुलीयलाभेन लब्धस्मृतिः सत् भृशं पीड्यमानः प्रायश्चित्ताग्नौ आत्मशुद्धिं न कुरुते। तदनन्तरमेव तयोः दाम्पत्यप्रेम निष्कलुषं भवति पुत्रोपलब्धौ च परिणमते।

सिन्धुवेलां यावत् विकीर्णाः भारतगौरवगाथाः कालिदासेन स्वकृतिषूपनिबद्धाः। रघुवंशे, मेघे, कुमारसम्भवे च भारतदेशस्य विविधभूभागानां गिरिकाननादीनां यादृक् स्वाभाविकं मनोहारि च चित्रणं लभ्यते, स्वचक्षुषाऽनवलोक्य तदसम्भवमस्ति। तथाविधं तस्य देशप्रेम तस्य काव्योत्कर्षं समुद्द्रढयति।

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव।।

शब्दार्थः

नातिक्रामति = अतिक्रमण नहीं करता है। **देववाणीमलङ्कुर्वाणः** = देववाणी (संस्कृत) को सुशोभित करती हुई। **अन्तर्बहिस्साक्ष्यमनुसृत्य** = अन्दर और बाहर के साक्ष्यों का अनुसरण करते हुए। **यावच्छक्यम्** = यथासामर्थ्य (जितना हो सकता है)। **ख्यापितः** = प्रसिद्ध है। **सुतराम्** = अधिक। **खीष्टाब्दात्प्रागासीत्** = शताब्दी ईसा पूर्व। **धृतमौन** = मौन धारण करना। **प्रथितयशसः** = प्रसिद्ध यश वाले। **ख्यापितः** = कहे जाते हैं। **नैकमत्यमस्ति** = एक मत नहीं है। **साधयितुम्** = सिद्ध करने के लिए। **सातिशयः** = अत्यधिक। **पुष्णाति** = पुष्ट करता है। **मनागपि** = थोड़ी–सी भी। **अनागतान्** = भविष्य में होने वाला। **सर्वातिशायिनी** = सबसे बढ़कर।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) काव्येषु किं रम्यम्?

(ख) कालिदासकाव्येषु अङ्गीरसः कः?

(ग) एकोनविंशसर्गात्मकं महाकाव्यं किम् अस्ति?

(घ) उपमा कस्य कवेः प्रसिद्धा?

2. सुमेलयत–

'क' स्तम्भ	**'ख' स्तम्भ**
रघुवंशम्	खण्डकाव्यम्
विक्रमोर्वशीयम्	नाटकम्
ऋतुसंहारम्	महाकाव्यम्

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत–

यावच्छक्यं, तथापि, नोपलभ्यते, उभावपि, साधूक्तं

4. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत–

(क) महाकविकालिदासः .... विश्वकविरिति सर्वैराद्रियते।

(ख) वाग्देवताभरणभूतस्य .... यावच्छक्यं प्रस्तुवन्ति।

(ग) एकोनविंशसर्गात्मकमिदं .... सर्वश्रेष्ठा नाट्यकृतिरस्ति।

(घ) कालिदासकाव्येषु अङ्गीरसः .... सम्प्रेषणीयास्ति।

5. कविकुलगुरुकालिदासः पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

6. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा उत्तरत–

संस्कृतकाव्यस्य .... नृपतीनामवदाननिरूपणमस्ति।

(क) कालिदासस्य महाकाव्ययोः नाम लिखत।

(ख) कालिदासस्य खण्डकाव्ययोः नाम लिखत।

(ग) कालिदासस्य नाटकानां नामानि लिखत।

7. समीचीनं विकल्पं चिनुत–

(i) शृङ्गाररसप्रधानं नाटकं किम्?

(क) मुद्राराक्षसम् (ख) उत्तररामचरितम् (ग) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (घ) प्रतिमानाटकम्

(ii) रघुवंशे कति सर्गाः सन्ति ?

(क) अष्टादशः (ख) एकोनविंशतिः (ग) विंशतिः (घ) एकविंशतिः

(iii) पुरुरवसः उर्वश्याश्च प्रेमकथा वर्णिता?

(क) शाकुन्तले (ख) रघुवंशे (ग) विक्रमोर्वशीये (घ) मालविकाग्निमित्रे

(iv) विप्रलम्भशृङ्गारयुक्तं काव्यं किम् अस्ति?

(क) रघुवंशम् (ख) मेघदूतम् (ग) कुमारसम्भवम् (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(v) स्वामिकार्तिकेयस्य जन्मनः वर्णनं कस्मिन् काव्ये अस्ति ?

(क) मेघदूतम् (ख) रघुवंशम् (ग) मालविकाग्निमित्रम् (घ) कुमारसम्भवम्

■

द्वितीयः पाठः

उद्भिज्ज–परिषद्

पाठपरिचयः

वृक्ष मनुष्य के सबसे बड़े हितैषी हैं और मनुष्य ने सर्वाधिक अत्याचार भी वृक्षों पर ही किया है। प्रस्तुत पाठ में यह परिकल्पना की गयी है कि यदि मनुष्यों द्वारा किये जा रहे अत्याचार के विरोध में वृक्ष सभा करें तो उनके सभापति का भाषण कैसा होगा ? वह मनुष्यों की भाषा में वृक्षों को किस रूप में सम्बोधित करेगा ? प्रस्तुत पाठ में अश्वत्थ (पीपल) को वृक्षों और लताओं की सभा का सभापति बनाया गया है, जिसने मनुष्यों की हिंसा–वृत्ति और लोभी स्वभाव के कारण मनुष्य को पशुओं से ही नहीं, तिनकों से भी निकृष्ट सिद्ध किया है और अपनी बात की पुष्टि में तर्क और प्रमाण भी दिये हैं।

अथ सर्वविधविटपिनां मध्ये स्थितः सुमहान् अश्वत्थदेवः वदति– भो! भो! वनस्पतिकुलप्रदीपाः महापादपाः, कुसुमकोमलदन्तरुचः लताकुलललनाश्च सावहिताः शृण्वन्तु भवन्तः। अद्य मानववार्तैव अस्माकं समालोच्यविषयः। सर्वासु सृष्टिधारासु निकृष्टतमा मानवी सृष्टिः, जीवसृष्टिप्रवाहेषु मानवा इव परप्रतारकाः, स्वार्थसाधनपराः, मायाविनः, कपटव्यवहारकुशलाः, हिंसानिरताः, जीवाः न विद्यन्ते। भवन्तो नित्यमेवारण्यचारिणः सिंहव्याघ्रप्रमुखान् हिंस्रत्वभावनया प्रसिद्धान् श्वापदान् अवलोकयन्ति प्रत्यक्षम्। ततो भवन्तं एवं सानुनयं पृच्छ्यन्ते, कथयन्तु भवन्तो याथातथ्येन किमेते हिंसादिक्रियासु मनुष्येभ्यो भृशं गरिष्ठाः? श्वापदानां हिंसाकर्म जठरानलनिर्वाणमात्र–प्रयोजनकम्। प्रशान्ते तु जठरानले, सकृद् उपजातायां स्वोदरपूर्तौ न हि ते करतलगतानपि हरिणशशकादीन् उपघ्नन्ति। न वा तथाविधदुर्बलजीवघातार्थम् अटवीतोऽटवीं परिभ्रमन्ति।

मनुष्याणां हिंसावृत्तिस्तु निरवसाना। यतो यतः आत्मनोऽपकर्षः समाशङ्क्यते तत्र तत्रैव मानवानां हिंसावृत्तिः प्रवर्तते। स्वार्थसिद्धये मानवाः दारान्, मित्रं, प्रभुं, भृत्यं, स्वजनं, स्वपक्षं, चावलीलायै उपघ्नन्ति। पशुहत्या तु तेषामाक्रीडनं केवलं चित्तविनोदाय महारण्यम् उपगम्य ते यथेच्छं निर्दयं च पशुघातं कुर्वन्ति। तेषां पशुप्रहारव्यापारम् आलोक्य स्थावराणामपि अस्माकं विदीर्यते हृदयम्, अन्यच्च पशूनां भक्ष्यवस्तूनि प्रकृत्या नियमितान्येव। न हि पशवो भोजनव्यापारे प्रकृतिनियममुल्लङ्घयन्ति। तेषु ये मांसभुजः ते मांसमपहाय नान्यत् आकाङ्क्षन्ति। ये पुनः फलमूलाशिनस्ते तैरेव जीवन्ति मानवानां न दृश्यते तादृशः कश्चिन्निर्दिष्टो नियमः।

स्वावस्थायां संतोषमलभमाना मनुजन्मानः प्रतिक्षणं स्वार्थसाधनाय सर्वात्मना प्रवर्तन्ते, न धर्ममनुधावन्ति, न सत्यमनुबध्नन्ति तृणवदुपेक्षन्ते स्नेहम् अहितमिव परित्यजन्ति आर्जवं, न किञ्चिदपि लज्जन्ते अनृतव्यवहारात्, न स्वल्पमपि बिभ्यति पापाचारेभ्यः, न हि क्षणमपि विरमन्ति परपीडनात्। यथा यथैव स्वार्थसिद्धिर्घटते परिवर्धते विषयपिपासा। निर्धनः शतं कामयते, शतीदशशतान्यभिलषत्यपरः सहस्राधिपो, लक्षमाकाङ्क्षति, इत्थं क्रमशः एव मनुष्याणामाशा वर्धते। विचार्यतां तावत्, ये खलु स्वप्ने तृप्तिसुखं नाधिगच्छन्ति, सर्वदैव नवनवाशाचित्तवृत्तयो भवन्ति, सम्भाव्यते तेषु कदाचिदपि स्वल्पमात्रं शान्तिसुखम्? येषु क्षणमपि शान्तिसुखं नाविर्भवति ते खलु दुःखदुःखेनैव समयमतिवाहयन्ति इत्यपि किं वक्तव्यम्? कथं वा निजनिजावस्थायामेव तृप्तिमनुभवद् पशुभ्यस्तेषां श्रेष्ठत्वम्? नास्तीह किमपि अतिघोररूपं महापापकर्म यत्कामोपहतचित्तवृत्तिभिः मनुष्यैः नानुष्ठीयते। निपुणतरम् अवलोकयन्नपि अहं न तेषां पशुभ्यः कमपि उत्कर्षम् अवलोकयामि।

न केवलमेते पशुभ्यो निकृष्टास्तृणेभ्योऽपि निस्सारा एव। तृणानि खलु वात्यया सह स्वशक्तितः अभियुध्य वीरपुरुषा इव शक्तिक्षये क्षितितले पतन्ति, न तु कदाचित् कापुरुषा इव स्वस्थानम् अपहाय प्रपलायन्ते। मनुष्याः पुनः कमपि विपत्पातम् आकलय्य दुःखेन समयमतिवाहयन्ति, येन मनुष्यजीवने शान्तिसुखं मनोरथपथादपि न आयाति।

इत्येवं हेतुप्रमाणपुरस्सरं सुचिरं बहुविधं विशदं च व्याख्याय सभापतिरश्वत्थदेवः उद्भिज्ज–परिषदं विसर्जयामास।

शब्दार्थः

अथ = इसके बाद! **विटपिनाम्** = वृक्षों के। **अश्वत्थदेवः** = पीपल देवता। **कुसुमकोमलदन्तरूचः** = फूलों के समान कोमल दाँतों की कान्ति वाली। **लताकुलललनाः** = लता रूपी कुलाङ्गनाओं। **सावहिताः** = सावधान होकर। **परप्रतारकाः** = दूसरों को ठगने वाले। **अरण्यचारिणः** = वनों में घूमने वाले। **श्वापदान्** = हिंसक पशुओं को। **सकृद्** = एक बार। **निरवधिः** = सीमारहित। **निरवसाना** = कभी समाप्त न होने वाली। **यतो यतः** = जहाँ–जहाँ से। **अपकर्षः** = पतन। **दारान्** = पत्नियों को। **आक्रीडनम्** = खेल। **पशुघातम्** = पशु–हत्या। **अलभमानाः** = न प्राप्त करते हुए। **प्रवर्तन्ते** = लगे रहते हैं। **आर्जवम्** = सरलता को। **अनृत** = झूठे (असत्य)। **लक्षम्** = लाख को। **ईषत्करम्** = तुच्छ कार्य। **मांसभुजः** = मांस खाने वाले। **दशशतानि** = हजार रूपये। **निपुणतरम्** = अच्छी तरह से। **अभियुध्य** = युद्ध करके। **शक्तिक्षये** = शक्ति के क्षीण हो जाने पर। **बहुविधम्** = अनेक प्रकार से। **विसर्जयामास** = विसर्जित कर दिया।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) उद्भिज्ज–परिषद् इति पाठे सभापतिः कः?

(ख) केषां मध्ये स्थितः सुमहान् अश्वत्थदेवः वदति?

(ग) मनुष्याणां हिंसावृत्तिः कीदृशी वर्तते?

(घ) मानवाः केभ्यः निकृष्टतराः?

(ङ) तृणेभ्यः अपि निस्साराः के सन्ति?

2. एकवाक्येन उत्तरत–

(क) विटपिनां मध्ये स्थितः सन् कः वदति?

(ख) स्वार्थसिद्धये मानवाः कान् उपघ्नन्ति?

(ग) पशुहत्या केषाम् आक्रीडनम् आसीत्?

(घ) के सत्यं न अनुबध्नन्ति?

(ङ) तृणानि कथं क्षितितले पतन्ति?

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत–

(क) तैरेव (ख) स्वप्नेऽपि (ग) अन्यच्च (घ) नान्यत्

4. निम्नलिखितानां पदानां स्ववाक्येषु प्रयोगं कुरुत–

(1) मध्ये (2) वदति (3) भवन्तः (4) अनुधावन्ति

(5) क्षणम् (6) इत्थम् (7) अस्ति (8) बिभ्यति

5. निम्नलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

(क) अथ सर्वविधविटपिनां .... हिंसानिरता जीवाः न विद्यते।

(ख) मनुष्याणां हिंसावृत्तिस्तु .... निर्दयं च पशुघातं कुर्वन्ति।

(ग) स्वावस्थायाम् .... विरमन्ति परपीडनात्।

(घ) न केवलमेते .... समयम् अतिवाहयन्ति।

6. 'उद्भिज्ज– परिषद्' इति पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

7. उचितं विकल्पं चिनुत–

(i) 'उद्भिज्ज–परिषद्' इत्यस्य कः अर्थः?

(क) वानरों की सभा (ख) मनुष्यों की सभा (ग) वृक्षों की सभा (घ) कोई नहीं

(ii) सभापतिः कः आसीत्?

(क) अश्वत्थदेवः (ख) इन्द्रदेवः (ग) वरुणदेवः (घ) ब्रह्मा

(iii) मानवाः कस्मात् किञ्चिदपि न लज्जन्ते?

(क) अनृतव्यवहारात् (ख) सत्यव्यवहारात् (ग) मूर्खात् (घ) धर्मात्

(iv) कः उद्भिज्जपरिषदं विसर्जयामास?

(क) अश्वत्थदेवः (ख) देवर्षिः (ग) कपिलमुनिः (घ) जैमिनिः

(v) अश्वत्थदेवः केषां मध्ये स्थितः अस्ति?

(क) सर्वविधविटपिनाम् (ख) गङ्गानाम् (ग) जनानाम् (घ) बालकानाम्

■

तृतीयः पाठः

नैतिकमूल्यानि

पाठपरिचयः

'नैतिक मूल्य' समाज में विकसित व्यवहार के मानक हैं। नैतिकता की अवधारणा मुख्यतः समाज की संस्कृति एवं धर्म पर आधारित है। समाज की मान्यताओं के अनुकूल आचरण करना नैतिक माना जाता है। समाज में शांति और सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए नैतिक मूल्य निर्धारित किए जाते हैं। नीति, न्याय का ही दूसरा रुप है – यह समाज एवं व्यक्ति दोनों को उन्नति के पथ पर ले जाती है। जिस मार्ग पर कार्य करने से मनुष्य का जीवन सुन्दर एवं सफल होता है, उसे नीति कहते हैं। नीति पूर्वक व्यवहार करने से केवल मनुष्य या समाज का ही नहीं अपितु समस्त विश्व का कल्याण होता है। कवियों नीतिकारों ने कथाओं एवं श्लोकों के माध्यम से नीति-ग्रन्थों की रचना की है। यथा – शुक्रनीति, चाणक्यनीति, विदुरनीति, नीतिशतक, नीतिसार, पञ्चतन्त्र और विदुलोपाख्यान आदि।

नयनं नीतिः, नीतेरिमानि मूल्यानि नैतिकमूल्यानि। यया सरण्या कार्यकरणेन मनुष्यजीवनं सुचारु सफलञ्च भवति सा नीतिः कथ्यते। इयं नीतिः केवलस्य जनस्य समाजस्य कृते एव न भवति, अपितु जनानां, नृपाणां समेषां च व्यवहाराय भवति। नीत्या चलनेन, व्यवहरणेन, प्रजानां शासकानां समस्तस्य लोकस्यापि कल्याणं भवति।

पुरातनकालादेव भारते कवयः नीतिकाराः मनोरमया सरसया गिरा नीतिवाक्यानि कथाभिः श्लोकैश्च व्यरचयन्। इत्थं नीतिशास्त्राणि व्यवहारविदे, कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे बभूवुः। यथा च चाणक्यनीतिः, विदुरनीतिः, विदुलोपाख्यानम्, पञ्चतन्त्रम्, शुक्रनीतिः, घटकर्परकृतः नीतिसारः, सुन्दरपाण्डेयेन कृता 'नीतिद्विषष्टिका', भल्लटशतकम्, भर्तृहरिकृतम् नीतिशतकम्, 'बल्लालशतकम्', 'दृष्टान्तशतकम्' इत्यादि बहूनि नीतिपुस्तकानि संस्कृते उपलभ्यन्ते।

विचार्यमाणे साहित्ये आदिकालादेव सर्वेष्वपि राष्ट्रेषु अयं विश्वासः प्रचलितः आसीत्, यत् काव्यस्यान्येषु प्रयोजनेषु सत्स्वपि एकं मुख्यं प्रयोजनं नैतिकः परितोषः। प्लेटो, अरस्तू, पेटर, होरेसादिभिः सर्वैः विचारकैः काव्यस्य मुख्यं प्रयोजनं नैतिकविकासः एव स्वीकृतः।

नैतिकमूल्यैः व्यक्तेः सामाजिकी प्रतिष्ठाभिवर्धते। मानवकल्याणाय नैतिकता आवश्यकी। नैतिकतैव व्यक्तेः, समाजस्य, राष्ट्रस्य, लोकस्य कल्याणं कुरुते। नैतिकताचरणेनैव मनुष्येषु त्यागः, तपः, विनयः, सत्यं, न्यायप्रियता एवमन्येऽपि मानवीयाः गुणाः उत्पद्यन्ते। तदाचरणेन व्यक्तेः समाजस्य च जीवनम् अनुशासितं निष्कण्टकं च भवति। व्यक्तेः समाजस्य, वर्गस्य,

देशस्य च समुन्नयनावसरो लभ्यते। समाजः ईर्ष्याद्वेषच्छलकलहादिदोषेभ्यः मुक्तो भवति। अस्माकं सामाजिकाः अन्ताराष्ट्रियाः सम्बन्धाः नैतिकताचरणेन दृढाः भवन्ति। अतः नैतिकताशब्दः सच्चरित्रतावाचकः, सुखमयमानवजीवनस्याधारः अस्ति।

सम्यक् वक्तुं शक्यते यत् नैतिकताचरणस्य, मुख्यमुद्देश्यं स्वस्य अन्यस्य च कल्याणकरणं भवति। कदाचित् दृश्यते यत् परेषां कल्याणं कुर्वन् मनुष्यः स्वीयाम् हानिमपि कुरुते। एवं विधं नैतिकाचरणं विशिष्टं महत्त्वपूर्णं च मन्यते। परेषां हितं नैतिकतायाः प्राणभूतं तत्त्वम्।

कदाचित् एवमपि दृश्यते यत्समाजे प्रचलिता रूढिः समेषां कृते हितकरी न भवति। अतः प्रबुद्धाः विद्वांसः तस्या रूढेरपि विरोधं कुर्वन्ति, परं तैः आचरणस्य व्यवहारे नवीनः आदर्शः स्थाप्यते, यः कालान्तरे समाजस्य कृते हितकरः भवति, परं वस्तुतः यानि नैतिकमूल्यानि सन्ति तेषु परिवर्तनं न भवति। यथा सनातनो धर्मः न परिवर्तते तथा नैतिकमूल्यान्यपि स्थिराणि एव। एवं धर्मनीत्योः च सुदृढः सम्बन्धो दृश्यते। पदद्वयोः भेदोऽपि वर्तते। धर्मशब्दः व्यापकः अस्ति। नीतिस्तु व्याप्या धर्मे एव विलीयते। नीतिः लौकिकं कल्याणं कुरुते। धर्मस्तु लौकिकं पारलौकिकञ्च कल्याणं कुरुते। उभयोः कुत्रापि साङ्कर्यमपि प्राप्यते। धर्मः अलौकिकीं शक्तिं प्रकटयति। सः मुक्तेः मार्गमपि प्रशस्तं करोति। नीतिः लौकिकं हितं साधयति।

दार्शनिकैः धर्माचार्यैश्च धर्मः परिभाषितः यथा–"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस्सिद्धिः स धर्मः" येन कर्मणा इह लोके कल्याणं जायते, परलोके च शोभनं स्थानं जनैः लभ्यते, स धर्मः। एवं महाभारते– ध्रियते धर्मः, धारणाद्धर्मः यतः धारयते प्रजाः। धर्मशास्त्रकारेण मनुना उक्तम्–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। इति

शब्दार्थः

नयनम् = ले जाना। **नीतेरिमानि** = नीति के ये। **सरण्या** = मार्ग से। **सुचारु** = सुन्दर। **कृते** = लिए। **समेषाम्** = सबके। **कथ्यते** = कही जाती है। **पुरातनकालादेव** = प्राचीन काल से ही। **गिरा** = वाणी के द्वारा। **कथाभिः** = कथाओं के द्वारा। **व्यरचन्** = रचना की है। **इत्थम्** = इस प्रकार। **व्यवहारविदे** = व्यवहार को जानने के लिए। **कान्ता** = पत्नी। **उपलभ्यन्ते** = प्राप्त होती है। **विचार्यमाणे** = विचार करने पर। **साहित्ये** = साहित्य में। **सत्स्वपि** = (सत्सु + अपि) होते हुए भी। **परितोषः** = सन्तोष। **स्वीकृतः** = स्वीकार किया गया। **अभिवर्धते** = बढ़ती हैं। **अन्यप्राणिभ्यः** = दूसरे प्राणियों से। **समुन्नत्यावसरः** = ठीक उन्नति का अवसर। **मुक्तो भवति** = छूट जाता है। **सच्चरित्रतावाचकः** = सदाचार को बताने वाला। **सम्यक्** = भली प्रकार। **कुर्वन्** = करते हुए। **रूढिः** = पहले से प्रचलित परम्परा। **प्रबुद्धाः** = जागरूक। **स्थाप्यते** = स्थापित किया जाता है। **व्यापकः** =

विस्तृत। **व्याप्या** = सीमित स्थान में रहने वाली। **विलीयते** = विलीन हो जाती है। **नोपलभ्यन्ते** = नहीं प्राप्त होते। **पारलौकिकम्** = परलोक से सम्बन्धित। **कुत्रापि** = कही भी। **दार्शनिकैः** = दर्शनशास्त्र के ज्ञाता। **अभ्युदय** = उन्नति। **निःश्रेयस्सिद्धिः** = कल्याण की प्राप्ति होती है। **परत्र** = दूसरे स्थान पर (परलोक में)। **लभ्यते** = प्राप्त किया जाता है। **नरकपातः** = नरक में गिरना। **ध्रियते** = धारण किया जाता है। **धृतिः** = धैर्य। **दमः** = दमन करना। **अस्तेयम्** = चोरी न करना। **शौचः** = पवित्रता। **धीः** = बुद्धि। **उपवर्णितः** = उल्लिखित।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) नीतिः का भवति?

(ख) नैतिकमूल्यैः व्यक्तेः कः वर्धते?

(ग) नीत्या व्यवहारेण कस्य कल्याणं भवति?

(घ) समाजस्य रूढिः केषां कृते हितकरी न भवति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) नैतिकताचरणस्य मुख्यमुद्देश्यं किम् अस्ति?

(ख) केषां हितं नैतिकतायाः प्राणभूतं तत्त्वम्?

(ग) अस्माकं सामाजिकाः अन्ताराष्ट्रियाः सम्बन्धाः कस्याः आचरणेन दृढाः भवन्ति?

(घ) प्रबुद्धाः जनाः कस्याः विरोधं कुर्वन्ति?

(ङ) केन आचरणेन मनुष्येषु मानवीयाः गुणाः उत्पद्यन्ते?

3. रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) नीत्या चलनेन, व्यवहारणेन, प्रजानां समस्तस्य लोकस्यापि ....भवति।

(ख) नैतिकतया मनुष्योऽन्यप्राणिभ्यः ....जायते।

(ग) .... लौकिकं पारलौकिकञ्च कल्याणं कुरुते।

(घ) नीतेरिमानि ....नैतिकमूल्यानि।

(ङ) धर्मः ....शक्तिं प्रकटयति।

4. अधोलिखितैः पदैः वाक्यनिर्माणं कुरुत––

(क) नयनम्

(ख) कल्याणम्

(ग) पुरातनकालादेव

(घ) नैतिकताचरणेनैव

(ङ) प्रयोजनम्

5. **अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत।**

(क) नयनं नीतिः ....कल्याणं भवति।

(ख) पुरातनकालादेव..................उपलभ्यन्ते।

(ग) नैतिकमूल्यैः ....दृढाः भवन्ति।

(घ) कदाचित् ....शक्तिं प्रकटयति।

6. **अस्य पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।**

7. **अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा उचितं विकल्पं चिनुत–**

(क) नैतिकमूल्यैः .... उत्पद्यन्ते।

(i) केन मनुष्येषु त्यागः, तपः, विनयः, सत्यं न्यायप्रियता मानवीयाः गुणाः उत्पद्यन्ते?

(क) नैतिकताचरणेनैव (ख) नैतिकवाक्येन (ग) नैतिकदर्शनेन (घ) नैतिकश्रवणेन

(ii) मानवकल्याणाय का आवश्यकी?

(क) गतिशीलता (ख) रमणीयता (ग) नैतिकता (घ) सहनशीलता

(iii) नैतिकमूल्यैः व्यक्तेः का अभिवर्धते?

(क) ज्ञानम् (ख) दानम् (ग) समाजिकी प्रतिष्ठा (घ) अन्य

(ख) नयनं नीतिः .... कल्याणं भवति।

उपर्युक्तं गद्याशं पठित्वा समीचीनं विकल्पं चिनुत।

(i) सकललोकस्य कल्याणं भवति?

(क) नीत्या चलनेन (ख) नीत्या नृत्येन (ग) अनीत्या दर्शनेन (घ) अनीत्या लेखनेन

(ii) नैतिकमूल्यानि शब्दस्य अर्थः कः?

(क) अधर्मसम्बन्धिमूल्यानि (ख) अज्ञानसम्बन्धिमूल्यानि

(ग) नीतिसम्बन्धिमूल्यानि (घ) अनीतिसम्बन्धिमूल्यानि

(iii) नीत्या कार्यकरणेन मनुष्यस्य जीवनं भवति?

(क) अज्ञानमयम् (ख) सफलम् (ग) असफलम् (घ) अनैतिकम्

8. **उचितं विकल्पं चिनुत–**

(i) मनुस्मृतौ धर्मस्य कति स्वरूपाः वर्णिताः?

(क) पञ्च (ख) अष्ट (ग) दश (घ) नव

(ii) नीतिः किम् अस्ति?

(क) गमनम् (ख) नयनम् (ग) लेखनम् (घ) पठनम्

(iii) नीतिसम्बन्धिनी रचना अस्ति?

(क) नीतिसारः (ख) मेघदूतम् (ग) रामायणम् (घ) रघुवंशम्

(iv) भर्तृहरेः कृतिरस्ति?

(क) विदुलोपाख्यानम् (ख) नीतिशतकम् (ग) पञ्चतन्त्रम् (घ) शुक्रनीतिः

(v) भर्तृहरिप्रणीतं नीतिशतकं कस्यां भाषायां समुपलभ्यते?

(क) आङ्ग्लभाषायाम् (ख) हिन्दीभाषायाम् (ग) संस्कृते (घ) तमिले

■

चतुर्थः पाठः

विश्वकविः रवीन्द्रः

पाठपरिचयः

रवीन्द्रनाथ का जन्म कोलकाता नगर में 7 मई 1861 को हुआ था। इनके पिता देवेन्द्रनाथ और माता शारदा देवी थी। रवीन्द्रनाथ की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। प्रकृति से इन्हें अत्यधिक प्रेम था। मातृभाषा बांग्ला तथा अंग्रेजी पर इनका समान अधिकार था। बांग्ला में रचित विश्वप्रसिद्ध कृति ***'गीताञ्जलि'*** *पर इन्हें साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।*

रवीन्द्र नाथ ने संस्कृति एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सांस्कृतिक क्षेत्र में इन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य शैलियों का समन्वय करके संगीत की नई शैली का आविष्कार किया, जो ***'रवीन्द्र–संगीत'*** *के नाम से प्रसिद्ध है। शिक्षा के क्षेत्र में* ***'विश्वभारती'*** *विश्वविद्यालय की स्थापना समाज के लिए अनुपम देन है। 7 अगस्त 1941 ई0 को इनका निधन हो गया।*

संस्कृतसाहित्ये कविकुलगुरुः कालिदास इव, हिन्दीसाहित्ये महाकवितुलसीदास इव, आङ्ग्लवाङ्मये काव्यधनः शेक्सपियर इव, बङ्गसाहित्ये कवीन्द्रो रवीन्द्रः न केनाप्यविदितः स्यात्। आधुनिकभारतीयशिल्पिषु रवीन्द्रस्य स्थानं महत्त्वपूर्णमास्ते इति सर्वैः ज्ञायत एव। तस्य बहूनि योगदानानि पार्थक्येन वैशिष्ट्यं लभन्ते। न केवलमाध्यात्मिक-सांस्कृतिकक्षेत्रेषु तस्य योगदानं महत्त्वपूर्णम् अपितु रचनात्मक–साहित्यकारतयापि तस्य नाम लोकेषु सुविदितमेव सर्वैः।

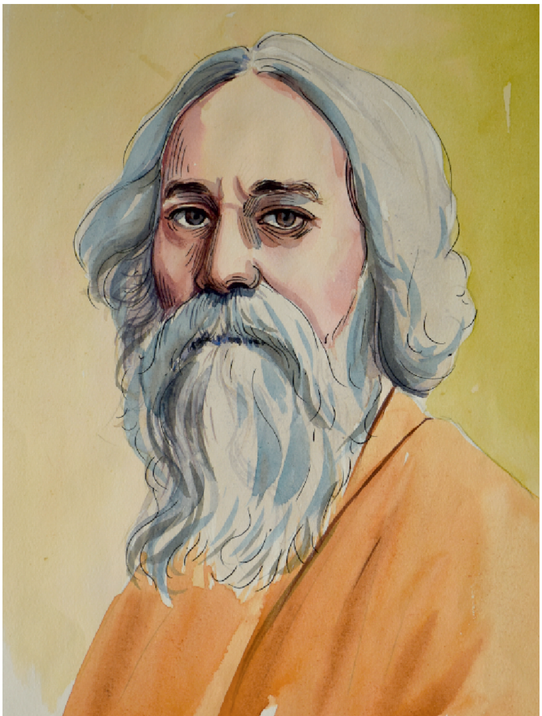

सांस्कृतिकक्षेत्रे

सङ्गीतविधासु नृत्यविधासु च सः नूतनां शैलीं प्राकटयत्। सा शैली 'रवीन्द्रसङ्गीत' नाम्ना ख्यातिं लभते। एवं नृत्यविधासु परम्परागत–शैलीमनुसरताऽनेन शिल्पिना नवीना नृत्यशैली आविष्कृता।

अन्यक्षेत्रेष्वपि शिक्षाविद्रूपेण नवीनानां विचाराणां सूत्रपातो विहितः। तेषां प्रयोगात्मकविचाराणां पुञ्जीभूतः निरुपमः प्रासादः 'विश्वभारती'–रूपेण सुसज्जितशिरस्कः राजते यत्र आश्रमशैल्याः नवीनशैल्या साकं समन्वयो वर्तते। दीनानां दलितवर्गाणां दशासुधारकरूपेणाऽसौ अस्माकं भारतीयानां पुरः प्रस्तुतोऽभवत्।

रवीन्द्रनाथस्य जन्म कोलकातानगरे एकषष्ट्यधिकाष्टादशशततमे ख्रिष्टाब्दे मईमासस्य सप्तमे दिनाङ्के (7 मई, 1861) अभवत्। अस्य जनकः देवेन्द्रनाथः, जननी शारदा देवी चास्ताम्। रवीन्द्रस्य जन्म एकस्मिन् सम्भ्रान्ते समृद्धे ब्राह्मणपरिवारे जातम्। अतो भृत्यैः परिपुष्टं संरक्षितं जीवनं सुखपूर्णमभवत्। अतः स्वच्छन्दविचरणाय, क्रीडनाय सुलभोऽवकाशः नासीत्तेन मनः खिन्नमेवास्त।

वैभवशालिभवनस्य पृष्ठभागे एवं कमनीयं सरः आसीत्। यस्य दक्षिणतटे नारिकेलतरूणां पङ्क्तिः राजते स्म। पूर्वस्मिन् तटे जटिलस्तपस्वी इव महान् जीर्णः पुरातनः एकः वटवृक्षोऽनेकशाखासम्पन्नोऽन्तरिक्षं परिमातुमिव समुद्यतः आसीत्।

भवनस्य वातायने समुपविष्टः बालकः दृश्यमिदं दर्शं दर्शं परां मुदमलभत। अस्मिन्नेव सरसि तत्रत्याः निवासिनः यथासमयं स्नातुमागत्य स्नानञ्च कृत्वा यान्ति स्म। तेषां परिधानानि विविधाः क्रियाश्च दृष्ट्वा बालः किञ्चित्कालं प्रसन्नः अजायत। मध्याह्नात् पश्चात् सरोवरः शून्यतां भजति स्म। सायं पुनः बकाः हंसाः जलकृकवाकवः विहंगाः कोलाहलं कुर्वाणाः स्थानानि लभन्ते स्म। तस्मिन् काले इदमेव कम्रं सरः बालकस्य मनोरञ्जनमकरोत्।

शिक्षा

रवीन्द्रस्य प्राथमिकी शिक्षा गृहे एव जाता। शिक्षणं वङ्गभाषायां प्रारभत। प्रारम्भिकं विज्ञानम्, संस्कृतम्, गणितमिति त्रयो पाठ्यविषयाः अभूवन्। प्रारम्भिकगृहशिक्षायां समाप्तायां बालकः उत्तरकोलकातानगरस्य ओरिएण्टलसेमिनारविद्यालये प्रवेशमलभत्। तदनन्तरं नार्मलविद्यालयं गतवान् परं कुत्रापि मनो न रमते स्म। सर्वत्र अध्यापकानां स्वेच्छाचरणं तुच्छा रुचीः अप्रियान् स्वभावांश्च विलोक्य मनो न रेमे। अतः शून्यायां घटिकायां मध्यावकाशेऽपि च ऐकान्तिकं जीवनं बालकाय रोचते स्म। बालकस्य मनः विद्यालयेषु न रमते इति विचिन्त्य जनको देवेन्द्रनाथः त्रिसप्तत्यधिकाष्टादशशततमे खिष्टाब्दे (1873) सूनोरुपनयनसंस्कारं विधाय तं स्वेन सार्धमेव हिमालयमनयत्। तत्र पितुः सम्पर्केण बालकस्य मनः स्वच्छतामभजत्। तत्रत्यस्य भवनस्य पृष्ठभागे हिमाच्छादिताः पर्वतश्रेणयः आसन्। भवनाभिमुखं शोभनानि सुशाद्वलानि क्षेत्राणि राजन्ते स्म। अत्रत्यं प्राकृतिकं जीवनं बालकस्य मनो नितरामरमयत्। जनको देवेन्द्रनाथः प्रतिदिवसं नवीनया पद्धत्या पाठयति स्म। पितुः पाठनशैली बालकाय रोचते स्म। कालान्तरं हिमालयात् प्रतिनिवृत्य पुनः विद्यालयीयां शिक्षां लेभे।

सप्तदशवर्षदेशीयो रवीन्द्रनाथः अष्टसप्तत्यधिकाष्टादशशततमे ईस्वीयाब्दे सितम्बरमासे भ्रात्रा न्यायाधीशेन सत्येन्द्रनाथेन सार्धं विधिशास्त्रमध्येतुं लन्दननगरं गतवान्। दैवयोगाद् रवीन्द्रस्य बैरिस्टरपदवी पूर्णतां नागात्। सः पितुराज्ञया भ्रात्रा सत्येन्द्रनाथेन साकम् अशीत्यधिकाष्टादशशततमे ईस्वीयाब्दे (1880) फरवरीमासे लन्दननगरात् कलिकातानगरमायातः। इंग्लैण्डदेशस्य वर्षद्वयावासे पाश्चात्यसंगीतस्य सम्यक् परिचयस्तेन लब्धः।

साहित्यिकप्रतिभायाः विकासः

रवीन्द्रस्य साहित्यिकरचनायां नैसर्गिकी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा तु प्रधानकारणमासीदेव। परं तत्रत्या पारिवारिकपरिस्थितिरपि विशिष्टं कारणमभूत्। यथा– गृहे प्रतिदिनं साहित्यिकं वातावरणं कलासाधनायाः गतिविधयः, नाटकानां मञ्चनानि, सङ्गीतगोष्ठ्यः, चित्रकलानां प्रदर्शनानि, देशसेवाकर्माणि सदैव भवन्ति स्म। किशोरावस्थायामेव रवीन्द्रः विविधाः कथाः निबन्धांश्च लिखित्वा पारिवारिकपत्रिकासु भारती-साधना-तत्त्वबोधिनीषु मुद्रयति स्म।

तेन च शैशवसङ्गीतम्, सान्ध्यसङ्गीतम्, प्रभातसङ्गीतम्, नाटकेषु–रुद्रचण्डम्, वाल्मीकिप्रतिभागीतिनाट्यम्, विसर्जनम्, राजर्षिः चोखेरवाली, चित्राङ्गदा, कौडी ओकमलः, गीताञ्जलिः इत्यादयो बहवः ग्रन्थाः विरचिताः। गीताञ्जलिः वैदेशिकैः नोबुलपुरस्कारेण पुरस्कृतश्च। एवं बहूनि प्रशस्तानि पुस्तकानि बङ्गसाहित्याय प्रदत्तानि। कवीन्द्ररवीन्द्रस्य प्रतिभा कथासु, कवितासु, नाटकेषु, उपन्यासेषु, निबन्धेषु समानरूपेण उत्कृष्टा दृश्यते। सत्यमेव गीताञ्जलिः चित्राङ्गदा कलादृष्ट्या महाकवेरुभेऽपि रचने वैशिष्ट्यमावहतः।

एवं बहुवर्णिकं, गरिमामण्डितं, साहित्यिकं, सामाजिकं, दार्शनिकं,लोकतान्त्रिकं जीवनं तस्य काव्यमिव मनोहारि सर्वेभ्यः कल्याणकारि प्रेरणादायि चाभूत्। एकचत्वारिंशदधिकैकोनविंशे शततमे ईस्वीयाब्देऽगस्तमासस्य सप्तमे दिनांके (7 अगस्त, 1941) रवीन्द्रस्य पार्थिवं शरीरं वैश्वानरं प्राविशत्। अद्यापि गुरुदेवस्य रवीन्द्रस्य वाक् काव्यरूपेण अस्माकं समक्षं स्रोतस्विनी इव सततं प्रवहत्येव। अधुनापि करालस्य कालस्य करोऽपि वाचं मूकीकर्त्तुं नाशकत्।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्।।

शब्दार्थः

वाङ्मये = साहित्य में। **अविदितः** = अज्ञात। **आस्ते** = है। **सुविदितम्** = भली-भाँति ज्ञात। **विधासु** = प्रकारों में। **प्राकटयन्** = प्रकट की। **ख्यातिम्** = प्रसिद्धि। **अनुसरता** = अनुसरण करते हुए। **पुञ्जीभूतः** = एकत्रीकृत। **निरुपमः** = अनुपम अद्वितीय। **प्रासादः** = महल। **सुसज्जितशिरस्कः** = सुसज्जित सिर वाला। **पुरः** = सम्मुख, सामने। **सम्भ्रान्ते** = सम्भ्रान्त प्रसिद्ध। **भृत्यः** = नौकर। **भृत्यबहुलम्** = बहुत से नौकरों वाले। **परिपुष्टम्** = सब प्रकार से पुष्ट। **वैभवशालिभवनस्य** = ऐश्वर्य सामग्री से परिपूर्ण

भवन के। **पृष्ठभागे** = पिछले भाग में। **राजते स्म** = सुशोभित की। **जटिलस्तपस्वी** = जटाधारी तपस्वी। **परिमातुम्** = मापने के लिए। **समुद्यतः** = तत्पर। **वातायने** = झरोखों वाली खिड़की में। **समुपविष्टः** = बैठा हुआ। **मुदमलभत** = (मुदम् अलभत) हर्ष (आनन्द) प्राप्त करता था। **सरसि** = तालाब (सरोवर) में। **तत्रत्याः** = वहाँ के (कलकत्ता के)। **परिधानानि** = वस्त्र। **शून्यताम्** = सूनेपन को। **भजति स्म** = सेवन करता था। **जलकुक्कवाकवः** = जलमुर्गा और जलमुर्गी आदि जल जन्तु। **विहङ्गः** = पक्षी। **क्रमम्** = कमनीय, सुन्दर। **समाप्तायाम्** = समाप्त हो जाने पर। **गतवान्** = गया। **न रमते स्म** = नहीं रमता था। **शून्यायाम्** = खाली। **घटिकायाम्** = घण्टे में, वादन में। **ऐकान्तिकम्** = एकान्त से सम्बन्धित। **सूनोः** = पुत्र का। **सुशाद्वलानि** = हरी-भरी दूर्वा आदि से सम्पन्न घास के मैदान। **राजन्ते स्म** = शोभित थे। **नितराम्** = बहुत अधिक। **प्रतिनिवृत्य** = वापस लौटकर। **विधिशास्त्रम्** = कानून, वकालत। **अध्येतुम्** = पढ़ने के लिये। **दैवयोगात्** = संयोग से। **नागात्** = नहीं हुई। **लब्धः** = प्राप्त कर लिया। **नैसर्गिकी** = स्वाभाविक। **नवनवोन्मेषशालिनी** = नए-नए विकास वाली। **मञ्चनानि** = मञ्च पर अभिनय। **गोष्ठ्यः** = गोष्ठियाँ। **मुद्रयति स्म** = छपवाते थे। **प्रशस्तानि** = उत्तम, प्रशंसनीय, उच्चकोटि की। **उत्कृष्टा** = उत्तम, श्रेष्ठ, विशिष्ट। **उभेऽपि** = वो दोनों ही। **बहुवर्णिकम्** = अनेक प्रकार का। **गरिमामण्डितम्** = गौरवशाली। **पार्थिवम्** = भौतिक, मिट्टी से बने। **वैश्वानरम्** = अग्नि में, अग्नि को। **स्रोतस्विनी इव** = नदी की भाँति। **प्रवहत्येव** = बहती ही है। **वाम्** = वाणी का। **मूकीकर्तुम्** = खामोश या मौन करने के लिए। **सुकृतिनः** = पुण्य कर्म करने वाले, सुन्दर कृतियों की रचना करने वाले। **रससिद्धाः** = रस हैं सिद्ध जिन्हे (वे)। **जरामरणजम्** = बुढ़ापा और मृत्यु के कारण होने वाला।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कविकुलगुरुः कालिदास इव कः अस्ति?

(ख) सङ्गीतविधासु कः नूतनां शैलीं प्राकटयत्?

(ग) रवीन्द्रस्य जन्म कस्मिन् ब्राह्मणपरिवारे अभवत्?

(घ) वैभवशालिभवनस्य पृष्ठभागे कः आसीत्?

(ङ) रवीन्द्रनाथः केन सार्धं लन्दननगरं गतवान्?

2. सन्धि-विच्छेदं कुरुत–

पदम्	**सन्धि–विच्छेदम्**
(क) रवीन्द्रः	.... + ...
(ख) प्रस्तुतोऽभवत्	.... + ...
(ग) जटिलस्तपस्वी	.... + ...
(घ) हिमाच्छादिताः	.... + ...
(ङ) पितुराज्ञया	.... + ...

3. अधोलिखितगद्यांशानाम् अनुवादं हिन्दीभाषया कुरुत–

(क) संस्कृतसाहित्ये .... सुविदितमेव सर्वैः।

(ख) सङ्गीतविधासु .... पुरः प्रस्तुतोऽभवत्।

(ग) भवनस्य वातायने .... मनोरञ्जनमकरोत्।

(घ) रवीन्द्रस्य प्राथमिकी ....शिक्षां लेभे।

(ङ) रवीन्द्रस्य साहित्यिकरचनायां ....मुद्रयति स्म।

4. पठितपाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

5. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत–

रवीन्द्रनाथस्य जन्म .... मनः खिन्नमेवास्त।

(1) रवीन्द्रनाथस्य जन्म कस्मिन् नगरे अभवत्?

(क) कोलकातानगरे (ख) पोरबन्दरनगरे (ग) मुम्बईनगरे (घ) मद्रासनगरे

(2) रवीन्द्रस्य जनकः कः आसीत्?

(क) देवेन्द्रनाथः (ख) सत्येन्द्रनाथः (ग) सोमनाथः (घ) रामनाथः

(3) रवीन्द्रस्य जननी का आसीत्?

(क) शारदा (ख) मेनका (ग) राधा (घ) कस्तूरबा

6. अधोलिखितान् बहुविकल्पीयप्रश्नान् उत्तरत–

(1) रवीन्द्रः आङ्ग्लवाङ्मये कः इव अस्ति?

(क) शेक्सपियर इव (ख) मैक्स इव (ग) क्रीड्स इव (घ) अब्राहम इव

(2) रवीन्द्रस्य सङ्गीतशैली केन नाम्ना ख्यातिं लभते?

(क) रवीन्द्रसङ्गीतम् (ख) जैनसङ्गीतम् (ग) बाङ्ग्लासङ्गीतम् (घ) भारतीसङ्गीतम्

(3) रवीन्द्रस्य प्राथमिकी शिक्षा कुत्र जाता?

(क) गृहे (ख) विद्यालये (ग) आश्रमे (घ) गुरुकुले

(4) देवेन्द्रनाथः कं स्वेन सार्धं हिमालयम् अनयत्?

(क) रवीन्द्रम् (ख) सत्येन्द्रनाथम् (ग) सोमनाथम् (घ) रघुनाथम्

(5) गीताञ्जलिः कस्य रचना अस्ति?

(क) रवीन्द्रस्य (ख) देवेन्द्रनाथस्य (ग) सत्येन्द्रनाथस्य (घ) कालिदासस्य

■

पञ्चमः पाठः

कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ पं0 अम्बिकादत्त व्यास द्वारा रचित **'शिवराजविजयम्'** नामक संस्कृत उपन्यास के चतुर्थ निःश्वास से सङ्गृहीत है। इस उपन्यास मे वीर मराठा सरदार छत्रपति शिवाजी का गौरवमय इतिहास रोचक कथा के रूप में वर्णित है। इस पाठ में शिवाजी का विश्वासपात्र सेवक श्रीरघुवीर सिंह उनके गोपनीय आवश्यक पत्र को लेकर घोड़े पर सवार होकर सिंहदुर्ग से तोरणदुर्ग को जा रहा है। मार्ग में अनेक प्राकृतिक आपदाओं एवं कष्टों का सामना करते हुए भी वह कहीं रुकता नहीं, अपितु अपने स्वामी के व्यक्तित्व से प्रभावित वह और अधिक उत्साह से कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए आगे बढ़ता जाता है। उसने प्रण कर रखा है कि 'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' (या तो कार्य को सिद्ध करूँगा अथवा अपने शरीर का बलिदान कर दूँगा)।*

शिववीरस्य कोऽपि सेवकः श्रीरघुवीरसिंहः तस्यावश्यकं पत्रमादाय महता क्लेशेन सिंहदुर्गात् तोरणदुर्गं प्रयाति।

मासोऽयमाषाढस्यास्ति समयश्च सायम्। अस्तं जिगमिषुर्भगवान् भास्करः, सिन्दूर-द्रव-स्नातानामिव वरुण-दिगवलम्बिनामरुणवारिवाहानामभ्यन्तरं प्रविष्टः। कलविङ्काः नीडेषु प्रतिनिवर्तन्ते। वनानि प्रतिक्षणमधिकाधिकां श्यामतां कलयन्ति। अथाकस्मात् परितो मेघमालापर्वतश्रेणिरिव प्रादुर्भूय समस्तं गगनतलं प्रावृणोत्।

अस्मिन् समये एकः षोडशवर्षदेशीयो गौरो युवा हयेन पर्वतश्रेणीरुपर्युपरि गच्छति स्म। एष सुघटित-दृढ-शरीरः, श्यामश्यामैर्गुच्छगुच्छैः कुञ्चितकुञ्चितैः कचकलापैः कमनीयकपोलपालिः, दूरागमनायास-वशेन-स्वेदबिन्दुव्रजेन समाच्छादितललाट-कपोलनासाग्रोत्तरोष्ठः, प्रसन्नवदनाम्भोजः, हरितोष्णीषशोभितः, हरितेनैव च कञ्चुकेन प्रकटीकृत-व्यूढ-गूढचरता-कार्यः, कोऽपि शिववीरस्य विश्वासपात्रं, सिंहदुर्गात् तस्यैव पत्रमादाय, तोरणदुर्गं प्रयाति स्म।

तावदकस्मादुत्थितो महान् झञ्झावातः। एकः सायं समयप्रयुक्तः स्वभाववृत्तोऽन्धकारः स च द्विगुणितो मेघमालाभिः। झञ्झावातोद्धूतैः रेणुभिः शीर्णपत्रैः कुसुमपरागैः शुष्कपुष्पैश्च पुनरेष द्वैगुण्यं प्राप्तः। इहपर्वतश्रेणीतः पर्वतश्रेणीः, वनाद् वनानि, शिखराच्छिखराणि, प्रपातात् प्रपातान्, अधित्यकातोऽधित्यकाः, उपत्याकातः उपत्यकाः, न कोऽपि सरलो मार्गः, पन्था अपि

नावलोक्यते, क्षणे क्षणे हयस्य खुराश्चिक्कणपाषाणखण्डेषु प्रस्खलन्ति, पदे पदे दोधूयमाना वृक्षशाखाः सम्मुखमाघ्नन्ति, परं दृढसङ्कल्पोऽयं सादी न स्वकार्याद् विरमति।

कदाचित् किञ्चिद् भीत इव घोटकः पादाभ्यामुत्तिष्ठति, कदाचिच्चलन्नकस्मात् परिवर्तते, कदाचिदुत्प्लुत्य च गच्छति। परमेष वीरो वल्गां संभालयन्, मध्ये-मध्ये सैन्धवस्य स्कन्धौ कन्धराञ्च करतलेनऽऽस्फोटयन्, चुचुत्कारेण सान्त्वयंश्च न स्वकार्याद् विरमति। तावदेकस्यां दिशि नयने विक्षिपन्ती, कर्णौ स्फोटयन्ती, अवलोचकान् कम्पयन्ती, वन्यांस्त्रासयन्ती, गगनं कर्त्तयन्ती, मेघान् सौवर्ण-कषया अवघ्नन्ती, अन्धकारमग्निना दहन्ती इव चपला चमत्करोति, महाशब्देन पर्यपूर्यत साऽरण्यानी। परमधुनाऽपि 'कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्' इति कृतप्रतिज्ञोऽसौ शिववीरचरो न निजकार्यान्निवर्त्तते।

यस्याध्यक्षः स्वयं परिश्रमी, कथं स न स्यात्, स्वयं परिश्रमी? यस्य प्रभुः अद्भुतसाहसः, कथं स न भवेत् स्वयं तथा? यस्य स्वामी स्वयमापदो न गणयति, कथं स गणयेदापदः? यस्य च महाराजः स्वयंसङ्कल्पितं निश्चयेन साधयति, कथं स न साधयेत् स्व-सङ्कल्पितम्? अस्त्येष महाराज-शिववीरस्य दयापात्रं चरः, तत्कथमेषः झञ्झा-विभीषिकाभिर्विभीषितः प्रभु-कार्यं विगणयेत्? तदितोऽप्येष तथैव त्वरितमश्वं चालयंश्चलति।

शब्दार्थः

आदाय = लेकर। **प्रयाति** = जा रहा है। **जिगमिषः** = जाने के इच्छुक। **भास्करः** = सूर्य। **वारिवाहानाम्** = बादलों के भीतर। **कलविङ्काः** = गौरैया पक्षी। **कलयन्ति** = धारण कर रहे हैं। **परितः** = चारों ओर। **मेघमाला** = बादलों का समूह। **पर्वतश्रेणीः** = पर्वतों के समूह, पंक्ति। **इव** = के समान। **प्रादुर्भूय** = प्रकट होकर। **गगनतलम्** = आकाशतल। **आवृणोत्** = ढक लिया। **षोडशवर्षदेशीयः** = लगभग सोलह वर्ष की अवस्था वाला। **गौर** = गोरे रंग का। **हयेन** = घोड़े से। **गुच्छगुच्छैः** = अत्यधिक गुच्छेदार। **कुञ्चितकुञ्चितैः** = अत्यधिक घुँघराले। **कचकलापैः** = केशराशि से। **कमनीयकपोलपालिः** = सुन्दर गालों वाला कपोल प्रदेश वाला। **प्रसन्नवदनाम्भोजः** = प्रसन्नमुखकमलवाला। **हरित** = हरी। **उष्णीष** = पगड़ी। **दुर्गः** = किला। **झञ्झावातः** = वर्षा सहित आँधी। **उद्धूत** = उड़ाये गये। **रेणुभिः** = धूलों से। **शीर्णपत्रैः** = टूटे पत्तों से। **द्वैगुण्यं प्राप्तः** = दुगुना हो गया। **प्रपातात्** = झरने से। **अधित्यकातः** = पर्वत की ऊपरी भूमि। **उपत्यकातः** = पर्वत की निचली भूमि, तराई प्रदेश से। **पन्थाः** = मार्ग। **पदे-पदे** = पग-पग पर। **दोधूयमानाः** = जोर-जोर से हिलती हुई। **शाखाः** = डालियाँ। **आघ्नन्ति** = चोट पहुँचाती हैं। **परम्** = किन्तु। **सादी** = घुड़सवार। **कदाचित्** = कभी। **किञ्चित्** = कुछ। **भीतः** = डरा। **घोटकः** = घोड़ा। **परिवर्तते** = घूम जाता है। **उत्प्लुत्य** = लम्बी छलांग लेकर। **वल्गाम्** = लगाम को। **सैन्धवस्य** = घोड़े के। **स्कन्धौ** = कन्धों को। **कन्धराम्** = गर्दन को। **करतलेन** = हथेली से। **आस्फोटयन्** = थपथपाते हुए। **चुचुत्कारेण** = 'चु-चु' की मुख की ध्वनि से। **सान्त्वयन्** = पुचकारते हुए। **विक्षिपन्ती** = चुँधियाती हुई। **कर्णौ** = कानो को। **स्फोटयन्ती** = फोड़ती हुई। **अवलोचकान्** = देखनेवालों को। **वन्यान्** = जंगली जन्तुओं को। **त्रासयन्ती** = डराती हुई। **कर्तयन्ती** = चीरती हुई। **सौवर्णकषया** = सोने के चाबुक से। **अवघ्नन्ती** = पीटती हुई। **दहन्ती** = जलाती हुई। **चपला** = बिजली। **चमत्करोति** = चकाचौंध करती है। **अरण्यानी** = विशाल जंगल। **पातयेयम्** = नष्ट कर दूँगा। **चरः** = गुप्तचर। **अध्यक्षः** = प्रधान। **प्रभुः** = मालिक, स्वामी। **आपदः** = आपत्तियों को। **न गणयति** = नहीं गिनता। **झञ्झा** = तेज वर्षा सहित आंधी। **विभीषिका** = भय। **विभीषितः** = डरा हुआ। **विगणयेत्** = न गिने, महत्त्व न दे। **इतोऽपि** = इससे भी अधिक। **त्वरितम्** = तेज।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) शिववीरस्य सेवकः कः?

(ख) श्रीरघुवीरसिंहः कुत्र गच्छति?

(ग) शिववीरस्य सेवकः किम् आदाय प्रयाति?

(घ) के नीडेषु प्रतिनिवर्तन्ते?

(ङ) कः त्वरितम् अश्वं चालयंश्चलति?

2. एकवाक्येन उत्तरत–

(क) शिववीरस्य सेवकेन का प्रतिज्ञा कृता?

(ख) श्रीरघुवीरसिंहः अश्वं केन प्रकारेण सान्त्वयति?

(ग) दृढसंकल्पः कः स्वकार्याद् न विरमति?

(घ) श्रीरघुवीरसिंहस्य स्वामी कीदृशः अस्ति?

3. रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) अस्तं जिगमिषुः .... भास्करः।

(ख) कुञ्चितकुञ्चितैः .... कपोलपालिः।

(ग) तावदकस्मादुत्थितो महान् .... ।

(घ) किञ्चिद् भीत इव .... पादाभ्यामुत्तिष्ठति।

(ङ) श्रीरघुवीरस्य अध्यक्षः .... अस्ति।

4. अधोलिखितैः पदैः वाक्यनिर्माणं कुरुत–

(क) मासः

(ख) नीडेषु

(ग) प्रयाति

(घ) घोटकः

(ङ) विरमति

5. अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत–

(क) मासोऽयमाषाढस्यास्ति .... प्रावृणोत्।

(ख) अस्मिन् समये .... प्रयाति स्म।

(ग) तावदकस्मादुत्थितो .... विरमति।

(घ) यस्याध्यक्षः .... चालयंश्चलति।

6. अस्य पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

7. अधोलिखितं गद्याशं पठित्वा उचितं विकल्पं चिनुत–

कदाचित् किञ्चिद् .... स्वकार्याद् विरमति।

(1) कः भीतः अस्ति?

(क) श्रीरघुवीरसिंहः (ख) शिववीरः (ग) घोटकः (घ) शत्रुः

(2) कः वल्गां सम्भालयन् न स्वकार्याद् विरमति?

(क) शिववीरः (ख) रघुवीरः (ग) बलवीरः (घ) रणवीरः

(3) एष वीरः सैन्धवस्य स्कन्धौ कन्धरांच केन आस्फोटयति?

(क) करवस्त्रेण (ख) करतलेन (ग) पादतलेन (घ) न केनापि

8. उचितं विकल्पं चिनुत–

(1) कस्य सेवकः श्रीरघुवीरसिंहः अस्ति?

(क) महावीरस्य (ख) रणवीरस्य (ग) शिववीरस्य (घ) न कस्यापि

(2) श्रीरघुवीरसिंहः कस्मात् दुर्गात् तोरणदुर्गं प्रयाति?

(क) चित्तौडदुर्गात् (ख) आमेरदुर्गात् (ग) सिंहदुर्गात् (घ) जयपुरदुर्गात्

(3) श्रीरघुवीरसिंहः शिववीरस्य कीदृशः सेवकः?

(क) सेनापतिः (ख) दुर्गपालः (ग) आरक्षकः (घ) गुप्तचरः

(4) 'वल्गा' इति शब्दस्य हिन्दीभाषायां कः अर्थः?

(क) रस्सी (ख) लगाम (ग) चाबुक (घ) सांकल

(5) कः स्वसङ्कल्पितं निश्चयेन साधयति?

(क) महाराजः (ख) सेनापतिः (ग) भृत्यः (घ) न कोऽपि

(6) केन पर्यपूर्यत साऽरण्यानी?

(क) अश्वघोषेण (ख) महाशब्देन (ग) झञ्झावातेन (घ) न केनापि

आन्तरिकं मूल्याङ्कनम्

1. शिववीरस्य चित्रम् आलिख्य तस्य सङ्क्षिप्तं परिचयं लिखत।

योग्यताविस्तारः

प्रकृतिप्रत्ययसंयोगेन शब्दनिर्माणं जायते। स्त्रीलिङ्गशब्दं निर्मातुं स्त्रीप्रत्ययस्य योगः भवति। यथा–

प्रकृति	**प्रत्यय**		**पुंलिङ्गे**	**स्त्रीप्रत्यय**		**स्त्रीलिङ्गे**
वि + क्षिप् +	शतृ	=	विक्षिपन् +	ङीप्	=	विक्षिपन्ती (चुँधियाती हुई)
स्फुट् + णिच् +	शतृ	=	स्फोटयन् +	ङीप्	=	स्फोटयन्ती (फोड़ती हुई)
कम्प् + णिच् +	शतृ	=	कम्पयन् +	ङीप्	=	कम्पयन्ती (कँपाती हुई)
त्रस् + णिच् +	शतृ	=	त्रासयन् +	ङीप्	=	त्रासयन्ती (डराती हुई)
कृत् + णिच् +	शतृ	=	कर्तयन् +	ङीप्	=	कर्तयन्ती (काटती हुई)
अव + हन् +	शतृ	=	अवघ्नन् +	ङीप्	=	अवघ्नन्ती (मारती हुई)

■

षष्ठः पाठः

आदिशङ्कराचार्यः

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ आदि गुरु शङ्कराचार्य के भारतभूमि पर अवतरण तथा उनके द्वारा किए गए धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित है। आदि गुरु शङ्कराचार्य भगवान शिव के अवतार माने जाते हैं। उन्होंने भारतवर्ष का भ्रमण कर राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की थी।

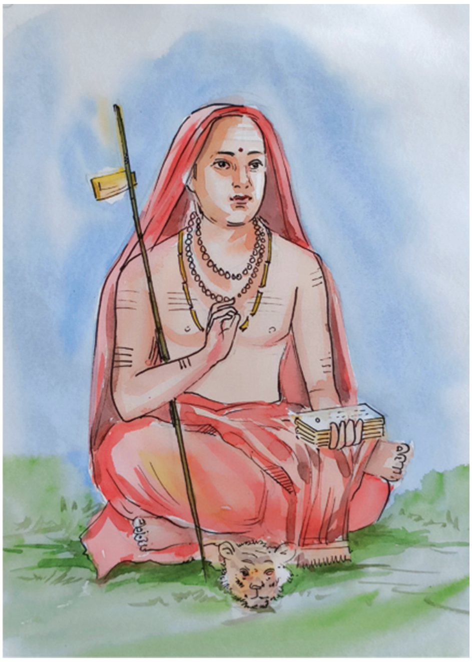

धन्येयं भारतभूमिर्यत्र साधुजनानां परित्राणाय दुष्कृताञ्च विनाशाय सृष्टिस्थितिलयकर्ता परमात्मा स्वयमेव कदाचित् रामः कदाचित् कृष्णश्च भूत्वा आविर्बभूव। त्रेतायुगे रामो धनुर्धृत्वा विपथगामिनां राक्षसानां संहारं कृत्वा वर्णाश्रमव्यवस्थामरक्षत्। द्वापरे कृष्णो धर्मध्वंसिनः कुनृपतीन् उत्पाट्य धर्ममत्रायत। सैषा स्थितिः यदा कलौ समुत्पन्ना बभूव तदा नीललोहितः भगवान् शिवः शङ्कररूपेण पुनः प्रकटीबभूव। भगवतः शङ्करस्य जन्मकाले वैदिकधर्मस्य ह्रासः अवैदिकस्य प्राबल्यञ्चासीत्। अशोकादिनृपतीनां राजबलमाश्रित्य पण्डितम्मन्याः साम्प्रदायिकाः वेदमूलं धर्मं तिरश्चक्रुः। लोकजीवनमन्धतमिस्रायां तस्यां मुहुर्मुहुर्मुह्यमानं क्षणमपि शर्म न लेभे। तस्यां विषमस्थितौ भगवान् शङ्करः प्रचण्डभास्करः इव उदियाय देशव्यापि मोहमालिन्यमुज्झित्वा वैदिकधर्मस्य पुनः प्रतिष्ठां चकार।

शङ्करः केरलप्रदेशे मालावारप्रान्ते पूर्णाख्यायाः नद्यास्तटे स्थिते शलकग्रामे अष्टाशीत्यधिके सप्तशततमे ईस्वीयाब्दे नम्बूदरकुले जन्म लेभे। तस्य पितुर्नाम शिवगुरुरासीत् मातुश्च आर्याम्बा। शैशवादेव शङ्करः अलौकिकप्रतिभासम्पन्नः आसीत्। अष्टवर्षदेशीयः सन्नपि परममेधावी असौ वेदवेदाङ्गेषु प्रावीण्यमवाप। दुर्दैवात् बाल्यकाले एव तस्य पिता श्रीमान् शिवगुरुः पञ्चत्वमवाप। पितृवात्सल्यविरहितः मात्रैव लालितश्चासौ प्राक्तनसंस्कारवशात् जगतः

मायामयत्वमाकलय्य तत्त्वसन्धाने मनश्चकार। प्ररूढवैराग्यप्रभावात् स प्रव्रजितुमियेष, परञ्च परमस्नेहनिर्भरा तदेकतनयाम्बा नानुज्ञां ददौ। लोकरीतिपरः शङ्करः मातुरनुज्ञां विना प्रव्रज्यामङ्गीकर्तुं न शशाक।

एवं गच्छत्सु दिवसेषु एकदा शङ्करः पूर्णायां सरिति स्नातुं गतः। यावत् स सरितोऽन्तः प्रविष्टः तावदेव बलिना ग्राहेण गृहीतः। शङ्करः आसन्नं मृत्युमवेक्ष्य आर्तस्वरेण चुक्रोश। तस्य वत्सला जननी स्वपुत्रस्य स्वरं परिचीय भृशं विललाप। तस्याः तादृशी विपन्नामवस्थामनुभूय स तस्यै न्यवेदयत्– अम्ब ! यदि ते मम जीवितेऽनुरागः स्यात् तर्हि संन्यासाय मामनुजानीहि तेनैव मे ग्राहान्मुक्तिर्भविष्यति। अनन्यगतिः माता तथेत्युवाच। सद्यस्तद्ग्राहग्रहात् मुक्तः स संन्यासं गृहीत्वा पुत्रविरहसन्तप्तां मातरं सान्त्वयित्वा तया बान्धवैश्चानुज्ञातः यतिवेषधरः स्वजन्मभूमिं त्यक्त्वा देशाटनाय प्रवृत्तः। वनवीथिकासु परिभ्रमन् स क्वचित् गुहान्तर्वर्तिनं गौडपादशिष्यं गोविन्दपादान्तिकं जगाम। यतिवेषधारिणं तं गोविन्दपादः पप्रच्छ– "कोऽसि त्वम् भोः ?' शङ्करः प्राह–

मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहं श्रोत्रं न जिह्वा न च प्राणनेत्रम्।
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायुश्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।

एतामलौकिकीं वाचमुपश्रुत्य गोविन्दपादः तमसाधारणं जनं मत्वा तस्मै संन्यासदीक्षां ददौ। गुरोः गोविन्दपादादेव वेदान्ततत्त्वं विधिवदधीत्य स तत्त्वज्ञो बभूव। सृष्टिरहस्यमधिगम्य गुरोराज्ञया स वैदिकधर्मोद्धरणार्थं दिग्विजयाय प्रस्थितः ग्रामाद् ग्रामं नगरान्नगरमटन् विद्वद्भिश्च सह शास्त्रचर्चां कुर्वन् स काशीं प्राप्तः। काशीवासकाले स व्याससूत्राणामुपनिषदां श्रीमद्भगवद्गीतायाश्च भाष्याणि प्रणीतवान्।

अथ कदाचित् काश्यां प्रथितयशसः विद्वद्धौरेयस्य मण्डनमिश्रस्य दर्शनलाभाय स मनश्चकार। तद्गृहमन्वेष्टुकामः काञ्चिद् धीवरीमपृच्छत् क्वास्ति मण्डनमिश्रस्य धामेति। सा धीवरी प्रत्यवदत्–

स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं
कीराङ्गनाः यत्र गिरो गिरन्ति।
द्वारस्य नीडान्तरसन्निबद्धाः
अवेहि तद्धाम हि मण्डनस्य।।

इति धीवरीवचनं श्रुत्वा शङ्करः मण्डनमिश्रस्य भवनं गतः। तयोर्मध्ये तत्र शास्त्रार्थोऽभवत्। निर्णायकपदे मण्डनमिश्रस्य सुमेधासम्पन्ना भार्या शारदा प्रतिष्ठापितासीत्। शास्त्रार्थे स्वस्वामिनः पराजयमसहमाना सा स्वयं तेन सह शास्त्रार्थं कर्तुं समुद्यताभवत्। सा शङ्करं कामशास्त्रीयान्

प्रश्नान् पप्रच्छ। तान् दुरुत्तरान् प्रश्नान् श्रुत्वा स तूष्णीं बभूव। किञ्चित्कालानन्तरं स परकायप्रवेशविद्यया कामशास्त्रज्ञो बभूव पुनश्च मण्डनपत्नीं शास्त्रार्थे पराजितवान्। जनश्रुतिरस्ति यत् स एव मण्डनमिश्रः आचार्यशङ्करस्य शिष्यत्वं स्वीचकार, सुरेश्वर इति नाम्ना प्रसिद्धिं च लेभे।

शब्दार्थः

यत्र = जहाँ। **साधुजनानाम्** = साधुजनों की। **परित्राणाय** = रक्षा के लिए। **दुष्कृताम्** = दुष्टों का। **विनाशाय** = विनाश के लिये। **आविर्बभूव** = प्रकट हुए। **विपथगामिनाम्** = कुमार्ग पर चलने वालों का। **धर्मध्वंसिनः** = धर्म के नाशकों का। **अन्धतमिस्रायाम्** = घोर अंधेरी रात में। **उज्झित्वा** = छोड़कर। **पण्डितम्मन्याः** = पण्डित मानने वाले। **तिरश्चक्रुः** = तिरस्कार किया। **पूर्णाख्यायाः** = पूर्णा नामक। **नद्यास्तटे** = नदी के किनारे। **प्रावीण्यम्** = निपुणता। **आकलय्य** = विचारकर। **प्रव्रजितुम्** = संन्यास लेने के लिये। **सरिति** = नदी में। **स्नातुम्** = स्नान करने के लिये। **यावत्** = जब तक। **ग्राहेण** = मगरमच्छ के द्वारा। **वत्सला** = प्रेममयी। **परिचीय** = पहचानकर। **भृशम्** = बहुत। **विललाप** = रोयी। **अनन्यगतिः** = कोई अन्य उपाय न होना। **सद्यः** = तत्काल। **यतिवेषधरः** = संन्यासी का वेष धारण करने वाला। **वनवीथिकासु** = वन के मार्गों में। **वाचम्** = वाणी को।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) आदिशङ्कराचार्यस्य जन्म कस्मिन् प्रदेशे अभवत्?

(ख) द्वापरे धर्मं कः अत्रायत?

(ग) वैदिकधर्मस्य पुनः प्रतिष्ठां कः अकरोत्?

(घ) आदिशङ्कराचार्यस्य पिता कः आसीत्?

(ङ) मण्डनमिश्रस्य भार्या का आसीत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) त्रेतायुगे कः वर्णाश्रमव्यवस्थाम् अरक्षत्?

(ख) भगवतः शङ्करस्य जन्मकाले कस्य धर्मस्य ह्रासः आसीत्?

(ग) शैशवादेव शङ्करः कीदृशः आसीत्?

(घ) शङ्करः मातरं किं न्यवेदयत्?

(ङ) यतिवेषधारिणं शङ्करं गोविन्दपादः किं पप्रच्छ?

3. अधोलिखितगद्यांशानां हिन्दीभाषया अर्थं लिखत–

(क) धन्येयं भारतभूमिर्यत्र .... प्रतिष्ठां चकार।

(ख) शङ्करः केरलप्रदेशे .... न शशाक।

(ग) एवं गच्छत्सु .... माता तथैत्युवाच।

(घ) एतामलौकिकीं .... भाष्याणि प्रणीतवान्।

4. पाठस्य साराशं हिन्दीभाषया लिखत।

5. अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नोत्तराणि चिनुत–

शङ्करः केरलप्रदेशे .... न शशाक।

(1) आचार्यशङ्करस्य जन्म अभवत्?

(क) केरलप्रदेशे (ख) मध्यप्रदेशे (ग) उत्तरप्रदेशे (घ) महाराष्ट्रे

(2) शङ्करस्य माता आसीत्?

(क) देवकी (ख) आर्याम्बा (ग) रोहिणी (घ) प्रेमा

(3) आचार्यशङ्करः कया लालितः?

(क) पित्रा (ख) मात्रा (ग) भगिन्या (घ) भ्रात्रा

6. समुचितं विकल्पं चित्वा लिखत–

(1) शङ्करः पूर्णानद्यां किमर्थं गतः?

(क) पातुम् (ख) स्नातुम् (ग) सेवितुम् (घ) द्रष्टुम्

(2) वत्सला माता स्वपुत्रस्य किं परिचीय भृशं विलपति\

(क) आकृतिं (ख) मुखं (ग) स्वरं (घ) शरीरं

(3) 'शिवोऽहम्' इति कः उक्तवान्?

(क) गोविन्दपादः (ख) आचार्यशङ्करः (ग) शिवगुरुः (घ) सुभद्रा

(4) 'स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणम्' इति का अवदत्?

(क) धीवरी (ख) सुभद्रा (ग) प्रज्ञा (घ) मालिनी

(5) 'सुरेश्वर' इति नाम्ना कस्य प्रसिद्धिः अभवत्?

(क) शङ्करस्य (ख) मण्डनमिश्रस्य (ग) देवदत्तस्य (घ) सुभद्रायाः

7. निम्नलिखितानां शब्दानां सन्धिविच्छेदं कुरुत–

धन्येयम्, सैषा, मनश्चकार, न्यवेदयत्

■

सप्तमः पाठः

संस्कृतभाषायाः गौरवम्

पाठपरिचयः

संस्कृत भाषा संसार की सबसे प्राचीन भाषा है। इसे देववाणी कहा जाता है। 'संस्कृत' शब्द का अर्थ है– परिष्कृत, परिमार्जित, शुद्ध और अलंकृत। भारतीयों ने जिस भाषा को अशुद्धि, अपभ्रंश और भाषागत दोषों से पृथक् परिष्कृत रूप में रखा उसे संस्कृत भाषा नाम दिया गया। प्राचीन काल में यह भाषा जनसाधारण के व्यवहार की भाषा थी। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद, वेदाङ्ग, षड्दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि सभी ग्रन्थ एवं काव्यादि संस्कृत में ही लिखे गए हैं।

संस्कृत का व्याकरण विश्व प्रसिद्ध है। पाणिनि के व्याकरण की समता कोई भी व्याकरण नहीं कर सकता। इसकी काव्यभाषा की अलौकिक मधुरता अवर्णनीय है। यह भाषा हमारी संस्कृति और सभ्यता की संरक्षिका है। संस्कृत भाषा ही देश को एकता और अखण्डता के सूत्र में बाँधे रहने में सक्षम है। अतः इसके उत्थान, संचार और प्रसार के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए।

संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा विपुलज्ञानविज्ञानसम्पन्ना सरला सुमधुरा हृद्या चेति सर्वैरपि प्राच्यपाश्चात्यविद्वद्भिरेकस्वरेणाङ्गीक्रियते। भारतीयविद्याविशारदैस्तु 'संस्कृतं नाम दैवीवागन्वाख्याता महर्षिभिः' इति संस्कृतभाषा हि गीर्वाणवाणीति नाम्ना सश्रद्धं समाम्नाता।

ग्रीकलैटिनादिप्राचीनासु भाषासु संस्कृतभाषैव प्राचीनतमा प्रचुरसाहित्यसम्पन्ना चेति, श्रीसरविलियमजोन्सनाम्ना पाश्चात्यसमीक्षकेणापि शतद्वयवर्षेभ्यः प्रागेव समुद्घोषितमिति सर्वत्र विश्रुतम्।

संस्कृतभाषा पुराकाले सर्वसाधारणजनानां वाग्व्यवहारभाषा चासीत्। तत्रेदं श्रूयते यत् पुरा कोऽपि नरः काष्ठभारं स्वशिरसि निधाय काष्ठं विक्रेतुमापणं गच्छति स्म। मार्गे नृपः तेनामिलदपृच्छच्च, भो! भारं बाधति ? काष्ठभारवाहको नृपं तत्प्रश्नोत्तरस्य प्रसङ्गेऽवदत्– "भारं न बाधते राजन् यथा बाधति बाधते।" अनेनेदं सुतरामायाति यत्प्राचीनकाले भारतवर्षे संस्कृतभाषा साधारणजनानां भाषा आसीदिति। रामायणे यदा भगवतो रामस्य प्रियसेवको हनुमान् कनकमयीं मुद्रामादाय सीतायै दातुमिच्छति तदा विचारयति स्म–

वाचं चोदाहरिष्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।

एतेनापि संस्कृतस्य लोकव्यवहारप्रयोज्यता अवगम्यते।

अस्याः भाषायाः साहित्यं सर्वथा सुविशालं विद्यते। तत्र संस्कृतसाहित्यं गद्य-पद्य-चम्पूप्रकारैः त्रिधा विभज्यते। अस्मिन् साहित्ये विश्वप्राचीनतमा ऋग्यजुः सामाथर्वनामधेयाश्चत्वारो वेदाः, शिक्षा-कल्पो, व्याकरणं, निरुक्तं, छन्दो ज्योतिषमित्येतानि वेदानां षडङ्गानि, न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-मीमांसा-वेदान्तेति आस्तिकदर्शनशास्त्राणि; चार्वाक्-जैन-बौद्धेति नास्तिकदर्शन–शास्त्राणि; उपनिषदः, स्मृतयः, सूत्राणि, धर्मशास्त्राणि, पुराणानि, रामायणं, महाभारतमित्यादयः ग्रन्थाः संस्कृतसाहित्यस्य ज्ञानरत्नप्राचुर्यं समुद्घोषयन्ति। वाल्मीकि-व्यास-भवभूति-दण्डि-सुबन्धु-बाण-कालिदास-अश्वघोष-भारवि-जयदेव-माघ-श्रीहर्षप्रभृतयः कवयः लेखकाश्चास्याः गौरवं वर्धयन्ति।

अन्यासु भाषासु वाक्ययोजने प्रथमं कर्तुः प्रयोगः पुनः अन्येषां कारकाणां विन्यासः, पश्चात् क्रियायाः उक्तिः। कस्याञ्चित् भाषायां क्रियायाः विशेषणानां कारकाणाञ्च पश्चात् प्रयोगः, किन्तु संस्कृतव्याकरणे नास्ति एतादृशः कोऽपि नियमः। यथा–आसीत् पुरा दशरथो नाम राजा अयोध्यायाम्। अस्यैव वाक्यस्य विन्यासः एवमपि भवति–पुरा अयोध्यायां दशरथो नाम राजा आसीत्, अयोध्यायां दशरथो नाम राजा पुरा आसीत्, इति वा। कस्यापि पदस्य कुत्रापि स्थानं भवेत् न कापि क्षतिः।

अस्याः काव्यभाषायाः शब्दगतमर्थगतञ्च ध्वनिमाधुर्यं श्रावं श्रावं सुरङ्गनापदनूपुरध्वनि–माधुर्यं धिक्कुर्वन्ति वाङ्मयाध्वनीनाः, काव्यक्षेत्रे-शब्दगतानर्थगतांश्च विस्फुरतोऽलङ्कारान् विलोक्य पुनर्नावलोकयन्ति मणिमयानलङ्कारान्।

भारतीयधर्म इव संस्कृतभाषापि भारतीयानां वरिष्ठः शेवधिः। इयमेव भाषा शाखाप्रशाखारूपेण प्रान्तीयासु तासु-तासु भाषासु तिरोहिता वर्तते। अद्य केचन धर्मान्धाः राजनीतिभावनाभाविताः भारतस्य खण्डनमभिलषन्ति, कारणं तेषां संस्कृतभाषायाः अज्ञानम्। ''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी', ''अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्'', ''उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्'', ''शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः'', ''मा हिंस्यात्सर्वभूतानि'', ''मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव'' इमे उपदेशाः यदि भारतीयानां समक्षं समीक्ष्यन्तां तदा सकलं भारतं स्वयमेव एकसूत्रे अखण्डतासूत्रे च निबध्येत। ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः'', ''मानसं यान्ति हंसाः न पुरुषा एव ?'' इति सडिण्डिमं घोषयति इयं भाषा।

संस्कृतं विना एकताया अखण्डतायाः पाठः निरर्थक एव प्रतीयते। नेहरूमहाभागेनापि स्वकीयायाम् आत्मकथायां लिखितं यत् संस्कृतभाषा भारतस्य निधिस्तस्याः सुरक्षायाः उत्तरदायित्वं स्वतन्त्रे भारते आपतितम्।

अस्माकं पूर्वजानां विचाराः अनुसन्धानानि चास्यामेव भाषायां सन्ति। स्वसभ्यतायाः धर्मस्य राष्ट्रियेतिहासस्य, संस्कृतेश्च सम्यग्बोधाय संस्कृतस्य ज्ञानं परमावश्यकमस्ति। केनापि कविना मधुरमुक्तम्–

भवति भारतसंस्कृतिरक्षणं प्रतिदिनं हि यया सुरभाषया।
सकलवाग्जननी भुवि सा श्रुता बुधजनैः सततं हि समादृता।।

तथाभूतायाः अस्याः भाषायाः पुनरभ्युदयाय भारतीयैः पुनरपि सततं यतनीयम्।

शब्दार्थः

विपुलः = अधिक। **शेवधिः** = सम्पत्ति। **हृद्या** = हृदय को अच्छी लगने वाली। **तिरोहिता** = छिपी हुई। **गीर्वाण** = देवता। **भाविता** = प्रभावित। **समाम्नाता** = कही गयी है। **शुनि** = कुत्ते में। **आपणम्** = बाजार। **श्वपाके** = चाण्डाल में। **प्रोतम्** = पिरोया हुआ। **निबध्येत** = बँध जाय। **काष्ठभारम्** = लकड़ी के भार को। **बाधते** = पीड़ा पहुँचाता है। **कनकमयी** = सोने की। **उदाहरिष्यामि** = बोलूँगा। **द्विजातिः** = ब्राह्मण। **त्रिधा** = तीन प्रकार से। **प्राचुर्यम्** = अधिकता को। **श्रुति** = सुनने में। **विन्यासः** = क्रम, प्रयोग। **एतादृशाः** = इस प्रकार। **क्षतिः** = हानि। **शेवधिः** = धन। **श्रावं श्रावम्** = सुन–सुनकर। **वाङ्मयाध्वनीनाः** = साहित्यमार्गीय। **गरीयसी** = भारी। **समदर्शिनः** = समानभाव से देखने वाला। **तिरोहिताः** = छिपी हुई। **यतनीयम्** = प्रयत्न करना चाहिए।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु कीदृशी अस्ति ?

(ख) संस्कृतभाषा केन नाम्ना समाम्नाता ?

(ग) पुरा काले संस्कृतभाषा केषां वाग्व्यवहारभाषा आसीत् ?

(घ) संस्कृतं विना कस्य पाठः निरर्थकं प्रतीयते ?

(ङ) संस्कृतभाषायाः सुरक्षायाः उत्तरदायित्वं कुत्र आपतितम् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मां रावणं मन्यमाना का भीता भविष्यति ?

(ख) संस्कृतभाषा शाखा–प्रशाखारूपे कस्मिन् तिरोहिता वर्त्तते ?

(ग) विश्वप्राचीनतमा चत्वारो वेदाः कस्यां भाषायां लिखिताः ?

(घ) कस्याः भाषायाः साहित्यं सुविशालं विद्यते ?

(ङ) संस्कृतसाहित्यं त्रिधा केन रूपेण विभक्तम् ?

3. अधोलिखितशब्दानां वाक्यप्रयोगं कुरुत–

एकता, जननी, सुमधुरा, नृपः, रामायणम्

4. गद्यांशस्य अनुवादं हिन्दीभाषया कुरुत–

(क) संस्कृतभाषा .... भाषा आसीदिति।

(ख) अन्यासु भाषासु .... न कापि क्षतिः।

(ग) भारतीयधर्म इव .... घोषयति इयं भाषा।

(घ) संस्कृतं विना .... परमावश्यकमस्ति।

5. पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

6. अनुच्छेदं पठित्वा उचितपदं चिनुत–

(अ) संस्कृतभाषा .... सीता भीता भविष्यति।

(i) संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु ....।

(क) नवीनतमा (ख) प्राचीनतमा (ग) अलौकिकी (घ) पारलौकिकी

(ii) संस्कृतभाषा पुराकाले .... वाग्व्यवहारभाषा आसीत्।

(क) अरण्यवासिनः (ख) नगरवासिनः (ग) सर्वसाधारणजनानाम् (घ) लोकव्यवहारस्य

(iii) रामस्य प्रियसेवकः हनुमान् .... मुद्रां सीतायै दातुमिच्छति।

(क) धातुमयीम् (ख) रजतमयीम् (ग) कनकमयीम् (घ) पीतवर्णाम्

(आ) भारतीय धर्म इव .... स्वतन्त्रे भारते आपतितम्।

(i) केचन धर्मान्धाः राजनीतिभावनाभाविताः भारतस्य .... अभिलषन्ति।

(क) विभाजनम् (ख) खण्डनम् (ग) अभ्युदयम् (घ) विनाशम्

(ii) जननी जन्मभूमिश्च .... गरीयसी।

(क) पातालादपि (ख) स्वर्गादपि (ग) पर्वतादपि (घ) भूलोकादपि

(iii) संस्कृतं विना एकतायाः अखण्डतायाः पाठः .... एव प्रतीयते।

(क) सार्थकः (ख) निरर्थकः (ग) समीचीनः (घ) अनुपयुक्तः

(iv) वेदानां कति अङ्गानि सन्ति ?

(क) त्रीणि (ख) पञ्च (ग) षड् (घ) सप्त

(v) चार्वाक् जैन–बौद्धेति .... शास्त्राणि सन्ति।

(क) आस्तिकदर्शन (ख) नास्तिकदर्शन (ग) पाश्चात्यदर्शन (घ) उक्तानि सर्वाणि

7. बहुविकल्पीयप्रश्नाः–

(i) संस्कृतभाषा भारतस्य .... ।

(क) निधिः (ख) गरिमा (ग) शोभा (घ) सुषमा

(ii) पुरा दशरथो नाम .... अयोध्यायाम् आसीत्।

(क) द्वारपालः (ख) सेवकः (ग) राजा (घ) पुरोहितः

(iii) श्रीहर्षप्रभृतयः कवयः लेखकाः च .... वर्धयन्ति।

(क) सम्मानम् (ख) गौरवम् (ग) प्रतिष्ठाम् (घ) मर्यादाम्

आन्तरिकं मूल्याङ्कनम्

संस्कृत वाङ्मय के कवियों व उनकी रचनाओं का चार्ट तैयार कीजिए (जो पाठ में आए हुए हैं।)

■

अष्टमः पाठः

मदनमोहनमालवीयः

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ में विश्वविश्रुत व्यक्तित्व के धनी श्री मदनमोहन मालवीय की जीवनी पर प्रकाश डाला गया है। उनका जन्म 25 दिसम्बर 1861 ई0 में प्रयाग के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा-दीक्षा प्रयाग में ही स्थित एक संस्कृत पाठशाला में सम्पन्न हुई। मालवीय जी ने म्योर सेन्ट्रल कॉलेज (आधुनिक इलाहाबाद विश्वविद्यालय) से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। अनन्तर इनके द्वारा एल0 एल0 बी0 की परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रयाग स्थित हाईकोर्ट में अधिवक्ता के रूप में कार्य भी किया गया। महात्मा गाँधी ने इन्हें सर्वप्रथम 'महामना' उपाधि से सम्बोधित किया था। मालवीय जी द्वारा प्रयाग में मैक्डोनेल (मैक्डॉनेल) हिन्दू छात्रावास और मिण्टोपार्क तथा वाराणसी में सन् 1916 ई0 में विश्वप्रसिद्ध काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी। इनके द्वारा 'हिन्दुस्तान दैनिक पत्र' का सम्पादन कार्य भी किया गया। मालवीय जी ने अपने विविध कार्यों द्वारा देश की स्वतंत्रता में भूरिशः सहयोग प्रदान किया।

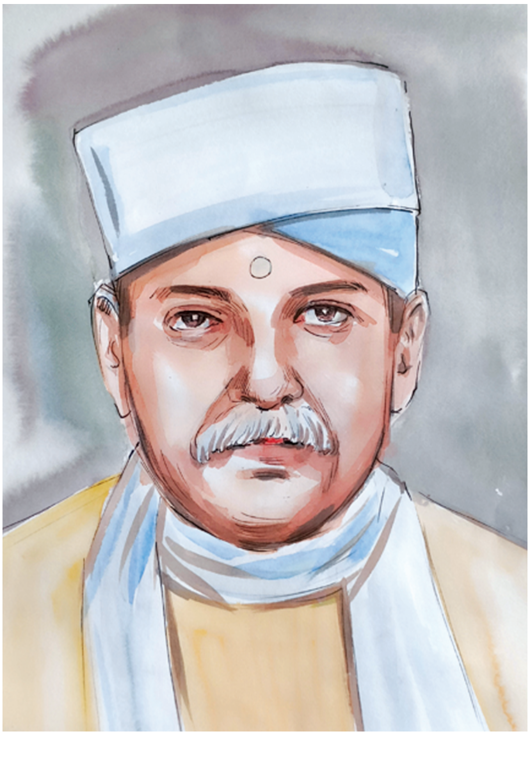

पण्डितमदनमोहनमालवीयस्य जन्म एकषष्ट्युत्तराष्टादशशततमे ख्रिष्टाब्दे दिसम्बरमासस्य पञ्चविंशतितमे दिनाङ्के (25.12.1861) तीर्थराजप्रयागे अभवत् अस्य जनकः पण्डितव्रजनाथचतुर्वेदः संस्कृतभाषायाः विश्रुतो विद्वानासीत्। निर्धनोऽपि धर्मकर्मणि सततरतोऽयं विद्वान् समाजे समादृत आसीत्। एतस्य पूर्वजा मालवदेशादागत्योत्तरभारते न्यवसन्नतस्ते 'मालवीय' इति पदेन सम्बोध्या अभवन्।

मदनमोहनमालवीयस्य प्रारम्भिकी शिक्षा प्रयागे एवैकस्यां संस्कृतपाठशालायां जाता। संस्कृताध्ययनेन बाल्य एव तस्य मनसि भारतीयादर्शचरितानां कृते भारतीयसंस्कृतेश्च कृते बह्वादरः समजायत। स्मृतिपुराणमहाभारत-भागवतादिभारतीयग्रन्थानामनुशीलनेन भारतदेशं प्रति तस्य हृदि श्रद्धा समुत्पन्ना। दुःखतप्तानां प्राणिनामर्तिनाशनं स कामयते स्म। अतः

बाल्यकाले एव तस्य हृदि देशभक्तेः मानवसेवायाः– मानवजीवनस्याभ्युदयस्य बीजान्युप्तानि जातानि यानि काले विकसितभूतानि फलितानि। कालान्तरे सः प्रयागे प्रथमसंस्थापिते राजकीयहाईस्कूलनाम्नि विद्यालये पठन् 'इन्ट्रेन्स' परीक्षामुदतरत्। ततः म्योरसेन्ट्रलकॉलेजेऽधीयानः बी० ए० परीक्षायाः पारं गतः। पञ्चविंशतिवर्षीयस्य यूनः मालवीयस्य मनोहारिण्याः शैल्याः विशदविचारान् संसृत्य नेतारः इतरे चोपस्थिताः जनाः देशसेवकाश्च चकिता अभवन्। एकेनैव भाषणेनासौ राष्ट्रस्थानां नेतॄणां पङ्क्तौ स्वमुपावेशयत्। तस्याध्ययनस्य तस्य सदाशयतादिगुणानां तस्य च विनयस्येदं प्रतिफलमासीत्। तत्रैव प्रतापगढस्थ–कालाकाँकरस्य देशभक्तो राजारामपालसिंहस्तस्य वैशिष्ट्येनाकृष्टः 'हिन्दुस्तान' दैनिकपत्रस्य सम्पादनायानुरोधं कृतवान्।

'हिन्दुस्तान' इति पत्रस्य सम्पादनं कुर्वता मालवीयमहोदयेन शिक्षायां राष्ट्रियभावस्य हिन्दी-भाषायाश्च दृढतया प्रचारः कृतः। न्यायालयेषु हिन्दीभाषायाः प्रयोगनिर्णये मालवीयमहोदयस्य विशिष्टमवदानं विद्यते।

राष्ट्रसेवाकर्मणि निरतोऽपि महामनामालवीयोऽन्येष्वपि रचनात्मककर्मसु प्रवृत्त आसीत्। प्रयागे जनान् धनं याचित्वा हिन्दूछात्रावासस्य निर्माणमसौ अकारयत्। तस्यैवोद्योगेन प्रयागस्य प्रख्यातस्य मिण्टोपार्क इत्यस्यापि निर्माणं जातम्। समग्रे च देशे शिक्षायाः ह्रासदशामवलोक्या–शिक्षैवास्माकं पारतन्त्र्यस्य हेतुरिति सोऽमन्यत। अतो देशस्योन्नत्यै क्रियमाणैरन्यैरुद्योगैः सह शिक्षायाः विकासायापि प्रयत्नो विधेय इति तस्य दृढा मतिरासीत्। सततं चिन्तयन् सः काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापनायाः संकल्पं हृदि निदधौ। षोडशोत्तरैकोनविंशतिशततमे वर्षे (1916) वसन्तपञ्चमीपर्वदिने काश्यां पुण्यसलिलायाः गङ्गायास्तटे लोकोत्तरमिदं कार्यं संवृत्तम्। भिक्षावृत्या जनान्, श्रेष्ठिनो, राज्ञो, महाराजान्, वैदेशिकशासनमपि धनं याचित्वा विश्वविद्यालयस्य संस्थापनं तस्यापूर्वमनोबलस्य संकल्पदृढतायाश्च द्योतकं वर्तते। पञ्चक्रोशपरिमिते क्षेत्रेऽभिव्याप्ते विश्वविद्यालयपरिसरे निर्मितानि विविधविद्या-महाविद्यालयभवनानि दृष्ट्वा कस्य वा भारतीयस्य मनो नाऽह्लादते को वा वैदेशिको विस्मितो न जायते।

अस्मिन् विश्वविद्यालयेऽध्ययनरताश्छात्राः भारतीयां संस्कृतिं धर्मदर्शनमितिहासं च न विस्मरेयुरिति तस्य प्रयासोऽभूत्। अतोऽध्यापनावसरे भारतीयाचारान् स छात्रानशिक्षयत्। स भारतीयस्वातन्त्र्यमपि भारतीयतामधिकृत्यैव भवेदिति कामयते स्म।

विश्वविद्यालयस्य स कुलपतिपदमपि अलङ्कृतवान्। कुलपतिपदमलङ्कुर्वन् स छात्रान् प्रियपुत्रानिवामन्यत। अर्थसङ्कटे देहसङ्कटे वा ग्रस्तः कश्चित् छात्र इति ज्ञात्वा तस्य सङ्कटमचिरमसौ पितृवदपानयत् कुलपतिस्तु स पदेनासीत् व्यवहारेण च कुलपिता अभवत्।

ब्रिटिशशासनप्रयुक्तकुटिलनयेनोत्थितो झञ्झावातो मालवीयमहोदयस्य मनःस्थितभारतस्य चित्रं विकृतमकरोत्। कुटिलराजनीतिमुग्धा धर्मम्प्रति भ्रान्ताः नेतारो तथा ताण्डवमरचयन्

तत्स्मृत्वाऽद्यापि हृदयं प्रकामं प्रकम्पते। सहस्रशः प्राणास्तदनले हुताः। सहस्रशो जनाः गृहहीनाः जाताः। लक्षाधिकाः शरणार्थिनोऽभवन्। मालवीयमहोदयस्य चित्तमतर्क्यं तद्दुःखं सोढुं नाशक्नोत्। विश्वविद्यालयस्थे कुलपतिभवने स प्राणानत्यजत्। मालवीयमहोदयस्य विपुलं यशः विश्वविद्यालयरूपेण जगति शाश्वतं स्थास्यति।

शब्दार्थः

कान्तिमयम् = कान्ति से परिपूर्ण। **वपुः** = शरीर। **धवलम्** = श्वेत या सफेद। **परिधानम्** = वस्त्र। **लम्बितम्** = लटकता हुआ। **उत्तरीयम्** = दुपट्टा। **शिरसि** = सिर पर। **उष्णीषम्** = पगड़ी। **ललाटे** = मस्तक पर। **कुङ्कुमगर्भित** = कुङ्कुम से युक्त। **उपानहौ** = जूते। **विमलत्वम्** = निर्मलता को। **निदर्शयन्ति स्म** = प्रकट करते थे। **वस्तुतस्तु** = वास्तव में। **रूपायिता** = साकार। **एकषष्ट्युत्तराष्टादशशततमे** = 1861 में। **ख्रिष्टाब्दे** = ईस्वी में। **पञ्चविंशतिः** = 25 (पच्चीस)। **जनकः** = पिता। **समादृतः** = प्रतिष्ठित। **विश्रुतः** = प्रसिद्ध (विख्यात)। **मनसि** = मन में। **बह्वादरः** = अत्यधिक आदर। **समजायत** = उत्पन्न हो गया था। **समुत्पन्नम्** = उत्पन्न हो गयी। **आर्तिनाशनम्** = दुःख को नष्ट करना। **कामयते स्म** = चाहते थे। **उप्तानि** = बोये गये। **उदतरत्** = उत्तीर्ण किया। **अर्थकार्श्यम्** = धन की कमी (निर्धनता) **संघाते** = समूह में। **अध्यापनवृत्तिः** = अध्यापनकार्य (जीविका)। **अवलम्ब** = आधार बनाकर। **यूनः** = युवा का। **संश्रुत्यः** = सुनकर। **उपावेशयत्** = बैठा दिया। **अतिरिच्य** = अतिरिक्त या छोड़कर। **तदानीम्** = उस समय। **अवदानम्** = योगदान। **कुर्वन्** = करते हुए। **अनुभूतवान्** = अनुभव किया। **दैन्यम्** = दीनता। **नारमत** = नहीं लगा। **अनुसृत्य** = अनुसरण करके। **अहोभिः** = दिनों में। **ख्यातिमवाप** = प्रसिद्धि प्राप्त किया। **मृषावादान्** = झूठे मुकदमों को। **निरतानां कृते** = संलग्नों के लिए। **संतिष्ठते** = ठहरा है। **भृशमदूयत** = अत्यन्त दुःखी हुआ। **शृङ्खलामुच्छिद्य** = जंजीर को काटकर। **त्रिवारम्** = तीन बार। **उत्तुङ्गम्** = ऊँचा। **अवोचत्** = कहा। **सन्धिवार्ताम्** = समझौते की बात को। **याचित्वा** = माँगकर। **अकारयत्** = कराया। **क्रियमाणैः** = किये जाते हुए। **विधेयः** = करना चाहिए। **निदधौ** = धारण कर लिया। **द्योतकम्** = सूचक। **नाह्लादते** = आह्लादित नहीं होता। **इयति** = इतने। **निष्णाताः** = पारंगत। **अश्रावयत्** = सुनाया। **अलङ्कृतवान्** = सुशोभित किया। **अमन्यत** = मानते थे। **पितृवदपानयत्** = पिता के समान दूर करते हुए। **निदर्शनम्** = उदाहरण। **पुरः** = सम्मुख। **गुरुः** = भारी। **विहितः** = किया। **कुटिलनयेन** = कुटिलनीति से। **प्रकामम्** = अत्यधिक। **अनले** = अग्नि में। **हुताः** = जल गये (स्वाहा हो गये)। **लक्षाधिकाः** = लाखों से अधिक। **सोढुम्** = सहने के लिए (सहन)। **विपुलम्** = विशाल। **जगति** = संसार में। **शाश्वतम्** = सदैव। **स्थास्यति** = स्थित रहेगा।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) पण्डितमदनमोहनमालवीयस्य पितुः नाम किम् ?

(ख) मालवीयमहोदयं प्रति कः 'हिन्दुस्तान' इति दैनिकपत्रस्य सम्पादनाय अनुरोधं कृतवान् ?

(ग) महात्मना गान्धिना सः केन उपाधिना विभूषितः ?

(घ) काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापना कदा अभवत् ?

(ङ) मिण्टोपार्क इति उद्यानस्य निर्माणं कुत्र अभवत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) मालवीयमहोदयस्य जन्म कदा कुत्र च अभवत् ?

(ख) विवेकशालिनां वैशिष्ट्यं किम् ?

(ग) पत्राणां सम्पादनावसरे प्रकटिता अस्य विचाराः कथमभवन् ?

(घ) केन कारणेन महात्मा गान्धी तं 'महामना' इत्यवोचत् ?

(ङ) तेन काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापनायाः मुख्योद्देश्यं किमासीत् ?

3. रेखाङ्कितपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) सः राजकीयहाईस्कूलनाम्नि विद्याालये पठन् **'इण्ट्रेन्स'** परीक्षामुदतरत्।

(ख) मालवीयमहोदयस्य विपुलं यशः विश्वविद्यालयरूपेण जगति **शाश्वतं** स्थास्यति।

(ग) **सहस्रशो** जनाः गृहहीनाः जाताः।

(घ) स्वकार्येण स्वविचारेण चासौ कांग्रेसदलस्य **त्रिवारं** सभापतिपदमलङ्कृतवान्।

4. अधोलिखितगद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत–

(क) पण्डितमदनमोहनमालवीयस्य .... सम्बोध्या अभवन्।

(ख) 'हिन्दुस्तान' इति पत्रस्य .... विशिष्टमवदानं विद्यते।

(ग) अस्मिन् विश्वविद्यालयेऽध्ययनरताश्छात्राः .... कामयते स्म।

(घ) राष्ट्रसेवाकर्मणि निरतोऽपि .... इति तस्य दृढा मतिरासीत्।

(ङ) काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य .... झञ्झावात समुत्थितः।

5. 'मनदमोहनमालवीयः' इति पाठस्य सारांशं लिखत।

6. अनुच्छेदसम्बन्धिबहुविकल्पीयप्रश्नाः समाधेयाः–

(अ) पण्डितमदनमोहनमालवीयस्य .... सम्बोध्या अभवन्।

(1) प्रस्तुतगद्यांशस्य पाठनाम किम् ?

(क) दीनबन्धुज्योतिबाफुले (ख) मदनमोहनमालवीयः

(ग) लोकमान्यतिलकः (घ) विश्वकविरवीन्द्रः

(2) मदनमोहनमालवीयस्य जन्म कदा अभवत् ?

(क) 25 दिसम्बर, 1860 (ख) 25 दिसम्बर, 1861

(ग) 24 दिसम्बर, 1861 (घ) 25 दिसम्बर, 1862

(3) मदनमोहनमालवीयस्य पितुः नाम किमासीत् ?

(क) पण्डितधीरेन्द्रचतुर्वेदः (ख) पण्डितसिद्धनाथचतुर्वेदः

(ग) पण्डितव्रजनाथचतुर्वेदः (घ) पण्डितदीनानाथचतुर्वेदः

(ब) राष्ट्रसेवाकर्मणि निरतोऽपि .... संकल्पं हृदि निदधौ।

(1) प्रयागे जनान् धनं याचित्वा मालवीयः निर्माणमकरोत्–

(क) मिण्टोपार्क इत्यस्य (ख) काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य

(ग) हिन्दूछात्रावासस्य (घ) केन्द्रीयपुस्तकालयस्य

(2) मिण्टोपार्क इति उद्यानस्य निर्माणं कुत्र अभवत् ?

(क) काश्याम् (ख) प्रयागे

(ग) प्रतापगढे (घ) कौशाम्ब्याम्

(3) मालवीयः कस्य विश्वविद्यालयस्य संस्थापनायाः सङ्कल्पं हृदि निदधौ ?

(क) इलाहाबादविश्वविद्यालस्य (ख) काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य

(ग) जवाहरलालनेहरूविश्वविद्यालस्य (घ) लखनऊविश्वविद्यालस्य

7. अधोलिखितप्रश्नेषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समीचीनमुत्तरं चिनुत–

(1) मदनमोहनमालवीयस्य पूर्वजाः कुतः आगत्य उत्तरभारते न्यवसन् ?

(क) बङ्गदेशात् (ख) कुरुदेशात् (ग) मालवदेशात् (घ) आन्ध्रप्रदेशात्

(2) मालवीयः कुत्राधीयानः बी0 ए0 इति परीक्षायाः पारं गतः ?

(क) राजकीयहाईस्कूलनाम्नि विद्यालये (ख) म्योरसेन्ट्रलकॉलेज इति महाविद्यालये

(ग) काशीहिन्दूविश्वविद्यालये (घ) पुणेविश्वविद्यालये

(3) काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापना कस्याः नद्याः तटे अभवत् ?

(क) यमुनानायाः (ख) गङ्गायाः (ग) गोदावर्याः (घ) कावेर्याः

(4) मालवीयः काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य .... अलङ्कृतवान् ?

(क) अध्यापकपदम् (ख) कुलपतिपदम् (ग) मार्गदर्शकपदम् (घ) कुलानुशासकपदम्

■

नवमः पाठः

जीवनं निहितं वने

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ में वनों के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। प्राचीनकाल से ही मनुष्यादि प्राणियों का वन से गहरा सम्बन्ध रहा है। वनों का हमारे भौतिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है क्योंकि आरण्यक, उपनिषद् आदि ग्रन्थों का निर्माण भी इन्हीं वनों में हुआ था। हमारे पूर्वजों द्वारा वनों (वृक्षों) को पुत्रवत् स्नेह प्राप्त होता था। आज भी इसी भाव को हृदयङ्गम करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को वृक्षारोपण एवं उनका संरक्षण करना चाहिए। यद्यपि मनुष्यों को गृहनिर्माणादि विविध कार्यों के लिए काष्ठों (लकड़ियों) की आवश्यकता होती है, तथापि इन कार्यों हेतु वही वृक्ष काटे जाने चाहिए जिससे पर्यावरण संतुलन अव्यवस्थित न हो तथा भूमिगत जलाभाव, वैश्विक तापमान एवं पर्यावरण प्रदूषण आदि समस्याएँ उत्पन्न न हों।

वनमिति शब्दः श्रुतमात्र एव ईदृशी कल्पना आयाति यद् तत्र सिंहव्याघ्रादयो भयानका हिंस्रकाः पशवोऽजगरादयो विशालाश्च सरीसृपाः वसन्ति, परन्तु अस्माकं न केवलं भौतिके प्रत्युत सांस्कृतिकेऽपि विकासे वनानां सुमहान् दायो आरण्यकोपनिषदादयः परविद्याविवेचकाः ग्रन्थाः वनेष्वेवाविर्भूताः। प्राक्तनैस्तु वनं विना जीवनमेव न परिकल्पितं संस्कृतकवीनां वनदेवताकल्पना वानप्रस्थाश्रमे च वननिवासविधानं तदेव सङ्केतयति। एतदपि बोध्यं यत् प्रत्यक्षतो वनानि मनुजजात्यै यावद् ददति परोक्षतस्तु ततोऽप्यधिकम्, तस्मादेव कारणात् प्राञ्चः स्वपुत्रकानिव पादपान् पालयन्ति स्म जन्तूंश्च रक्षन्ति स्म।

किन्तु हन्त! विवृद्धलोभो मानवस्तात्कालिकाल्पलाभहेतोः वनानि तथा अकर्तीत् चङ्कृन्तति च यत्तस्य निजजीवनस्यैव नैकधा भीरुपस्थिता। जानात्येव लोको यज्जीवनमन्नमयम्, अन्नं च कृष्योत्पाद्यम्, कृषिविकासार्थं समुचितं वातावरणं घटयितुं प्राकृतिकं सामञ्जस्यं च रक्षितुं वनानामद्यत्वे महती आवश्यकता पुराऽन्वभूयत्। यतोऽहर्निशं विद्यमानानां वनानां तावानेवांशोऽविशिष्टः यावान् भारतभूभागस्य प्रतिशतं केवलमेकादशमंशमावृणोति, भद्रमिदं यदधुना संसारस्य सर्वेष्वपि राष्ट्रेषु वनानां रक्षार्थं प्रयासाः क्रियन्ते। भारतेऽपि सर्वकारेण तदर्थं जनं प्रबोधयितुमेकमान्दोलनमेव चालितं यदधीनं समये-समये नैकत्र वनमहोत्सवा आयोज्यन्ते, व्यक्तयः सार्वजनीनाः संस्थाश्चापि वृक्षान् रोपयितुं प्रोत्साह्यन्ते।

वनसंघटकास्तावद् द्विविधा वनस्पतयः सविहगा जन्तवश्च, उभयस्मादपि मानवस्य लाभस्तद् द्वयमपि च यथायोग्यं रक्षणीयम्। वृक्षेभ्यो न केवलं फलानि, पुष्पाणि, इन्धनार्हाणि भवनयोग्यानि

च काष्ठानि अपितु भैषज्यसमुचितानि नानाप्रकाराणि वल्कलमूलपत्राणि वस्तून्यपि लभ्यन्ते, नानाविधौद्योगिकोत्पादन-समुचितानि जैतूनि तैलानि तदितरद्रवपदार्थाश्चापि प्राप्यन्ते। स्वास्थ्यकरं मधुरं सुस्वादु औषधभोजनं मधु अपि वनस्पतिभ्यः एवोपलभ्यन्ते। कर्गदस्येव नाइलोन इति प्रसिद्धस्य उत्तमपटनिर्मितिप्रयुक्तस्य सूत्रस्योत्पादनेऽपि वृक्षविशेषाणां काष्ठमुपादानं जायते। तेषां शाखानामुपयोगो मञ्जूषापेटिकादिनिर्माणे क्रियते। संप्रति यावद् वनानां या हानिः कृता तत्पूर्त्यर्थं हरितवृक्षाणां कर्तनावरोधो नूतनानां प्रतिदिनमधिकाधिकारोपणञ्च सर्वेषामपि राष्ट्रियं कर्त्तव्यम्। वायुशुद्धिः, भूक्षरणनिरोधः पर्जन्यसाहाय्यं च वनानां मानवस्य जीवनप्रदः परोक्ष उपकारः।

यथा वृक्षाणामुच्छेदस्तथैव मानवेन वन्यजन्तूनामप्यमानवीयो विनाश आचरितः। चर्मदन्तपक्षादिलोभेन मांसलौल्येन च पशुपक्षिणां तावान् वधः कृतो यदनेकास्तेषां प्रजातयः भूतलाद् विलुप्ताः, नैकाश्च लुप्तप्रायाः। सिंहव्याघ्रादीनां तु दूरम् एवास्तां कथा, हरिणादि–मुग्धपशून् तित्तिरादिकान् उपयोगिनः पक्षिणोऽपि निघ्नन्नासौ विरमति। हिंस्रकाः जन्तवोऽपि प्राकृतिकं संतुलनं रक्षन्ति मनुष्यस्य चोपकारका एव भवन्ति। पक्षिणः कृषिहानिकरान् कीटान् भक्षयन्ति यथा तित्तिरः सितपिपीलिकाः तथैव सिंहादयः पशून् हत्वा परिसीमयन्ति। एवं स्वतः एव प्रकृतिः संतुलनं साधयति। एवमद्यानुभूयते यत् मनुष्यस्य तदितरेषां प्राणिनां च मध्ये सौहार्दं स्थापनीयम्। तत्र मनुष्य एव प्रथमः प्रबोधनीयः शिक्षणीयश्च यतः स निरर्थकं मनोरञ्जनायापि मृगया क्रीडन् हिंसां करोति। अस्माकं विशाले भारतवर्षे सार्धद्वादशशतजातीयाः पक्षिणः प्राप्यन्ते। तेषु बहवः ऋतुपरिवर्तनकारणात्, प्रजननहेतोर्भोजनस्य दुष्प्राप्यत्वात् काले-काले परत्र व्रजन्ति। एवमेव देशान्तरादपि बहवः पक्षिणोऽत्रागत्य प्रवासं कुर्वन्ति। रूसप्रदेशस्य साइबेरियाप्रान्तात् सहस्रशो विहगाः शीतकाले भारतस्य भरतपुरनिकटस्थे घानापक्षिविहारम् प्रयागस्थितं गङ्गायमुनासङ्गमं च आगच्छन्ति। पक्षिणां मैत्रीभावः, दाम्पत्यम्, मिथो व्यापाराः, भोजनविधयः, नीडनिर्माणं विपदि आचरणं सर्वमपि प्रेक्षं प्रेक्षमध्येयं भवति तन्न केवलं मनोरञ्जकमपितु शिक्षाप्रदमात्मानन्दजनकं चापि भवति।

यथा मधुमक्षिका पुष्पाणां हानिं विनैव मधु नयति तथैव भवननिर्माणाय अन्यकारणाद् वा काष्ठं काम्यत एव, किन्तु पुरातना एव वृक्षा योजनां निर्माय कर्त्तनीयाः न नूतनाः। यावन्तः कर्त्तनीयास्तद्द्विगुणाश्च पूर्वत एव आरोपणीयाः। गृहाणां प्राङ्गणेषु केदाराणां सीमसु पर्वतानामुपत्यकासु, मार्गानुभयतः क्रीडाक्षेत्राणि परितश्च यत्रापि यावदपि स्थलं विद्यते तत्र यथानुकूल्यं विविधाः वृक्षाः रोपणीयाः। प्रत्येकं देशवासिनैवमेव विधेयं, प्रत्येकं जन्म मृत्युर्विवाहश्च वृक्षारोपणेनानुसृतः स्यात्।

वनेन जीवनं रक्षेत् जीवनेन वनं पुनः।
मा वनानि नरश्छिन्देत् जीवनं निहितं वने।।

शब्दार्थः

ईदृशी = इस प्रकार। **आयाति** = आती है। **हिंस्रकाः** = हिंसक। **सरीसृपाः** = सर्प आदि सरकने वाले प्राणी। **प्रत्युत** = बल्कि। **दायः** = योगदान (हिस्सा)। **प्राक्तनैः** = प्राचीनों के द्वारा। **ददति** = देते हैं। **पादपान्** = वृक्षों को। **हन्त!** = खेद है। **विवृद्धलोभः** = बढ़ती हुई लालचवाला। **अचीकृन्तत्** = काट डाला। **चङ्कृन्तति** = काट रहा है। **नैकधा** = अनेक बार। **भीः** = भय। **रक्षितुम्** = रक्षा करने के लिए। **महती** = महान् (अत्यन्त)। **अहर्निशम्** = दिनरात। **तावान्** = उतना। **सर्वकारेण** = सरकार के द्वारा। **नैकत्र** = अनेक स्थानों पर। **सविहगाः** = पक्षियों सहित। **जतूनि** = लाख। **कर्गदस्य** = कागज के। **काष्ठम्** = लकड़ी। **मञ्जूषा** = सन्दूक। **सम्प्रति** = इस समय। **कर्तनावरोधः** = काट की रुकावट। **पर्जन्यः** = बादल। **लौल्येन** = लालच से। **भूतलाद्** = पृथ्वी से। **निघ्नन्** = मारने में। **नीडनिर्माणम्** = घोसला बनाया। **प्राङ्गणेषु** = आँगनों में। **केदाराणाम्** = खेतों की। **परितः** = चारों ओर।

अभ्यासकार्यम्

1. **एकपदेन उत्तरत–**

(क) आरण्यकोपनिषदादयः पराविद्याविवेचकाः ग्रन्थाः कुत्र आविर्भूताः ?

(ख) प्राञ्चः पादपान् कथं पालयन्ति स्म ?

(ग) वृक्षशाखानामुपयोगः कस्य निर्माणे क्रियते ?

(घ) घानापक्षिविहारे विहगाः कुतः आगच्छन्ति ?

(ङ) प्रत्येकं जन्म मृत्युर्विवाहश्च कथम् अनुसृतः स्यात् ?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) 'प्राक्तनैः वनं विना जीवनमेव न परिकल्पितम्' इत्यस्य पुष्टिः कथं भवति ?

(ख) वृक्षेभ्यः कानि वस्तूनि लभ्यन्ते ?

(ग) वनानां मानवस्य जीवनप्रदः परोक्ष उपकारः कः ?

(घ) यथानुकूल्यं विविधाः वृक्षाः कुत्र रोपणीयाः ?

3. **रेखाङ्कितपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(क) **<u>वनेन</u>** जीवनं रक्षेत्।

(ख) **<u>वनसंघटकाः</u>** द्विविधा वनस्पतयः सविहगाः जन्तवश्च।

(ग) **<u>तेषां</u>** शाखानामुपयोगो मञ्जूषापेटिकादिनिर्माणे क्रियते।

(घ) जीवनं निहितं **<u>वने</u>**।

4. **अधोलिखितगद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत–**

(क) प्राक्तनैस्तु .... रक्षन्ति स्म।

(ख) वनसंघटकास्तावद् द्विविधा .... वनस्पतिभ्यः एवोपलभ्यते।

(ग) यथा वृक्षाणामुच्छेदस्तथैव .... हत्वा परिसीमयन्ति।

(घ) यथा मधुमक्षिका .... वृक्षारोपणेनानुसृतः स्यात्।

5. 'जीवनं निहितं वने' इति पाठस्य सारांशं लिखत।

6. अनुच्छेदसम्बन्धि–बहुविकल्पीयप्रश्नाः समाधेयाः।

(क) विवृद्धलोभो मानवः..................क्रियन्ते।

(i) जानात्येव लोकः यज्जीवनं ....भवति।

(क) मृण्मयम् (ख) स्वर्णमयम् (ग) अन्नमयम् (घ) गोमयम्

(ii) विश्वस्य सर्वेष्वपि राष्ट्रेषु केषां रक्षार्थं प्रयासाः क्रियन्ते।

(क) जनानाम् (ख) वनानाम् (ग) फलानाम् (घ) पशूनाम्

(iii) अद्यत्वे केषां महती आवश्यकता वर्तते?

(क) भवनानाम् (ख) जनानाम् (ग) वनानाम् (घ) विघ्नानाम्

(ख) एवमेव देशान्तरादपि ....चापि भवति।

(i) अस्य गद्यांशस्य पाठनाम किम्?

(क) उद्भिज्ज-परिषद् (ख)जीवनं निहितं वने

(ग) गुरुनानकदेवः (घ) नैतिकमूल्यानि

(ii) साइबेरियाप्रान्तः कस्मिन् देशे विद्यते?

(क) अमेरिकादेशे (ख) रूसदेशे (ग) भारतदेशे (घ) बङ्गदेशे

(iii) साइबेरियाप्रान्तात् विहगाः कदा घानापक्षिविहारम् आगच्छन्ति?

(क) ग्रीष्मकाले (ख) वर्षाकाले (ग) वसन्तकाले (घ) शीतकाले

7. अधोलिखित प्रश्नेषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समीचीनमुत्तरं चिनुत–

(i) भारतभूभागस्य कति प्रतिशतम् अंशं विद्यमानैः वनैः आव्रियते?

(क) द्वादशांशम् (ख) एकादशांशम् (ग) दशांशम् (घ) त्रयोदशांशम्

(ii) पराविद्याविवेचकाः ग्रन्थाः कुत्र आविर्भूताः?

(क) प्रसादेषु (ख) गृहेषु (ग) वनेषु (घ) स्थलेषु

(iii) भारतस्य भरतपुरनिकटस्थे कः पक्षिविहारः वर्तते?

(क) सलीम–अली–पक्षिविहारः (ख)घानापक्षिविहारः

(ग) नागरहोलपक्षिविहारः (घ) रंगानाथपक्षिविहारः

(iv) यावन्तः वृक्षाः कर्त्तनीयाः तद् कतिगुणाः पूर्वतः एव आरोपणीयाः?

(क) त्रिगुणाः (ख) द्विगुणाः (ग) चतुर्गुणाः (घ) पञ्चगुणाः

(v) मधुमक्षिका पुष्पाणां हानिं विनैव किं नयति?

(क) फलम् (ख) जलम् (ग) मधु (घ) पत्रम्

■

दशमः पाठः

लोकमान्यः तिलकः

पाठपरिचयः

लोकमान्य बालगङ्गाधर तिलक, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के आन्दोलन कर्ताओं में अग्रगण्य थे। ''स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' का नारा देकर तिलक जी ने भारतीय जनमानस को अंग्रेजी शासन की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने को प्रोत्साहित किया। देश की स्वतंत्रता के लिये ये अनेक बार जेल भी गए। 'मराठा' और 'केसरी' नामक पत्रिकाओं के सम्पादन द्वारा, इन्होंने भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना का सञ्चार किया। जेल में 'गीतारहस्य' लिखकर भारतीय जनमानस को कर्म की ओर प्रेरित किया। गणित एवं संस्कृत में इनकी असामान्य गति थी। ज्योतिषीय प्रमाणों के आधार पर ऋग्वेद का काल निर्धारण एवं आर्यों के मूल स्थान की अवधारणा, इनके व्यापक चिन्तन और शोध परक अध्ययन का परिचायक है। प्रस्तुत पाठ में हम तिलक जी के जीवन का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे।

लोकमान्यो बालगङ्गाधरतिलको नाम मनीषी भारतीयस्वातन्त्र्ययुद्धस्य प्रमुखसेनानीष्वन्यतम आसीत्। 'बालः' इति वास्तविकं तस्याभिधानम्। पितुरभिधानं 'गङ्गाधरः' इति वंशश्च 'तिलकः' एवञ्च 'बालगङ्गाधरतिलकः' इति सम्पूर्णमभिधानं किन्तु 'लोकमान्य' विरुदेनासौ विशेषेण प्रसिद्धः। यद्यप्यस्य जन्मनाम 'केशवराव' आसीत् तथापि लोकस्तं 'बलवन्तराव' इत्यभिधया एव ज्ञातवान्।

चितपावनः दाक्षिणात्यब्राह्मणकुलोत्पन्नस्य पितुर्नाम 'श्रीरामचन्द्रगङ्गाधरराव' इत्यासीत्। सः कुशलोऽध्यापकः आसीत्। गङ्गाधरः स्वपुत्रं तिलकं बाल्ये एव गणितं मराठीभाषां संस्कृतञ्चापाठयत्। अस्य जननी 'श्रीमती पार्वतीबाई' परमसुशीला, पतिव्रतधर्मपरायणा, ईश्वरभक्ता, सूर्योपासनायाञ्च रता बभूव। येनायं बालस्तेजस्वी बभूव इति जनाश्चावदन्। अस्य

कार्यक्षेत्रं महाराष्ट्रप्रदेशः विशेषेणासीत्। स महाराष्ट्रे उग्रराष्ट्रियतायाः जन्मदाता वर्तते स्म। तिलको महाराष्ट्र-नवयुवकेषु देशभक्ति-आत्मबलिदान-आत्मत्यागस्य च भावनां जनयितुं देशहितायानेकानि कार्याणि सम्पादितवान्। तस्य स्वभावः धीरः गम्भीरः निर्भयश्चासीत्। तस्य जीवने वीरमराठानां प्रभावः पूर्णरूपेणाभवत्।

अस्य बाल्यकालोऽतिकष्टेन व्यतीतः। यदा स दशवर्षदेशीयोऽभूत् तदा तस्य जननी परलोकं गता। षोडशवर्षदेशीयो यदा दशम्यां कक्षायामधीते स्म तदा पितृहीनो जातोऽयं शिशुः। एवं नानाबाधाबाधितोऽपि सोऽध्ययनं नात्यजत्। बाल्यकालादेवायं पठने कुशाग्रबुद्धिः स्वकक्षायाञ्च सर्वतोऽग्रणीरासीत्। संस्कृतगणिते तस्य प्रियविषयौ आस्ताम्। छात्रावस्थायां यदाध्यापकः गणितस्य प्रश्नं पट्टिकायां लेखितुमादिशति तदा स कथयति स्म–"किं पट्टिकायां लेखनेन, मुखेनैवोत्तरं वदिष्यामि।" स गणितस्य कठिनप्रश्नानां मौखिकमेवोत्तरमवदत्। परीक्षायां पूर्वं क्लिष्टप्रश्नानां समाधानमकरोत्। दशमे वर्षेऽयं शिशुः संस्कृतभाषायां नूतनश्लोकनिर्माणशक्तिं प्रादर्शयत्।

विंशतितमे वर्षे बी0 ए0 ततश्च वर्षत्रयानन्तरम् एल0 एल0 बी0 इत्युभे परीक्षे सबहुमानं समुत्तीर्य देशसेवानुरागवशाद् राजकीयां सेवानिवृत्तिं अधिवक्तुः (वकालत) वृत्तिञ्च विहाय लोकसेवाकार्ये संलग्नोऽभवत्। भारतभूमेः पीडितानां भारतीयानाञ्च कृतेऽयं स्वजीवनमेव समर्पयत्। प्रिययाप्रियया वा कयापि घटनया स स्वमार्गच्युतो न अभवत्।

सोऽस्मान् स्वतन्त्रतायाः पाठमपाठयत् 'स्वराज्यमस्माकं जन्मसिद्धोऽधिकारः' इति घोषणामकरोत्। स्वराज्यप्राप्त्यर्थं घोरमसौ क्लेशमसहत। लोकमान्यो राजनीतिकजागर्तेरुत्पादनार्थं देशभक्तैः सह मिलित्वा मराठीभाषायां 'केसरी' आङ्ग्लभाषायाञ्च 'मराठा' साप्ताहिकं पत्रद्वयं प्रकाशयामास। तेन स्वप्रकाशितपत्रद्वयद्वारा आङ्गलशासनस्य सत्यालोचनं राष्ट्रियशिक्षणं वैदेशिकवस्तूनां बहिष्कारः स्वदेशीयवस्तूनामुपयोगश्च प्रचालिताः। एतयोः साप्ताहिकपत्रयोः सम्पादने सञ्चालने चायं यानि दुःखानि सहते स्म तेषां वर्णनं सुदुष्करम्। शासनस्य तीव्रालोचनेन पुनः पुनरयं शासकैर्दण्ड्यते स्म। कदापि कथमपि लोभेन भयेन मदेन मात्सर्येण वा सत्पक्षस्यानुसरणं नात्यजत्। एवं शासकैः कृतानि स बहूनि कष्टानि असहत।

निर्वासनकाले तेन विश्वप्रसिद्धं गीतारहस्यं नाम गीतायाः कर्मयोग-प्रतिपादकं नवीनं भाष्यं रचितम्। कर्मसु कौशलमेव कर्मयोगः, गीता तमेव कर्मयोगं प्रतिपादयति। अतः सर्वे जनाः कर्मयोगिनः स्युः इति तेन उपदिष्टम्। कारागारात् विमुक्तोऽयं देशवासिभिरभिनन्दितः। तदनन्तरं स 'होमरूल' सत्याग्रहे सम्मिलितवान्। इत्थं पुनः स देशसेवायां संलग्नोऽभूत्। 'गीता रहस्यम्' वेदकालनिर्णयः, आर्याणां मूलवासस्थानमित्येतानि पुस्तकानि तस्याध्ययनस्य गाम्भीर्यं प्रतिपादयन्ति।

देशोद्धारकाणामग्रणीः स्वराष्ट्राय अनेकान् क्लेशान् सहमानः लोकमान्यः सप्तसप्तत्यधिक–नवदशशततमे विक्रमाब्दे (1977) चतुष्षष्टिवर्षावस्थायामगस्तमासस्य प्रथमदिनाङ्के शरीरं परित्यज्य दिवमगच्छत्। केनापि कविना उक्तम्–

दानाय लक्ष्मीः सुकृताय विद्या
चिन्ता परेषां सुखवर्धनाय।
परावबोधाय वचांसि यस्य
वन्द्यस्त्रिलोकी तिलकः स एव।।

शब्दार्थः

मनीषी = विद्वान्। **अभिधानम्** = नाम। **विरुदेन** = उपाधि द्वारा। **अभिधया** = नाम से। **लेभे** = लिया। **चितपावनः** = मन से शुद्ध (उत्तर भारत के ब्राह्मणों का एक समूह जिसका वर्तमान निवास स्थान महाराष्ट्र एवं कोंकण क्षेत्र है)। **अपाठयत्** = पढ़ाया। **रता** = लगी हुई। **सम्पादितवान्** = सम्पन्न किया। **व्यतीतः** = बीता। **नानाबाधाबाधितः** = अनेक समस्याओं से ग्रस्त। **अत्यजत्** = छोड़ा। **अग्रणीः** = आगे रहने वाला। **पट्टिकायाम्** = स्लेट पर। **लेखितुम्** = लिखने के लिये। **क्लिष्ट** = कठिन। **प्रादर्शयत्** = प्रदर्शन किया। **विंशतितमे** = बीसवें। **अनन्तरम्** = बाद। **सबहुमानम्** = ससम्मान। **समुत्तीर्य** = उत्तीर्ण करके। **समर्पयत्** = अर्पित किया। **स्वमार्गच्युतः** = अपने मार्ग को छोड़ देने वाला। **असहत** = सहन किया। **जागर्तेः** = जागरण के। **प्रकाशयामास** = प्रकाशित किया। **सत्यालोचनम्** = सही आलोचना। **प्रचालिताः** = प्रचलित कराया। **सुदुष्करम्** = अत्यन्त कठिन। **दण्डयते स्म** = दण्डित किया गया। **मात्सर्येण** = ईर्ष्या से। **भाष्यम्** = व्याख्याग्रन्थ। **उपदिष्टम्** = उपदेश। **अभिनन्दितः** = सम्मानित किया गया। **इत्थम्** = इस प्रकार। **प्रतिपादयन्ति** = बताते हैं। **दिवमगच्छत्** = दिवङ्गत हो गये। **सुकृताय** = अच्छे कर्मों के लिये। **अवबोधाय** = समझ पैदा करने के लिये। **वचांसि** = वचन। **वन्द्यः** = पूजनीय।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) तिलकस्य जन्म कस्मिन् ग्रामे अभवत्?

(ख) तिलकस्य पितुः नाम किम् आसीत्?

(ग) तिलकस्य मातुः नाम किम् आसीत्?

(घ) लोकमान्यरचितस्य गीतायाः भाष्यस्य किं नाम?

2. एकवाक्येन उत्तरत–

(क) तिलकस्य प्रसिद्धां घोषणां लिखत?

(ख) लक्ष्मीः किमर्थं भवति?

(ग) तिलकस्य स्वभावः कीदृशः आसीत्?

(घ) तिलकः कस्मिन् विक्रमसंवति दिवङ्गतः अभवत्।

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत–

(क) बाल्यकालादेवायम् (ख) कुशलोऽध्यापकः (ग) सेनानीष्वन्यतमः (घ) प्रिययाप्रियया।

4. **अधोलिखितानां गद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत–**

(क) लोकमान्यो बालगङ्गाधरतिलको .... एवं ज्ञातवान्।

(ख) अस्य जननी .... जन्मदाता वर्तते स्म।

(ग) निर्वासनकाले .... सम्मिलितवान्।

(घ) बाल्यकालादेवायं .... प्रादर्शयत्।

5. **'लोकमान्यः तिलकः' इत्याख्यस्य पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।**

6. **अधोलिखितं गद्याशं पठित्वा उचितं विकल्पं चिनुत–**

सोऽस्मान् स्वतन्त्रतायाः .... प्रकाशयामास।

(i) 'स्वराज्यमस्माकं जन्मसिद्धोऽधिकारः' इति केन घोषितम्?

(क) तिलकेन (ख) स्वराजेन (ग) देशभक्तेन (घ) ग्रामीणेन

(ii) 'मराठा' इत्याख्यं पत्रं कस्यां भाषायां प्रकाशितम्?

(क) हिन्दीभाषायाम् (ख) संस्कृतभाषायाम् (ग) आंग्लभाषायाम् (घ) मराठीभाषायाम्

(iii) 'केसरी' इति पत्रं कस्यां भाषायां प्रकाशितम्?

(क) हिन्दीभाषायाम् (ख) संस्कृतभाषायां (ग) आंग्लभाषायाम् (घ) मराठीभाषायाम्

7. **उचितं विकल्पं चिनुत–**

(i) लोकमान्यः कस्य विरुदः?

(क) तिलकस्य (ख) चन्द्रशेखरस्य (ग) रामचन्द्रस्य (घ) गङ्गाधरस्य

(ii) लोकमान्यतिलकस्य मातुः किं नाम?

(क) पुतलीबाई (ख) जीजाबाई (ग) पार्वतीबाई (घ) सुशीला

(iii) तिलकेन रचितस्य गीताभाष्यस्य नाम किम्?

(क) यथार्थगीता (ख) गीतारहस्यम् (ग) गीतामृतम् (घ) गीतगोविन्दम्

(iv) तिलकस्य प्रियविषयौ आस्ताम्?

(क) गणितसंस्कृते (ख) कलाविज्ञाने (ग) चिकित्सागणिते (घ) हिन्दीसंस्कृते

■

एकादशः पाठः

गुरुनानकदेवः

पाठपरिचयः

सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरुनानकदेव का जन्म पंजाब प्रदेश में तलवंडी नामक स्थान (ननकानासाहेब, पाकिस्तान) पर, विक्रमसंवत् 1526 (1469 ईसवी) में, वैशाख शुक्लपक्ष तृतीया को हुआ था। बाल्यकाल से ही ये अन्तर्मुखी और धार्मिक प्रवृत्ति के थे। इनके वैराग्यभाव से चिन्तित माता-पिता ने, सुलक्षणा देवी (सुलक्खिनी) नामक कन्या के साथ, इन्हें विवाह बन्धन में बाँध दिया। गृहस्थ रहते हुये भी इनका चित्त, ईश्वर में ही लगा रहता था। सन्मार्ग के उपदेश के लिए गुरुनानकदेव, अपना घर बार छोड़कर गांव-गांव भ्रमण करते रहे एवं एक नये सम्प्रदाय (सिक्खधर्म) के संस्थापक बन गये। विक्रम संवत् 1596 (1539 ईसवी) में, 70 वर्ष की आयु में, इन्होंने अपने नश्वर शरीर को त्याग दिया।

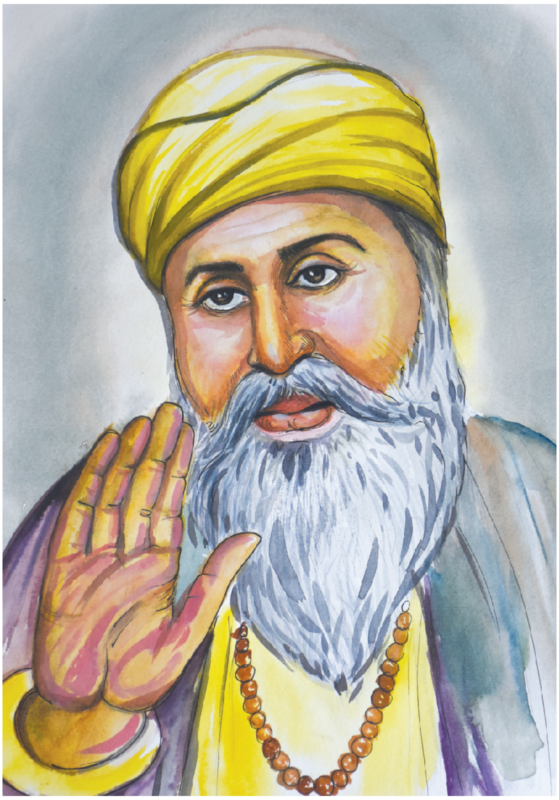

सिक्खधर्मस्याद्यसंस्थापकः गुरुनानकः पंजाबप्रदेशे तलवंडीनाम्नि स्थाने षड्विंशत्युत्तर–पञ्चदशशततमे वैक्रमे वर्षे वैशाखमासस्य शुक्लपक्षे तृतीयायान्तिथौ (वै0शु0-3, वि0 1526) क्षत्रियवंशस्य वेदीकुले जन्म लेभे। तस्य जन्मस्थानं 'ननकानासाहेब' इति नाम्ना ख्यातमद्यत्वे पाकिस्तानदेशेऽस्ति। अस्य मातुर्नाम तृप्तादेवी, पितुश्च मेहता कल्याणदासः कालमेहतेति नाम्ना ख्यातः।

गुरुनानकः स्वपित्रोरेक एव पुत्र आसीत्। अतस्तस्य जन्मनाऽऽह्लादातिशयं तावनुभवन्तौ स्नेहातिशयेन तस्य लालनं पालनं च कृतवन्तौ। बाल्यकालादेव तस्मिन् बालके लोकोत्तराः गुणाः प्रकटिता अभवन्। रहसि एकाकी एवोपविश्य नेत्रेऽर्धोन्मील्य किञ्चिद् ध्यातुमिव दृश्यते स्म।

यथाकाले पित्रा विद्याध्ययनाय पाठशालायां स प्रेषितः अन्यैः सहपाठिभिः सह विद्यालये पठन्नेकदा स्वलेखनपट्टिकायां

किञ्चिदुल्लिख्य शिक्षकं प्रादर्शयत्। तल्लेखं दृष्ट्वा शिक्षको विस्मितो जातः। पट्टिकायां परमात्मनो माहात्म्यं तेन वर्णितमासीत्। तस्य पिता कालूमेहता जगत्पतिं प्रति तस्यां प्रवृत्तिं दृष्ट्वा भूयसा चिन्तितोऽभवत्। वाणिज्यकर्मणि लिप्तस्तत्पिता कथमपि स जगत्कर्मणि प्रवृत्तो भवेदिति प्रायतत। किं च अग्निं पत्रजालैर्पिधातुमाचकाङ्क्ष। एकदा तस्य जनकः विंशतिरूप्यकाणि तस्मै दत्वा वाणिज्यार्थं तं प्रेषितवान्। पथि क्षुत्पिपासादिभिः क्लिश्यमानान् दुर्बलान् क्षीणकायान् साधून् सोऽपश्यत्। तेषां क्लेशातिशयतापसंतप्तां दशामवलोक्य तस्य हृदयं नवनीतमिव द्रवीभूतं जातम्। ताभिः मुद्राभिः रत्नं क्रीत्वा तेभ्यः समर्प्य परां शान्तिमनुभूयमानः गृहं प्रत्याजगाम। पित्रा लाभाय रूप्यकाणि प्रदत्तानि। मया तु पूर्णलाभः लब्धः। तस्यादेशस्यानुपालनमेव मया कृतमिति सोऽचिन्तयत्।

पिता तस्य तद्वृत्तं संश्रुत्य भृशं चुकोप। तदानीमेव नानकस्य भगिनीपतिः जयराम आगतः। तमखिलमुदन्तं ज्ञात्वा तं स्वनगरं सुलतानपुरमनयत्। तत्रत्यः शासकः नवाबदौलतखाँ युवकनानकस्य व्यवहारकौशलेन शीलेन मधुरया वाचा सन्तुष्टः सन् तं स्वान्नभाण्डागारे नियुक्तवान्। स्वनिःस्पृहवृत्त्या श्रमेण कर्मणा च नानकः स्वस्वामिनं दौलतखाँमहाशयं तुतोष।

नानकः तेन समादृतो जातः। तद्यशोऽसहमानैः बहुभिः दोषदिदृक्षुभिः राजपुरुषैः कर्णेजपैः बोधितोऽपि दौलतखांमहाशयः नानके दोषं नाऽपश्यत्। महत्सु दोषदर्शनं राजकुलस्य सहजा रीतिः। आदिवसं स्वकार्यं सम्पादयन्नसौ संध्याकालेऽन्यैः युवकैः सह एकत्रोपविश्य परमात्मचिन्तनं तन्नामकीर्तनञ्च करोति स्म। दानादिकं च तस्य कर्म तत्रापि सातत्येन चलति स्म।

एकदा सः स्नानाय नदीं प्रति सेवकेनैकेन सह प्रस्थितः। स्ववस्त्रादीनि सेवकाय समर्प्य सः नद्यामवतीर्णः। बहुकाले व्यतीते स न निष्क्रान्तस्तदा तस्य सेवकः तं नद्यां निमग्नमित्यनुमाय गृहं प्रतिनिवृत्य वृत्तमिदं सर्वानश्रावयत्। सर्वे विस्मिताः तद्विरहतापसंतप्ता परं का गतिरिति चिन्तयन्तो सर्वथा स्तब्धाः जाताः। तस्य भगिनी 'नानकी' तु न विश्वसिति स्म। संसारसागराज्जनानुद्धर्तुं जगति यस्य जनिः कथं वा नदीजले निमग्नो भवेदिति तस्या दृढो विश्वास आसीत्। दिनत्रयानन्तरं नानकः प्रकटितोऽभूत्। परमाह्लादिताः जनाः ज्योतिषा देदीप्यमानं तस्य मुखमण्डलं दर्शं दर्शं विस्मिता अभूवन्। मनसो बुद्धेरगोचरं किञ्चिद् दिव्यत्वं तस्मिन् प्रतिष्ठितमिति सर्वेऽन्वभवन्। जगतः विधाता तस्मैऽमृतोपदेशं प्रादात् दुःखदैन्यतप्तानां क्लेशान् अपहर्तुं सदुपदेशेन परमात्मतत्त्वं सत्स्वरूपं च व्याख्यातुं जगति पुनः तस्यादेशात् आगत इति तेनोक्तम्। भक्तः नानकः गुरुः जातः। स्वमातापितरौ स्वपत्नीं स्वसुतौ स्वभगिनीं नानकीं स्वमित्राणि च साधु समाश्वास्य स सुलतानपुरनगरान्निर्जगाम। नगरान्ननगरं ग्रामाद्ग्राममटन् धर्मस्य बाह्याचारानाडम्बरभूतान् व्यापारान् विखण्डयन् धर्मस्य सत्स्वरूपं स्थापयन् सर्वस्मिन् तदेकमिति प्रतिपादितवान्।

विंशतिवर्षं यावत् तेन समग्रदेशस्य भ्रमणं कृतम्। भ्रमता तेन देशस्य चिन्तनीया दशा दृष्टा। देशचिन्ताचिन्तितः स देशस्योन्नत्यै श्रमस्य प्रतिष्ठां दैन्यपरित्यागमपरिग्रहं सेवाभावादिभावान् प्रसारयामास। समग्रदेशमेकसूत्रे आबद्धुं प्रयतमानः स प्रथमो भारतीयो महापुरुषः आसीत्। यवनशासकैः कृतानत्याचारान् वीक्ष्य भृशं खिद्यमानः परमात्मानमुपालम्भितवान्।

अथ स स्वविचारान् यथातथ्ये परिणेतुं पंजाबप्रदेशे कर्तारपुरे स्ववसतिं चकार। सच्चारित्र्यमेव परमात्मनो प्राप्तिकारणमिति तेन प्रतिपादितम्। तत्रैवासौ 'लंगर' इति नाम्नीं सहभोजप्रथां प्रारब्धवान्। तत्र स्वेन निर्मितं भोजनमाबालवृद्धनराः जातिधर्मवर्णनिर्विशेषाः सर्वेः सहैवोपविश्य भुञ्जते स्म। एषा प्रथाऽधुनापि गुरुद्वारेषु प्रचलिता दृश्यते।

षण्णवत्युत्तरपञ्चदशशततमे वैक्रमे वर्षे आश्विनमासस्य कृष्णपक्षे दशम्यान्तिथौ (आ0 कृ0-10, वि0, वि0 1596) गुरोरात्मतत्त्वं परमात्मतत्त्वे विलीनम्।

शब्दार्थः

आद्यः = प्रारम्भिक। **ख्यातम्** = प्रसिद्ध। **स्नेहातिशयेन** = प्रेम की अधिकता से। **लोकोत्तराः** = अलौकिक। **रहसि** = एकान्त में। **उपविश्य** = बैठकर। **अर्धोन्मील्य** = आधा खोलकर। **ध्यातुमिव** = ध्यान करते हुए-से। **यथाकाले** = उचित समय में। **लेखनपट्टिका** = पाटी (स्लेट)। **उल्लिख्य** = लिखकर। **प्रादर्शयत्** = दिखाया। **विस्मितः** = आश्चर्यचकित। **माहात्म्यम्** = महानता। **भूयसा** = अत्यधिक। **वाणिज्यम्** = व्यापार। **लिप्तः** = लगा हुआ। **प्रायतत** = प्रयास किया। **पत्रजालैः** = पत्तों के समूह से। **पिधातुम्** = ढकने के लिये। **आचकाङ्क्ष** = आकांक्षा की। **पथि** = मार्ग में। **क्षुत्पिपासादिभिः** = भूख-प्यास से। **क्लिश्यमानान्** = दुखित। **क्षीणकायान्** = कमजोर शरीर वाले। **नवनीतम्** = मक्खन। **क्रीत्वा** = खरीद कर। **अनुभूयमानः** = अनुभव करते हुए। **आजगाम** = आया/लौटा। **लब्धः** = पा लिया। **अचिन्तयत्** = सोचा। **खिद्यमानः** = दुखित। **चुकोप** = क्रोध किया। **उदन्तम्** = वृत्तान्त। **अनयत्** = ले गया। **तत्रत्यः** = वहाँ का। **तुतोष** = सन्तुष्ट किया। **समादृतः** = सम्मानित। **कर्णेजपः** = चुगलखोर। **महत्सु** = महान् लोगों में। **सातत्येन** = लगाकर। **प्रस्थितः** = प्रस्थान किया। **अवतीर्णः** = उतर गया। **निमग्नम्** = डूबा हुआ। **प्रतिनिवृत्य** = लौटकर। **अश्रावयत्** =सुनाया। **स्तब्ध** = जडवत्। **उद्धर्तुम्** = उद्धार करने के लिये। **जनिः** = जन्म। **ज्योतिषा** = तेज से। **दर्शं दर्शम्** = देख–देखकर। **अगोचरम्** = न जाना जा सकने वाला। **अन्वभवन्** = अनुभव किया। **दैन्यम्** = दीनता। **समाश्वस्य** = समझा–बुझाकर। **अटन्** = विचरण करते हुए। **यथातथ्ये** = वास्तविक रूप में। **वसति** = निवास। **भुञ्जते** = खाता है।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) नानकदेवस्य मातुः किं नाम आसीत् ?

(ख) कियत्कालानन्तरं नानकः प्रकटितोऽभूत् ?

(ग) कः अग्निं पत्रजालैर्पिधातुम् आचकाङ्क्ष ?

(घ) नानकस्य भगिनीपतेः किं नाम आसीत् ?

2. एकवाक्येन उत्तरत–

(क) सुलक्षणा का आसीत् ?

(ख) पिता नानकाय किमर्थं विंशतिः रुप्यकाणि अददात् ?

(ग) नानकेन कः धर्मः स्थापितः ?

(घ) भ्रमता तेन देशस्य कीदृशी दशा दृष्टा ?

3. सन्धिं कुरुत–

(क) षड्विंशति + उत्तर = ...

(ख) एव + उपविश्य = ...

(ग) तस्य + आदेशस्य + अनुपालनम् + एव = ...

(घ) तत् + नाम = ...

(ङ) सागरात् + जनान् + उद्धर्तुम् = ...

4. अधोङ्कितगद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत –

(क) सिक्खधर्मस्याद्यसंस्थापकः .... नाम्ना ख्यातः।

(ख) गुरुनानकः स्वपित्रोरेक .... दृश्यते स्म।

(ग) विंशतिवर्षं यावद् .... परमात्मानमुपालम्भितवान्।

(घ) अथ स स्वविचारान् .... प्रचलिता दृश्यते।

5. 'गुरुनानकदेवः' इति पाठस्य सारांशं हिन्दीभाषया लिखत।

6. अधोलिखितं गद्याशं पठित्वा समीचीनं विकल्पं चिनुत–

एकदा तस्य .... लब्धः।

(i) प्रस्तुत-गद्यांशस्य पाठनाम किम् ?

(क) गुरुनानक देवः (ख) लोकमान्यतिलकः (ग) ज्ञानं पूततरं सदा (घ) वयं भारतीयाः

(ii) जनकः तस्मै कति रुप्यकाणि अददात् ?

(क) पञ्चाशत् (ख) विंशतिः (ग) एकादश (घ) शतम्

(iii) सः कुत्र साधून् अपश्यत् ?

(क) नगरे (ख) ग्रामे (ग) पथि (घ) आपणे

7. उचितं विकल्पं चिनुत –

(i) गुरुनानकदेवस्य जन्म कस्मिन् ईसवीये वर्षे अभवत् ?

(क) 1526 (ख) 1496 (ग) 1596 (घ) 1539

(ii) 'ननकानासाहेब' कस्मिन् देशे अस्ति ?

(क) भारते (ख) पाकिस्तानदेशे (ग) नेपाले (घ) लङ्कायाम्

(iii) नानकस्य पितुः नाम किम् ?

(क) अङ्गददेव (ख) कालू मेहता (ग) ननकानासाहेब (घ) रैदासः

(iv) नानकस्य भगिनीपतिः तं कुत्र अनयत् ?

(क) प्रयागराजम् (ख) सुल्तानपुरम् (ग) मथुराम् (घ) जौनपुरम्

(v) नानकी नानकस्य..........................आसीत् ?

(क) माता (ख) भगिनी (ग) गुरुमाता (घ) मातामही

(vi) कति वर्षाणि यावत् नानकेन समग्रदेशस्य भ्रमणं कृतम् ?

(क) दश (ख) द्वादश (ग) विंशतिः (घ) नव

द्वादशः पाठः

दीनबन्धुः ज्योतिबाफुले

पाठपरिचयः

प्रस्तुत गद्यपाठ भारत के महान् समाज सुधारक दीनबन्धु ज्योतिबाफुले के जीवन पर आधृत है। जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दलितों, वंचितों, शोषितों के उत्थान में एवं स्त्री शिक्षा की सुरक्षा के विषय में ही समर्पित कर दिया। भारत में सर्वप्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना का श्रेय इन्हें ही दिया जाता है। जिसका सन्चालन इन्होंने अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले के साथ मिलकर किया, इसी कारण से इन्हें प्रथम दलित शिक्षिका होने का गौरव प्राप्त है। महात्मा ज्योतिबाफुले ने बाल विवाह का विरोध एवं विधवा विवाह का समर्थन किया। अनन्तर काल में इन्होंने सामाजिक पुनर्जागरण के लिए 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की, जिसके द्वारा इन्होंने अनेक सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया।

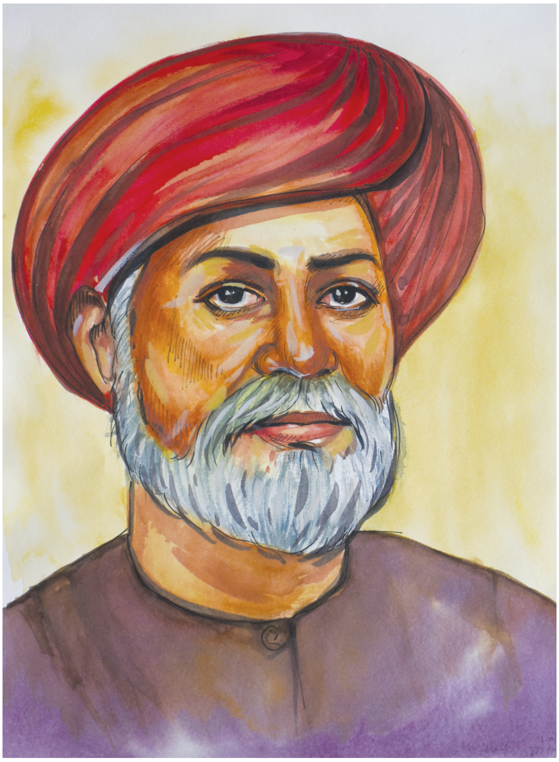

ज्योतिरावगोविन्दराव इत्याख्यस्य जन्म अप्रैलमासस्य एकादशदिनांके सप्तविंशत्य–धिकाष्टादशशततमे ख्रीष्टाब्दे (11 अप्रैल, 1827) पुणे नामके स्थानेऽभवत्। अयं महात्मा फुले एव ज्योतिबाफुले नाम्ना प्रचलित एको महान् भारतीयविचारकः, समाजसेवकः, लेखकः, दार्शनिकः, क्रान्तिकारी, कार्यकर्त्ता च आसीत्। त्रिसप्तत्यधिकाष्टादशशततमे ख्रीष्टाब्दे (1873) अयं महाराष्ट्रे सत्यशोधक–समाजनामकीं संस्थां संघटितवान्। नारीणां दलितानाञ्चोत्थानायायमनेकानि कार्याण्य–करोत्। भारतीयाः मानवाः सर्वे शिक्षिताः स्युः, अस्य एतत् चिन्तनमासीत्। तस्य पूर्वजः पूर्वं सतारातः आगत्य पुणे नगरं च प्रत्यागत्य पुष्पमालां गुम्फयन् स्वजीवनं निर्यापयामास। परिणामस्वरूपे मालाकारस्य कार्ये संलग्नः अयं 'फुले' नाम्ना विख्यातः अभवत्।

महानुभावोऽयं प्रारम्भिककाले मराठीभाषाम् अपठत् किन्तु दैववशात् अस्य शिक्षा मध्येऽवरुद्धा सञ्जाता। सः पुनः पठितुं मनसि विचार्य एकविंशतिवर्षीयायाम् अवस्थायाम् आङ्ग्लभाषायाः सप्तम्याः कक्षायाः शिक्षां पूरितवान्। चत्वारिंशत् अधिकाष्टादशशततमे (1840) खीष्टाब्दे अस्य विवाहः सावित्रीनाम्न्या कन्यया साकमभवत्। अस्य भार्यापि स्वयमपि एका प्रसिद्धा समाजसेविका सञ्जाता। समाजस्योन्नतये स्वभार्यया सह मिलित्वाऽयं दलितोत्थानाय स्त्रीशिक्षायै च कार्यमकरोत्। ज्योतिबाफुले भारतीयसमाजे प्रचलितजात्याधारितविभाजनस्य पक्षे नाऽसीत्। सः वैधव्ययुक्तानां नारीणां एवञ्च इतरासां नारीणां कृते महत्त्वपूर्णं कार्यं कृतवान्। कृषकाणां दशां वीक्ष्य दुःखितोऽयं तेषामुद्धाराय सततं प्रयत्नशीलः आसीत्। स्त्रीणां सफलतायाः कारणं तेषामशिक्षैव विद्यते इति विचार्य सः अष्टचत्वारिंशदधिकाष्टादशशतखीष्टाब्दे (1848 ई0) एकं विद्यालयं सञ्चालितवान्। अस्य कार्याय देशस्यायं प्रथमो विद्यालयः आसीत्। बालिका-शिक्षायै शिक्षिकायाः न्यूनतां दृष्ट्वा सः स्वयमेव शिक्षकस्य भूमिकां निरवहत्। अनन्तरं स्वभार्यां शिक्षिकारूपेण नियुक्तवान्। उच्चसंवर्गीयाः जनाः प्रारम्भकालाद् एव तस्य कार्ये बाधां स्थापयितुं कटिबद्धा आसन्। परञ्च अयं स्वकार्ये प्रयतमानः अग्रगण्यः अभवत्। तम् अग्रे गतिशीलं दृष्ट्वा ते दुर्जना तस्य पितरं प्रति अशोभनीयं कथनम् अकथयन्।

ते दुर्जनाः दम्पती स्वगृहात् बहिः निष्कासितवन्तः। स्वगृहात् बहिर्गमने सति तस्य कार्यावरोधः संजातः परञ्च शीघ्रातिशीघ्रमेव सः बालिकाशिक्षायै त्रीन् विद्यालयान् उद्घाटितवान्।

अस्य हृदि महात्मानं प्रति बहुरुचिरासीत्। तस्य विचारेषु ईश्वरस्य सम्मुखे नरनार्यौ समाने स्तः। तेषु श्रेष्ठता लघुता अशोभनीया विद्यते। दलितजनानामसहायानाञ्च न्यायार्थं महापुरुषोऽयं ‘सत्यशोधकसमाजम्’ स्थापितवान्। अस्य सामाजिकसेवाकार्यं विलोक्य अष्टाशीत्यधिकाष्टा–दशशततमे खीष्टाब्दे (1888 ई0) मुम्बईनगरस्य एका विशालसभा तं ‘महात्मा’ इत्युपाधिना अलंकृतवती। ज्योतिबामहोदयः ब्राह्मणपुरोहितेन विनैव विवाहसंस्कारमकारयत्। अस्य संस्कारस्य मुम्बईन्यायालयात् मान्यता सम्प्राप्ता। स तु बालविवाहस्य विरोधी एवञ्च विधवाविवाहस्य समर्थकः आसीत्। स्वजीवनकाले स तु अनेकानि पुस्तकानि अलिखत् यथा–‘तृतीयरत्नम्’, ‘छत्रपतिशिवाजी’, ‘राजाभोसले इत्याख्यस्य पँवाडा’, ‘ब्राह्मणानां चातुर्यम्’, ‘कृषकस्य कशा’ (किसानों का कोड़ा), ‘अस्पृश्यानां वार्ता’ (अछूतों की कैफियत) इत्यादयः। महात्मा ज्योतिबा एवं तस्य संघटनस्य संघर्षकारणात् सर्वकारेण ‘एग्रीकल्चरएक्ट’ इति स्वीकृतम्। धर्मसमाजस्य परम्परायाः सत्यं सर्वेषां सम्मुखमानेतुं तेन अन्यानि इतराणि पुस्तकानि रचितानि। ज्योतिबा बुद्धिमान्, महान् क्रान्तिकारी, भारतीयविचारकः समाजसेवकः, लेखकः दार्शनिकश्चासीत्। महाराष्ट्रनगरे धार्मिक–संशोधनमान्दोलनं प्रचलद् आसीत्। जातिप्रथामुन्मूलनार्थमेकेश्वरवादं स्वीकर्तुं ‘प्रार्थनासमाजस्य’ स्थापना सञ्जाता। अस्य प्रमुखः गोविन्दरानाडे आर0 जी0 भण्डारकरश्चासीत्। अयं महान् समाजसेवकः अस्पृश्यानां उद्धाराय सत्यशोधकसमाजस्य स्थापनाम् अकरोत्। महात्माज्योतिबाफुले (ज्योतिरावगोविन्दरावफुले) महोदयस्य मृत्युः

नवम्बरमासस्य अष्टाविंशतिदिनांके नवत्यधिकाष्टादशशततमे ख्रीष्टाब्दे (28 नवम्बर, 1890 ई0) पुणे नगरे अभवत्।

अस्पृश्यानां दुःखोन्मूलने अस्य भूमिका अकथनीया विद्यते। पुणे नगरे दलितानां गतिः शोचनीयासीत्। उच्चजातीनां कूपात् जलं नेतुं ते मुक्ताः नासन्। ते दलिताः सन्ति, तेषां तस्मात् कूपात् जलं आनेतुं नाधिकारः। दलितानामेतादृशीं दुर्दशां दृष्ट्वा तस्य हृदयं विदीर्णं जातम्। तदैव सः स्वमनसि विचारयामास यद् एषां दुःखम् दूरीकरणीयम्। अयं महानुभावः तेषाम् अमानवीयं व्यवहारं दृष्ट्वा सः स्वगृहस्य जलसंचयकूपं अस्पृश्यानां कृते मुक्तं कृतवान्। सः नगरपालिकायाः सदस्यः आसीत्। अतः तेषां कृते सार्वजनिकस्थाने जलसञ्चयकूपं स्यात् एतत् प्रबन्धमकरोत्। मालाकारसमाजस्य महात्मा ज्योतिबाफुले एव एतादृशः महामानवः आसीत्। यः निम्नजातीनां जनानां कृते समानतायाः अधिकाराय आजीवनं कार्यमकरोत्।

सहधर्मचारिणी सावित्रीबाई अस्य कार्येण प्रभाविता आसीत्। अतः सा नारीः उद्धर्तुं कटिबद्धासीत्। यदा सा नारीः पाठयितुं प्रारब्धवती तदैव दलितविरोधिनः उच्चस्वरैः विरोधं प्रकटयन्तः उक्तवन्तः यद् एका हिन्दूनारी शिक्षिका भूत्वा समाजस्य धर्मस्य च विरोधं कथं कर्तुं शक्नोति। नारीजातेः पठन-पाठनं धर्मविरुद्धं वर्तते। सावित्रीबाई यदा विद्यालयं गच्छति स्म तदा तस्याः उपरि मृत्तिकां गोमयं प्रस्तरखण्डान् च नारीशिक्षाविरोधिनः प्रक्षेपयन्ति स्म। एवञ्च व्यंग्यबाणैः अपीडयन्, तथापि सा स्वकर्त्तव्यात् विमुखा न सञ्जाता। मराठीशिक्षकः शिवरामभवालकरः अस्याः प्रशिक्षकः आसीत्। इयमुपेक्षितानां दलितनारीणां कृते बहून् विद्यालयान् सञ्चालितवती।

द्विपञ्चाशदधिकाष्टादशशततमे ख्रीष्टाब्दे फरवरीमासस्य सप्तदशदिनांके (17 फरवरी, 1852) अस्य विद्यालयस्य निरीक्षणं सञ्जातम्। परिणामतोऽस्य अष्टादश विद्यालयाः संचालिताः अभवन्। नवम्बरमासस्य षोडशदिनाङ्के विश्रामबाडा इत्यस्मिन् स्थाने सार्वजनिकाभिनन्दनसमारोहे अस्याः अभिनन्दनं सम्पन्नम्। अस्माकं देशस्य इतिहासे सावित्रीफुले प्रथमदलितशिक्षिकायाः गौरवेणालङ्कृता।

शब्दार्थः

मासस्य = महीने के। **सप्तविंशत्यधिकाष्टादशशततमे ख्रीष्टाब्दे** = 1827 ईस्वी में। **स्थानेऽभवत्** = स्थान पर हुआ। **प्रचलितः** = प्रसिद्ध। **समाजसेवकः** = समाज का सेवक। **संघटितवान्** = संगठित किया। **उत्थानाय** = उत्थान के लिए। **कार्याण्यकरोत्** = कार्य किया। **आगत्य** = आकर। **प्रत्यागत्य** = लौटकर। **गुम्फयन्** = गुम्फित करते हुए। **निर्यापयामास** = निर्वाह करते थे। **मालाकारस्य** = माली। **विख्याताः** = प्रसिद्ध। **साकम्** = साथ में। **भार्यापि** = पत्नी भी। **स्वयमपि** = स्वयं भी। **संजाता** = हो गयीं। **समाजस्योन्नतये** = समाज की उन्नति के लिए। **स्वभार्यया सह** = अपनी पत्नी के साथ। **मिलित्वा** = मिलकर। **दलितोत्थानाय** = दलितों के उत्थान के लिए। **स्त्रीशिक्षायै** = स्त्री शिक्षा के

लिए। **वीक्ष्य** = देखकर। **उद्धाराय** = उद्धार के लिए। **सतत्** = निरन्तर। **विचार्य** = विचार करके। **संचालितवान्** = संचालित किया। **दृष्ट्वा** = देखकर। **स्वयमेव** = स्वयं ही। **निरवहत्** = निर्वहण किया। **अनन्तरम्** = बाद में। **स्वभार्याम्** = अपनी पत्नी के लिए। **नियुक्तवान्** = नियुक्त किया। **हृदि** = हृदय में। **बहुरुचिरासीत्** = बहुत रुचि थी। **सम्मुखे** = सामने। **न्यायार्थम्** = न्याय के लिए। **स्थापितवान्** = स्थापित किया। **विलोक्य** = देखकर। **अलंकृतवान्** = सुशोभित किया। **बालविवाहस्य** = बाल विवाह का। **स्वजीवनकाले** = अपने जीवन काल में। **कशा** = कोड़ा। **अस्पृश्यानाम्** = अछूतों के। **संघर्ष** = लड़ाई। **जातिप्रथामुन्मूलनार्थम्** = जाति–प्रथा के उन्मूलन के लिए। **सहधर्मचारिणीम्** = धर्मपत्नी को। **कार्येण** = कार्य से। **शिक्षयितुम्** = शिक्षा के लिए। **दलितशिक्षिकायाः** = दलित शिक्षिका के। **गौरवेणालंकृता** = गौरव से सुशोभित हुईं।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) महात्माज्योतिबाफुलेमहोदयस्य अपरं नाम किम्?

(ख) सत्यशोधकसमाजस्य स्थापनां कः अकरोत्?

(ग) देशस्य प्रथमबालिका विद्यालयः केन स्थापितः?

(घ) 'महात्मा' इत्युपाधिना कः अलंकृतः?

2. एकवाक्येन उत्तरत–

(क) ज्योतिबाफुले दलितोत्थानाय किम् अकरोत्?

(ख) कस्य पूर्वजाः मालाकारस्य कार्ये संलग्नाः?

(ग) ज्योतिबाफुलेमहोदयस्य भार्यायाः नाम किम्?

(घ) प्रार्थनासमाजस्य स्थापनां कः अकरोत्?

(ङ) प्रार्थनासमाजस्य प्रमुखः कः आसीत्?

3. अधोलिखितगद्यांशानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत–

(क) ज्योतिरावगोविन्दराव .... संस्थां संघटितवान्।

(ख) नारीणां दलितानाञ्च .... विख्याताः अभवन्।

(ग) चत्वारिंशदधिकाष्टादशशततमे .... शिक्षिकारूपेण नियुक्तवान्।

(घ) महात्माज्योतिबा .... पुणे नगरे अभवत्।

4. 'दीनबन्धुः ज्योतिबाफुले' इति पाठस्य साराशं लिखत।

5. अनुच्छेदसम्बन्धिबहुविकल्पीयप्रश्नाः समाधेयाः–

(अ) ज्योतिरावगोविन्दराव .... संस्थां संगठितवान्।

(i) प्रस्तुतगद्यांशस्य पाठनाम किम्?

(क) मदनमोहनमालवीयः (ख) दीनबन्धुः ज्योतिबाफुले

(ग) लोकमान्यतिलकः (घ) विश्वकविरवीन्द्रः

(ii) ज्योतिबाफुलेमहोदयस्य जन्मस्थानम्–

(क) सतारा (ख) विदर्भ (ग) पुणे (घ) अमरावती

(ii) 'सत्यशोधकसमाजस्य' स्थापना कदा अभवत्?

(क) 1874 (ख) 1873 (ग) 1875 (घ) 1876

(ब) चत्वारिंशदधिकाष्टादशशततमे .... शिक्षिकारूपेण नियुक्तवान्।

(i) ज्योतिबाफुलेमहोदयस्य विवाहः कया सह अभवत्?

(क) जावित्र्या (ख) सावित्र्या (ग) अमरावत्या (घ) अपालया

(ii) कन्यया इति पदे विभक्तिः अस्ति?

(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) षष्ठी (घ) पञ्चमी

(iii) दलितोत्थानाय इति पदे सन्धिः अस्ति?

(क) दीर्घसन्धिः (ख) गुणसन्धिः (ग) वृद्धिसन्धिः (घ) यण्सन्धिः

6. अधोलिखितप्रश्नेषु प्रदत्तविकल्पेभ्यः समीचीनमुत्तरं चिनुत–

(i) ज्योतिबाफुले 'महात्मा' इत्युपाधिना कदा अलङ्कृतः?

(क) 1889 (ख) 1888 (ग) 1887 (घ) 1890

(ii) महात्माज्योतिबाफुलेमहोदयस्य मृत्युः कस्मिन् मासेऽभवत्?

(क) सितम्बरमासे (ख) नवम्बरमासे (ग) अक्टूबरमासे (घ) दिसम्बरमासे

(iii) ज्योतिबाफुले कति विद्यालयान् संचालितवान्?

(क) द्वादश (ख) षोडश (ग) अष्टादश (घ) एकादश

(iv) कस्य विचारेषु ईश्वरस्य सम्मुखे नर-नार्यौ समाने स्तः?

(क) गोविन्द रानाडे (ख) आर0 जी0 भण्डारकरः

(ग) ज्योतिबाफुले (घ) मदनमोहनमालवीयः

(v) अस्माकं देशस्य इतिहासे प्रथमदलितशिक्षिका इति गौरवेणालङ्कृता?

(क) सावित्रीबाईफुले (ख) जावित्रीबाईफुले (ग) पुतलीबाई (घ) गार्गी

(vi) स तु बालविवाहस्य विरोधी एवञ्च .... समर्थकः आसीत्?

(क) छत्रपतिशिवाजी (ख) विधवाविवाहस्य (ग) कृषकस्य (घ) प्रार्थनासमाजस्य

(vii) अस्य भार्यापि स्वयमपि एका प्रसिद्धाः .... संजाता?

(क) समाजसेविका (ख) विचारिका (ग) दार्शनिका (घ) शिक्षिका

■

संस्कृतपद्यपीयूषम्

प्रथमः पाठः

लक्ष्यवेधपरीक्षा

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पद्यपाठ महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत के '**आदिपर्व**' के 131वें और 132वें अध्यायों (गीता प्रेस) से उद्धृत है। इस पाठ में आचार्य द्रोण के द्वारा अपने शिष्यों (कौरवों/पाण्डवों) की लक्ष्यवेध की परीक्षा लेने का वर्णन है। जिसमें उन्होंने पेड़ पर स्थित कृत्रिम गीध के सिर को बाणों के द्वारा काटने के लिए आदेश दिया। सर्वप्रथम उन्होंने राजकुमार युधिष्ठिर को बुलाया और पूछा कि तुमको क्या दिखाई दे रहा है? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि मैं गीध, वृक्ष तथा आप एवं समस्त भाइयों को देख रहा हूँ। इस बात पर आचार्य द्रोण ने रुष्ट होते हुए अन्य राजकुमारों (शिष्यों) से भी यही प्रश्न किया; परन्तु सभी ने एक समान ही उत्तर दिया। अन्त में आचार्य द्रोण ने वही प्रश्न अर्जुन से भी पूछा और अर्जुन ने कहा कि उसे केवल गीध का सिर ही दिखाई दे रहा है, इस पर आचार्य द्रोण ने प्रसन्न होते हुए अर्जुन को शरसन्धान का आदेश दिया तथा अर्जुन ने गीध का सिर काट दिया। अतएव यह सिद्ध है कि छात्रों को एकाग्रचित्त होकर ही कोई कार्य करना चाहिए।*

तांस्तु सर्वान् समानीय सर्वविद्यास्त्रशिक्षितान्।
द्रोणः प्रहरणज्ञाने जिज्ञासुः पुरुषर्षभः।।1।।
कृत्रिमं भासमारोप्य वृक्षाग्रे शिल्पिभिः कृतम्।
अविज्ञातं कुमाराणां लक्ष्यभूतमुपादिशत्।।2।।
शीघ्रं भवन्तः सर्वेऽपि धनूंष्यादाय सत्वराः।
भासमेतं समुद्दिश्य तिष्ठध्वं सन्धितेषवः।।3।।
मद्वाक्यसमकालं तु शिरोऽस्य विनिपात्यताम्।
एकैकशो नियोक्ष्यामि तथा कुरुत पुत्रकाः।।4।।
ततो युधिष्ठिरं पूर्वमुवाचाङ्गिरसां वरः।
सन्धत्स्व बाणं दुर्धर्ष मद्वाक्यान्ते विमुञ्च तम्।।5।।
ततो युधिष्ठिरः पूर्वं धनुर्गृह्य परन्तपः।
तस्थौ भासं समुद्दिश्य गुरुवाक्यप्रणोदितः।।6।।

तमुवाच स कौन्तेयः पश्याम्येनं वनस्पतिम्।
भवन्तं च तथा भ्रातॄन् भासं चेति पुनः पुनः।।7।।
तमुवाचाऽपसर्पेति द्रोणोऽप्रीतमना इव।
नैतच्छक्यं त्वया वेद्धुं लक्ष्यमित्येव कुत्सयन्।।8।।
ततो दुर्योधनादींस्तान् धार्तराष्ट्रान् महायशाः।
तेनैव क्रमयोगेन जिज्ञासुः पर्यपृच्छत्।।9।।
अन्यांश्च शिष्यान् भीमादीन् राज्ञश्चैवान्यदेशजान्।
तथा च सर्वे तत्सर्वं पश्याम इति कुत्सिताः।।10।।
ततो धनञ्जयं द्रोणं स्मयमानोऽभ्यभाषत।
त्वयेदानीं प्रहर्तव्यमेतल्लक्ष्यं विलोक्यताम्।।11।।
भासं पश्यसि यद्येनं तथा ब्रूहि पुनर्वचः।
शिरः पश्यामि भासस्य न गात्रमिति सोऽब्रवीत्।।12।।

अर्जुनेनैवमुक्तस्तु द्रोणो हृष्टतनूरुहः।
मुञ्चस्वेत्यब्रवीत् पार्थं स मुमोचाविचारयन्।।13।।
शिरः उत्कृत्य तरसा पातयामास पाण्डवः।
हर्षोद्रेकेण तं द्रोणः पर्यष्वजत पाण्डवम् ।।14।।

दिग्दर्शिका

1-2 अन्वयः–प्रहरणज्ञाने जिज्ञासुः पुरुषर्षभः द्रोणः सर्वविद्यास्त्रशिक्षितान् तान् तु सर्वान् समानीय, शिल्पिभिः कृतं कृत्रिमं भासं वृक्षाग्रे आरोप्य कुमाराणाम् अविज्ञातं लक्ष्यभूतम् उपादिशत्।

अर्थः–अस्त्रज्ञान के विषय में जानने की इच्छा रखनेवाले पुरुषों में श्रेष्ठ आचार्य द्रोण ने समस्त विद्याओं एवं अस्त्रों में शिक्षित उन सभी शिष्यों को लाकर, शिल्पियों (कारीगरों) के द्वारा बनाये गए कृत्रिम (बनावटी) गीध को पेड़ के ऊपरी भाग में रखकर राजकुमारों के द्वारा अज्ञात लक्ष्य के विषय में कहा।

शब्दार्थः – प्रहरणज्ञाने = अस्त्र ज्ञान के विषय में। **जिज्ञासुः** = जानने की इच्छा वाले। **पुरुषर्षभः** = पुरुषों में श्रेष्ठ। **द्रोणः** = आचार्य द्रोण। **सर्वाविद्यास्त्रशिक्षितान्** = समस्त विद्याओं एवं अस्त्रों में शिक्षित। **तान्** = उन (शिष्यों) को। **सर्वान्** = सभी को। **समानीय** = लाकर (एकत्रित कर)। **शिल्पिभिः** = कारीगरों के द्वारा। **कृतम्** = बनाए हुए। **कृत्रिमम्** = बनावटी। **भासम्** = गीध को। **वृक्षाग्रे** = वृक्ष के ऊपरी भाग पर। **आरोप्य** = रखकर। **कुमाराणाम्** = राजकुमारों के। **अविज्ञातम्** = अज्ञात। **लक्ष्यभूतम्** = लक्ष्य के विषय में। **उपादिशत्** = उपदेश किया (कहा)।

3. अन्वयः–भवन्तः सर्वेऽपि (सर्वे, अपि) धनूंषि आदाय शीघ्रम् (आगच्छन्तु)। एतं भासं समुद्दिश्य सन्धितेषवः सत्वराः तिष्ठध्वम्।

अर्थः–आचार्य द्रोण ने कहा – आप सभी लोग धनुष लेकर शीघ्र आयें और इस गीध को लक्ष्य करके धनुष पर बाण चढ़ाकर शीघ्र ही खड़े हो जायें।

शब्दार्थः – भवन्तः सर्वे अपि = आप सभी। **धनूंषि** = धनुषों को। **आदाय** = लेकर। शीघ्रम् (जल्दी)। **एतं भासम्** इस गीध को। **समुद्दिश्य** = निशाना लगाकर (लक्ष्य करके)। **सन्धितेषवः** = धनुष पर बाण चढ़ाकर। **सत्वराः** = शीघ्रतापूर्वक (जल्दी से)। **तिष्ठध्वम्** = खड़े हो जायें।

4. अन्वयः–हे पुत्रकाः! मद्वाक्यसमकालं तु अस्य शिरः विनिपात्यताम् एकैकशः नियोक्ष्यामि तथा कुरुत।

अर्थः–हे पुत्रों! मेरे कहने के साथ ही इसका सिर काटकर गिरा दो। (मैं) एक-एक करके नियुक्त करूँगा, तुम लोग वैसा ही करना।।

शब्दार्थः – हे पुत्रकाः = हे पुत्रों। **मद्वाक्यसमकालम्** = मेरे कहने के साथ ही। **अस्य शिरः** = इसका सिर। **विनिपात्यताम्** = (काटकर) गिरा दो। **एकैकशः** = एक-एक करके। **नियोक्ष्यामि** = नियुक्त करूँगा। **तथा** = वैसा ही। **कुरुत** = करो।

5. अन्वयः—ततः आङ्गिरसां वरः पूर्वं युधिष्ठिरम् उवाच। हे दुर्धर्ष ! बाणं सन्धत्स्व। मद्वाक्यान्ते तं विमुञ्च।

अर्थः—तत्पश्चात् अङ्गिरागोत्र के ब्राह्मणों में श्रेष्ठ (आचार्य द्रोण) ने सबसे पहले युधिष्ठिर से कहा—हे दुर्जेय वीर ! बाण का सन्धान करो। मेरे कहने के अन्त में उसे छोड़ देना।

शब्दार्थः—ततः = तत्पश्चात्। **आङ्गिरसां वरः** = अङ्गिरा ग्रोत्र के ब्राह्मणों में श्रेष्ठ। **पूर्वम्** = पहले। **युधिष्ठिरम्** = युधिष्ठिर से। **उवाच** = कहा। **दुर्धर्ष** = दुर्जेय! **बाणम्** = बाण (का)। **सन्धत्स्व** = सन्धान करो। **मद्वाक्यान्ते** = मेरे कहने के अन्त में। **तम्** = उसे। **विमुञ्च** = छोड़ देना।

6. अन्वयः—ततः गुरुवाक्यप्रणोदितः परन्तपः युधिष्ठिरः पूर्वं धनुः गृह्य भासं समुद्दिश्य तस्थौ।

अर्थः—इसके बाद गुरु के वचन से प्रेरित हुए, शत्रुओं को तपाने वाले युधिष्ठिर पहले धनुष को लेकर गीध को लक्ष्य करके खड़े हो गये।

शब्दार्थः—ततः = इसके बाद। **गुरुवाक्यप्रणोदितः** = गुरु के वचन से प्रेरित हुए। **परन्तपः** = शत्रुओं को तपाने वाले। **युधिष्ठिरः** = युधिष्ठिर। **पूर्वम्** = पहले। **धनुः** = धनुष को। **गृह्य** = ग्रहण करके (लेकर)। **भासम्** = गीध को। **समुद्दिश्य** = लक्ष्य करके। **तस्थौ** = खड़े हो गये।

7. अन्वयः—सः कौन्तेयः तम् एनं वनस्पतिं, भवन्तं च तथा भ्रातॄन् भासं च पुनः पुनः पश्यामि इति उवाच।

अर्थः—उस कौन्तेय (युधिष्ठिर) ने, उनसे (द्रोणाचार्य से) "मैं इस वृक्ष को, और आप को तथा सभी भाइयों को और गीध को बार-बार देख रहा हूँ" ऐसा कहा।

शब्दार्थः—सः = उस (वह)। **कौन्तेयः** = कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर। **तम्** = उनसे (आचार्य द्रोण से)। **एनम्** = इस। **वनस्पतिम्** = वृक्ष को। **भवन्तम्** = आप को। **च** = और। **भ्रातॄन्** = भाइयों को। **भासम्**= गीध को। **पुनः-पुनः** = बार-बार। **पश्यामि** = देख रहा हूँ। **इति** = इस प्रकार (ऐसा), **उवाच** = कहा।

8. अन्वयः—त्वया एतत् लक्ष्यं वेद्धुं न शक्यम् इति कुत्सयन् अप्रीतमना इव द्रोणः तम् अपसर्प इति उवाच।

अर्थः—'तुम्हारे द्वारा यह लक्ष्य वेधा नहीं जा सकता' इस प्रकार नाराज होते हुए अप्रसन्न मन वाले आचार्य द्रोण ने 'दूर हटो' इस प्रकार उनको (युधिष्ठिर को) कहा।

शब्दार्थः—त्वया = तुम्हारे द्वारा। **एतत्** = यह। **लक्ष्यम्** = लक्ष्य। **वेद्धुम्** = वेधने में। **न** = नहीं। **शक्यम्** = जा सकता। **कुत्सयन्** = निन्दा करते हुए। **अप्रीतमना** = अप्रसन्न मनवाले। **इव** = जैसे (समान)। **द्रोणः** = आचार्य द्रोण ने। **तम्** = उनको (युधिष्ठिर को)। **अपसर्प** = दूर हटो। **इति** = इस प्रकार (ऐसा)। **उवाच** = कहा।

9. अन्वयः—ततः जिज्ञासुः महायशाः दुर्योधनादीन् तान् धार्तराष्ट्रान् तेन एव क्रमयोगेन पर्यपृच्छत्।

अर्थः—उसके बाद जिज्ञासु, महायशस्वी (आचार्य द्रोण) ने दुर्योधन आदि, उन धृतराष्ट्र के पुत्रों से उसी ढंग से क्रमपूर्वक पूछा।

शब्दार्थः—ततः = उसके बाद। **जिज्ञासुः** = जानने की इच्छा रखने वाले। **महायशाः** = महा यशस्वी। **दुर्योधनादीन्** = दुर्योधन आदि। **तान्** = उन सबको। **धार्तराष्ट्रान्** = धृतराष्ट्र के पुत्रों को। **तेन एव** = उसी ढंग से। **क्रमयोगेन** = क्रमपूर्वक। **पर्यपृच्छत्** = पूछा।

10. अन्वयः—(ततः सः) भीमादीन् अन्यान् च शिष्यान् अन्यदेशजान् राज्ञः च तथा (पर्यपृच्छत्)। सर्वे तत्सर्वं पश्यामः इति कुत्सिताः।

अर्थः—और (उसके बाद उन्होंने) भीम आदि अन्य शिष्यों तथा दूसरे देशों में उत्पन्न राजाओं से उसी प्रकार पूछा। सभी के यह कहने पर कि 'हम सब कुछ देख रहे हैं', आचार्य द्रोण द्वारा वे निन्दित किए गए।

शब्दार्थः—ततः = उसके बाद। **सः** = उन्होंने (आचार्य द्रोण ने)। **भीमादीन्** = भीमादि। **अन्यान्** = अन्य। **शिष्यान्** = शिष्यों को। **अन्यदेशजान्** = अन्य देशों में उत्पन्न। **राज्ञः** = राजाओं से। **तथा** = उसी प्रकार। **सर्वे** = सभी। **सर्वम्** = सब कुछ। **पश्यामः** = देख रहे हैं। **इति** = इस प्रकार। **कुत्सिताः** = निन्दित किये गये।

11. अन्वयः—ततः स्मयमानः द्रोणः धनञ्जयम् अभ्यभाषत—"इदानीं त्वया प्रहर्तव्यम् एतत् लक्ष्यं विलोक्यताम्।"

अर्थः—उसके बाद मुस्कुराते हुए आचार्य द्रोण ने धनञ्जय (अर्जुन) से कहा— "अब तुम्हारे द्वारा प्रहार किया जाना है, इस लक्ष्य को देखो"।

शब्दार्थः—ततः = उसके बाद। **स्मयमानः** = मुस्कुराते हुए। **द्रोणः** = आचार्य द्रोण ने। **धनञ्जयम्** = अर्जुन को। **अभ्यभाषत** = कहा। **इदानीम्** = अब। **त्वया** = तुम्हारे द्वारा। **प्रहर्तव्यम्** = प्रहार किया जाना चाहिए। **एतत्** = इस। **लक्ष्यम्** = लक्ष्य को। **विलोक्यताम्** = देखो।

12. अन्वयः—यदि (त्वम्) एनं भासं पश्यसि तथा वचः पुनः ब्रूहि। सः "भासस्य शिरः पश्यामि गात्रं न" इति अब्रवीत्।

अर्थः—यदि (तुम) इस गीध को देख रहे हो तो उसी प्रकार से वचन पुनः कहो, उसने "मैं भास (गीध) के सिर को देख रहा हूँ, शरीर को नहीं"— इस प्रकार कहा।

शब्दार्थः—यदि = यदि। **त्वम्** = तुम (अर्जुन)। **एनम्** = इस। **भासम्** = गीध को। **पश्यसि** = देख रहे हो। **तथा** = उसी प्रकार से। **वचः** = वचन। **पुनः** = फिर से। **ब्रूहि** = कहो। **सः** = उसने (अर्जुन ने)। **भासस्य** = गीध का। **शिरः** = सिर। **पश्यामि** = देख रहा हूँ। **गात्रम्** = शरीर। **न** = नहीं। **इति** = इस प्रकार। **अब्रवीत्** = कहा।

13. अन्वयः—अर्जुनेन एवम् उक्तः तु हृष्टतनूरुहः द्रोणः पार्थं "मुञ्चस्व" इति अब्रवीत्। सः अविचारयन् मुमोच।

अर्थः—अर्जुन के द्वारा इस प्रकार कहे गए, हर्षित रोमों वाले आचार्य द्रोण ने अर्जुन से, "(बाण) छोड़ दो" ऐसा कहा। अर्जुन ने बिना विचार किए ही (बाण) छोड़ दिया।

शब्दार्थः – अर्जुनेन = अर्जुन के द्वारा। **एवम्** = इस प्रकार। **उक्तः** = कहे गए। **तु** = तो। **हृष्टतनूरुहः** = हर्षित (रोमांचित) रोमों वाले। **द्रोणः** = आचार्य द्रोण ने। **पार्थम्** = पार्थ (अर्जुन को)। **मुञ्चस्व** = छोड़ दो। **इति** = ऐसा। **अब्रवीत्** = कहा। **सः** = उसने (अर्जुन ने)। **अविचारयन्** = बिना विचारे हुए। **मुमोच** = छोड़ दिया।

14. अन्वयः–पाण्डवः तरसा शिरः उत्कृत्य पातयामास, द्रोणः हर्षोद्रेकेण तं पाण्डवं पर्यष्वजत।

अर्थः–पाण्डव (अर्जुन) ने, शीघ्रता से सिर को काटकर गिरा दिया, और द्रोणाचार्य ने अतिप्रसन्नता से उन अर्जुन को गले लगा लिया।

शब्दार्थः – पाण्डवः = अर्जुन ने। **तरसा** = शीघ्रता से। **शिरः** = सिर। **उत्कृत्य** = काटकर। **पातयामास** = गिरा दिया। **द्रोण :** = आचार्य द्रोण ने। **हर्षोद्रेकेण** = अतिप्रसन्नता से। **तम्** = उनको। **पाण्डवम्** = अर्जुन को। **पर्यष्वजत** = गले लगा लिया।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कुमाराणां गुरुः कः?

(ख) 'शिरः पश्यामि भासस्य' इति केन उक्तम्?

(ग) द्रोणाचार्यः कं पर्यष्वजत?

(घ) कः भासस्य शिरः उत्कृत्य पातयामास?

2. अधोलिखितान् श्लोकान् पूरयत–

(क) तांस्तु सर्वान् समानीय............................।
द्रोणः ....जिज्ञासुः पुरुषर्षभः।।

(ख) कृत्रिमं.......................शिल्पिभिः कृतम्।
अविज्ञातं कुमाराणां.........................।

3. श्लोकं दृष्ट्वा अन्वयं पूरयत–

श्लोकः– ततो युधिष्ठिरं पूर्वमुवाचाङ्गिरसां वरः।
सन्धत्स्व बाणं दुर्धर्ष मद्वाक्यान्ते विमुञ्च तम्।।

अन्वयः–ततः आङ्गिरसां वरः पूर्वं ....उवाच। दुर्धष !...............सन्धत्स्व। मद्वाक्यान्ते तम् ....।

श्लोकः – शिरः उत्कृत्य तरसा पातयामास पाण्डवः।
हर्षोद्रेकेण तं द्रोणः पर्यष्वजत पाण्डवम् ।।

अन्वयः– पाण्डवः तरसा ....उत्कृत्य पातयामास। द्रोणः ....तं पाण्डवं पर्यष्वजत।

4. अधोलिखितानां श्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) मद्वावाक्यसमकालं .... कुरुत पुत्रकाः।।

(ख) तमुवाच .... चेति पुनः पुनः।।

(ग) ततो धनञ्जयं .... विलोक्यताम्।।

(घ) भासं पश्यसि .... सोऽब्रवीत्।।

5. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) शिरः पश्यामि भासस्य न गात्रमिति सोऽब्रवीत्।

(ख) नैतच्छक्यं त्वया वेद्धुं लक्ष्यमित्येव कुत्सयन्।

(ग) तमुवाच स कौन्तेयः पश्याम्येनं वनस्पतिम्।

6. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतार्थं लिखत–

(क) शीघ्रं भवन्तः .... सन्धितेषवः।।

(ख) ततो युधिष्ठिरः .... गुरुवाक्यप्रणोदितः।।

(ग) तमुवाचाऽपसर्पेति .... लक्ष्यमित्येव कुत्सयन्।।

(घ) अर्जुनेनैवमुक्तस्तु .... स मुमोचाविचारयन्।।

7. उचितं विकल्पं चिनुत–

(i) ''लक्ष्यवेधपरीक्षा' इति पाठः कस्मात् महाकाव्यात् उद्धृतः?

(क) नैषधीयचरितात् (ख) रामायणात् (ग) महाभारतात् (घ) रघुवंशमहाकाव्यात्

(ii) 'महाभारतम्' इति महाकाव्यस्य रचयिता कः?

(क) वाल्मीकिः (ख) वेदव्यासः (ग) कालिदासः (घ) भारविः

(iii) 'लक्ष्यवेधपरीक्षा'' इति पाठः महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः उद्धृतः?

(क) सभापर्वणः (ख) आदिपर्वणः (ग) विराटपर्वणः (घ) वनपर्वणः

(iv) कः प्रहरणज्ञाने जिज्ञासुः?

(क) युधिष्ठिरः (ख) अर्जुनः (ग) द्रोणः (घ) दुर्योधनः

(v) आचार्यः द्रोणः केषाम् अविज्ञातं लक्ष्यभूतमुपादिशत्?

(क) कुमाराणां (ख) राज्ञाम् (ग) पुत्राणाम् (घ) बाणानाम्

(vi) 'सर्वान्' इति पदे विभक्तिः अस्ति–

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

(vii) एकैकशः इति पदे सन्धिः अस्तिः–

(क) यण्सन्धिः (ख) वृद्धिसन्धिः (ग) गुणसन्धिः (घ) दीर्घसन्धिः

■

द्वितीयः पाठः

वृक्षाणां चेतनत्वम्

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ महाभारत के '**शान्तिपर्व**' के 184वें अध्याय से सङ्कलित है। इसमें दिखाया गया है कि वृक्ष भी अन्य प्राणियों के समान चेतन हैं। वे भी सुख-दुःख आदि का अनुभव करते हैं। अतः सभी मनुष्यों का यह कर्त्तव्य है कि उन्हें पेड़-पौधों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिये तथा किसी विशेष और उचित कारण के बिना पेड़ों को नहीं काटना चाहिये। वार्तालाप-शैली में संकलित निम्नलिखित पाठ्यसामग्री में प्रश्नकर्त्ता महर्षि भरद्वाज हैं तथा समाधानकर्त्ता महर्षि भृगु।*

भृगुरुवाच– अमितानां महाशब्दो यान्ति भूतानि सम्भवम्।
ततस्तेषां महाभूतशब्दोऽयमुपपद्यते।।1।।
चेष्टा वायुः खमाकाशमूष्माग्निः सलिलं द्रवः।
पृथिवी चात्र सङ्घातः शरीरं पाञ्चभौतिकम्।।2।।
इत्येतैः पञ्चभिर्भूतैर्युक्तं स्थावर-जङ्गमम्।
श्रोत्रं घ्राणं रसः स्पर्शो दृष्टिश्चेन्द्रियसंज्ञिता।।3।।

भरद्वाज उवाच– पञ्चभिर्यदि भूतैस्तु युक्ताः स्थावरजङ्गमाः।
स्थावराणां न दृश्यन्ते शरीरे पञ्चधातवः।।4।।
न शृण्वन्ति न पश्यन्ति न गन्धरससेविनः।
न च स्पर्शं विजानन्ति ते कथं पाञ्चभौतिकाः।।5।।

भृगुरुवाच– घनानामपि वृक्षाणामाकाशोऽस्ति न संशयः।
तेषां पुष्पफलव्यक्तिर्नित्यं समुपपद्यते।।6।।
ऊष्मतो म्लायते पर्णं त्वक् फलं पुष्पमेव च।
म्लायते शीर्यते चापि स्पर्शस्तेनात्र विद्यते।।7।।

वाय्वग्न्यशनिनिर्घोषैः फलं पुष्पं विशीर्यते।
श्रोत्रेण गृह्यते शब्दस्तस्माच्छृण्वन्ति पादपाः।।8।।
वल्ली वेष्टयते वृक्षं सर्वतश्चैव गच्छति।
न ह्यदृष्टेश्च मार्गोऽस्ति तस्मात् पश्यन्ति पादपाः।।9।।
पुण्यापुण्यैस्तथा गन्धैर्धूपैश्च विविधैरपि।
अरोगाः पुष्पिताः सन्ति तस्माज्जिघ्रन्ति पादपाः।।10।।
पादैः सलिलपानाच्च व्याधीनां चापि दर्शनात्।
व्याधिप्रतिक्रियत्वाच्च विद्यते रसनं द्रुमे।।11।।
वक्त्रेणोत्पलनालेन यथोर्ध्वं जलमाददेत्।
तथा पवनसंयुक्तः पादैः पिबति पादपः।।12।।
सुखदुःखयोश्च ग्रहणाच्छिन्नस्य च विरोहणात्।
जीवं पश्यामि वृक्षाणामचैतन्यं न विद्यते।।13।।

तेन तज्जलमादत्तं जरयत्यग्नि–मारुतौ।
आहारपरिणामाच्च स्नेहो वृद्धिश्च जायते।। 14।।
एतेषां सर्ववृक्षाणां छेदनं नैव कारयेत्।
चतुर्मासे विशेषेण विना यज्ञादिकारणम्।। 15।।
एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।
वासितं वै वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा।। 16।।

दिग्दर्शिका

1. अन्वयः–अमितानां (कृते) महाशब्दः (प्रयुज्यते)। (तेभ्यः) भूतानि सम्भवं यान्ति। ततः तेषां (कृते) अयं महाभूतशब्दः उपपद्यते।

अर्थः–अपरिमेय (असीमित) पदार्थों के लिए 'महा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। उनसे प्राणी उत्पन्न होते हैं। इसीलिए उन (असीमित पदार्थों) के लिये यह 'महाभूत' शब्द प्रयुक्त होता है।

शब्दार्थः–**अमितानाम्** = अपरिमेयों (जिन्हें मापा न जा सके) के। **भूतानि** = प्राणी। **सम्भवम्** = जन्म। **यान्ति** = प्राप्त करते हैं। **महाभूतम्** = (पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश) सृष्टि के व्यापक एवं मूल तत्त्व। **उपपद्यते** = प्रयुक्त होता है।

2. अन्वयः–अत्र चेष्टा वायुः (अस्ति), खम् आकाशम् (अस्ति), ऊष्मा अग्निः (अस्ति), द्रवः सलिलम् (अस्ति), सङ्घातः पृथ्वी च, (एवं) शरीरं पाञ्चभौतिकम् (भवति)।

अर्थः–यहाँ (शरीर में) चेष्टा वायु है, खोखलापन या अवकाश आकाश है, गर्मी अग्नि है, द्रव पदार्थ जल है तथा (अणुओं का) समूह या ठोसपन पृथ्वी है। अतः शरीर पाँच महाभूतों (पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश) से बना हुआ है।

शब्दार्थः–**खम्** = खोखलापन। **सलिलम्** = जल, **सङ्घातः** = समूह या ठोसपन। **चेष्टा** = गतिशीलता। **पाञ्चभौतिकम्** = पाँच महाभूतों से बना।

3. अन्वयः–इति स्थावरजङ्गमम् एतैः पञ्चभिः भूतैः युक्तम्। श्रोत्रं घ्राणं, रसः, स्पर्शः, दृष्टिः च इन्द्रियसञ्ज्ञिताः।

अर्थः–इस प्रकार इन पाँच भूतों (पृथ्वी, जल आदि) से युक्त सभी स्थावर (स्थिर रहने वाले) तथा जङ्गम (गतिशील) प्राणी होते हैं। श्रोत्र (कान), घ्राण (नासिका), रस (जिह्वा), स्पर्श (त्वचा) तथा दृष्टि (आँख), ये इन्द्रिय नाम वाले हैं।

शब्दार्थः–**स्थावर** = स्थिर रहनेवाले। **जङ्गम** = गतिशील। **संज्ञिताः** = नामक। **घ्राणम्** = नासिका। **श्रोत्रम्** = कान।

4. अन्वयः–यदि स्थावरजङ्गमाः तु पञ्चभिः भूतैः युक्ताः, (तर्हि) स्थावराणां शरीरे पञ्चधातवः (कथं) न दृश्यन्ते।

अर्थः–यदि स्थिर रहने वाले तथा गतिशील सभी पदार्थ, पाँच भूतों से युक्त हैं तो स्थावरों (वृक्षादि) के शरीर में पाँच मूल तत्त्व (क्यों) नहीं दिखायी देते।

शब्दार्थः– पञ्चधातवः = मूलतत्त्व या पाँच भूत (पृथ्वी आदि)। **स्थावराणां** = स्थिर प्राणियों के।

5. अन्वयः– (स्थावराः) न शृण्वन्ति न पश्यन्ति न गन्धरससेविनः। न च स्पर्शं विजानन्ति ते कथं पाञ्चभौतिकाः (सन्ति)?

अर्थः–(वृक्षादि स्थावर) न सुनते हैं, न देखते हैं, न गन्ध और रस का सेवन करते हैं, न तो स्पर्श को जानते हैं, तो वे कैसे पाञ्चभौतिक (पाँच भूतों से बने हुए) कहे जा सकते हैं ?

शब्दार्थः–शृण्वन्ति = सुनते हैं। **गन्धरससेविनः** = गन्ध एवं रस का सेवन करनेवाले। **विजानन्ति** = जानते हैं।

6. अन्वयः– घनानां वृक्षाणाम् अपि आकाशः अस्ति (अत्र) संशयः न। तेषां नित्यं पुष्पफलव्यक्तिः समुपद्यते।

अर्थः–ठोस वृक्षों में (भी) आकाश तत्त्व होता है इसमें संशय नहीं है। (आकाश तत्त्व की उपस्थिति के कारण) उनमें (वृक्षों में) लगातार फल और फूलों की अभिव्यक्ति सम्भव होती है।

शब्दार्थः– घनानाम् = ठोस। **संशयः** = सन्देह। **नित्यम्** = लगातार। **पुष्पफलव्यक्तिः** = फूलों एवं फलों का निकलना। **समुपपद्यते** = सम्भव होता है।

7. अन्वयः– ऊष्मतः पर्णं म्लायते त्वक् फलं पुष्पम् एव च म्लायते शीर्यते अपि च, तेन अत्र स्पर्शः विद्यते।

अर्थः–गर्मी से (वृक्षों के) पत्ते कुम्हला जाते हैं, छाल, फल एवं फूल भी कुम्हला जाते हैं और बिखर जाते हैं अतः (वृक्षों में) स्पर्श (का अनुभव) होता है।

शब्दार्थः–ऊष्मतः = गर्मी से। **पर्णम्** = पत्ता। **म्लायते** = कुम्हला जाता है। **त्वक्** = त्वचा (छाल)। **शीर्यते** = बिखर जाती है। **विद्यते** = विद्यमान है। **तेन** = उस (कारण) से।

8. अन्वयः– वायु-अग्नि-अशनि-निर्घोषैः फलं विशीर्यते पुष्पम् (च)। (यतः) श्रोत्रेण शब्दः गृह्यते, तस्मात् (कारणात्) पादपाः शृण्वन्ति।

अर्थ–वायु, अग्नि और बिजली (आकाशीय) की आवाज से फल-फूल बिखर जाते हैं। क्योंकि कानों से शब्द ग्रहण किया जाता है इस कारणवश वृक्ष सुनते हैं।

शब्दार्थः–अशनि = आकाशीय विद्युत्। **निर्घोषैः** = ध्वनि से। **विशीर्यते** = बिखर जाता है। **गृह्यते** = ग्रहण किया जाता है। **तस्मात्** = उस (कारण) से। **पादपाः** = वृक्ष।

9. अन्वयः– वल्ली वृक्षं वेष्टयते, सर्वतः गच्छति च अदृष्टेः च मार्गः न अस्ति। तस्मात् पादपाः पश्यन्ति।

अर्थः–लता वृक्ष को लपेट लेती है और हर ओर ही गमन करती है। न देखनेवाले के लिये कोई मार्ग नहीं होता। अतः वृक्ष देखते हैं।

शब्दार्थः–**वल्ली** = बेंत या लता। **वेष्टयते** = लपेट लेती है। **सर्वतः** = सब ओर से। **अदृष्टेः** = दृष्टिहीन अथवा न देखनेवाले के। **तस्मात्** = अतः (इस कारण से)। **पश्यन्ति** = देखते हैं।

10. अन्वयः– तथा च पुण्यापुण्यैः गन्धैः विविधैः धूपैः अपि पादपाः अरोगाः पुष्पिताः सन्ति। तस्मात् (पादपाः) जिघ्रन्ति।

अर्थः–वृक्ष, पवित्र और अपवित्र गन्धों से और अनेक प्रकार की धूपों से भी, रोगमुक्त एवं फूलों से युक्त होते हैं, अतः वृक्ष सूँघते हैं।

शब्दार्थः–**पुण्यापुण्यैः** = पवित्र एवं अपवित्र द्वारा। **अरोगाः** = रोगमुक्त। **पुष्पिताः** = फूलों से युक्त। **जिघ्रन्ति** = सूँघते हैं।

11. अन्वयः– पादैः सलिलपानात्, व्याधीनां च दर्शनात् अपि, च व्याधिप्रतिक्रियत्वात् द्रुमे रसनं विद्यते।

अर्थः–पैरों (जड़ों) से पानी पीने के कारण, रोगों के दिखाई पड़ने के कारण तथा रोगों के प्रति प्रतिक्रिया (प्रतिरोधात्मकता, उपचार) करने के कारण वृक्ष में स्वाद लेने की सामर्थ्य (रसनेन्द्रिय) होती है।

शब्दार्थः–**पादैः** = पैरों (वृक्षों के लिये जड़ों) द्वारा। **व्याधीनाम्** = रोगों के। **व्याधिप्रतिक्रियत्वात्** = रोगों की प्रतिक्रिया (प्रतिरोधात्मकता, उपचार) होने से। द्रुमे = वृक्ष में। **रसनम्** = रसनेन्द्रिय। **विद्यते** = विद्यमान है।

12. अन्वयः–यथा वक्त्रेण उत्पलनालेन जलम् ऊर्ध्वम् आददेत् तथा पवनसंयुक्तः पादपः पादैः (जलं) पिबति।

अर्थः–जिस प्रकार मुख से, कमल के डण्ठल द्वारा, जल ऊपर की ओर ग्रहण किया जाता है, उसी प्रकार हवा से युक्त वृक्ष पैरों से जल पीता है।

शब्दार्थः–**वक्त्रेण** = मुख द्वारा। **उत्पल** = कमल। **नालेन** = डण्ठल के द्वारा। **आददेत्** = ग्रहण करता है। **तथा** = उसी प्रकार। **पवनसंयुक्तः** = हवा से युक्त।

13. अन्वयः–(वृक्षाणां) सुखदुःखयोः ग्रहणात् छिन्नस्य विरोहणात् च (तेषु) जीवं पश्यामि, (तत्र) अचैतन्यं न विद्यते।

अर्थः–वृक्षों के सुख और दुःख का अनुभव करने से और कटे हुए (भाग) के फिर उग आने से, मैं उनमें जीवन देखता हूँ। वहाँ (वृक्षों में) अचैतन्य (चेतना या जीवन का अभाव) नहीं है।

शब्दार्थः–**सुखदुःखयोः** = सुख-दुःख के। **ग्रहणात्** = ग्रहण या अनुभव करने से। **विरोहणात्** = पुनः उगने के कारण। **जीवम्** = जीवन। **अचैतन्यम्** = चेतना का अभाव।

14. अन्वयः–तेन आदत्तं तत् जलम् अग्नि-मारुतौ जरयति, आहारपरिणामात् च (तेषु) स्नेहः वृद्धिः च जायते।

अर्थः–उस (वृक्ष) द्वारा ग्रहण किया गया वह जल, अग्नि (सूर्य का प्रकाश, ऊष्मा) और वायु को पचाता है, भोजन के पच जाने से उनमें चिकनापन उत्पन्न होता है, और वृद्धि होती है।

शब्दार्थः–**आदत्तम्** = ग्रहण किया गया। **अग्निमारुतौ** = अग्नि और वायु को। **जरयति** = पचाता है। **आहारपरिणामात्** = भोजन के पच जाने से। स्नेहः चिकनापन। **जायते** = उत्पन्न होता है।

15. अन्वयः–एतेषां सर्ववृक्षाणां यज्ञादिकारणं विना छेदनं नैव कारयेत्, विशेषेण चातुर्मासे।

अर्थः–इन सभी वृक्षों की यज्ञादि विशेष कारण के बिना कटाई नहीं करनी चाहिए, विशेष रूप से (वर्षा के) चार महीनों में।

शब्दार्थः–**सर्ववृक्षाणाम्** = सभी वृक्षों की। **छेदनम्** = कटाई। **कारयेत्** = करना चाहिये। **विशेषेण** = विशेष रूप से। **चातुर्मासे** = वर्षा के चार महीनों में।

16. अन्वयः–पुष्पितेन, सुगन्धिना, एकेन अपि सुवृक्षेण सर्वं वै वनं वासितं (भवति), यथा सुपुत्रेण कुलम् (प्रतिष्ठितं भवति)।

अर्थः–फूलों से युक्त, अच्छी गन्ध से युक्त, एक भी अच्छे वृक्ष से पूरा ही जंगल सुगन्धित हो जाता है, जैसे एक ही सुपुत्र द्वारा वंश (प्रतिष्ठित होता है।)

शब्दार्थः–**सुगन्धित** = खुशबू से युक्त। **वासितम्** = सुगन्धित। **कुलम्** = वंश।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) 'वृक्षाणां चेतनत्वम्' इति पाठे कः प्रश्नकर्त्ता?

(ख) महर्षिभरद्वाजस्य शङ्कासमाधानं कः करोति?

(ग) अमितानां कृते कः शब्दः प्रयुज्यते?

(घ) वल्ली कं सर्वतः वेष्टयते?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) भूतानि केभ्यः सम्भवं यान्ति?

(ख) के इन्द्रियसंज्ञिताः?

(ग) शब्दः केन गृह्यते?

(घ) सर्ववृक्षाणां विशेषेण कदा छेदनं न कारयेत्?

3. श्लोकांशान् पूरयत–

(क) पृथिवी चात्र संघातः शरीरं .... ।

(ख) व्याधिप्रतिक्रियत्वाच्च विद्यते .... द्रुमे।

(ग) म्लायते शीर्यते चापि .... तेनात्र विद्यते।

(घ) वासितं वै वनं सर्वं .... ।

4. अधोलिखितानां श्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) न शृण्वन्ति .... पाञ्चभौतिकाः।।

(ख) सुखदुःखयोश्च .... न विद्यते।।

(ग) वल्ली वेष्टयते .... पादपाः।।

(घ) एतेषां सर्ववृक्षाणाम् .... कुलं यथा।

5. अधोऽङ्कितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) शरीरं पाञ्चभौतिकम्।

(ख) वासितं वै वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा।

(ग) एतेषां सर्ववृक्षाणां छेदनं नैव कारयेत्।

(घ) पादैः पिबति पादपः।

6. अधोलिखितश्लोकानां संस्कृतभाषया अर्थं लिखत–

(क) घनानामपि .... समुपपद्यते।

(ख) ऊष्मतो .... तेनात्र विद्यते।

(ग) चेष्टा वायुः .... पाञ्चभौतिकम्।

(घ) एकेनापि .... कुलं यथा।

7. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत–

(i) भूतानि केभ्यः सम्भवं यान्ति?

(क) स्थावरेभ्यः (ख) जङ्गमेभ्यः (ग) महाभूतेभ्यः (घ) वृक्षेभ्यः

(ii) भरद्वाजानुसारं के न शृण्वन्ति, न च पश्यन्ति?

(क) वृक्षाः (ख) मानवाः (ग) महाभूतानि (घ) शब्दाः

(iii) कस्य मार्गः नास्तिः?

(क) वृक्षस्य (ख) भूतस्य (ग) अरोगस्य (घ) अदृष्टेः

(iv) वृक्षाः कैः सलिलपानं कुर्वन्ति?

(क) हस्तैः (ख) मुखैः (ग) पादैः (घ) नेत्रैः

(v) व्याधिप्रतिक्रियत्वात् कस्येन्द्रियस्य प्रमाणं गृह्यते?

(क) श्रोत्रेन्द्रियस्य (ख) रसनेन्द्रियस्य (ग) त्वगिन्द्रियस्य (घ) घ्राणेन्द्रियस्य

तृतीयः पाठः

सूक्तिसुधा

पाठपरिचयः

संस्कृत-साहित्य में प्रचुर मात्रा में नीतिपरक काव्य उपलब्ध हैं यथा-नीतिशतकम्, विदुरनीतिः, मनुस्मृतिः, हितोपदेशः इत्यादि। 'सूक्ति-सुधा' पाठ में बहुमूल्य सूक्तिपरक श्लोकों का संकलन किया गया है जिनके माध्यम से संस्कृतभाषा की विशेषता, सुभाषित का महत्त्व, अन्न-जल एवं सुन्दर वचन को वास्तविक रत्न, विद्वानों एवं मूर्खों के समय बिताने का साधन, सज्जनों की संगति के लाभ एवं दुर्जनों की संगति के दुष्प्रभाव, विद्यारूपी धन की महत्ता एवं संस्कारयुक्त वाणी का महत्त्व जैसी नैतिक शिक्षाएँ दी गई हैं। सूक्ति का अर्थ होता है– सु + उक्ति = सूक्ति सुन्दर कथन।

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।
तस्माद्धि काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम्।।1।।

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।।2।।

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।3।।

श्लोकस्तु श्लोकतां याति यत्र तिष्ठन्ति साधवः।
लकारो लुप्यते तत्र यत्र तिष्ठन्त्यसाधवः।।4।।

वसुमतीपतिना नु सरस्वती बलवता रिपुणा न च नीयते।
समविभागहरैर्न विभज्यते विबुधबोधबुधैरपि सेव्यते।।5।।

लक्ष्मीर्न या याचकदुःखहारिणी विद्या न याप्यच्युतभक्तिकारिणी।
पुत्रो न यः पण्डितमण्डलाग्रणीः सा नैव सा नैव स नैव नैव।।6।।

केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः।
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्द्धजाः।।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।7।।

दिग्दर्शिका

1. अन्वयः—भाषासु गीर्वाणवाणी मुख्या, मधुरा दिव्या (च अस्ति), तस्मात् हि काव्यं मधुरं, तस्मात् अपि सुभाषितम् (मधुरम् अस्ति)।

अर्थः—सभी भाषाओं में देववाणी संस्कृत प्रमुख, मधुर एवं दिव्य गुणों से युक्त है। उससे भी काव्य मधुर है और उससे भी अधिक सुभाषित मधुर है।

शब्दार्थः—गीर्वाणभारती = देवताओं की वाणी, संस्कृत। **मधुरा** = कर्णप्रिय। **सुभाषितम्** = सुन्दर वचन।

2. अन्वयः—पृथिव्यां जलम् अन्नं सुभाषितं (इति) त्रीणि रत्नानि (सन्ति) मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

अर्थः—पृथ्वी पर जल, अन्न और सुन्दर वचन– ये तीन रत्न हैं। मूर्ख लोग तो पत्थर के टुकड़ों को रत्न का नाम देते हैं।

शब्दार्थः—पाषाणखण्डेषु = पत्थरों के टुकड़े में। **रत्नसंज्ञा** = रत्नों का नाम, **विधीयते** = दी जाती है।

3. अन्वयः—धीमतां कालः काव्यशास्त्रविनोदेन गच्छति, मूर्खाणां च (कालः) व्यसनेन, निद्रया कलहेन वा (गच्छति)।

अर्थः—बुद्धिमानों का समय काव्य और शास्त्रों के अध्ययन के मनोरंजन द्वारा व्यतीत होता है जबकि मूर्खों का समय बुरी आदतों, सोने एवं झगड़ा करने में व्यतीत होता है।

शब्दार्थः—धीमताम् = बुद्धिमानों का। **व्यसनेन** = निन्दनीय कर्मों से, बुरी आदतों से।

4. अन्वयः—यत्र साधवः तिष्ठन्ति, (तत्र) श्लोकः तु श्लोकतां याति। यत्र असाधवः तिष्ठन्ति तत्र लकारो लुप्यते।।

अर्थः—जहाँ सज्जन पुरुष रहते हैं वहाँ श्लोक वस्तुतः श्लोकत्व (छन्द) की प्राप्ति करता है, किन्तु जहाँ दुर्जन व्यक्ति रहते हैं वहाँ श्लोक का 'ल्' लुप्त होकर वह शोक को प्राप्त हो जाता है।

शब्दार्थः—साधवः = सज्जन पुरुष। **लुप्यते** = लोप (अदृश्य) हो जाता है। **श्लोकताम्** = श्लोकत्व को (संस्कृत के छन्दोबद्ध पद्य को अथवा एक छन्द विशेष को श्लोक कहते हैं।)

5. अन्वयः–सरस्वती वसुमतीपतिना बलवता रिपुणा च न नीयते, समविभागहरैः न विभज्यते, विबुधबोधबुधैः अपि सेव्यते।

अर्थः–सरस्वती अर्थात् विद्या राजा या बलशाली शत्रु के द्वारा हरण नहीं की जा सकती, न ही भाईयों में समान रूप से बाँटी जा सकती है देवताओं के समान ज्ञान से युक्त विद्वानों द्वारा यह (विद्या) सेवित होती है।

शब्दार्थः–वसुमतीपतिना = पृथ्वी के पति, राजा द्वारा। **समविभागहरैर्न** = समान हिस्सा लेने वाले भाई बहनों के द्वारा नहीं। **विभज्यते** = बाँटी जा सकती है। **बिबुधबोधबुधैरपि** = देवताओं के समान ज्ञान रखनेवाले विद्वानों के द्वारा। **सेव्यते** = सेवित की जाती है।

6. अन्वयः–या लक्ष्मीः याचकदुःखहारिणी न (अस्ति) सा (लक्ष्मीः) नैव अस्ति या विद्या अपि अच्युत भक्तिकारिणी न (अस्ति), सा (विद्या) नैव अस्ति। यः पुत्रः पण्डितमण्डलाग्रणीः न (अस्ति), सः (पुत्रः) नैव अस्ति।

अर्थः–जो लक्ष्मी याचकों के दुःखों को दूर नहीं करती है, वह लक्ष्मी ही नहीं होती है, जो विद्या भगवान् विष्णु में भक्ति उत्पन्न नहीं करती है वह विद्या नहीं है तथा जो पुत्र पण्डितों (विद्वानों) के समूह में अग्रणी नहीं है वह पुत्र (कहलाने योग्य) नहीं है, पुत्र नहीं है।

शब्दार्थः–याचकदुःखहारिणी = याचकों के दुःख का हरण करनेवाली। **याऽप्यच्युतभक्तिकारिणी** = जो विष्णु की भक्ति उत्पन्न करनेवाली। **पण्डितमण्डलाग्रणीः** = पण्डितों के समूह में आगे रहनेवाला।

7. अन्वयः–केयूराः पुरुषं न विभूषयन्ति, न चन्द्रोज्ज्वलाः हाराः न स्नानं, न विलेपन, न कुसुमं, न अलङ्कृता मूर्धजाः, विभूषयन्ति, एका वाणी या संस्कृता धार्यते, पुरुषं समलङ्करोति। भूषणानि खलु क्षीयन्ते। वाग्भूषणं सततं भूषणम् (अस्ति)।

अर्थः–पुरुष को बाजूबन्द सुशोभित नहीं करते हैं, चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार सुशोभित नहीं करता है। स्नान, चन्दनादि का लेप, फूलों से सुसज्जित केश भी सुशोभित नहीं करते हैं। एक मात्र संस्कारयुक्त वाणी ही पुरुष को सुशोभित करती है। अन्य आभूषण तो नष्ट हो जाते हैं; किन्तु वाणी रूपी आभूषण सदैव आभूषण बना रहता है।

शब्दार्थः–केयूराः = बाजूबन्द (बाँह का आभूषण)। **विलेपनम्** = चन्दनादि का लेप। **मूर्धजाः** = केश (बाल)। **वाण्येका** = एकमात्र वाणी। **क्षीयन्ते** = नष्ट हो जाते हैं।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) 'गीर्वाणभारती' शब्दः कस्यै भाषायै प्रयुक्तः?

(ख) मूढैः केषु रत्नसंज्ञा विधीयते?

(ग) बुधैरपि का सेव्यते?

(घ) पुरुषं का समलङ्करोति?

2. अधोलिखितश्लोकांशान् पूरयत–

(क) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि .... ।

(ख) व्यसनेन च मूर्खाणां .... ।

(ग) वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं .... ।

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत—

तस्माद्धि, तिष्ठन्त्यसाधवः, बुधैरपि, वाग्भूषणम् वाण्येका, नैव।

4. अधोलिखितानां श्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत।

(क) भाषासु मुख्या .... सुभाषितम्।।

(ख) काव्यशास्त्रविनोदेन .... कलहेन वा।।

(ग) केयूराः न .... वाग्भूषणं भूषणम्।।

5. अधोलिखितानां सूक्तीनां व्याख्यां हिन्दीभाषया कुरुत–

(क) मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

(ख) लक्ष्मीर्न या याचकदुःखहारिणी।

(ग) वाग्भूषणं भूषणम्।

6. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतभाषया अर्थं लिखत–

(क) काव्यशास्त्रविनोदेन .... कलहेन वा।

(ख) वसुमतीपतिना .... सेव्यते।

(ग) भाषासु .... सुभाषितम्।

7. समीचीनं विकल्पं चिनुत –

(i) पृथिव्यां कति रत्नानि सन्ति ?

(क) सप्त (ख) पञ्च (ग) त्रीणि (घ) चत्वारि

(ii) धीमतां कालः केन प्रकारेण याति ?

(क) व्यसनेन (ख) निद्रया (ग) कलेहन (घ) काव्यशास्त्रविनोदेन

(iii) कः पुत्रः पुत्रः भवति ?

(क) पण्डितमण्डलाग्रणीः (ख) याचकदुःखहारिणी (ग) अच्युतभक्तिकारिण (घ) न कोऽपि

(iv) पुरुषस्य सततं भूषणं किम् ?

(क) केयूराः (ख) विलेपनम् (ग) कुसुमम् (घ) संस्कृतावाणी

■

चतुर्थः पाठः

क्षान्तिसौख्यम्

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ श्री वेदव्यास विरचित **'महाभारत'** नामक महाकाव्य से संकलित है। महाभारत में लगभग एक लाख श्लोंको का संकलन है इसीलिए इसे 'शतसाहस्त्री संहिता' भी कहा जाता है। अट्ठारह पर्वों में निबद्ध इस काव्य में मुख्यरूप से चन्द्रवंशी राजाओं (कौरव एवं पाण्डवों) के परस्पर संघर्ष का उल्लेख किया गया है। कौरव और पाण्डवों के बीच होने वाले युद्ध के अन्तिम समय में भीष्म-पितामह पाण्डु के ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर को शरशय्या पर लेटे हुए उपदेश प्रदान करते हैं। क्षमा अथवा सहनशीलता में व्यक्ति का सबसे बड़ा सुख निहित होता है।*

यो दुर्लभतरं प्राप्य मानुषं द्विषते नरः।
धर्मावमन्ता कामात्मा भवेत् स खलु वञ्चते।।1।।

सान्त्वेनान्नप्रदानेन प्रियवादेन चाप्युत।
समदुःखसुखो भूत्वा स परत्र महीयते।।2।।

आक्रुश्यमानो नाक्रुश्येन्मन्युरेनं तितिक्षतः।
आक्रोष्टारं निर्दहति सुकृतं च तितिक्षतः।।3।।

सक्तस्य बुद्धिश्चलति मोहजालविवर्धिनी।
मोहजालावृतो दुःखमिह चामुत्र चाश्नुते।।4।।

अतिवादांस्तितीक्षेत नाभिमन्येत कञ्चन।
क्रोध्यमानः प्रियं ब्रूयादाक्रुष्टः कुशलं वदेत्।।5।।

भैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतन्नानुचिन्तयेत्।
चिन्त्यमानं हि न व्येति भूयश्चापि प्रवर्धते।।6।।

सर्वे क्षयान्ताः निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगाः विप्रयोगान्ताः मरणान्तं हि जीवितम्।।7।।

दमः क्षमा धृतिस्तेजः सन्तोषः सत्यवादिता।
ह्रीरहिंसाऽव्यसनिता दाक्ष्यं चेति सुखावहाः ।। 8 ।।

ये क्रोधं सन्नियच्छन्ति क्रुद्धान् संशमयन्ति च।
न कुप्यन्ति च भूतानां दुर्गाण्यतितरन्ति ते ।। 9 ।।

अभयं यस्य भूतेभ्यो भूतानामभयं यतः।
तस्य देहाद् विमुक्तस्य भयं नास्ति कुतश्चन ।। 10 ।।

दिग्दर्शिका

1. अन्वयः—यः नरः दुर्लभतरं मानुषं (जन्म) प्राप्य द्विषते, सः धर्मावमन्ता कामात्मा (च) भवेत् स खलु (आत्मानं) वञ्चते।

अर्थः—जो मनुष्य अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य का जन्म प्राप्त कर (दूसरों से) द्वेष करता है, वह धर्म का अनादर करने वाला तथा कामनाओं में आसक्त रहनेवाला होता है। वह स्वयं को ही ठगता है।

शब्दार्थः–नरः = मनुष्य। **दुर्लभतरम्** = अत्यन्त दुर्लभ। **प्राप्य** = पाकर। **द्विषते** = द्वेष करता है। **धर्मावमन्ता** = धर्म का अनादर करनेवाला। **कामात्मा** = कामनाओं में आसक्त। **वञ्चते** = ठगता है।

2. अन्वयः–(यः) सान्त्वेन अन्नप्रदानेन उत प्रियवादेन च अपि सुखदुःखसमः भूत्वा परत्र महीयते।

अर्थः–वह (मनुष्य) सान्त्वना के द्वारा, अन्न प्रदान कर,, प्रियवचन बोलकर तथा सुख और दुःख में समभाव को प्राप्त–कर दूसरे लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

शब्दार्थः–सान्त्वेन = सान्त्वना के द्वारा। **अन्नप्रदानेन** = अन्नप्रदान करके। **प्रियवादेन** = प्रिय वचनों द्वारा। **भूत्वा** = होकर। **परत्र** = दूसरे लोक में। **महीयते** = प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

3. अन्वयः–आक्रुश्यमानः न आक्रुश्येत्। तितिक्षितः मन्युः एनम् आक्रोष्टारं निर्दहति, तितिक्षितः च सुकृतम् (भवति)।

अर्थः–(दूसरों के द्वारा) अपशब्द कहे जाते हुए भी (व्यक्ति को बदले में) अपशब्द नहीं कहना चाहिए। क्षमाशील (व्यक्ति) का क्रोध उस अपशब्द कहने वाले व्यक्ति को जला देता है तथा क्षमाशील (व्यक्ति) को पुण्य प्राप्त होता है।

शब्दार्थः–आक्रुश्यमानः = अपशब्द या गाली दिया जाता हुआ। **न आक्रुश्येत्** = अपशब्द नहीं कहना चाहिए। **तितिक्षितः** = क्षमाशील व्यक्ति का। **आक्रोष्टारम्** = अपशब्द कहने वाले को। **मन्युः** = क्रोध। **निर्दहति** = जलाता है। **सुकृतम्** = पुण्य।

4. अन्वयः–सक्तस्य मोहजालविवर्धिनी बुद्धिः चलति। मोहजालावृतः इह च अमुत्र च दुःखम् अश्नुते।

अर्थः–(संसार में) आसक्ति रखने वाले (व्यक्ति) की मोहजाल को बढ़ानेवाली बुद्धि गीतशील रहती है। मोहजाल से घिरा हुआ (व्यक्ति) इस लोक में और परलोक में दुःख प्राप्त करता है।

शब्दार्थः–सक्तस्य = आसक्ति रखने वाले का। **विवर्धिनी** = बढ़ानेवाली। **आवृतः** = घिरा हुआ (ढका हुआ)। **इह** = इस लोक में। **अमुत्र** = परलोक में। **अश्नुते** = प्राप्त करता है।

5. अन्वयः–अतिवादान् तितीक्षेत। कञ्चन न अभिमन्येत। क्रोध्यमानः प्रियं ब्रूयात्। आकुष्टः कुशलं वदेत्।

अर्थः–कटुवचनों को सहन करना चाहिए। किसी के प्रति अभिमान नहीं करना चाहिए। क्रोध दिलाये जाने पर भी प्रिय बोलना चाहिए। अपशब्द कहे जाने पर कुशल बोलना चाहिए।

शब्दार्थः–अतिवादान् = कटुवचनों को। **तितीक्षेत** = सहन करना चाहिए। **अभिमन्येत** = अभिमान करना चाहिए। **कञ्चन** = किसी के प्रति। **क्रोध्यमानः** = क्रोध दिलाया जाता हुआ। **आक्रुष्टः** = अपशब्द कहा गया। **वदेत्** = बोलना चाहिए।

6. अन्वयः–एतद् दुःखस्य भैषज्यं (अस्ति) यत् एतत् न अनुचिन्तयेत् हि चिन्त्यमानं (दुःखम्) न व्येति, भूयः च अपि प्रवर्धते।

अर्थः—यह दुःख की औषधि है कि इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि चिन्तन किया गया दुःख कम नहीं होता बल्कि और अधिक बढ़ता है।

शब्दार्थः—एतद् = यह। **भैषज्यम्** = ओषधि। **अनुचिन्तयेत्** = चिन्तन करना चाहिए। **न व्येति** = कम नहीं होता है। **भूयः** = अधिक। **प्रवर्धते** = बढ़ जाता है।

7. अन्वयः—सर्वे निचयाः क्षयान्ताः (सन्ति) समुच्छ्रयाः पतनान्ताः (सन्ति)। संयोगाः विप्रयोगान्ताः (सन्ति) जीवितं हि मरणान्तम् (अस्ति)।

अर्थः—सभी प्रकार के संग्रह क्षयान्त होते हैं अर्थात् अन्त में क्षय को प्राप्त करते हैं। (सभी प्रकार की) उचाइयाँ अन्त में पतन प्राप्त करने वाली होती हैं। (सभी प्रकार के) संयोग अन्त में वियोग से युक्त होते हैं और जीवन अन्त में मृत्यु को प्राप्त करता है।

शब्दार्थः—निचयाः = संग्रह। **क्षयान्ताः** = अन्त में क्षय को प्राप्त करते हैं। **समुच्छ्रयाः** = ऊँचाइयाँ। **पतनान्ताः** = अन्त में पतन को प्राप्त करती हैं। **विप्रयोगान्ताः** = अन्त में वियोग को प्राप्त करते हैं। **मरणान्तम्** = अन्त में मृत्यु प्राप्त करनेवाला।

8. अन्वयः—दमः, क्षमा, धृतिः, तेजः, संतोषः, सत्यवादिता, ह्रीः, अहिंसा, अव्यसनिता, दाक्ष्यं च इति सुखावहाः।

अर्थः—पञ्च ज्ञानेन्द्रियों का उनके विषयों से हटाना (दमन), क्षमा, धैर्य, तेज, सन्तोष, सत्यभाषण, लज्जा, अहिंसा, दुर्व्यसन से रहित होना और दक्षता ये (सभी गुण मनुष्य को) सुख प्रदान करनेवाले होते हैं।

शब्दार्थः—दमः = पञ्च ज्ञानेन्द्रियों को उनके-उनके विषयों के प्रति आसक्ति को रोकना। **क्षमा** = क्षमा करना। **धृतिः** = धैर्य। **ह्रीः** = लज्जा। **अव्यसनिता** = व्यसन न करना। **दाक्ष्यम्** = दक्षता, कुशलता। **सुखावहाः** = सुख देने वाले।

9. अन्वयः—ये क्रोधं सन्नियच्छन्ति, क्रुद्धान् च संशमयन्ति भूतानां च न कुप्यन्ति ते दुर्गाणि अतितरन्ति।

अर्थः—जो क्रोध को भलीभाँति नियन्त्रित कर लेते हैं, और क्रुद्धो को भी शान्त कर देते हैं और प्राणियों पर (जो) क्रोध नहीं करते हैं, वे कठोर विपत्तियों को भी पार कर जाते हैं।

शब्दार्थः—सन्नियच्छन्ति = भलीभाँति नियंत्रण में रखते हैं। **संशमयन्ति** = शान्त करते हैं। **भूतानाम्** = प्राणियों पर। **अतितरन्ति** = पार कर जाते हैं।

10. अन्वयः—यस्य भूतेभ्यः अभयं, यतः भूतानाम् अभयम्, देहाद् विमुक्तस्य तस्य कुतश्चन भयं नास्ति।

अर्थः—जिस (मनुष्य) को सभी प्राणियों से निर्भयता प्राप्त है (अर्थात् जिसको किसी से भय नहीं है) तथा जिससे सभी प्राणियों को निर्भयता प्राप्त है, शरीर से मुक्त हो जानेवाले (ऐसे मनुष्य को) किसी से भय नहीं रहता है।

शब्दार्थः—अभयम् = निर्भयता। **देहाद्** = शरीर से। **कुतश्चन** = कहीं से। **भयम्** = डर।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) कान् तितीक्षेत ?

(ख) देहात् विमुक्तस्य किं नास्ति ?

(ग) सक्तस्य मोहजालविवर्धिनी का चलति?

(घ) संयोगाः कीदृशाः ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) के दुर्गाणि अतितरन्ति?

(ख) के सुखावहाः?

(ग) कः परत्र महीयते?

(घ) कं कुतश्चन भयं नास्ति?

3. अधोलिखितान् श्लोकान् पूरयत–

(क) दमः क्षमा ....सन्तोषः ....।
हीरहिंसाऽव्यसनिता..........................चेति सुखावहाः।।

(ख) सान्त्वेनान्नप्रदानेन ....चाप्युत।
समदुःखसुखो भूत्वा स.............................।।

(ग) ये क्रोधं ....क्रुद्धान्..........................च।
न कुप्यन्ति च ....दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।

4. अधोलिखितश्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) यो दुर्लभतरं .... खलु वञ्चते।।

(ख) अतिवादांस्तितीक्षेत .... कुशलं वदेत्।।

(ग) दमः क्षमा .... सुखावहाः।।

(घ) अभयं यस्य .... कुतश्चन।।

5. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) भैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतन्नानुचिन्तयेत्।

(ख) मरणान्तं हि जीवितम्।

(ग) धर्मावमन्ता कामात्मा भवेत् स खलु वञ्चते।

(घ) चिन्त्यमानं हि न व्येति भूयश्चापि प्रवर्धते।

6. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतार्थं लिखत–

(क) सान्त्वेनान्नप्रदानेन .... परत्र महीयते।।

(ख) सक्तस्य बुद्धिश्चलति .... चामुत्र चाश्नुते।।

(ग) ये क्रोधं .... दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।

7. उचितं विकल्पं चिनुत–

(i) सुखावहः नास्ति–

(क) धृतिः (ख) दाक्ष्यं (ग) अव्यसनिता (घ) अशौचम्

(ii) सर्वे समुच्छ्रयाः ....सन्ति।

(क) क्षयान्ताः (ख) विप्रयोगान्ताः (ग) मरणान्तं (घ) पतनान्ताः

(iii) मोहजालविवर्धिनी का अस्ति?

(क) बुद्धिः (ख) शक्तिः (ग) नीतिः (घ) गीतिः

(iv) कान् तितीक्षेत ?

(क) अत्युदारान् (ख) अतिवादान् (ग) अतिमूर्खान् (घ) अतिक्रुद्धान्

(v) कस्य बुद्धिः चलति?

(क) सक्तस्य (ख) असक्तस्य (ग) विरक्तस्य (घ) गतस्य

■

पञ्चमः पाठः

विद्यार्थिचर्या

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ **'मनुस्मृति'** ग्रन्थ से संकलित किया गया है। इसमें मानव जीवन में करणीय तथा अकरणीय कार्यों का उल्लेख किया गया है। इसके लेखक आदि पुरुष महर्षि मनु हैं। इसमें 14 अध्याय हैं। पाठान्तर्गत श्लोकों में विद्यार्थियों की दैनिक दिनचर्या तथा उनके आचरण के विषय में महत्त्वपूर्ण बातें बताई गयी हैं।*

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशाँश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च।।1।।

न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा नातुरो न महानिशि।
न वासोभिः सहाजस्रं नाविज्ञाते जलाशये।।2।।

नोच्छिष्टं कस्यचिद् दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा।
न चैवात्यशनं कुर्यान्न चोच्छिष्टः क्वचिद् व्रजेत्।।3।।

अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।4।।

आर्द्रपादस्तु भुञ्जीत नार्द्रपादस्तु संविशेत्।
आर्द्रपादस्तु भुञ्जानो दीर्घमायुरवाप्नुयात्।।5।।

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।।6।।

न पाणिपादचपलो न नेत्रचपलोऽनृजुः।
न स्याद्वाक्चपलश्चैव न परद्रोहकर्मधीः।।7।।

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान्नरः।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।।8।।
सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद्विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः।।9।।
एकाकी चिन्तयेन्नित्यं विविक्ते हितमात्मनः।
एकाकी चिन्तयानो हि परं श्रेयोऽधिगच्छति।।10।।

1. अन्वयः–ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत, धर्मार्थौ च अनुचिन्तयेत्। कायक्लेषान् तन्मूलान्, वेदत्तत्वार्थम् एव च (चिन्तयेत्)।

अर्थः–विद्यार्थी को ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए और धर्म तथा अर्थ के बारे में चिन्तन करना चाहिए। शारीरिक कष्टों एवं उनके कारणों तथा वेद के सार तत्त्व के विषय में विचार करना चाहिए।

शब्दार्थः–**ब्राह्मे मुहुर्ते** = ब्रह्म मुहूर्त में (सूर्योदय से 48 मिनट पूर्व तक के समय को ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं) **बुध्येत** = जागना चाहिए। **कायक्लेशान्** = शरीर के कष्टों को। **तन्मूलान्** = शारीरिक कष्टों के कारणों को। **वेदतत्त्वार्थम्** = वेदों के वास्तविक अर्थ को। **धर्मार्थौ** = धर्म और अर्थ के बारे में। **अनुचितन्तयेत्** = विचार करना चाहिए।

विशेषः–**मुहूर्ते** = सप्तमी विभक्ति एक वचन। **धर्मार्थौ** = धर्मश्च अर्थश्च = धर्मार्थौ (द्वन्द्वसमासः) **अनुचिन्तयेत्** = अनु + चिन्त् + विधिलिङ् लकार। **कायक्लेशान्** = कायस्य क्लेशान् (षष्ठी तत्पुरुष)। **तस्य मूलान्** = तन्मूलान् (षष्ठी तत्पुरुष)। **वेदतत्त्वार्थम्** = वेदस्य तत्त्वम् तस्य अर्थम् वेदतत्त्वार्थम् (षष्ठी तत्पुरुष)।

2. अन्वयः– भुक्त्वा स्नानं न आचरेत् आतुरः न, महानिशि न, वासोभिः सह अजस्रं न, अविज्ञाते जलाशये (स्नानम् न आचरेत्)

अर्थः–भोजन करके स्नान नहीं करना चाहिए। अस्वस्थ होने पर एवं आधी रात में स्नान नहीं करना चाहिए। वस्त्रों के सहित निरन्तर तथा अज्ञात जलाशय (तालाब) में स्नान नहीं करना चाहिए।

शब्दार्थः–**भुक्त्वा** = भोजन करके। **आचरेत्** = करना चाहिए। **आतुरः** = रोगी। **महानिशि** = अर्धरात्रि में। **वासोभिः सह** = कपड़ों के साथ। **अजस्रं** = लगातार। **अविज्ञाते** = अज्ञात। **जलाशये** = जलाशय में (तालाब में)

विशेषः–भुज् + क्त्वा = भुक्त्वा। **महानिशि** = महती निट् (निश्) महानिट् तस्यां महानिशि = (कर्मधारय समास) न + अविज्ञाते = नाविज्ञाते, दीर्घ सन्धिः। जलाशये = सप्तमी एकवचनम्।

3. अन्वयः–कस्यचित् उच्छिष्टं न दद्यात् तथा अन्तरा च न अद्यात्। अत्यशनं च नैव कुर्यात्। उच्छिष्टः च क्वचित् न व्रजेत्।

अर्थः–किसी को जूठा भोजन नहीं देना चाहिए। बीच में अर्थात् संध्या के समय भोजन नहीं करना चाहिए। अत्यधिक भोजन नहीं करना चाहिए। जूठे मुँह कहीं नहीं जाना चाहिए।

शब्दार्थः–उच्छिष्टम् = जूठा। **कस्यचित्** = किसी को। **न** = नहीं। **दद्यात्** – देना चाहिए। **अन्तरा** = बीच में अर्थात् सन्ध्या के समय। **अत्यशनम्** = अधिक भोजन। **नैव** = नहीं। **कुर्यात्** = करना चाहिए। **क्वचित्** = कही नहीं। **व्रजेत्** = जाना चाहिए। **उच्छिष्टः** = जूठे मुह।

विशेषः–उच्छिष्टम् = उत् + शिष्टम्। अद्यात् = अद् भक्षणे धातुः विधिलिङ् लकारः प्रथम पुरुषः एकवचनम्। अत्यशनम् = अति + अशनम्, यण्सन्धिः। नैव = न + एव = वृद्धिसन्धि।

4. अन्वयः–अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः तस्य आयुः विद्या यशः बलम् इति चत्वारि वर्धन्ते।

अर्थः–जिसका अभिवादन करने का स्वभाव है तथा जो नित्य वृद्धों (बड़ों) की सेवा करता है। उसकी आयु, विद्या, यश और बल–ये चार बढ़ते हैं।

शब्दार्थः–अभिवादनशीलस्य = जिसका अभिवादन करने का स्वभाव है। **नित्यम्** = सदा। **वृद्धोपसेविनः** = जो बड़ों की सेवा करता है। **चत्वारि** = चार। **वर्धन्ते** = बढ़ते हैं।

विशेषः–अभिवादनशीलस्य = अभिवादनं शीलं यस्य सः अभिवादनःशीलः तस्य अभिवादनशीलस्य (बहुब्रीहिसमासः) वृद्धोपसेविनः = वृद्धानाम् उपसेवी वृद्धोपसेवी तस्य वृद्धोपसेविनः (षष्ठी तत्पुरुष समासः)।

5. अन्वयः–आर्द्रपादः तु भुञ्जीत, आर्द्रपादः तु न संविशेत् आर्द्रपादः तु भुञ्जानः, दीर्घम् आयुः अवाप्नुयात्।

अर्थः–गीले पाँव भोजन करना चाहिए। गीले पैर सोना नहीं चाहिए। गीले पाँव भोजन करनेवाला लम्बी आयु को प्राप्त करता है।

शब्दार्थः–आर्द्रपादः = गीले पाँव वाला। **भुञ्जीत** = भोजन करना चाहिए। **संविशेत्** = सोना चाहिए। **भुञ्जानः** = भोजन करनेवाला। **दीर्घम् आयुः** = लम्बी आयु को। **अवाप्नुयात्** = प्राप्त करना चाहिए।

विशेषः–अर्द्रपादः = आर्द्रौ पादौ यस्य सः आर्द्रपादः (बहुब्रीहिसमासः)। भुञ्जीत = भुज् धातुः विधिलिङ्लकारः प्रथमपुरुषैकवचनम्। नार्द्रपादः = न + आर्द्रपादः, दीर्घसन्धिः। भुञ्जानः = भुज् धातुः शानच् प्रत्ययः।

6. अन्वयः– सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, अप्रियं सत्यं न ब्रूयात् अनृतं प्रियञ्च न ब्रूयात् एषः सनातनः धर्मः (अस्ति)।

अर्थः–सत्य बोलना चाहिए। प्रिय बोलना चाहिए। जो प्रिय न लगे, ऐसा सत्य नहीं बोलना चाहिए। जो सत्य न हो, ऐसा प्रिय नहीं बोलना चाहिए। यह शाष्वत धर्म है।

शब्दार्थः–ब्रूयात् = बोलना चाहिए। **अप्रियम्** = जो अच्छा न लगे। **अनृतम्** = असत्य। **सनातनः** = शाश्वत (हमेशा रहनेवाला)।

विशेषः–ब्रूयात् = ब्रू धातुः विधिलिङ्लकार प्रथम पुरुषैकवचनम्। अनृतम् = न ऋतम् अनृतम् नञ् तत्पुरुषसमासः। अप्रियम् न प्रियम् अप्रियम् = नञ् तत्पुरुषसमासः।

7. अन्वयः–पाणिपादचपलः न, नेत्रचपलः न, अनृजुः न, वाक्चपलः न, परद्रोहकर्मधीः च नैव स्यात्।

अर्थः–विद्यार्थी को चंचल हाथ पैरों वाला, चंचल नेत्रों वाला कुटिल स्वभाव वाला, चंचल वाणी वाला तथा दूसरों से द्रोह करने की बुद्धिवाला नहीं होना चाहिए।

शब्दार्थः–पाणिपादचपलः =चंचल हाथ पैर वाला। **नेत्रचपलः** = चंचल आँखों वाला। **अनृजुः** = कुटिल **वाक्चपलः** = चंचल वाणीवाला। **परद्रोहकर्मधीः** = दूसरों के प्रति द्रोह करने की बुद्धि रखनेवाला।

विशेषः–पाणी च पादौ च पाणिपादम् (समाहारद्वन्द्वः) तस्मिन् चपलः पाणिपादचपलः। नेत्रचपलः = नेत्राभ्यां चपलः, तृतीयातत्पुरुषसमासः। अनृजुः = न ऋजुः अनृजुः नञ् तत्पुरुषः। वाक्चपलः = वाचा चपलः वाक्चपलः तृतीयातत्पुरुषः, परद्रोहकर्मधीः = परस्मै द्रोहः परद्रोहः तस्मिन् कर्मणि धीः यस्य सः परद्रोहकर्मधीः (बहुब्रीहिः)।

8. अन्वयः–सर्वलक्षणहीनः अपि यः नरः सदाचारवान् श्रद्दधानः अनसूयश्च (भवति) सः शतं वर्षाणि जीवति।

अर्थः–सभी शुभ लक्षणों से विहीन होते हुए भी जो व्यक्ति अच्छे आचरण वाला, श्रद्धा रखने वाला तथा दूसरों की निन्दा न करने वाला होता है, वह सौ वर्षों तक जीवित रहता है।

शब्दार्थः – सर्वलक्षणहीनः = सभी शुभ लक्षणों से विहीन। **सदाचारवान्** = अच्छे आचरणों वाला। **श्रद्दधानः** = श्रद्धा रखनेवाला। **अनसूयः** = निन्दा न करने वाला। **शतं वर्षाणि** = सौ वर्षों तक। **जीवति** = जीवित रहता है।

विशेषः–सर्वलक्षणहीनः = सर्वाणि लक्षणानि सर्वलक्षणानि तैः हीनः सर्वलक्षणहीनः। सदाचारवान् – सदाचार + मतुप्, अनसूयः – नास्ति असूया यस्य सः बहुब्रीहिः।

9. अन्वयः– **प**रवशं सर्वं दुःखम् आत्मवशं सर्वं सुखम्। एतत् समासेन सुखदुःखयोः लक्षणं विद्यात्।

अर्थः – दूसरे के वश में रहना दुःख है अपने वश में रहना अर्थात् स्वाधीन रहना सुख है इसे संक्षेप में सुख और दुःख का लक्षण समझना चाहिए।

शब्दार्थः–परवशम् = दूसरे के वष में रहना। **आत्मवशम्** =अपने वश में रहना। **समासेन** = संक्षेप में। **सुखदुःखयोः** = सुख–दुःख का। **विद्यात्** = जानना चाहिए।

विशेषः–परवशम् = परस्य वशम् इति परवशम् (षष्ठीतत्पुरुषसमासः)। आत्मवशम् = आत्मनः वशम्। इति आत्मवशम् = (षष्ठीतत्पुरुषसमासः)। सुखदुःखयोः = सुखं च दुःखं च सुखदुःखे तयोः सुखदुःखयोः।

10. अन्वयः–विविक्ते एकाकी नित्यम् आत्मनः हितं चिन्तयेत्। हि एकाकी चिन्तयानः परं श्रेयः अधिगच्छति।

अर्थः–एकान्त में अकेले अपने हित के विषय में विचार करना चाहिए। अकेले अपने हित के विषय में विचार करनेवाला व्यक्ति परम कल्याण को प्राप्त करता है।

शब्दार्थः–विविक्ते = एकान्त में। **एकाकी** = अकेला। **आत्मनः** = अपना। **हितम्** = कल्याण। **चिन्तयेत्** = सोचना चाहिए। **चिन्तयानः** = विचार करता हुआ। **श्रेयः** = कल्याण को। **अधिगच्छति** = प्राप्त करता है।

विशेषः – चिन्तयानः = चिन्त्+शानच्, अधिगच्छति = अधि + गम् + लट्लकारः प्रथमपुरुष–एकवचनम्।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) भुक्त्वा किं न कुर्यात् ?
(ख) कीदृशे जलाशये स्नानं न आचरेत् ?
(ग) अत्यधिकं किं न कुर्यात् ?
(घ) परवशं सर्वं किम् ?
(ङ) आत्मवशं सर्वं किं भवति ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) वासोभिः सह किं न कुर्यात् ?
(ख) अन्तरा किं न कुर्यात् ?
(ग) अभिवादनशीलस्य के वर्धन्ते ?
(घ) सुखदुःखयोः लक्षणं किम् ?

3. अधोलिखितश्लोकानां हिन्दीभाषया अर्थं लिखत–

(क) ब्राह्मे ....वेदतत्त्वार्थमेव च।
(ख) न स्नानम् ....जलाशये।।
(ग) नोच्छिष्टं ....व्रजेत्।।
(घ) आर्द्रपादस्तु ....अवाप्नुयात्।।
(ङ) सर्वं परवशं ....सुखदुःखयोः।।

4. अधोलिखितसूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां लिखत–

(क) ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत, धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
(ख) एकाकी चिन्तयानो हि, परं श्रेयोऽधिगच्छति।
(ग) सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।

5. आधोलिखितश्लोकानां संस्कृतभाषया अर्थं लिखत–

(क) अभिवादनशीलस्य ....बलम्।
(ख) सत्यं ब्रूयात् ....सनातनः।
(ग) सर्वलक्षण.........................जीवति।

6. समुचितमुत्तरं चिनुत

(i) ब्राह्मे मुहूर्ते........................।
(क) चिन्तयेत् (ख) बुध्येत (ग) खादेत् (घ) गच्छेत्

(ii) कः शतं वर्षाणि जीवति?
(क) विचारवान् (ख) धनवान् (ग) विद्यावान् (घ) सदाचारवान्

(iii) आर्द्रपादः किं कुर्यात्?
(क) भुञ्जीत (ख) संविशेत् (ग) पिबेत् (घ) चलेत्

(iv) आत्मवशं सर्वं किम्?
(क) दुःखम् (ख) सुखम् (ग) कष्टम् (घ) विपद्

(v) एकाकी चिन्तयानो हि परं .... अधिगच्छति।
(क) सुखम् (ख) दुःखम् (ग) श्रेयः (घ) प्रेयः

■

षष्ठः पाठः

गीतामृतम्

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ **'श्रीमद्भगवद्गीता'** से उद्धृत श्लोकों का संकलन है। श्रीमद्भगवद्गीता वेदव्यास विरचित 'महाभारत' के भीष्मपर्व (अध्याय 25-42) का अंश है। इसमें अट्ठारह अध्याय और कुल 700 श्लोक हैं। कौरवों एवं पाण्डवों के बीच युद्ध होने की स्थिति में दोनों पक्षों के आमने-सामने होने पर अर्जुन के द्वारा मोहयुक्त अथवा विषादयुक्त होने पर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया यथार्थ ज्ञान (उपदेश) ही गीता है। इसमें कर्म की प्रधानता, आत्मा की नित्यता, समत्वभावना, ईश्वर की सर्वसत्ता आदि उपादेय तथ्यों पर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को आधार बनाकर जन सामान्य के लिए उपदेश किया गया है। गीता में सभी शास्त्रों के प्रतिपादित तथ्यों का संकलन किया गया है। इसी प्रसङ्ग में वेदव्यास जी ने कहा है– **''गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः''।***

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।1।।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।2।।

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।।3।।

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम् ।।4।।

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते।।5।।

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।6।।

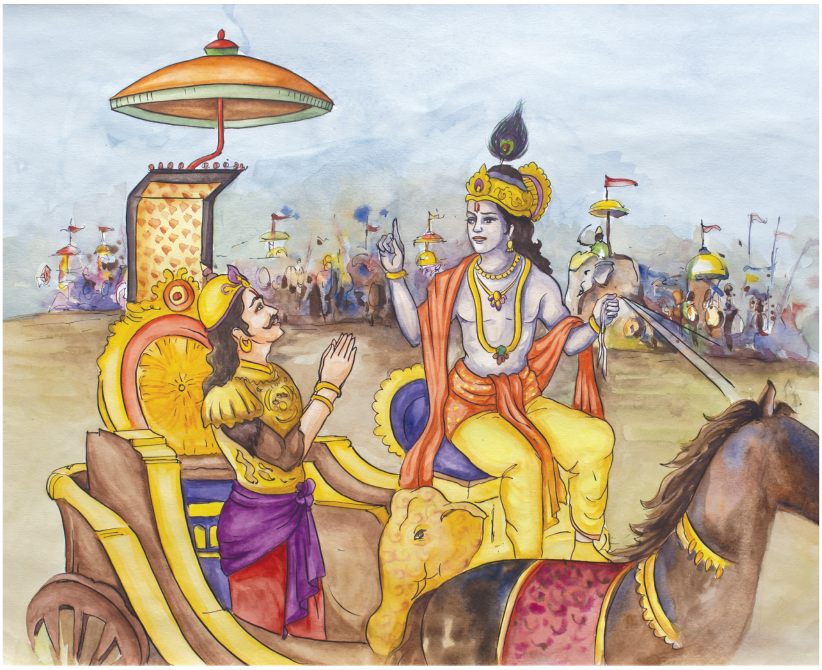

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।।7।।
मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।8।।
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।9।।
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः।।10।।

दिग्दर्शिका

1. अन्वयः–ते कर्मणि एव अधिकारः (अस्ति) फलेषु कदाचन मा (अस्ति) कर्मफलहेतुः मा भूः। ते अकर्मणि सङ्गः मा अस्तु।

अर्थः–तुम्हारा कर्म मे ही अधिकार है, फलों में (अधिकार) कभी भी नहीं है। कर्मफल का हेतु मत बनो और तुम्हारी कर्म न करने में आसक्ति नहीं होनी चाहिए।

शब्दार्थः– **कर्मणि** = कर्म करने में। **कदाचन** = कभी भी। **सङ्गः** = आसक्ति। **मा** = मत या नहीं।

2. अन्वयः– हे धनञ्जय ! सङ्गं त्यक्त्वा सिद्ध्यसिद्ध्योः समः भूत्वा योगस्थः कर्माणि कुरु। समत्वं (एव) योगः उच्यते।

अर्थः–हे धनञ्जय ! (अर्जुन) आसक्ति को त्यागकर, सिद्धि और असिद्धि में समान (बुद्धिवाला) होकर योग में स्थित होते हुए कर्मों को करो। समत्व ही योग (नाम से) कहा जाता है।

शब्दार्थः– **त्यक्त्वा** = त्यागकर। **सिद्ध्यसिद्ध्योः** = सिद्धि और असिद्धि में। **भूत्वा** = होकर। **योगस्थः** = योग में स्थित। **उच्यते** = कहा जाता है।

3. अन्वयः–त्वं नियतं कर्म कुरु, हि अकर्मणः कर्म ज्यायः (अस्ति)। अकर्मणः ते शरीरयात्रा अपि न प्रसिद्ध्येत्।

अर्थः–तुम नियत (शास्त्रों मे विहित) कर्म को करो, क्योंकि अकर्म (कर्म न करने) से कर्म (कर्म करना) श्रेष्ठ है। कर्म न करने से (अकर्म से) तुम्हारी शरीर-यात्रा भी (सिद्ध) नहीं होगी।

शब्दार्थः – **नियतम्** = शास्त्रविहित। **कुरु** = करो। **अकर्मणः** = कर्म न करने से। **ज्यायः** = श्रेष्ठ। **शरीरयात्रा** = जीवनयात्रा।

4. अन्वयः–हे भारत! कर्मणि सक्ताः अविद्वांसः यथा कुर्वन्ति तथा असक्तः विद्वान् लोकसङ्ग्रहं चिकीर्षुः कुर्यात्।

अर्थः–हे भारत! (अर्जुन) कर्म में आसक्त होते हुए अज्ञानी व्यक्ति जिस प्रकार (कर्म) करते हैं, उसी प्रकार अनासक्त होता हुआ विद्वान् व्यक्ति को लोक–संग्रह (लोक–शिक्षा) को करने की इच्छा से कर्म करना चाहिए।

शब्दार्थः – **सक्ताः** = अनुरक्त। **अविद्वांस** = मूर्ख। **यथा** = जैसे। **तथा** = वैसे। **लोकसङ्ग्रहम्** = लोकसंग्रह को।

5. अन्वयः–यदृच्छालाभसंतुष्टः द्वन्द्वातीतः, विमत्सरः, सिद्धौ असिद्धौ च समः (भूत्वा) (कर्म) कृत्वा अपि न निबध्यते।

अर्थः–अपने आप (स्वभावतः) प्राप्त (तत्त्वों) से ही संतुष्ट रहनेवाला, द्वन्द्वों (हर्षशोकादि) से अतीत (परे) होता हुआ, ईर्ष्या से रहित, सिद्धि और असिद्धि में समान (समभाव वाला) होकर (कर्मों को) करके भी नहीं बंधता है।

शब्दार्थः–**यदृच्छालाभः** = अपने आप प्राप्त। **सन्तुष्टः** = सन्तुष्ट रहने वाला। **द्वन्द्वातीतः** = हर्षशोकादि द्वन्द्वों से परे। **विमत्सरः** = ईष्यारहित। **सिद्धावसिद्धौ** = सिद्धि और असिद्धि में। **निबध्यते** = बँधता है।

6. अन्वयः– संयतेन्द्रियः, श्रद्धावान्, तत्परः ज्ञानं लभते। ज्ञानं लब्ध्वा अचिरेण परां शान्तिम् अधिगच्छति।

अर्थः–जितेन्द्रिय, श्रद्धावान् (श्रद्धा रखनेवाला), प्रयत्नशील (व्यक्ति) ज्ञान प्राप्त करता है। वह ज्ञान प्राप्त करके शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त कर लेता है।

शब्दार्थः–**संयतेन्द्रियः** = जितेन्द्रिय। **श्रद्धावान्** = श्रद्धा रखनेवाला। **लभते** = प्राप्त करता है। **लब्ध्वा** = प्राप्त करके

7. अन्वयः–अज्ञः अश्रद्दधानः संशयात्मा च विनश्यति। संशयात्मनः न अयं लोकः अस्ति, न परः लोकः न सुखम् (अस्ति)।

अर्थः–अज्ञानी, श्रद्धाहीन और संशय से युक्त मन वाला (व्यक्ति) विनाश को प्राप्त होता है। संशय से युक्त (व्यक्ति) का न यह लोक है, न परलोक है और न ही सुख है।

शब्दार्थः–अज्ञः = ज्ञानहीन। **अश्रद्दधानः** = श्रद्धा न रखने वाला । **संशयात्मा** = संशय से युक्त मन वाला। **परः** = परलोक। **विनश्यति** = विनाश को प्राप्त होता है।

8. अन्वयः–हे पाण्डव! यः मत्कर्मकृत् मत्परमः, मद्भक्तः सङ्गवर्जितः सर्वभूतेषु च निर्वैरः (अस्ति) सः माम् एति।

अर्थः–हे पाण्डव ! (अर्जुन) जो मेरे लिए कर्म करने वाला, मुझे ही परमसत्ता मानने वाला, मेरा भक्त, आसक्ति से रहित, तथा सभी प्राणियों से वैर–(शत्रुता) रहित है वह (पुरुष) मुझे प्राप्त कर लेता है।

शब्दार्थः–मत्कर्मकृत् = मेरे लिए कर्म करनेवाला। **मत्परमः** = मुझको परमसत्ता माननेवाला। **सङ्गवर्जितः** = आसक्तिरहित। **निर्वैरः** = वैररहित। **एति** = प्राप्त करता है।

9. अन्वयः– यः न हृष्यति, न द्वेष्टि, न शोचति, न काङ्क्षति, यः शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् च (अस्ति) सः मे प्रियः (अस्ति)।

अर्थः–जो न तो हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न इच्छा करता है तथा जो शुभ-अशुभ (कर्मों) का परित्याग करनेवाला है और भक्तियुक्त है, वह मुझे प्रिय है।

शब्दार्थः– हृष्यति = हर्षित होता है या प्रसन्न होता है। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है। **शोचति** = शोक करता है। **काङ्क्षति** = इच्छा करता है। **भक्तिमान्** = भक्ति से युक्त।

10. अन्वयः–(यः) शत्रौ मित्रे च समः (अस्ति) तथा (यः) मानापमानयोः समः (अस्ति), शीतोष्णसुखदुःखेषु समः (अस्ति) सङ्गविवर्जितः च (अस्ति), (स मे प्रियः अस्ति)।

अर्थः–(जो व्यक्ति) शत्रु और मित्र के प्रति समान भाव रखता है, वैसे ही (जो) मान-अपमान में समान रहता है, सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख में समान रहता है और आसक्ति रहित है (वह मुझे प्रिय है)।

शब्दार्थः–शीतोष्णसुखदुःखेषु = सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख में। **मानापमानयोः** = मान-अपमान में। **शत्रौ मित्रे च** = शत्रु और मित्र में। **समः** = समान रहनेवाला।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) समत्वं किम् उच्यते ?

(ख) कः विनश्यति ?

(ग) कः ज्ञानं लभते ?

(घ) कस्य नायं लोकः न परः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) कृष्णं कः एति ?

(ख) श्रीकृष्णाय कः प्रियः ?

(ग) श्रीकृष्णः अर्जुनं निष्कामकर्मणे किम् उक्तवान् ?

(घ) कः परां शान्तिमचिरेण अधिगच्छति ?

3. अधोलिखितान् श्लोकान् पूरयत्–

(क) नियतं कुरु कर्म त्वं .... ।
शरीरयात्रापि च ते न .... ।।

(ख) श्रद्धावाँल्लभते .... तत्परः संयतेन्द्रियः।
.... परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।

(ग) समः .... तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः .... ।।

4. अधोलिखितश्लोकानां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) योगस्थः कुरु .... योग उच्यते।।

(ख) अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च .... संशयात्मनः।।

(ग) यो न हृष्यति .... स मे प्रियः।।

(घ) यदृच्छालाभसंतुष्टो .... न निबध्यते।।

5. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) समत्वं योग उच्यते।

(ख) श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्।

(ग) निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डवः।

(घ) योगस्थः कुरु कर्माणि।

(ङ) ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।

6. अधोलिखितानां श्लोकानां संस्कृतार्थं लिखत –

(क) कर्मण्येवाधिकारस्ते .... सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

(ख) सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो .... लोकसंग्रहम्।

(ग) समः शत्रौ च .... सङ्गविवर्जितः।।

(घ) मत्कर्मकृन्मत्परमो .... मामेति पाण्डव।।

7. उचितं विकल्पं चिनुत–

(i) किं त्यक्त्वा सिद्ध्यसिद्ध्योः समः भूत्वा योगस्थः कर्माणि कुर्यात्?
(क) समम् (ख) सङ्गम् (ग) साकम् (घ) शस्त्रम्

(ii) 'त्वं .... कर्म कुरु।'
(क) अनियतम् (ख) नियतम् (ग) शास्त्रविरुद्धम् (घ) अहितम्

(iii) अकर्मणः ज्यायः किम्?
(क) सुखम् (ख) लोकः (ग) कर्म (घ) दुःखम्

(iv) सः श्रीकृष्णम् एति, यः ....?
(क) श्रीकृष्णभक्तः (ख) सङ्गवर्जितः
(ग) सर्वभूतेषु निर्वैरः (घ) उपर्युक्तानि सर्वाणि

(v) सः श्रीकृष्णाय प्रियः, यः ....?
(क) शत्रौ मित्रे च समः (ख) मानापमानयोः समः
(ग) सङ्गविवर्जितः (घ) उपर्युक्तानि सर्वाणि

■

सप्तमः पाठः

जीव्याद् भारतवर्षम्

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ '**जीव्याद् भारतवर्षम्**' डॉ0 चन्द्रभानु त्रिपाठी द्वारा रचित 'गीताली' नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है जो कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत है। डॉ0 चन्द्रभानु त्रिपाठी संस्कृत के उत्कृष्ट कवि एवं नाटककार हैं। इन्होंने अनेक आलोचनात्मक ग्रन्थ, शोध-पत्र, कविताएँ, गीत इत्यादि लिखे हैं। इनकी कृतियों में सर्वत्र सरलता, सरसता तथा स्वाभाविकता परिलक्षित होती है। प्रस्तुत गीत के तीन पदों में भारतदेश की मनोरमता एवं भव्यता का सुन्दर चित्रण किया गया है।*

भारतवर्षं राष्ट्रं जीव्याच्चिरकालं स्वाधीनम्।
सन्मित्रं भूयाच्च समृद्धं जीयाच्छत्रुविहीनम्।।
हिमगिरिरस्य किरीटो मौलेररुणकिरण-मणिमाली।
कर-कल्लोलैर्जलधिर्विलसति पादान्त-प्रक्षाली।।
सरितो वक्षसि हारा विन्ध्यो भाति मेखलामानम्।
पल्लवलसिता निविडवनाली रुचिरं नवपरिधानम्।
आस्ते कविकुलमस्य मनोरमरूपवर्णने लीनम्।।1।।
सर्वे ज्ञानधना बुधवर्या मानधना रणधीराः।
स्वर्णधना व्यवसायिधुरीणास्तथा श्रमधना वीराः।
कुर्वन्त्वेकीभूय समेता नवसमाज-निर्माणम्।
मान्यो मानवधर्मः प्रसरतु सम्परिशोध्य पुराणम्।।
आत्मशक्तिसंवलित-मानवः पाठं पठेन्नवीनम्।।2।।
प्रवहतु गङ्गा पूततरङ्गा प्रथयन्ती महिमानम्।
गायतु गीता कर्ममहत्त्वं योगक्षेमविधानम्।।
भवेदहिंसा करुणासिक्ता तथा सूनृता वाणी।
प्रसरेद् भारतसद्वीराणां गाथा भुवि कल्याणी।।
देशे स्वस्थः सुखितो लोको भावं भजेन्न दीनम्।
भारतवर्षं राष्ट्रं जीव्याच्चिरकालं स्वाधीनम्।।3।।

दिग्दर्शिका

1. अन्वयः–भारतवर्षं राष्ट्रं चिरकालं स्वाधीनं जीव्यात्, सन्मित्रं समृद्धं च भूयात्, शत्रुविहीनं जीयात्। अरुण-किरण-मणिमाली हिमगिरिः अस्य मौलेः किरीटः अस्ति। जलधिः कर-कल्लौलैः (अस्य) पादान्तप्रक्षाली विलसति। (अस्य) वक्षसि सरितः हाराः (सन्ति)। विन्ध्यः मेखलामानं भाति। पल्लवलसिता निविड-वनाली (अस्य) रुचिरं नवपरिधानम् अस्ति। कविकुलम् अस्य मनोरमरूपवर्णने लीनम् आस्ते।

अर्थः– हमारा देश भारतवर्ष चिरकाल तक स्वतन्त्र होकर अमर रहे। यह सच्चे मित्रों वाला और समृद्धिशाली हो, शत्रुविहीन होकर विजयी रहे। (सूर्य की) लाल किरणों की मणियों की माला वाला हिमालय इस (भारतवर्ष) के सिर का मुकुट है। समुद्र, अपने विशाल लहरों रूपी हाथों से इसके पैरों के अग्रभाग को धोने वाला सुशोभित होता है। इसके वक्षःस्थल पर नदियाँ हार के समान हैं। विन्ध्य पर्वत इसकी करधनी के समान प्रतीत होता है। पत्तों से सुशोभित घना वनसमूह इसका रुचिर (सुन्दर) नवीन (शोभित) वस्त्र है। कवियों का समूह इसके मनोरम रूप के वर्णन में लीन हो रहा है।

शब्दार्थः– भारतवर्षम् = भारत देश। **राष्ट्रम्** = राष्ट्र (देश)। **चिरकालम्** = चिरकाल तक। **स्वाधीनम्** = स्वतन्त्र। **जीव्यात्** = जीवित रहे (अमर रहे)। **सन्मित्रम्** = सच्चा मित्र। **समृद्धम्** = समृद्धिशाली। **च** = और। **भूयात्** = हो। **शत्रुविहीनम्** = शत्रु से विहीन (जिसका कोई शत्रु नहीं)। **जीयात्** = विजयी हो। **अरुण-किरण-मणि-माली** = (सूर्य की) लाल किरण रूपी मणियों की माला वाला। **हिमगिरिः** = हिमालय। **अस्य** = इसके। **करकल्लोलैः** = विशाल लहरों रूपी हाथों से। **पादान्त** = पैर के अग्रभाग को। **प्रक्षाली** = धोनेवाला। **विलसति** = शोभित होता है। **वक्षसि** = वक्ष स्थल पर (छाती पर)। **सरितः** = नदियाँ। **हाराः** = हार के समान हैं। **विन्ध्यः** = विन्ध्य पर्वत। **मेखलामानम्** = करधनी के समान। **भाति** = शोभित होता है। **पल्लवलसिता** = पत्तों से सुशोभित। **निविड-वनाली** = घना वन–समूह। **रुचिरम्** = सुन्दर। **नवपरिधानम्** = नवीन वस्त्र। **अस्ति** = है। **कविकुलम्** = कवियों का समूह। **अस्य** = इसके। **मनोरमरूपवर्णने** = मनोरम रूप के वर्णन में। **लीनम्** = लीन। आस्ते = हो रहा है।

2. अन्वयः–सर्वे ज्ञानधनाः बुधवर्याः मानधनाः, रणधीराः, स्वर्णधनाः व्यवसायिधुरीणाः तथा श्रमधनाः वीराः, एकीभूय समेताः नवसमाजनिर्माणं कुर्वन्तु। पुराणं सम्परिशोध्य मान्यः मानवधर्मः प्रसरतु। आत्मशक्तिसंवलित–मानवः नवीनं पाठं पठेत्।

अर्थः–ज्ञान को ही धन समझने वाले श्रेष्ठ विद्वान्, मान (प्रतिष्ठा/सम्मान) को ही धन समझने वाले रण (युद्ध में) में धीर पुरुष, स्वर्ण (सोने) रूपी धनवाले व्यापारियों में श्रेष्ठ तथा श्रम (मेहनत) को ही धन मानने वाले बलशाली सभी लोग एकसाथ मिलकर नवीन समाज का निर्माण करें। पुराने धर्म का परिष्कार करके सभी को मान्य मानवधर्म का प्रसार करें। आत्मशक्ति से युक्त मानव नया पाठ पढ़े।

शब्दार्थः–सर्वे = सभी। **ज्ञानधनाः** = ज्ञान को ही धन समझने वाले। **बुधवर्याः** = श्रेष्ठ विद्वान्। **मानधनाः** = प्रतिष्ठा को ही धन समझने वाले। **रणधीराः** = युद्ध में धीर पुरुष। **स्वर्णधनाः** = स्वर्ण रूपी धन वाले। **व्यवसायिधुरीणाः** = व्यापारियों में श्रेष्ठ। **तथा** = तथा। **श्रमधनाः** = श्रम को ही धन समझनेवाले। **वीराः** = वीर लोग। **एकीभूय** = एक होकर। **समेताः** = साथ मिलकर। **नवसमाजनिर्माणम्** = नये समाज का निर्माण। **कुर्वन्तु** = करें। **पुराणम्** = पुराने को। **सम्परिशोध्य** = परिष्कार करके।

मान्यः = मान्य। **मानवधर्मः** = मानवधर्म का। **प्रसरतु** = प्रसार हो। **आत्मशक्ति** = आत्मशक्ति (से)। **संवलितः** = युक्त। **मानवः** = मनुष्य। **नवीनम्** = नया। **पाठम्** = पाठ। **पठेत्** = पढ़े।

3. अन्वयः–पूततरङ्गा गङ्गा महिमानम् प्रथयन्ती प्रवहतु। गीता योगक्षेमविधानं कर्ममहत्त्वं गायतु। अहिंसा करुणासिक्ता भवेत् तथा वाणी सुनृता भवेत्। भारतसद्वीराणां कल्याणी गाथा भुवि प्रसरेत्। देशे लोकः स्वस्थः सुखितः (भूयात्), दीनं भावं न भजेत्। भारतवर्षं राष्ट्रं चिरकालं स्वाधीनं जीव्यात्।

अर्थः–पवित्र लहरों वाली गङ्गा (भारत की) महिमा का विस्तार करते हुए बहे। गीता योग और क्षेम की व्यवस्था करने वाले कर्ममहत्त्व का गान करे। अहिंसा करुणायुक्त हो, वचन सत्यता युक्त हों। भारत के श्रेष्ठ वीरों की कल्याणमयी कथा पृथ्वी पर फैले। देश के लोग स्वस्थ हों, सुखी हों, दीनता के भाव को न प्राप्त करें। भारतवर्ष एक स्वाधीन (स्वतंत्र) राष्ट्र के रूप में चिरकाल तक जीवित रहे (अमर रहे)।

शब्दार्थः– **पूततरङ्गा** = पवित्र लहरों वाली। **गङ्गा** = गङ्गा (नदी)। **महिमानम्** = महिमा को। **प्रथयन्ती** = विस्तार करते हुए। **प्रवहतु** = वहे। **गीता** = श्रीमद्भगवद्गीता। **योगक्षेमविधानम्** = योग क्षेम का विधान (व्यवस्था) करनेवाले। **कर्ममहत्त्वम्** = कर्म के महत्त्व को। **गायतु** = गान करें। **करुणासिक्ता** = करुणा से युक्त। **भवेत्** = हो। **वाणी** = वचन। **सूनृता** = सत्यतायुक्त। **सद्वीराणां** = श्रेष्ठ वीरों की। **कल्याणी गाथा** = कल्याणमयी गाथा। **भुवि** = पृथ्वी पर। **प्रसरेत्** = फैले। **देशे** = देश में। **लोकः** = लोग (जनता)। **स्वस्थः** = स्वस्थ। **सुखितः** = सुखी। **दीनम्** = दीनता के। **भावम्** = भाव को। **न** = नहीं। **भजेत्** = प्राप्त करें। **भारतवर्षम्** = भारतवर्ष **राष्ट्रम्** = राष्ट्र (देश)। **चिरकालम्** = चिरकाल तक। **स्वाधीनम्** = स्वाधीन (स्वतंत्र)। **जीव्यात्** = जीवित रहे (अमर रहे)।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) भारतदेशः कियत्कालं स्वाधीनं जीव्यात्?

(ख) पुराणं सम्परिशोध्य मान्यः किं प्रसरतु?

(ग) गीता कस्य महत्त्वं गायतु?

(घ) अहिंसा कीदृशी भवेत्?

(ङ) कः दीनं भावं न भजेत्?

2. अधोलिखितानां पङ्क्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) भारतवर्षं राष्ट्रं जीव्याच्चिरकालं स्वाधीनम्।
सन्मित्रं भूयाच्च समृद्धं जीयाच्छत्रु-विहीनम्।।

(ख) सर्वे ज्ञानधना बुधवर्या मानधना रणधीराः।
स्वर्णधना व्यवसायि-धुरीणास्तथा श्रम-धना वीराः।

(ग) प्रवहतु गङ्गा पूततरङ्गा प्रथयन्ती महिमानम्।
गायतु गीताकर्ममहत्त्वं योगक्षेमविधानम्।।

3. अधोलिखितानां सूक्तीनां हिन्दीभाषया व्याख्यां कुरुत–

(क) भारतवर्षं राष्ट्रं जीव्याच्चिरकालं स्वाधीनम्।

(ख) आत्मशक्ति-संवलित-मानवः पाठं पठेन्नवीनम्।

(ग) गायतु गीता कर्ममहत्त्वं योगक्षेम-विधानम्।

4. अधोलिखितानां पङ्क्तीनां संस्कृतार्थं लिखत–

(क) हिमगिरिरस्य किरीटो मौलेररुण-किरण-मणि-माली।
करकल्लोलैर्जलधिर्विलसति पादान्तप्रक्षाली।।

(ख) कुर्वन्त्वेकीभूय समेता नवसमाज-निर्माणम्।
मान्यो मानव-धर्मः प्रसरतु सम्परिशोध्य पुराणम्।।

(ग) भवेदहिंसा करुणासिक्ता तथा सूनृता वाणी।
प्रसरेद् भारत-सद्वीराणां गाथा भुवि कल्याणी।।

5. श्लोकं दृष्ट्वा अन्वयं पूरयत–

श्लोकः – पल्लवलसिता निविडवनाली रुचिरं नवपरिधानम्।
आस्ते कविकुलमस्य मनोरमरूपवर्णने लीनम्।

अन्वयः–पल्लवलसिता निविडवनाली .... । कविकुलम् .... लीनम् आस्ते।

6. अधोलिखिताः पङ्क्तीः पूरयत–

(क) प्रवहतु गङ्गा .... महिमानम्।
.... योगक्षेमविधानम्।।

(ख) मान्यो मानवधर्मः प्रसरतु .... ।
आत्मशक्ति .... पाठं पठेन्नवीनम्।।

7. उचितं विकल्पं चिनुत–

(i) ''जीव्याद्भारतवर्षम्'' इति पाठः कस्मात् काव्यात् उद्धृतः ?
(क) मीतालीनामककाव्यात् (ख) गीतालीनामककाव्यात्
(ग) रुदालीनामककाव्यात् (घ) कपालीनामककाव्यात्

(ii) 'गीताली' इति काव्यस्य रचयिता कः ?
(क) डॉ0 चन्द्रभानुः (ख) डॉ0 रविभानुः (ग) डॉ0 कविभानुः (घ) डॉ0 सूर्यभानुः

(iii) 'स्वाधीनम्' इति पदे सन्धिः अस्ति–
(क) दीर्घसन्धिः (ख) गुणसन्धिः (ग) पूर्वरूपसन्धिः (घ) वृद्धिसन्धिः

(iv) 'भुवि' इति पदे विभक्तिः अस्ति–
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) सप्तमी

(v) 'गायतु' इति पदे लकारः अस्ति–
(क) लट् (ख) लृट् (ग) लोट् (घ) लङ्

संस्कृतकथानाटककौमुदी

प्रथमः पाठः

महात्मनः संस्मरणानि

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ में राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी के जीवन-सम्बन्धी कुछ संस्मरण दिये गये हैं। ये संस्मरण मुख्य रूप से 'बापू' नामक पुस्तक पर आधारित है। पाठ में महात्मा गान्धी की सत्यनिष्ठा अपूर्व दृढता, अतुलित साहस तथा लक्ष्य-प्राप्ति के लिए अपमान सहन करने की क्षमता आदि विशिष्ट गुणों की चर्चा है।

मोहनदासकरमचन्दगान्धी पोरबन्दरनगरे जन्म लेभे। अस्य पिता 'करमचन्दगान्धी' धर्मात्मा, निर्भीकः, सदाचारैकप्रवणः, सत्यप्रियः, धीरः, गम्भीरः, गतगर्वः, मानी, धनी, चासीत्। मातापि 'पुतलीबाई' धर्मरता, व्यवहारे चतुरा, महिलोचितादर्शमूर्तिः, स्वभावतो मधुरा, पूजापाठव्रतोपवासप्रभृति क्रियानुयाता, रुचिरचरित्रा, परमपवित्रा चासीत्।

पुत्रे मातापित्रोर्गुणगणसङ्क्रमणं जातम्। मणिकाञ्चनयोगे सुगन्धसम्मिश्रणमिव प्रजातम्। मोहनदासः पितेव सत्यप्रियः निर्भयो जातः। सर्वदा बालो मोहनः पुस्तकेष्वेव रमते स्म। मोहनोऽयमध्ययनशीलः नियतपाठाभ्यासी चासीत्।

एकदा गृहसमीप एव यायावरोऽभिनेतृवर्ग एकमभिनयं प्रादर्शयत्। मित्रैः साकं मोहनोऽपि तं द्रष्टुमगच्छत्। हरिश्चन्द्राभिधे तस्मिन् नाटके राज्ञः हरिश्चन्द्रस्य चरित्रं चित्रितम्। नाटकेनानेन अयं हरिश्चन्द्र इव सत्यसन्धः सच्चरित्रश्च भवितुमाचकाङ्क्ष।

'गाइल्स' नामा विद्यालयनिरीक्षकः बालानां वर्णविन्यासं परीक्षितुमेकदा विद्यालयमागतः। तदा मोहनदासं विहाय सर्वे बालाः शुद्धवर्णविन्यासमकार्षुः। ते हि पञ्च साधारणशब्दान् शुद्धं लिखितुमाज्ञप्तासन् मोहनदासः 'कैटल' इत्यस्य वर्णविन्यासं कर्तुं नाशक्नोत्।

आत्मनां सन्दिग्धां प्रतिष्ठां चिन्त्यमानाः शिक्षकाः आतङ्किता आसन्। ते हि शिक्षका निकटस्थश्यामपट्ट-तस्तत्पदविन्यासमनुकर्तुमिङ्गितेन स्वान्तेवासिनं प्रेरयामासुः। यद्यपि तदानीं निरीक्षकस्यापि ध्यानमन्यत्रासीत्। तथापि मोहनः सम्मुखमवलोकयन् आत्मानमपवञ्चनातो विरतमकरोत्। सहाध्यायिनामुपहासभूमिः शिक्षकाणां कोपभाजनञ्च स्यामिति व्यजानात्।

कक्षाया अनन्तरं मोहनस्य शिक्षकोऽकुप्यत् तस्मै। यद्यपि 'कैटल' इति वर्णविन्यासघटना प्रत्यपादयदस्य सत्यप्रियत्वम्। तथापि गतेषु वर्षेषु सर्वेषां शिक्षकाणामयं प्रीतिमानुकूल्यञ्च समुपार्जयत्।

1893 तमे ख्रिष्टाब्दे अप्रैलमासे मुम्बईमहानगर्याः पोतमारुह्य मासानन्तरमयं दक्षिण-अफ्रीकादेशस्य नेटालनगरेऽवारोहत् अतिपीडाकरं दृश्यं दक्षिणाफ्रीकादेशे दृष्टमनेन। एतस्य स्वदेशीया जनास्तत्र तिरस्कृता नितरामुपेक्षिताश्चासन्। शिक्षासम्पन्ना अपि भारतीया दक्षिण अफ्रीका-वासिभिर्यूरोपदेशोद्भवैश्च साकं सम्मिलितुं नाधिकृता अभूवन्।

बहवस्तेषां भारवाहकरूपेणाभिहिता आसन्। एतदपमानस्य सङ्केतः। गान्धिमहोदयः भारवाहकवर्गस्य विधिवेत्तेति नाम्ना प्रथितोऽभवत्।

एकदा प्रिटोरियानगरं प्रति धूमयानेन यात्रां कुर्वन्नयं प्रथमकक्षस्य निदर्शनपत्रमादाय निर्दिष्टकक्षे समुपाविशत्। किन्तु न चिराय तत्रातिष्ठत् निर्दिष्टस्थाने यदा धूमयानं व्यरमत् यूरोपदेशीयः कश्चन यात्री तत्रागच्छत्। कक्षाभ्यन्तरे श्यामवर्णं मानवमेनं वीक्ष्य धूमयानाधिकारिणः सविधे प्रसङ्गमुपालभत्। धूमयानाधिकारिणः अमुमाक्रम्य बहिरक्षिपत्। बहुशैत्यकरीयामिन्या इयं नववादनवेला आसीत्। शीतेन वेपमानोऽयं सम्पूर्णां रात्रिं प्रतीक्षालयेऽयापयत्।

इमे पीडाकरा अनुभवा दक्षिण-अफ्रीका देशे स्थितानामात्मीयजनानां दुःखजातान्युन्मूलयितुं गान्धीमहाशयस्य हृदये गरीयसीमिच्छामुत्पादितवन्तः यदाऽयं प्रिटोरियानगरं सम्प्राप्तवान्।

तदा तत्र भारतीयैः साकं सम्मेलनमारभत। पृथग्रूपेण ते सुकरतया गौरांगैरुत्पीडिता भवन्तीति तानेकसूत्रे निबद्धुमयमैच्छत्। गान्धीमहाशयः उपादिशत् विद्वेषस्य स्थाने प्रेमाचारं

हिंसायाः स्थाने आत्मोत्सर्गं शारीरिकस्य सामर्थ्यस्य स्थाने चात्मबलम्। निखिलाश्चैते सिद्धान्ताः दक्षिण–अफ्रीकादेशे तस्य परीक्षिता आसन्।

कथं यन्त्रनिर्मितं विदेशीयं वस्त्रं भारतीयस्य गृहोद्योगस्य विध्वंसमकार्षीदिति प्रदर्शयितुमयं मुम्बई-महानगर्यां विशालमुत्सवाग्निं प्रज्वालयामास। प्रदर्शनमेतद् द्रष्टुं सहस्रं जनाः समागताः। यथा यथास्य ज्वालः सम्पूर्णं पुञ्जमासाद्य ऊर्ध्वमुखोऽवर्द्धत तथा तथा महान् हर्षध्वनिर्गुञ्जितोऽभूत्। अस्यानुष्ठानस्य संस्मारणे समालिखदयं विदेशीयस्य वस्त्रस्य परिधानं पापमिति विदेशीयं वस्त्रं ज्वालयित्वा अस्मदादयः कलङ्कमग्निसात् कुर्वन्ति।

गान्धीमहाशयस्य प्रेरणाप्रदे नेतृत्वे कांग्रेससंस्था भारतस्य स्वतन्त्रतायाः समर्थिकाऽभूत्। इयं संस्था प्रत्येकजातेः पुरुषवर्गं नारीनिचयं चाकृष्टवती। संस्था चेयमिदानीं भारतीयेतिहासस्य धारामेव दिगन्तरे पर्यवर्तयत्।

अनेकान् मासान् गान्धीमहाशयः भारतं पर्यभ्रमीत्। अस्मिन् पर्यटनक्रमे तीर्थस्थानानि पुरोहिताः व्यापारिणः भिक्षुकाः विविधविधा अन्ये मानवाश्च सम्मिलिताः। अयं सर्वदा निर्धनानां काठिन्यं विभक्तुं तेषां तथाविधानां कष्टं सहानुभवितुं तृतीयश्रेण्यां पर्यभ्रमीत्।

मातृभूमिस्वतन्त्रतायाः प्रेमी 1948 तमे ख्रिष्टाब्दे जनवरीमासस्य त्रिंशद्दिनाङ्के महाभागः सन्ध्यायां धरां विहाय स्वर्गं गतः। साम्प्रतम् एतस्य स्थानस्य पूर्तिर्नितरामसम्भवा।

शब्दार्थः

कोटि = करोड़। **लेभे** = ग्रहण किया। **सदाचारैकप्रवणः** = सदाचार-परायण। **गतगर्वः** = अभिमान शून्य। **प्रभृति** = इत्यादि। **क्रियानुयाता** = क्रियाओं का अनुसरण करनेवाली। **संक्रमण** = प्रभाव। **नियतपाठाभ्यासी** = निरन्तर पाठों का अभ्यास करने वाला। **हरिश्चन्द्राभिधे** = हरिश्चन्द्र नाम के। **आचकांक्ष** = इच्छा की। **कियानपि** = कितना भी। **अकार्षुः** = कर दिया। **नाशक्नोत्** = न कर सका। **अनुकर्तुम्** = नकल करने के लिए। **इंगितेन** = इशारे से। **स्वान्तेवासिनम्** = अपने शिष्य को। **प्रेरयामासुः** = प्रेरित किया। **अवृणोत** = चुना। **अवाप्नोत्** = प्राप्त किया। **अन्वभवत्** = अनुभव किया। **यावच्छम्भवमधीत्य** = यथा सम्भव पढ़कर। **पोतम्** = पानी का जहाज। **भारवाहकः** = कुली। **प्रथितः** = प्रसिद्ध। **धूम्रयानेन** = रेलगाड़ी से। **निदर्शनपत्रम्** = टिकट। **निर्दिष्टस्थाने** = स्टेशन पर। **व्यरमत्** = रुका। **सुकरतया** = सरलता से। **गौराङ्गैः** = अंग्रेजों द्वारा। **आत्मोत्सर्गम्** = आत्मबलिदान। **तत्याज** = त्याग दिया। **उपार्जयत्** = इकट्ठा किया। **निरक्षराणाम्** = निरक्षरों के। **प्रज्वालयामास** = जलाया। **ऊर्ध्वमुखः** = ऊपर की ओर मुख करके। **परिधानम्** = वस्त्र धारण करना।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) महात्मा कुत्र जन्म लेभे ?

(ख) गान्धिनः मातुः नाम किम् आसीत् ?

(ग) गाइल्सः कः आसीत् ?

(घ) धूमयानेन गान्धी कस्य नगरस्य यात्राम् अकरोत् ?

(ङ) किम् उच्चारयन् महात्मागान्धी स्वर्गं जगाम ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) महात्मनः पितुः नाम किम् आसीत् ?

(ख) सर्वदा बालो मोहनः कुत्र रमते स्म ?

(ग) मोहनदासः कस्य वर्णविन्यासं कर्तुं नाशक्नोत् ?

(घ) गान्धिनः पिता कीदृशः आसीत् ?

3. सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धिनाम लिखत–

नार्हति = ... + ...

आत्मोत्सर्गम् = ... + ...

गान्धिकालेऽपि = ... + ...

भारतीयेतिहासस्य = ... + ...

4. अधोलिखितपात्रयोः चरित्रचित्रणं हिन्दीभाषया कुरुत–

(क) महात्मा गान्धी (ख) पुतली बाई

5. 'महात्मनः संस्मरणानि' इति पाठस्य सारांशं लिखत।

6. समुचितमुत्तरं चित्वा लिखत–

(i) किं नाटकं दृष्ट्वा गान्धिनः हृदयं परिवर्तितम् ?

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ख) हरिश्चन्द्रः (ग) प्रतिमानाटकम् (घ) स्वप्नवासवदत्तम्

(ii) दक्षिण–अफ्रीका देशे के तिरस्कृताः आसन् ?

(क) विदेशीयाः (ख) परकीया : (ग) स्वदेशीयाः (घ) अफ्रीकादेशीयाः

(iii) गान्धिमहोदयः कदा दक्षिण–अफ्रीका इति देशं व्यसृजत् ?

(क) 1916 (ख) 1920 (ग) 1914 (घ) 1934

(iv) महात्मनः गान्धिनः जन्म अभवत् ?

(क) हैदराबादनगरे (ख) पोरबन्दरे (ग) नागपुरे (घ) भोपाले

(v) महात्मा कस्योपरि विश्वासं तत्याज ?

(क) ब्रिटिशशासकस्योपरि (ख) दक्षिणाफ्रीकोपरि (ग) चीनोपरि (घ) श्रीलंकोपरि

■

द्वितीयः पाठः

कारुणिको जीमूतवाहनः

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ महाकवि हर्ष द्वारा लिखित '**नागानन्दम्**' नामक नाटक से अवतरित है। हर्षवर्धन थानेश्वर और कन्नौज के राजा प्रभाकरवर्धन के छोटे भाई थे। इस नाटक में 5 अंक हैं। प्रस्तुत नाटक में जीमूतवाहन नामक विद्याधर राजकुमार के द्वारा आत्मोत्सर्ग करके शंखचूड़ नामक सर्प को गरुड़ से बचाने की कथा है। इस नाटक में अहिंसा, त्याग, आत्मबलिदान और परोपकार आदि मानवीय मूल्यों का दिग्दर्शन होता है। इस नाटक में शान्त और करुण रस प्रधान हैं।*

(ततः प्रविशति प्रतीहारः)

प्रतीहारः – जलधिवेलावलोकनकुतूहली निष्क्रान्तः कुमारो जीमूतवाहनश्चिरयतीति दुःखमास्ते महाराजविश्वावसुः समादिष्टश्चास्मि तेन। यथा सुनन्द! श्रुतं मया सन्निहितगरुडप्रतिभयमुद्देशं गतो जामाता जीमूतवाहनो तत्र चिरयतीति शङ्कित एवास्म्यनेन वृत्तान्तेन त्वरितं विज्ञायागच्छ किमसौ स्वगृहमागतो न वेति। यावत्तत्र गच्छामि। (परिक्रामन्नग्रतोऽवलोक्य) अयमसौ राजर्षिर्जीमूतवाहनस्य पिता जीमूतकेतुरुटजाङ्गणे सहधर्मचारिण्या राजपुत्र्या वध्वा च पर्युपास्यमानस्तिष्ठति। तद्यावदुपसर्पामि।

(ततः प्रविशत्यासनस्थः पत्नीवधूसमेतो जीमूतकेतुः)

प्रतीहारः–**(सहसोपसृत्य)** जीमूतवाहनस्य .... ।

जीमूतकेतुः–**(कर्णौ पिधाय)** शान्तं पापम्।

देवी–प्रतिहतममङ्गलम्।

नायिका–अनेन दुर्निमित्तेन वेपत इव मे हृदयम्।

जीमूतकेतुः–भद्र! किं जीमूतवाहनस्य ?

प्रतीहारः–जीमूतवाहनस्य वार्तामन्वेष्टुं प्रेषितोऽस्मि महाराजविश्वावसुना युष्मदन्तिकम्। तदाज्ञापयतु महाराजः किं मया स्वामिने विज्ञापनीयमिति।

जीमूतकेतुः–किमसन्निहितस्तत्रापि मे वत्सः ?

प्रतीहारः–अथ किम्।

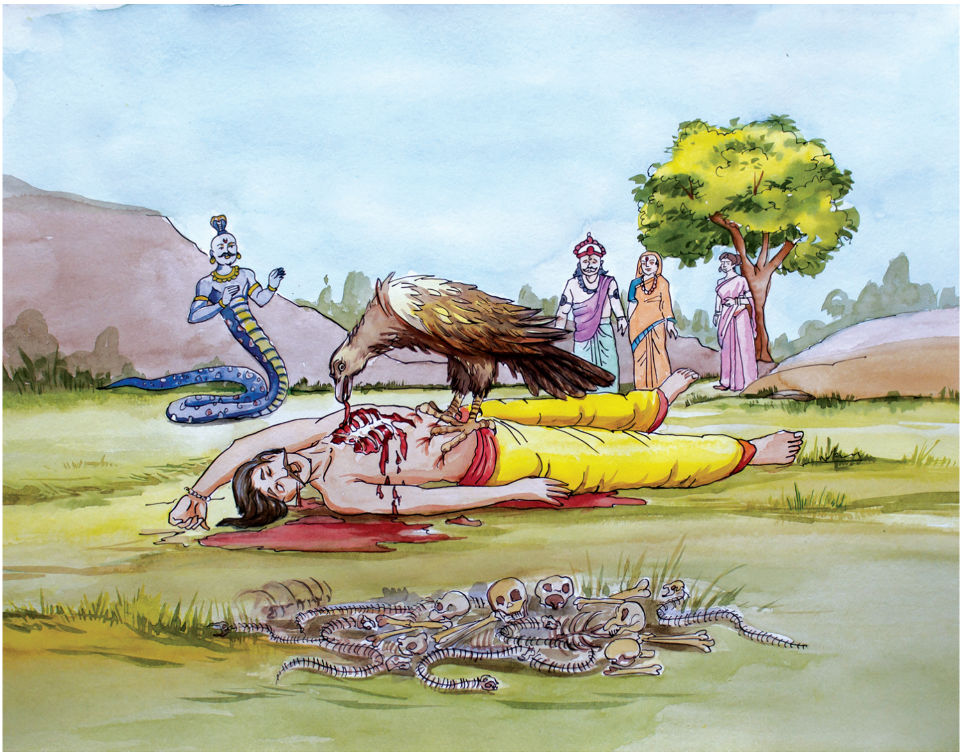

देवी–(सविषादम्) यदि तत्र न सन्निहितस्तत् क्व गतो मे पुत्रको भविष्यति येनैवं चिरयति?

जीमूतकेतुः–नियतमस्मत्प्राणयात्रार्थं नितान्तं दूरं गतो भविष्यति।

नायिका–(सविषादमात्मगतम्) अहं पुनरार्यपुत्रमप्रेक्ष्यमाणान्यदेव किमप्याशङ्के।

प्रतीहारः–आज्ञापयतु महाराजः। किं मया स्वामिने निवेदनीयम् ?

जीमूतकेतुः–(वामाक्षिस्पन्दनं सूचयित्वा) जीमूतवाहनश्चिरयतीति पर्याकुलोऽस्मि। **(सविस्मयम्)** कथं चरणयोरेव पतितम्। **(सर्वे निरूपयन्ति)**

जीमूतकेतुः–अये कथं लग्नसरसमांसकेशश्चूडामणिः ? कस्य पुनरयं भविष्यति ?

देवी–(सविषादम्) महाराज! पुत्रकस्येव एतच्चूडारत्नम्।

नायिका–मैवं भण।

प्रतीहारः–महाराज! मैवमविज्ञाय विक्लवो भूः। अत्र हि तार्क्ष्येण भक्ष्यमाणानां नागाधिपानामनेकशो नखमुखोत्खाताः पतन्त्येते शिरोमणयः।

देवी–सुनन्द! यावदनया वेलया श्वशुरसदनमेव गतो मे पुत्रको भविष्यति। तद् गच्छ ज्ञात्वा लघ्वेवास्माकं निवेदय।

प्रतीहारः—यदाज्ञापयति देवी। **(इति निष्क्रान्तः)**

जीमूतकेतुः—देवि! अपि नाम नागचूडामणिरयं स्यात्।

(ततः प्रविशति रक्तवस्त्रसंवीतः शङ्खचूडः)

शङ्खचूडः—(सास्रम्) कष्टं भोः कष्टम्।

हा परमकारुणिक! हा निष्कारणैकबान्धव! हा परदुखःदुःखित! हा परोपकारतृणीकृतदत्तदेह! क्व नु खलु गतोऽसि ? हा शङ्खचूडहतक! किं कृतं त्वया?

देवी—(ससाध्वसम्) महाराज! एष कोऽपि रुदितवदन इत एव त्वरितमागच्छन्हृदयं आकुलीकरोति। तज्ज्ञायतां तावत्क एष इति।

जीमूतकेतुः—(आकर्ण्य सहर्षम्) देवि! मुञ्च विषादम्। अस्यायं चूडामणिर्नूनं मांसलोभात् केनापि पक्षिणाकस्मादुत्खायानीयमानोऽस्यां भूमौ पातितः।

देवी—(सहर्षं मलयवतीमालिङ्ग्य) अविधवे! धीरा भव।

जीमूतकेतुः—(शङ्खचूडमुपसृत्य) वत्स! किं तव चूडामणिरपहृतः ?

शङ्खचूडः—आर्य! न ममैव, त्रिभुवनस्यापि।

जीमूतकेतुः—कथमिव ?

शङ्खचूडः—श्रूयताम्। शङ्खचूडो नाम नागः खल्वहं वैनतेयस्याहारार्थमवसरप्राप्तो वासुकिना प्रेषितः। किं बहुना विस्तरेण।

विद्याधरेण केनापि करुणाविष्टचेतसा।
मम संरक्षिताः प्राणा दत्त्वात्मानं गरुत्मते।।

जीमूतकेतुः—कोऽन्य एवं परहितव्यसनी। ननु स्फुटमेवोच्यतां जीमूतवाहनेनेति। हा हतोऽस्मि मन्दभाग्यः।

देवी—हा पुत्रक ! किं त्वया कृतम् ?

नायिका—हा ! कथं सत्यीभूतं मे दुर्निमित्तम् ?

(सर्वे मोहं गच्छन्ति)

शङ्खचूडः—(सास्रम्) अये! नूनमेतौ पितरौ तस्य महासत्त्वस्य। अप्रियनिवेदनान्मयैवेमामवस्थां नीतौ। अहो प्राणप्रदस्य सुसदृशं प्रत्युपकृतं जीमूतवाहनस्य शङ्खचूडेन। तत्किमधुनैवात्मानं व्यापादयामि? अथवा समाश्वासयामि तावदेतौ। तात! समाश्वसिहि। समाश्वसित्वम्बा।

(उभौ समाश्वसितः)

देवी–हा पुत्र जीमूतवाहन! यस्मै ते गुरुजनशुश्रूषां वर्जयित्वान्यत् सुखं न रोचते स कथमिदानीं पितरमुज्झित्वा स्वर्गसुखमनुभवितुं गतोऽसि ?

जीमूतकेतुः–(सास्रम्) देवि! किं जीमूतवाहने न विना जीवामो वयं येनैवं विलपसि ?

नायिका–(पादयोर्निपत्य कृताञ्जलिः) तात! देहि मे आर्यपुत्रस्य चूडारत्नं येनैतद् हृदये कृत्वा अपनयाम्यात्मनः सन्तापदुःखम्।

जीमूतकेतुः–किं मामाकुलयसि ?

शङ्खचूडः–(आत्मगतम्) कष्टं ममैकस्य पापस्य कृते सकलमेवेदं विद्याधरकुलमुच्छिन्नम्। तदेवं तावत्। **(प्रकाशम्)** कदाचिन्नायं नाग इति ज्ञात्वा जीवन्तमेव जीमूतवाहनं परित्यजेन्नागशत्रुः। तदनयैव रुधिरधारया वैनतेयमनुसरामः।

जीमूतकेतुः–वत्स! अवितथैषा तव भारती भवतु। वयमपि त्वरितमेवानुगच्छामः।

(इति पत्नीवधूसमेतो निष्क्रान्तः)

शङ्खचूडः–तद्यावद्गरुडमनुसरामि।

(ततः प्रविशत्यासनस्थः पुरः पतितनायकौ गरुडः)

गरुडः–(आत्मगतम्) जन्मनः प्रभृतिभुजङ्गपतीनश्नता नेदमीदृशमत्याश्चर्यं मया दृष्टपूर्वं यदयं महासत्त्वो न केवलं न व्यथते प्रत्युत प्रहृष्ट इव किमपि दृश्यते।

तत्कुतूहलमेव जनितमस्यानया धैर्यवृत्या। भवतु, न भक्षयाम्येवैनम् पृच्छामि तावत्कोऽयमिति। **(अपसर्पति) (आत्मगतम्)** आश्चर्यमाश्चर्यम्। कथमयमस्यामप्यवस्थायामेवमूर्जितमभिधत्ते। **(प्रकाशम्)** अहो महासत्त्व!

आवर्जितं मया चञ्च्वा हृदयात्तव शोणितम्।
धैर्येणानेन च हृतं त्वया हृदयमेव मे।।

अतः कस्त्वमिति श्रोतुमिच्छामि।

जीमूतवाहनः–एवं क्षुधाकुलो भवान्न श्रवणयोग्यः। ततः कुरुष्व तावत्प्रथमं मम मांसशोणितेन तृप्तिम्।

शङ्खचूडः–(सहसोपसृत्य) तार्क्ष्य! न खलु साहसमनुष्ठेयम्। नायं नागः। परित्यजैनम्। मां भक्षय। अहं तवाहारार्थं प्रेषितोऽस्मि वासुकिना।

गरुडः–(उभौ निरूप्य) द्वयोरपि भवतोर्वध्यचिह्नम्। कः खलु नाग इति नावगच्छामि।

शङ्खचूडः–अस्थान एव ते भ्रान्तिः।

गरुडः–(शङ्खचूडं पश्यन् नायकं च वीक्ष्यमाणः) कः खल्वयं मया व्यापादितः ?

शङ्खचूडः—विद्याधरवंशतिलको जीमूतवाहनः। कथमकारुणिकेन त्वयेदमनुष्ठितम्।

गरुडः—अये! करुणार्द्रचेतसानेन महात्मना ममास्य गोचरपतितस्यास्य फणिनः प्राणान् परिरक्षितुं स्वदेहः आहारार्थमुपनीतः। तन्महदकृत्यमेतन्मया कृतम्। तदस्य महतः पापस्याग्निप्रवेशादृते नान्यत्प्रायश्चित्तं पश्यामि। **(दिशोऽवलोक्य)** अये! अमी केऽपि इत एवाभिवर्तन्ते ? तद्यावदेतान् प्रतिपालयानि।

शङ्खचूडः—कुमार! पितरौ ते प्राप्तौ।

जीमूतवाहनः—**(ससम्भ्रमम्)** शङ्खचूड! समुपविश्यानेनोत्तरीयेण आच्छादितशरीरं कृत्वा धारय माम्। अन्यथा कदाचिदीदृगवस्थं मां सहसा अवलोक्य पितरौ जीवितं जह्याताम्।

(शङ्खचूडः पार्श्वपतितमुत्तरीयं गृहीत्वा तथा करोति)

(ततः प्रविशति पत्नीवधूसमेतो जीमूतकेतुः)

जीमूतकेतुः— **(सास्रम)** हा पुत्र जीमूतवाहन!

गरुडः— **(श्रुत्वा)** हा पुत्र जीमूतवाहनेति ब्रवीति। व्यक्तमयमस्य पिता। न शक्नोमि पुत्रघाताल्लज्जया मुखं दर्शयितुम्। **(जानुभ्यां स्थित्वा कृताञ्जलिः)** भो महात्मन्कस्तर्हि कथ्यताम्।

जीमूतवाहनः—प्रतिपालय क्षणमेकम्। पितरौ मे प्राप्तौ यावदेतौ प्रणमामि।

जीमूतकेतुः— **(दृष्ट्वा सहर्षम्)** देवि दृष्ट्या वर्धसे। अयं वत्सो जीमूतवाहनो न केवलं ध्रियते प्रत्युत् कृताञ्जलिना गरुडेन शिष्येणेव पर्युपास्यमानस्तिष्ठति।

देवी— महाराज कृतार्थाऽस्मि। अक्षतशरीरस्य पुत्रकस्य मुखं दृष्टम्।

जीमूतकेतुः — उपसृत्य, वत्स एह्येहि परिष्वजस्व माम्।

(जीमूतवाहनः उत्थातुमिच्छन् पतितोत्तरीयो मूर्च्छति)

जीमूतकेतुः—वत्स कथं मां दृष्ट्वापि परित्यज्य गतोऽसि ?

देवी—हा पुत्र कथं वाङ्मात्रेणापि त्वया न सम्भावितास्मि ?

मलयवती—हा आर्यपुत्र! कथं गुरुजनोऽपि त्वयोपेक्षितः ?

(सर्वे मोहं गच्छन्ति)

जीमूतवाहनः—**(समाश्वस्य)** शङ्खचूड! समाश्वासय गुरून्।

शङ्खचूडः—तात! समाश्वसिहि। मातः! समाश्वसिहि।

(जीमूतवाहनः मरणावस्थां नाटयति)

जीमूतकेतुः— **(ससम्भ्रमम्)** हा वत्स! किमेवं करोषि?

देवी—हा ! किं नु खल्वेवं वदति? परित्रायध्वं परित्रायध्वम्। एष खलु मे पुत्रको विपद्यते।

गरुडः—**(सोद्वेगम्)** कष्टमुपरतोऽयं महात्मा। तत किमिदानीं करोमि।

देवी—**(सास्रमूर्ध्वमवलोक्य)** भगवन्तो लोकपाला कथं नामृतेन सिक्त्वा पुत्रकं मे जीवयत।

गरुडः—(सहर्षमात्मगतम्) अये, अमृतसंकीर्तनात्साधु स्मृतम्। मन्ये प्रमृष्टमयशः। तद्यावत् त्रिदषपतिमभ्यर्थ्य तद्विसृष्टेनामृतवर्षेण न केवलं जीमूतवाहनमेतानपि पूर्वभक्षितानस्थिशेषानुरगपतीन् प्रत्युञ्जीवयामि तदयं गतोऽस्मि।

(इति साटोपं परिक्रम्य निष्क्रान्तः)

(ततः प्रविशति ससम्भ्रमा गौरी)

जीमूतकेतुः—अये कथममोघदर्शना भगवती गौरी।

गौरी— (नायकमुपसृत्य कमण्डलूदकेनाभिषिच्य) वत्स! जीव जीमूतवाहन ! ते परितुष्टास्मि।

(जीमूतवाहनः उत्तिष्ठति)

जीमूतकेतुः—(सहर्षम्) देवि दिष्ट्या वर्धसे। प्रत्युज्जीवितो मे वत्सः।

देवी—भगवत्याः गौर्याः प्रसादेन।

(इति गौर्याः पादयोः पतन्ति। सर्वे ऊर्ध्वंपश्यन्ति।)

जीमूतकेतुः—अये कथमनभ्रा वृष्टिः। भगवति! किमेतत्?

गौरी—राजन्! जीमूतवाहनं प्रत्युज्जीवयितुमेतांश्चास्थिशेषान् उरगपतीन् समुपजातपश्चात्तापेन पक्षिपतिना गरुडेन देवलोकादियममृतवृष्टिः पातिता।

शब्दार्थः

जलधिवेलावलोकनकुतूहली = समुद्र का तट देखने की उत्सुकता वाले। **चिरयति** = देर कर रहा है। **दुःखमास्ते** = दुःखी हैं। **सन्निहितगरुडप्रतिभयमुद्देशम्** = गरुड़ से जहाँ भय हो ऐसे स्थान को। **जामाता** = दामाद। **उटजाङ्गणे** = पर्णकुटी के आँगन में। **सहधर्मचारिण्या** = पत्नी के साथ। **पर्युपास्यमानः** = सेवित किये जाते हुए। **उपसर्पामि** = समीप जाता हूँ। **प्रतिहतम्** = नष्ट। **अमङ्गलम्** = अशुभ। **दुर्निमित्तेन** = अपशकुन से। **वेपते** = काँपता है। **युष्मदन्तिकम्** = आपके पास। **पुत्रकः** = पुत्र। **अस्मत्प्राणयात्रार्थम्** = हम लोगों की आजीविका के लिए। **आर्यपुत्रम्** = पति को। **अप्रेक्ष्यमाणा** = न देखती हुई। **वामाक्षिस्पन्दनम्** = बाईं आँख का फड़कना। **लग्नसरसमांसकेशचूडामणिः** = रक्त, मांस और केश से युक्त चूड़ामणि। **भण** = बोलो। **विक्लवः** = व्याकुल। **नखमुखोत्खाताः** = नख और मुख में उखाड़ी गई। **लघ्वेव** = जल्दी ही। **निष्कारणैकबान्धव** = बिना कारण के ही भाई। **पक्षिणा** = पक्षी के द्वारा। **अकस्मात्** = अचानक। **आनीयमाना** = लायी जाती हुई (मणि)। **भूमौ** = पृथ्वी पर। **पातितः** = गिराई गई। **अविधवे** = सौभाग्यवती। **केनापि** = किसी के द्वारा। **करुणाविष्टचेतसा** = करुणायुक्त हृदय वाले। **गरुत्मते** = गरुड़ को। **पितरमुज्झित्वा** = पिता को छोड़कर। **माम्** = मुझे। **आकुलयसि** = व्याकुल कर रही हो। **जन्मनः प्रभृति** = जन्म से लेकर। **विद्याधर** = देवयोनि। **अनभ्रा** = बिना बादलों के। **कृताञ्जलिना** = हाथ जोड़े हुए। **दिष्ट्या** = सौभाग्य से।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) जीमूतवाहनस्य पिता कः आसीत् ?

(ख) शङ्खचूडः कः आसीत् ?

(ग) गरुडेन कः व्यापादितः ?

(घ) जीमूतवाहनः कस्य पुत्रः आसीत् ?

(ङ) कस्याः जलेन जीमूतवाहनः प्रत्युज्जीवितः ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) जीमूतवाहनस्य वार्तामन्वेष्टुं विश्वावसुना प्रतिहारः कुत्र प्रेषितः ?

(ख) देवलोकाद् अमृतवृष्टिः केन पातिता ?

(ग) रक्तवस्त्रसंवीतः कः प्रविशति ?

(घ) शङ्खचूडः गरुडस्य समीपं गत्वा किं कथयति ?

(ङ) गरुडः जीमूतवाहनं व्यापाद्य कथं पश्चात्तापं करोति ?

3. अधोलिखितानां चरित्रचित्रणं हिन्दीभाषया लिखत–

(क) जीमूतवाहनः (ख) गरुडः (ग) शङ्खचूडः

4. ''कारुणिको जीमूतवाहनः'' इति पाठस्य सारांशं लिखत।

5. समुचितमुत्तरं चित्वा लिखत –

(i) जीमूतवाहनः कस्य पुत्रः आसीत्?

(क) जीमूतकेतोः (ख) शङ्खचूडस्य (ग) गरुडस्य (घ) नागस्य

(ii) ''नागानन्दम्'' इति नाटकस्य लेखकः कः?

(क) भवभूतिः (ख) कालिदासः (ग) हर्षवर्धनः (घ) विष्णुशर्मा

(iii) ''नागानन्दम्'' इति नाटके अङ्काः सन्ति –

(क) पञ्च (ख) सप्त (ग) द्वादश (घ) द्वाविंशतिः

(iv) गौरी केन अभिषिक्तवती?

(क) कमण्डलूदकेन (ख) गङ्गोदकेन (ग) यमुनोदकेन (घ) कलशोदकेन

(v) जीमूतवाहनः काम् अवस्थां नाटयति?

(क) जीवितावस्थाम् (ख) मरणावस्थाम् (ग) युवावस्थाम् (घ) वृद्धावस्थाम्

(vi) आवर्जितं मया चञ्च्वा हृदयात्तव ....।

(क) गोपितम् (ख) शोणितम् (ग) गतम् (घ) पीतम्

■

तृतीयः पाठः

धैर्यधनाः हि साधवः

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ लगभग 400 ई0 में विद्यमान आचार्य आर्यशूर द्वारा विरचित 'जातकमाला' से उद्‌धृत है। 'जातकमाला' में बोधिसत्त्व के पूर्वजन्म की कथाओं का संग्रह है, इसीलिए इसे **'बोधिसत्त्वावदानमाला'** भी कहा जाता है। यहाँ बोधि का अर्थ है बुद्धत्व और सत्त्व का अर्थ है प्राणी। इस प्रकार बोधिसत्त्व का अर्थ है – बुद्धत्व-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने वाला प्राणी। यह जातकमाला चम्पू शैली में लिखा गया है अर्थात् इसमें गद्य-पद्य का मिश्रण है। जातक-कथाओं की संख्या लगभग 500 है। इन कथाओं का चीनी भाषा में भी अनुवाद किया गया है। सुपारगजातक में बोधिसत्त्व के द्वारा नाविक रूप में जन्म लेने और धर्मपालन करते हुए विपत्ति में भी धैर्य न छोड़ते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का वर्णन है। बोधिसत्त्व 'सुपारग' बनकर व्यापारियों को समुद्र में फँस जाने पर धैर्य बँधाकर वापस लाते हैं और धैर्यपूर्वक व्यापारियों ने न केवल अपने प्राण प्राप्त किये बल्कि हीरे, चाँदी, वैदूर्य आदि रत्नों को भी प्राप्त किया।*

बोधिसत्त्वभूतः किल महासत्त्वः परमनिपुणमतिः सुपारगनामा नौसारथिः बभूव। तदध्युषितञ्च पत्तनं सुपारगमित्येवमाख्यातमासीत्।

अथ कदाचिद् भरुकच्छादिभिः प्रयाता सुवर्णभूमिवणिजो यात्रासिद्धिकामाः सुपारगं पत्तनमुपेत्य तं महासत्त्वं वहनारोहणार्थमभ्यर्थयामासुः। सः तान् उवाच-जराधिक्यत्वात् असमर्थोऽहम् साहाय्ये।

वणिजः ऊचुः–विदितेयमस्माकं युष्मच्छरीरावस्था। सत्यपि च वः पराक्रमासहत्वे नैव वयं कर्मविनियोगेन युष्मानायासयितुमिच्छामः।

अथ स महात्मा तेषामनुकम्पया जराशिथिलशरीरोऽपि तद्‌वहनमारुरोह। तदधिरोहणाच्च प्रमुदितमनसः सर्व एव ते वणिजो बभूवुः नियतमस्माकं यात्रासिद्धिरिति। क्रमेण च अवजगाहिरे विविधमीनकुलविचरितं बहुविधरत्नैर्युतं दुरापपातालमप्रमेयं तोयं महासमुद्रम्।

तेषां तत्रानुप्राप्तानां सायाह्नसमये मृदुभूतकिरणचक्रप्रभावे सवितरि महदौत्पातिकं परमभीषणं प्रादुरभूत्।

अथ ते सांयात्रिकाः पवनबलचलितसलिलवेगवशगया नावा परिभ्रम्यमाणाः बहुभिरपि अहोभिः नैव कुतश्चित् तीरं ददृशुः, न वा यथेप्सितानि समुद्रचिह्नानि। अपूर्वैरेव तु समुद्रचिह्नैः

अभिवर्धमानवैमनस्य भयविषादव्याकुलतामुपजग्मुः। अथैतान् सुपारगो बोधिसत्त्वो व्यवस्थापयन्नुवाच अनाश्चर्यं खलु महासमुद्रप्राप्तानां औत्पातिकोक्षोभपरिक्लेशः। तदलमत्र भवतां विषादानुवृत्या। यथाधिकाराः विहिता भवन्तु भवन्तः। इति ते सांयात्रिकाः समुद्रमवलोकयन्तः ददृशुः पुरुषविग्रहानामुक्तरूप्यकवचान् इव निमज्जतो उन्मज्जतश्च। ते सविस्मयाः सुपारगमपृच्छन्– भगवन्! एते खलु के ? यतो न भेतव्यमतः किं तु खुरमाली अयं समुद्रः तद् यतध्वं निवर्तितुम्।

परं चण्डवेगवाहिना वायुना समाक्षिप्ततया न ते शेकुः विनिवर्तितुम्। अथ ते रूप्यप्रभावभासितं समुद्रमालोक्य सुपारगमूचुः भगवन्! कोऽयं समुद्रः? सुपारग उवाच-कष्टम्, अतिदूरं खल्ववगाह्यते। अयं क्षीरार्णवो उदधिः। अतः परं गन्तुं न क्षमः नैव निवर्तितुम्।

वणिजः ऊचुः-न खलु शक्यते विलम्बयितुं वहनम्। अथ व्यतीत्य तमपि समुद्रं सुवर्णप्रभानुरञ्जितं समुद्रमालोक्य वणिजः सुपारगं पप्रच्छुः को नाम महार्णवोऽयम्? सुपारगः उवाच-अयं समुद्रः अग्निमाली इति विख्यातः। अथ ते सांयात्रिकाः तमपि समुद्रमतीत्य पुष्परागेन्द्रनीलप्रभोद्योतितसलिलं समुद्रमालोक्य कौतूहलजाता सुपारगं पप्रच्छुः–भगवन्! कतमोऽयं सलिलनिधिः?

सुपारगः उवाच–भोः सार्थवाहाः! निवर्तनं प्रति यत्नं क्रियताम्। न खल्वतः क्षमते गन्तुम्। अयं कुशमाली नाम समुद्रः। अथ ते वाणिजकाः परेणापि यत्नेन निवर्तयितुमशक्नुवन्तः तमपि समुद्रमतीत्यवंशरागहरितसलिलमपरं समुद्रमालोक्य सुपारगमपृच्छन्। भगवन्! मरकतहरितप्रभैः जलैः युक्तो कतमोऽयं सलिलनिधिः?

अथ स महात्मा तेन वणिग्जनस्य व्यसनोपनिपातेन दह्यमानहृदयो दीर्घमुष्णञ्च निःश्वस्य शनैरुवाच–अस्माकं काल इवायं नलमाली नाम सागरः।

तच्छ्रुत्वा ते वाणिजकाः विषादोपरुध्यमानमनसः निःश्वसितमात्रपरायणास्तत्रैव निषेदुः। व्यतीत्य च तमपि समुद्रं सायाह्नसमये श्रुतिहृदयविदारणं समुद्रध्वनिमश्रौषुः। परमभयविषादविह्वलाः ते सुपारगमुपेत्योचुः भगवन्! कोऽयमुदधिः ? अथ स महात्मा ससम्भ्रमः कष्टमित्युक्त्वा समुद्रमालोकयन्नुवाच–

यत्प्राप्य न निवर्तन्ते मृत्योर्मुखमिवामुखम्।
अशिवं समुपेतास्थ तदेतद् वडवामुखम्।।

तदुपश्रुत्य ते वणिजा त्यक्तजीविताशाः सस्वरं रुरुदुः। अथ स महात्मा महत्या करुणया समापीड्यमानहृदयः तान् उवाच–अस्यापि नः कश्चित्प्रतीकारविधिः प्रतिभाति। तत्तावत्प्रयोक्ष्ये। अथ ते तूष्णीं बभूवुः।

अथ सुपारगो बोधिसत्त्वः नावमधिष्ठाय दक्षिणेन जानुमण्डलेन प्रणम्य तथागतेभ्यः तान् उवाच–शृण्वन्तु अत्रभवन्तः सांयात्रिकाः सलिलनिधिव्योमाश्रयाश्च देवविशेषाः! मम पुण्यबलेन अहिंसाबलेन चेयं नौः स्वस्ति विनिवर्तताम्। अथ तस्य महात्मनः सत्याधिष्ठानबलात् पुण्यतेजसा सह सलिलजवेन स मारुतो व्यावर्तमानस्तां नावं निवर्तयामास। निवृत्तां नावं अभिसमीक्ष्य ते वाणिजकाः परमविस्मयप्रहर्षोद्धतमनसा निवृत्ता नौरिति सुपारगाय ऊचुः।

अथ स महात्मा तान् वाणिजकानुवाच–स्थिरीभवन्तु भवन्तः।

तेन समादिष्टास्ते तथा चक्रुः।

निवृत्तायां तु तस्यां नाव्यनुकूलसलिलमारुतायां स्वेच्छया एव प्रयातायां सुपारगस्तानुवाच–भोः सार्थवाहाः! नलमालिप्रभृतिभ्यः समुद्रेभ्यो बालुकापाषाणाश्च वहनमारोप्यन्तां यावत्सहते। एते बालुकापाषाणा नियतं लाभसिद्धये वो भविष्यन्ति। अथ ते सांयात्रिकाः अनुप्रदर्शितेभ्यः स्थलेभ्यः आदाय बालुकापाषाणबुद्ध्या वैदूर्यादीनि रत्नानि वहनमारोपयामासुः। तेनैव च एकरात्रेण सा नौः भरुकच्छमुपजगाम। अथ प्रभाते रजतेन्द्रनीलवैदूर्यहेमप्रतिपूर्णां नौकां दृष्ट्वा अतीवहर्षाः प्रीत्या तं सुपारगमानर्चुः। तदेवं धर्माश्रयं सत्यवचनमपि आपदं नुदतीति।

शब्दार्थः

नौसारथिः = नाविक। **पत्तनम्** = नगर। **आख्यातम्** = प्रसिद्ध। **प्रयाता** = प्रस्थान किया। **यात्रासिद्धिकामाः** = यात्रा को सफल करने की इच्छा वाले। **उपेत्य** = पहुँचकर। **वहनारोहणार्थम्** = जहाज पर चढ़ने के लिए। **अभ्यर्थयामासुः** = प्रार्थना की। **उवाच** = कहा। **जराधिक्यत्वात्** = बुढ़ापे की अधिकता के कारण। **साहाय्ये** = सहायता में। **मीनकुल** = मछलियों का कुल (समूह)। **अप्रमेयम्** = अपरिमित। **तोयम्** = जल। **दुरापपातालम्** = दुष्प्राप्य–पाताल। **अवजगाहिरे** = समुद्र में अवगाहन। **महदौत्पातिकम्** = अत्यधिक अमङ्गलकारी। **परमभीषणम्** = अत्यन्त भयानक।

सांयात्रिकाः = नाविकजन। **निवर्तितुम्** = लौटने के लिए। **अशिवम्** – अमङ्गलमय। **न क्षमते** = समर्थ नहीं है। **दीर्घमुष्णञ्च** = लम्बी और गर्म। **निःश्वस्य** = सांस लेकर। **तच्छ्रुत्वा** = उसे सुनकर। **विह्वलाः** = व्याकुल। **रुरुदुः** = रोने लगे।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) पत्तनं केन नाम्ना आख्यातमासीत् ?

(ख) जराधिक्यत्वात् कः असमर्थः ?

(ग) सर्वप्रथमं कस्मिन् समुद्रे ते गतवन्तः ?

(घ) कुत्र अशिवं दृष्टवान् महात्मा ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) वणिजः कीदृशं समुद्रम् अवजगाहिरे ?

(ख) वणिजः कान् समुद्रान् ददृशुः ?

(ग) सुपारगः वणिग्साहाय्ये कथम् असमर्थो जातः ?

(घ) सुपारगः कथं ज्ञातवान् यत् अयं कुशमाली नाम समुद्रः ?

3. शुद्धकथनानां समक्षम् 'आम्', अशुद्धकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत।

(i) सुपारगः नौसारथिः आसीत्। (आम्/न)

(ii) पत्तनं नाम वाणिजकाः आसन्। (आम्/न)

(ii) अग्निमाली समुद्रः सुवर्णप्रभानुरञ्जितमासीत् (आम्/न)

(iv) मृत्योर्मुखम् इव मुखम् खुरमालीसमुद्रस्य आसीत्। (आम्/न)

4. 'धैर्यधनाः हि साधवः' इति पाठमाधृत्य सुपारगस्य चरित्रचित्रणं लिखत।

5. 'धैर्यधनाः हि साधवः' इति पाठमाधृत्य वणिजः चरित्रचित्रणं लिखत।

6. उचितं विकल्पं चिनुत–

(i) सुपारगः कः आसीत् ?

(क) सारथिः (ख) नौसारथिः (ग) वणिक् (घ) पथिकः

(ii) 'धैर्यधनाः हि साधवः' इति पाठः कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतः ?

(क) बुद्धचरितात् (ख) जातकमालायाः (ग) कुमारसम्भवात् (घ) सौन्दरानन्दात्

(iii) वणिजः ....समुद्रं दृष्टवान्।

(क) अग्निमाली (ख) वनमाली (ग) सुभगमाली (घ) क्षीरमाली

(iv) 'जातकमाला' इति ग्रन्थस्य रचनाकारः कः ?

(क) अश्वघोषः (ख) आर्यशूरः (ग) राजशेखरः (घ) सिद्धार्थः

■

चतुर्थः पाठः

यौतुकं पापसञ्चयः

पाठपरिचयः

'यौतुक' शब्द का अर्थ दहेज है। आज सम्पूर्ण समाज दहेज के दारुण अभिशाप से पीड़ित है। आज वधू को उसके गुणों के आधार पर नहीं अपितु उसके द्वारा लाये गये दहेज के आधार पर सम्मान दिया जाता है। प्रस्तुत नाटक में दहेज पर कुठाराघात करते हुए यह सिद्ध किया गया है कि विपत्ति के समय संस्कारवती बहू ही परिवार के लिए सहायक होती है।

(रमानाथस्य गृहदृश्यम्)

विनयः— अद्य असमये कथं स्मृतोऽस्मि मित्र रमानाथ!

रमानाथः— अधुना इमं कलहं सोढुम् असमर्थोऽस्मि।

विनयः—कः कलहः ?

रमानाथः—तव तनया सुमेधा।

विनयः—किं भणसि मित्र ? चतुर्वर्षैः सेविकावत् सा वराकी सपरिवारस्य तव सेवायां रता किन्त्वधुना...।

रमानाथः—आम् रतासीत् किन्त्वधुना मम कनिष्ठपुत्रवधूचपलायाः पित्रा श्रेष्ठिदुर्गादासेन प्रेषिते सेविके सर्वगृहकार्यं कुरुतः।

विनयः—वयस्य! किं कथयिष्यन्ति जनाः ? स्वपरिवारस्य मर्यादां विचिन्तय! एवं बालमित्रस्य असम्मानं त्वत्तः नापेक्ष्यते, यतः कुलीनोऽसि त्वम्।

रमानाथः—कुलीनतयैव तु त्वं विचारार्थमाकारितोऽसि।

विनयः—किं त्वं न स्मरसि यत् तव गुणज्ञेन पुत्रेण स्वयमेव वृता मम दुहिता। चिन्तय, प्रवासादुपावृत्तं तं किं प्रत्युत्तरिष्यसि ?

रमानाथः—एतदेव यत् निर्धनायै शरणस्थलं नास्ति मम सदनम्।

विनयः—पुनः विचारय मित्र! सम्प्रदत्तायाः भारं वोढुं कथं सक्षमोऽस्ति एकोऽकिञ्चनः।

रमानाथः—एतत् त्वया चिन्त्यमेष मम निश्चयः यत् सुमेधाद्यैव त्वया सह गमिष्यति अन्यथा तया सह तव सम्मेलनं न पुनः..................।

विनयः–(सोद्वेगम्) नहि नहि। नैवं भवितुं शक्यते। सा विदुषी सुसंस्कृता सहनशीलापि। ममात्मजास्ति सा। बहुकष्टैः पालिता। अस्मिन् युगे दुहिता भाररूपा नास्ति। सामाजिकपरम्परावशेनैव सम्प्रदेया सा निर्जीववस्तु नास्ति। त्वत्सदृशाः कुबेराः पुत्रवध्वाः जीवननिर्वाहकृतेऽक्षमाः भवतु नाम, परं मत्सदृशश्रमजीविगृहे भोजनाभावो न वर्तते।

रमानाथः–मामवगन्तुं प्रयतस्व मित्र! विवशोऽस्म्यहम्।

विनयः–(सक्रोधम्) पालयितुं समर्थोऽस्म्यहम्। **(तूष्णीं स्थित्वा)** बलीयसी ईश्वरेच्छा।

(सजलपात्रा प्रविशति सुमेधा)

विनयः–नहि सुमेधे! तव धनिश्वसुरेण पूर्वमेव पर्याप्तं जलं पायितम्।

सुमेधा–कृपया मम श्रद्धेयश्वसुरं माधिक्षिपतु भवान्। सम्मानेच्छुकैः समानस्तरपरिवार एव कन्या प्रदेया।

रमानाथः–सुमेधे! आप्ताः नोपदेष्टव्याः।

विनयः–सत्यमेवैतत्। परं त्वं साग्रहं याचितासि। अधुना चिन्तया किम् ? (क्षणं विचिन्त्य) गच्छ, अन्तः प्रविश्य सर्वानभिवाद्य आगच्छ। त्वामानेतुमागतोऽस्मि। अलं विलम्बेन।

(सुमेधा सचकिता पितृश्वसुरौ पश्यति)

रमानाथः– सुमेधे! गृहं गत्वा भोजनव्यवस्थां कुरु। अद्याहं स्वबालमित्रेणैव सह भोक्ष्यामि।

सुमेधा– यदाज्ञापयति भवान् **(प्रतिगच्छति)**।

रमानाथः– **(विनयं प्रति)** प्रतीक्षतां तावत्। सत्वरमेवागच्छामि।

(विनयः चिन्तितः तिष्ठति। एतदनन्तरं दूरभाषस्य घण्टिका श्रूयते। अन्तःप्रकोष्ठात् एकास्थूलकाया स्त्री आगत्य यन्त्रम् उत्थापयति।)

रम्भा – हला! श्रेष्ठिरमानाथस्य भार्या रम्भास्म्यहम्। कः...............हमीद........कथय..........मम पतिः......... क्षतिविक्षतः..........कथं..................दुर्घटनायाम्....................कुतः भणसि............... मिशनचिकित्सालयात् ? **(रोदिति)** अचिरेणागच्छामि।

विनयः–**(स्वगतम्)** कर्मणां फलं भोक्तव्यमेव। **(ततः प्रविशति रमानाथस्य सुसज्जिता पुत्रवधू चपला)**।

चपला–मातः! गन्तुमुद्यतास्मि। मम मातृगृहे उत्सवः.............

रम्भा–चपले! तव श्वसुरः दुर्घटनाग्रस्तः चिकत्सालये वर्तते, आगच्छ मया सह। न जाने कावश्यकता स्यात्।

चपला–अहं तत्र किं करिष्यामि। रुग्णस्य चिकित्सा तु चिकित्सकस्य कार्यम्। उत्सवे मम गमनम् अनिवार्यम्।

रम्भा–क्षतं वृद्धशरीरं चिकित्सयापि अधिकां परिचर्यां सहानुभूतिं चापेक्षते।

चपला–परिचर्यार्थं परिचारिकाणां नाल्पत्वं चिकित्सालये। सुमेधां नय। सेवायां सा दक्षा।

(एवं कथयन्ती चपला बहिर्निर्गच्छति)

(द्वितीयः दृश्यः)

(रमानाथः पत्रं पठति। रम्भासमीपे उपविष्टा दृश्यते।)

रम्भा–कस्य पत्रमिदम् ?

रमानाथः–विनयस्य। अस्माकम् कुशलं पृच्छति सूचयति च यत् सोऽद्य साम्प्रतमेव सुमेधामानेतुमागच्छत्येव।

रम्भा–नैवम्। न गमिष्यति सा। ममैव बुद्धिः भ्रमिता। हितैषिणः आपत्काल एव परीक्ष्यन्ते। दुर्घटनया मम नेत्राभ्यां काञ्चनकान्तिसमुत्पन्नम् अन्धत्वम् अपनीतम्। तस्याः एव रक्तेन मम सौभाग्यलालिमा सुरक्षीकृता।

रमानाथः–सुमेधायाः रक्तम् ?

रम्भा–आम्। रक्तस्रावाधिक्येन रक्तस्य आवश्यकतासीत्। केवलं सुमेधायाः एव रक्तं भवतः रक्तसमूहेन सममासीत्। सा सहर्षं साग्रहं रक्तं दत्तवती।

रमानाथः–सा तु निर्धनस्य दुहिता अतः न सम्माननीया।

रम्भा–अहं लज्जितास्मि। चपलायाः धनाढ्यता मां स्वार्थिनीमकरोत् किन्तु सा क्षुद्रा तु तस्मिन्नवसरेऽपि.....।

रमानाथः–क्षुद्रा! नहि नहि सा तु सुसभ्या, सुशिक्षिता, धनाढ्या।

रम्भा–(सक्रोधम्) शिक्षितापि अशिक्षिता, असंस्कृता, स्वार्थिनी............. (विनयः प्रविशति रमानाथस्य कुशलं पृष्ट्वा च उपविशति)।

विनयः–का आज्ञा वर्तते साम्प्रतं श्रेष्ठिरमानाथ ?

रमानाथः–मिष्टान्नमास्वादय स्वमित्रस्य पुनर्जीवनलाभावसरे।

रम्भा–न तु स्वमित्रस्य कृते अपितु मम विवेकप्राप्त्यवसरे।

विनयः–स्पष्टमभिधीयताम्। अवगन्तुमसमर्थोऽस्मि।

रम्भा–स्पष्टीकरोमि सुमेधां प्राप्य वयं धन्याः। तस्याः त्यागः श्लाघ्यः सुमेधायाः रक्तदानेनैव एष जीवितः।

रमानाथः–आम्। रक्तदानं जीवनं ददाति, रक्तपातम् अपहरत्येव।

विनयः–रमानाथ! कृतज्ञोऽस्मि। त्वया धर्मसङ्कटेन रक्षितः।

रमानाथः–न तु मया अपितु व्रणैः। कदाचित् दुखःमपि सुखवाहकं भवति। अस्माभिः ज्ञातव्यं यद् गुणैः गौरवमायाति न च यौतुकैः। **यौतुकं पापसञ्चयः** इत्यपि अस्माभिः विचारणीयम्।

विनयः–सत्यमेव। न त्यागः निष्फलः कदापि।

रमानाथः–मित्र! त्वमपि माम् अवगन्तुमक्षमः। तस्मिन् काले सुमेधायाः जीवनं दुःखमयमासीत्। तस्याः त्यागशीलता विनम्रता च तस्याः कृते शत्रू अभूताम्। तस्याः दुःखं मत्कृते असहनीयम् अतः पुत्रस्य प्रवासप्रत्यागमनपर्यन्तम् अहं स्वपुत्रवधूं तुभ्यं न्यासरूपेण समर्पयितुं निश्चितवान्।

विनयः–क्षमस्व मित्र! क्रोधानलः यथार्थचिन्तदाहकः परमधुनान्तं सुखदं तु सर्वं सुखदम्।

(पटाक्षेपः)

शब्दार्थः

अद्य = आज। **कथम्** = कैसे। **सोढुम्** = सहन करने में। **तनया** = पुत्री। **भणसि** = बोलती हो। **चतुर्वर्षैः** = चार वर्षों से। **वराकी** = बेचारी। **रता** = लगी हुई। **अधुना** = अब। **वधू** = बहू। **श्रेष्ठी** = सेठ। **विचारार्थम्** = विचार करने के लिए। **सदनम्** = घर। **सम्प्रदत्तायाः** = दी गयी वस्तु का। **आकारितोऽसि** = बुलाये गये हो। **वृता** = वरण की गयी। **प्रवासादुपावृत्तम्** = प्रवास से लौटे हुए। **प्रत्युत्तरिष्यति** = उत्तर दोगे। **अकिञ्चन** = निर्धन। **कुबेर** = धन का देवता (धनी)। **अवगन्तुम्** = समझने का। **प्रयतस्व** = प्रयास करो। **पायितम्** = पिला दिया है। **माधिक्षिपतु** = लाञ्छन मत लगाओ। **प्रदेया** = देनी चाहिए। **अन्तःप्रकोष्ठात्** = अन्दर भवन से। **सत्वरम्** = जल्दी से। **स्वगतम्** = मन ही मन। **सम्माननीया** = सम्मान करने योग्य। **स्थूलकाया** = मोटे शरीर वाली। **भोक्तव्यमेव** = भोगना ही चाहिए। **परिचारिकानाम्** = सेवा करने वाली नारियों की। **नाल्पत्वम्** = कमी नहीं है। **हितैषिणः** = हित चाहने वाले। **अपनीतम्** = दूर कर दिया। **रक्तस्रावाधिक्येन** = अधिक खून बहने के कारण। **श्लाघ्यः**

= प्रशंसनीय। **व्रणैः** = घावों की। **प्रवासप्रत्यागमनपर्यन्तम्** = विदेश से लौट आने तक। **न्यासरूपेण** = धरोहर के रूप में। **पापसञ्चयः** = पाप का सञ्चय है।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) सुमेधा कस्य तनया आसीत् ?

(ख) सुमेधा कति वर्षैः परिवारस्य सेवायां रता आसीत् ?

(ग) रम्भा कस्य भार्या आसीत् ?

(घ) केषां फलं भोक्तव्यम्?

(ङ) चपलायाः धनाढ्यता कां स्वार्थिनीम् अकरोत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) रमानाथस्य गृहे कलहमूलं किम् ?

(ख) रमानाथस्य गृहे सर्वाणि गृहकार्याणि का अकरोत् ?

(ग) रमानाथाय रक्तं का दत्तवती ?

(घ) चपला कस्य पुत्री आसीत् ?

(ङ) हितैषिणः कदा परीक्ष्यन्ते ?

3. प्रकृति–प्रत्ययं पृथक् कुरुत–

(क) कृत्वा (ख) भोक्तुम् (ग) गन्तुम् (घ) रक्षितः (ङ) आनेतुम्

4. अधोलिखितपात्राणां चरित्र-चित्रणं लिखत–

(क) सुमेधा (ख) चपला (ग) रम्भा (घ) विनयः (ङ) रमानाथः

5. समुचितमुत्तरं चित्वा लिखत–

(i) यौतुकं पापसञ्चयः इति नाटकस्य नायिका अस्ति –

(क) चपला (ख) रम्भा (ग) सुमेधा (घ) विमला

(ii) रमानाथस्य पुत्रवधू आसीत्?

(क) चपला (ख) रम्भा (ग) कमला (घ) विमला

(iii) रमानाथाय रक्तम् अददात्?

(क) रम्भा (ख) चपला (ग) विमला (घ) सुमेधा

(iv) यौतुकं भवति?

(क) शब्दसञ्चयः (ख) अर्थसञ्चयः (ग) पापसञ्चयः (घ) पुण्यसञ्चयः

(v) कस्य दानं जीवनं ददाति?

(क) रक्तस्य (ख) जलस्य (ग) पुस्तकस्य (घ) मधुरस्य

■

पञ्चमः पाठः

भोजस्य शल्यचिकित्सा

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत पाठ बल्लाल सेन द्वारा रचित **'भोजप्रबन्ध'** नामक पुस्तक से संकलित है जिसकी रचना 16वीं शती में मानी जाती है। इस ग्रन्थ में संस्कृत के कवियों को राजा भोज की सभा में एकत्र कर दिया गया है। प्रस्तुत कथा में राजा भोज के मस्तिष्क की शल्यचिकित्सा का परिचय दिया गया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि मस्तिष्क जैसे अंग की शल्यचिकित्सा भारतवर्ष में प्राचीन काल से होती थी।*

अथ कदाचिद् भोजो नगराद् बहिः निर्गतः। नूतनेन तटाकाम्भसा बाल्यसाधितकपाल–शोधनादिं चकार। तन्मूलेन कश्चन शफरशावः कपालं प्रविष्टः ततो राजा स्वपुरीमवाप। तदारभ्य राज्ञः कपाले वेदना जाता। ततस्तत्रत्यैर्भिषग्वरैः सम्यक् चिकित्सितापि न शान्ता।

एवमतीते संवत्सरेऽपि काले न केनापि निवारितः तद्गदः। ततः श्रीभोजो नानाविध–शमनौषधग्रसनरोगदुःखितमनास्समीपस्थं शोकसागरनिमग्नं बुद्धिसागरं कथमपि सम्मताक्षरामुवाच वाचम्। बुद्धिसागरः इतः परमस्मद् विषये न कोऽपि भिषग्वरो वसतिमातनोतु। मम देवसमागमसमयः समागतः इति। तच्छ्रुत्वा सर्वेऽपि पौरजनाः कवयश्चावरोधसमाजाश्च विगलदस्रासारनयना बभूवुः। ततः कदाचिद्देवसभायां पुरन्दरः सकलमुनिवृन्दमध्यस्थं वीणामुनिमाह। मुने! इदानीं भूलोके का नाम वार्तेति। ततो नारदः प्राह – सुरनाथ! किमप्याश्चर्यं किन्तु धारानगरवासी श्री भोजभूपालः रोगपीडितो नितरामस्वस्थो वर्तते। तस्य रोगः केनापि न निवारितः। तदनेन भोजनृपालेन भिषग्वरः अपि स्वदेशान्निष्कासिताः। वैद्यशास्त्रमप्यनृतं इति निरस्तमिति एतदाकर्ण्य पुरुहूतः समीपस्थौ नासत्याविदमाह। भोः स्ववैद्यौ! कथमनृतं धन्वतरीयं शास्त्रम् ?

तदा तावाहतुः – अमरेश! देव न व्यलीकमिदं शास्त्रं किन्त्वमरविदितेन रोगेण बाध्यतेऽसौ भोजः इति। इन्द्रः – कोऽसौ अवार्यरोगः ? किं भवतोर्विदितः ? ततस्तावूचतुः – देव! कपालशोधने कृते भोजेन तदा प्रविष्टः पाठीनः तन्मूलोऽयं रोग इति। तदा इन्द्रः स्मयमानमुखः प्राह – तदिदानीमेव युवाभ्यां गन्तव्यम्। न चेदितः परं भूलोके भिषक्शास्त्रस्यासिद्धिः भवेत्। न खलु सरस्वतीविलासस्य निकेतनं शास्त्राणामुद्धर्ता चेति। ततः सुरेन्द्रादेशेन तौ उभावपि

धृतद्विजन्मवेषौ धारानगरं प्राप्य द्वारस्थं प्राहतुः। द्वारस्थ! आवां भिषजौ काशीदेशादागतौ श्रीभोजाय विज्ञापय तेनानृतमित्यङ्गीकृतं वैद्यशास्त्रमिति श्रुत्वा तत्प्रतिष्ठापनाय तद्रोगनिवारणाय चेति। ततो द्वारस्थः प्राह – भो विप्रौ ! न कोऽपि भिषक्प्रवरः प्रवेष्टव्यः इति राज्ञोक्तम्। राजा तु केवलमस्वस्थो नायमवसरो विज्ञापनस्येति। तस्मिन्क्षणे कार्यवशाद् बहिर्निर्गतः बुद्धिसागरस्तौ दृष्ट्वा कौ भवन्तौ ? इति अपृच्छत्। ततस्तौ यथागतमूचतुः। ततो बुद्धिसागरेण तौ राज्ञः समीपं नीतौ। ततो राजा तौ अवलोक्य मुखश्रिया अमानुषाविति बुद्ध्वा आभ्यां शक्यतायं रोगो निवारितुमिति निश्चित्य तौ बहु मानितवान् ततस्तावूचतुः। राजन्न भेतव्यं रोगो निर्गतः। किन्तु कुत्रचिदेकान्ते त्वया भवितव्यमिति। ततो राज्ञापि तथा कृतम्। ततस्तावपि राजानं मोहचूर्णेन मोहयित्वा शिरः कपालमादाय तत्करोटिकापुटे स्थितं शफरकुलं गृहीत्वा कस्मिंश्चिद्भाजने निक्षिप्य सन्धानकरण्या कपालं यथावदारचय्य संजीविन्या च तं जीवयित्वा तस्मै तददर्शयताम्। तदा तद्दृष्ट्वा राजा विस्मितः किमेतदिति तौ पृष्टवान्। तदा तावूचतुः– राजन्! त्वया बाल्यादारभ्य परिचितकपाल– शोधनतः सम्प्राप्तमिति। ततो राजा तावश्विनौ मत्वा तच्छोधनार्थमपृच्छत्। किमस्माकं पथ्यमिति? ततस्तावूचतुः – अशीतेनाम्भसा स्नानं पयःपानं वरास्त्रियः एतद् वो मानुषां पथ्यं स्निग्धमुष्णञ्च भोजनम् इति।

शब्दार्थः

कदाचित् = कभी। **बहिः** = बाहर। **तटाकाम्भसा** = तालाब के जल से। **बाल्यसाधितकपाल–शोधनादिम्** = बचपन से सिद्ध कपालशोधन आदि क्रियाओं को। **चकार** = किया। **तन्मूलेन** = उस योग–क्रिया के मूल (सरोवर के) जल से। **कश्चन** = कोई। **शफरशावः** = मछली का बच्चा। **अवाप** = प्राप्त किया। **तत्रत्यैः** = वहाँ के। **भिषग्वरैः** = श्रेष्ठ चिकित्सकों द्वारा। **सम्यक्** = ठीक प्रकार से। **पौरजनाः** = पुरवासी। **पुरन्दरः** = इन्द्र। **भिषग्वर्यः** = श्रेष्ठ। **अनृतम्** = असत्य। **नासत्यौ** = अश्विनी कुमारों को। **तावाहतुः** = उन दोनों ने कहा। **अमरेश** = इन्द्रदेव। **व्यलीकम्** = असत्य। **अवार्यरोगः** = असाध्य रोग। **पाठीनः** = छोटी मछली। **स्मयमानमुखः** = मुस्कुराते हुए मुखवाले। **तत्प्रतिष्ठापनाय** = उसकी पुनः स्थापना के लिए। **मोहचूर्णेन** = बेहोश करने की दवा से। **मोहयित्वा** = बेहोश करके। **तत्करोटिकापुटे** = कपाल के भीतर। **सन्धानकरण्या** = सिलाई करने की सुई से। **पथ्यम्** = हितकारी। **अशीतेनाम्भसा** = गरम पानी से।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) भोजस्य कपाले कः प्रविष्टः?

(ख) कस्य कपाले वेदना जाता?

(ग) केन भिषग्वराः स्वदेशान्निष्कासिताः?

(घ) इदानीमेव युवाभ्यां गन्तव्यम् इति केन उक्तम्?

(ङ) बुद्धिसागरेण कौ राज्ञः समीपं नीतौ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) भोजः कुत्र निर्गतः?

(ख) पुरन्दरः नारदमुनिं किम् अपृच्छत्?

(ग) नृपालेन भोजेन भिषग्वराः किमर्थं निष्कासिताः?

(घ) काशीदेशात् कौ समागतौ?

(ङ) पथ्यं किम्?

3. अधोलिखितपदानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धिनाम लिखत–

(क) केनापि (ख) तच्छ्रुत्वा (ग) सर्वेऽपि (घ) तावूचतुः

4. भोजस्य शल्यचिकित्सेति पाठमधिकृत्य भोजस्य चरित्रचित्रणं हिन्दीभाषया लिखत।

5. भोजस्य शल्यचिकित्सा इति पाठस्य सारांशं लिखत।

6. **समुचितमुत्तरं चित्वा लिखत** ?

(i) अथ कदाचित् नगरात् बहिः निर्गतः?

(क) भोजः (ख) शिववीरः (ग) जनकः (घ) भक्तः

(ii) भोजप्रबन्धस्य लेखकः कः?

(क) भोजः (ख) कालिदासः (ग) भवभूति (घ) बल्लालसेनः

(iii) न कोऽपि भिषक्वरः प्रवेष्टव्यः इति केन उक्तम्?

(क) राज्ञा (ख) भिषग्वरेण (ग) वैद्येन (घ) न केनापि

(iv) राजा भोजः कस्य नगरस्य आसीत्?

(क) मथुरानगरस्य (ख) प्रयागराजनगरस्य (ग) धारानगरस्य (घ) इन्दौरनगरस्य

(v) भोजस्य .... वेदना जाता।

(क) कण्ठे (ख) कपाले (ग) हस्ते (घ) उरसि

(vi) भोजनृपालेन के निष्कासिताः?

(क) पण्डिताः (ख) राजानः (ग) भिषग्वराः (घ) आरक्षकाः

■

षष्ठः पाठः

ज्ञानं पूततरं सदा

पाठपरिचयः

*प्रस्तुत गद्य पाठ कश्मीरी पं0 सोमदेव कृत **'कथासरित्सागर'** नामक ग्रन्थ से उद्धृत किया गया है जो कि गुणाढ्य कृत बृहत्कथा पर आधारित है। कथासरित्सागर, बृहत्कथा में उल्लिखित कई कथाओं का संग्रह है, जिसमें पशु-पक्षियों, राजाओं, भूत-पिशाचों जादू-टोने इत्यादि विषयों पर अनेक कथाएँ लिखी गयी हैं। उनमें से कुछ सत्याधारित हैं तथा कुछ कविकल्पित। कथासरित्सागर 18 लम्बकों में विभक्त है। इसकी भाषा–शैली रोचक, सरल व प्रवाहपूर्ण है।*

पुरा दीपकर्णिरिति ख्यातः प्राज्यविक्रमः राजाऽभूत्। तस्य शक्तिमती नाम भार्या प्राणप्रियाऽभवत्। उद्याने सुप्तां तां भार्यां सर्पः दष्टवान्। अथ तस्यां पञ्चत्वं गतायां तद्गतमानसः अपुत्रोऽपि स नृपः ब्रह्मचर्यव्रतं जग्राह। कदाचिद् राज्यार्हपुत्रासद्भावदुःखितं तं स्वप्ने भगवानिन्दुशेखरः इत्यादिदेश– "अटव्यां भ्राम्यन् सिंहारूढं कुमारकं द्रक्ष्यसि तं गृहीत्वा गृहं गच्छेः स ते पुत्रो भविष्यति।" अथ प्रबुद्धः सः राजा तं स्वप्नं स्मरन् जहर्ष। कदाचिद् मृगयारसात् दूरामटवीं ययौ। तत्र मध्याह्ने सः भूपतिः पद्मसरस्तीरे तपनतेजसं सिंहारूढं बालकं ददर्श। अथ राजा स्वप्नं स्मरन् अवतारितबालकं जलाभिलाषिणं तं सिंहमेकशरेण जघान। स सिंहः तद्वपुस्त्यक्त्वा सद्यः पुरुषाकृतिः अभूत्। कष्टं किमेतद् ब्रूहीति राज्ञा पृष्टः जगाद– "भूपते! अहं धनदस्य सखा सातीनामा यक्षोऽस्मि। सोऽहं प्राग्गङ्गायां ऋषिकन्यकाम् अपश्यम्। ततो विवाहेन मया भार्या कृता तद्बान्धवा तद् बुद्ध्वा तां च मां च क्रुधा पश्यन् युवां सिंहौ भविष्यथः, मुनयः पुत्रजन्मावधिं तस्याः शापान्तं व्यदधुः, मम तु त्वच्छराघातपर्यन्तम्। तदनन्तरम् आवां सिंहमिथुनं सञ्जातौ। सा पुत्रजन्मसमये दारके जाते एव व्यपद्यत। अयं मया अन्यासां सिंहीनां पयसा वर्धितो। अद्य त्वया बाणाहतोऽहं शापाद् विमुक्तोऽस्मि। तव मया दत्तममुं महासत्त्वं सुतं गृहाण। अयं ह्यर्थः पुरा तैः मुनिभिः समादिष्टः।" इत्युक्त्वा तस्मिन् सातनाम्नि गुह्यके अन्तर्हिते स राजा तं बालं समादाय गृहं प्रत्याययौ। यस्माद् सातेन ऊढोऽभूत्तस्मात्तं सातवाहन् नाम्ना चकार कालेन चैनं राज्ये न्यवेशयत्। ततस्तस्मिन् क्षितीश्वरे दीपकर्णे अरण्यं गतेऽसौ भूपतिः सातवाहनः सार्वभौमो संवृतः। ततः कदाचिद् स राजा सातवाहनः वसन्तसमयोत्सवे देवीकृतं तदुद्यानं अध्यास्त। तत्र नन्दने महेन्द्र इव सुचिरं विहरन् वापीजले क्रीडितुमवतीर्णोऽभूत्। तत्र सहेलं दयिता करवारिभिः असिञ्चत्। ताभिः सोऽपि असिच्यत् अथैका तस्य राज्ञः महिषी सुकुमारङ्गी क्रीडन्ती क्लममभ्यगात्। सा राजानमब्रवीत् –

''मोदकैर्देव मां परिताडय।'' तच्छ्रुत्वा राजा द्रुतं बहून् मोदकान् आनयनादिदेश। ततो विहस्य सा राज्ञी पुनरेवमभाषत – ''राजन्! अत्र जलान्तरे मोदकानां कोऽवसरः 'त्वमुदकैः मा सिञ्च' इति मया त्वमुक्तः। त्वं कथमीदृशः मूर्खः यः माशब्दोदकशब्दयोः सन्धिमात्रं न जानासि न च प्रकरणं वेत्सि।'' शब्दशास्त्रविदा तया इत्युक्तः सः परिवारे अन्तर्हसन् लज्जाक्रान्तोऽभूत्। तत्क्षणं परित्यक्तजलक्रीडो वीतदर्पश्च जातावमानो निर्लक्षः निजमन्दिरं प्राविशत्।

धीमान् शर्ववर्मेदमब्रवीत् अहं जानाम्यस्य राज्ञः मौर्ख्यानुतापतः मन्युः। मूर्खोऽहमिति सदैवायं पाण्डित्यं वाञ्छति, मया पूर्वमेव चैष तदाशयः उपलब्धः तन्निमित्तं राज्ञया अवमानितश्चाद्य। एवमन्योन्यमालोच्य तं रात्रिमतिवाह्य शर्ववर्मगुणाढ्यौ प्रातःकाले महीपतेः वासवेश्म अगच्छताम्। अथ निकटे उपविश्य सः नृपः विज्ञप्तः अकारणं कथं देव विमना वर्तसे इति। तच्छ्रुत्वापि सः सातवाहनः तुष्णीमासीत्।

ततो गुणाढ्येन सः विज्ञप्तः—राजन् द्वादशभिः वर्षैः ज्ञायते सर्वविद्यानां मुखं व्याकरणं नरैः सदा। अहं तु त्वां वर्षषट्केन तद् शिक्षयामि। एतच्छ्रुत्वा सहसा शर्ववर्मा सेर्ष्यं किलावदत्-सुखोचितो जनः कथं चिरमियत् क्लेशं कुर्यादहं त्वां तद् मासषट्केन शिक्षयामि। एतदसम्भाव्यं श्रुत्वाहं रुषा तमवोचम् षड्भिमासैस्त्वया देवः शिक्षितश्चेत्ततो मया संस्कृतं प्रोक्तं शतद्वद्देशभाषा च भाषात्रयमिदं सर्वदा त्यक्तम्। शर्ववर्मा ततोऽवादीच्चेदेवं न करोम्यहं तव पादुके द्वादशाब्दान् वहामीत्युक्त्वा तस्मिन् निगर्तेऽहमपि गृहमगमम्। स राजाप्युभयतः सिद्धिं मत्वाश्वस्तो बभूव। शर्ववर्मा तां सुदुस्तरां प्रतिज्ञां पश्यन् सानुशयः स्वभार्यायै तत्सर्वं शशंस।

दुःखिता सापि तमवोचत् – "प्रभो ! संकटेऽस्मिन् स्वामिकुमारेण विना तव गतिरन्या न दृश्यते।" तथेति निश्चयं कृत्वा निशि पश्चिमे प्रहरे शर्ववर्मा निराहारस्तत्रैव प्रस्थितोऽभवत्। ततः सिंहगुप्ताख्यो राजपुत्रो राजानमब्रवीत् – "देव! त्वयि खिन्ने तदा मे महान् निर्वेदोऽभूत्। ततः ते श्रेयोनिमित्तं चण्डिकाग्रे निजं शिरः छेत्तुं प्रारब्धवानस्मि। मैवं कृथा नृपस्येच्छा सेत्स्यति सेत्स्यत्येव इत्यवारयत् वागन्तरिक्षात् ते सिद्धिरस्ति।" इत्युक्त्वा नृपमामन्त्र्य सत्वरं सः सिंहगुप्तः शर्ववर्मणः पश्चाच्चारद्वयं व्यसर्जयत्। सोऽपि शर्ववर्मा वातैकभक्षः सन्कृतमौनः सुनिश्चयः क्रमात् स्वामिकुमारस्यान्तिकं प्राप। शरीरनिक्षेपेण तपसा तोषितः कार्तिकेयो यथेप्सितं प्रसादमकरोत्। ततो सिंहगुप्तविशिष्टाभ्यां चाराभ्यां आगति शर्ववर्मणः उदयः राज्ञे निवेदितः।

अथ कुमारवरसिद्धिमान् शर्ववर्मा आगत्य चिन्तितोपस्थिताः सर्वा विद्याः राज्ञे प्रदत्तवान्। तत्क्षणं तास्तस्य सातवाहनभूपतेः प्रादुरासंश्च पारमेश्वरः प्रसादः किं न कुर्याद्धि। अथ राज्ञः तमखिलं विद्यालाभमाकर्ण्य प्रमुदितवति राष्ट्रे कोऽप्युत्सवोऽभूत्। तेन प्रणतेन राज्ञा राजार्हरत्ननिचयैः शर्ववर्मा गुरुरित्यर्चितः नर्मदायाः कूलोपकण्ठविनिवेशिनि भरुकच्छनाम्नि विषये स्वामीकृतश्च। विद्यागमे कारणं विष्णुशक्तितनयां तां राज्ञीमपि प्रीत्या देवीनामुपरि कृतवान्।

शब्दार्थः

पुरा = प्राचीन काल में। **ख्यातः** = प्रसिद्ध। **प्राज्यविक्रमः** = बहुत ही पराक्रमी। **भार्या** = पत्नी। **उद्याने** = बाग में। **सर्पः** = साँप। **दृष्टवान्** = देखा। **जग्राह** = ग्रहण कर लिया (धारण कर लिया)। **पञ्चत्वं गतायाम्** = मर जाने पर। **राज्यार्ह** = राज्य के योग्य। **असद्भाव** = न होने से। **इन्दुशेखरः** = शिव। **आदिदेश** = आदेश दिया। **अटव्याम्** = जंगल में। **भ्राम्यन्** = घूमते हए। **सिंहारुढम्** = सिहं पर आरुढ़ (बैठे हुए)। **द्रक्ष्यसि** = देखोगे। **गृहीत्वा** = लेकर। **जहर्ष** = प्रसन्न होना। **मृगयारसात्** = शिकार खेलने के समय। **ययौ** = चले गये। **तपनतेजसम्** = सूर्यदेव की भाँति तेजस्वी। **ददर्श** = देखा। **अवतारितबालकम्** = बालक को उतारे हुए। **जगाद** = बोला। **सद्यः** = तुरन्त (शीघ्र)। **व्यदधुः** = दी। **व्यपद्यत** = मर गयीं। **वर्धितः** = पाला–पोसा है (बढ़ाया है)। **महासत्त्वम्** = महापराक्रमी। **गुह्यके** = यक्ष के। **प्रत्याययौ** = लौट आया। **न्यवेशयत्** = बैठाया। **अरण्यम्** = जंगल। **भूपतिः** = राजा। **सार्वभौमः** = सारी पृथ्वी का। **अध्यास्त** = रहा। **सहेलम्** = लीला पूर्वक। **क्लममभ्यगात्** = थक गयीं। **मोदकैः** = जल से मत। **वेत्सि** = जानते हो। **शब्दशास्त्रविदा** = शब्दशास्त्र की ज्ञाता। **जातावमानः** = अपमानित होकर। **निजमन्दिरम्** = अपने महल में। **प्राविशत्** = प्रवेश किया। **मौर्ख्यानुतापतः** = मूर्खता के कारण पश्चात्ताप। **मन्युः** = क्रोधित। **महीपतेः** = राजा के। **वर्षषट्केन** = छः वर्ष में। **मासषट्केन** = छः महीने में। **विमनाः** = अस्वस्थ (चिन्तित)। **द्वादशाब्दान्** = 12 वर्षों तक। **सुदुस्तराम्** = अति कठिन। **सेत्स्यति** = अवश्य पूरी होगी। **अवारयत्** = रोका। **आमन्त्र्य** = विचार कर। **व्यसर्जयत्** = भेजा। **शरीरनिक्षेपेण** = शरीर की चिन्ता न करते हुए। **पारमेश्वरः** = परमेश्वर का। **प्रादुरासन्** = उपस्थित हो गयी।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) 'ज्ञानं पूततरं सदा' इति पाठः कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतः ?

(ख) दीपकर्णेः भार्यायाः नाम किम् ?

(ग) कथासरित्सागरस्य रचयिता कः ?

(घ) शर्ववर्मा सातवाहनस्य कः आसीत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) सिंहः कः आसीत् ?

(ख) कः राजानं सातवाहनं विद्यायुक्तं चकार ?

(ग) स्वप्ने भगवानिन्दुशेखरः राजानं किमादिदेश ?

(घ) सिहारुढं बालकं दृष्ट्वा राजा किमकरोत् ?

3. शुद्धकथनानां समक्षम् 'आम्', अशुद्धकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत–

(क) दीपकर्णिः भार्यायाः नाम शक्तिमती आसीत्। (आम्/न)

(ख) शर्ववर्मा सातवाहनस्य मित्रम् आसीत्। (आम्/न)

(ग) राजा निजमन्दिरं प्राविशत्। (आम्/न)

(घ) धनदस्य सखा सातीनामा यज्ञः अस्ति। (आम्/न)

(ङ) कथासरित्सागरस्य रचयिता शर्ववर्मा अस्ति। (आम्/न)

4. 'ज्ञानं पूततरं सदा' इति पाठम् आधृत्य चरित्रचित्रणं लिखत–

(i) सातवाहनस्य (ii) शर्ववर्मण

5. उचितं विकल्पं चिनुत–

(i) सातवाहनः कः आसीत् ?

(क) मन्त्री (ख) नृपः (ग) सेनापतिः (घ) राजनीतिज्ञः

(ii) सातवाहनस्य प्रमुखविशेषता–

(क) विद्वत्ता (ख) उदारता (ग) शौर्यम् (घ) निष्ठुरता

(iii) तं .... भवानिन्दुशेखरः इत्यादिदेश।

(क) उद्याने (ख) अटव्याम् (ग) स्वप्ने (घ) प्रासादे

(iv) पुरा .... इति ख्यातो प्राज्यविक्रमः राजाभूत।

(क) गुणाढ्यः (ख) शर्ववर्मा (ग) दीपकर्णिः (घ) सातवाहनः

(v) 'बृहत्कथा' इति ग्रन्थस्य रचयिता कः ?

(क) सातवाहनः (ख) इन्दुशेखरः (ग) गुणाढ्यः (घ) शर्ववर्मा

(vi) 'उद्याने' इति पदे विभक्तिः अस्ति ?

(क) द्वितीया (ख) चतुर्थी (ग) सप्तमी (घ) पञ्चमी

■

सप्तमः पाठः

वयं भारतीयाः

पाठपरिचयः

'वयं भारतीयाः' पाठ राष्ट्रीय एकता एवं सर्वधर्मसमभाव विषय पर आधारित है। भारत का संविधान सभी धर्मों की उपासना की स्वतन्त्रता प्रदान करता है तथा प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा और बन्धुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प है। सदाचार एवं नैतिकता का सभी धर्मों में महत्त्व वर्णित है। परोपकार, त्याग, दया, करुणा एवं सहिष्णुता जैसे नैतिक मानवीय मूल्य व्यक्ति को महान् बनाते हैं। 'हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख-ईसाई आपस में सब भाई-भाई' की भावना से हम सभी को परस्पर सद्भाव रखना चाहिए।

(ततः प्रविशति अध्यापकः कक्षायां, सर्वे छात्राः आदरार्थम् उत्तिष्ठन्ति)

अध्यापकः– भोः छात्रा। अद्याहं सामान्यज्ञानविषयकं प्रश्नं पृच्छामि। आफताब! कथय महात्मनो बुद्धस्य चरितविषये त्वं किं जानासि ?

आफताबः – महात्मा बुद्धः बाल्यादेव अतिचिन्तनशीलः, परमकारुणिकश्चासीद्। संसारगतदुःखस्य परिहारः कथं स्यादिति सदैव चिन्तयति स्म। सः धार्मिकपाखण्डस्य खण्डनं चकार। महात्मनो बुद्धस्योपदेशाः सर्वसाधारणस्य कृतेऽपि उपादेयाः सिध्यन्ति। अहिंसा-सत्यास्तेय-ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः इति पञ्चधर्माः तेन मनुष्याणां कृते निर्धारिताः।

अध्यापकः – जसविन्दर! ईसामसीहः मानवान् किमुपादिशत्।

जसविन्दरः – खीष्टधर्मप्रवर्तकः ईसामसीहः आर्त्तजनानां आर्तिहरणाय निर्धनानां कल्याणाय, रोगपीडितानाञ्च परित्राणाय लोकमुपदिशति स्म। यथा विद्वेषो विद्वेषं, विरोधो विरोधं जनयति तथैव स्नेहः स्नेहं वर्धयति। यदि कश्चिद् जनोऽस्माकं हानिं जनयति तदा तस्य प्रतीकारो वैरबुद्धया न कर्त्तव्यः। मानवतायाः सेवैव भगवतः सेवेति तस्योपदेशवचनानि सन्ति। सः दीनदुःखितानां सेवायामेव ईश्वरस्य साक्षात्कारं करोति स्म।

अध्यापकः – दीपक! गुरुगोविन्दसिंहः किमर्थं पूज्यः ?

दीपकः – सिखधर्मस्य दशमो गुरुः गुरुगोविन्दसिंहः जन्मभूमेः रक्षार्थं देशभक्तिभावनया आत्मोत्सर्गमकरोत्। तेन वीरतायाः, त्यागस्य, आत्मोत्सर्गस्य चाप्रतिमं निदर्शनमपि कृतम्।

(कक्षा विसर्जिता। मध्याह्नसमयः सञ्जातः। छात्राः स्वल्पाहारार्थं इतस्ततः तिष्ठन्ति।)

आफताबः – दीपकजसविन्दरौ! आगच्छतम्। वयं भोजनं करिष्यामः।

(दीपकः तस्मै प्रत्युत्तरं न ददाति अपित्वपसर्पति।)

जसविन्दरः– (सर्वेषां बालकानां मुख्यान्यवलोकयति, अश्रूणि प्रवाहयति) अद्य मम पार्श्वे भोजनाय किञ्चिदपि नास्ति। निर्धनोऽहं क्षुत्प्रपीडितोऽस्मि। **(इति रोदिति।)**

(आफताबः तं समाश्वासयति। पीटरः स्वभोजनं जसविन्दराय ददाति च। क्षुत्प्रपीडितो जसविन्दरः भोजनं करोति। कतिपयदिवसानन्तरं परीक्षासारिणीं दृष्ट्वा ते परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति।)

जसविन्दरः– अर्द्धवार्षिकी परीक्षा अतिनिकटास्ति किन्तु मम पार्श्वे परीक्षाशुल्कप्रदानाय धनं नास्ति। मम पिता अकस्माद् अतिरुग्णः जातः। यत्किञ्चिदपि द्रव्यं मम पार्श्वे आसीत् तदपि तस्य चिकित्सायां व्ययितम्।

पीटरः– अहं तव परीक्षाशुल्कं दास्यामि। भगवतः प्रसादेन मम पितुः पार्श्वे प्रभूतं धनं वर्तते।

जसविन्दरः– अद्य दीपको न लक्ष्यते। कदाचित् सः विद्यालयं नागतः। मन्ये, सः चलचित्रावलोकनाय गतः स्यात्।

पीटरः– मैवं भण। अद्य केनापि दुष्टबालकेन तस्योपरि बम्बप्रक्षेपः कृतः, तीव्रया रुधिरधारया तस्य मुखं रञ्जितमासीत्। तस्य शल्यचिकित्सायाः कृते रक्तमपेक्षते; किन्तु तद्वर्गस्य रक्तं नोपलभ्यते। हन्त! तस्य बान्धवजनानामपि रक्तं दीपकस्य रक्तेन सह साम्यं न भजते। अपरः कोऽपि जनः स्वकीयं रुधिरं दातुं न तत्परः। येन केनापि व्याजेन जनाः विरमन्ति।

आफताबः– किमिदम्। हन्त! दीपकोपरि बम्बप्रक्षेपः। महत् कष्टम्। तर्हि अहं शीघ्रमेव तं द्रष्टुमिच्छामि।

जसविन्दरः– सन्तोषस्य विषयः यत् परमेश्वरस्य प्रसादेन सः जीवति।

पीटरः– तस्य शल्यचिकित्सायै रक्तमपेक्षते। रक्तं कुतः लब्धं स्यात् साम्प्रतमिदं चिन्तनीयम्; किन्तु दुष्करमिदं प्रतिभाति।

आफताबः– अहं स्वप्राणान् पणीकृत्यापि तस्य जीवनं रक्षिष्यामि। किन्तु झटिति करणीयमिदं कार्यम्। अयमहं रक्तदानाय प्रस्तुतः। पीटर! दीपकः इदानीं कुत्रास्ति ? किमिदं जानासि ?

पीटरः– चिरञ्जीवचिकित्सालये।

(आफताबः जसविन्दरेण सह चिरञ्जीवचिकित्सालयं गच्छति। दीपकः तत्र पर्यङ्कोपरि अर्धचेतन इव दृश्यते। चिन्तानिमग्नौ तस्य पितरौ तमुभयतः तिष्ठतः।)

आफताबः– प्रविष्य, समीपमुपसृत्य अभिवादयति।

जसविन्दरः– नमस्करोम्यहम्।

(दीपकस्य पिता आशीर्वचनं ददाति, तस्य माता अश्रूणि मुञ्चति।)

आफताबः – तात! समाश्वसिहि। समाश्वसित्वम्बा।

जसविन्दरः– धैर्यं न त्याज्यं विधुरेऽपि काले। भगवतः प्रसादेन सर्वं कुशलं भविष्यति।

दीपकस्य पिता– (समीपमुपसृत्य) वत्स दीपक! इमौ तव सुहृदवरौ समायातौ।

दीपकः– (पार्श्वान्तरं विधाय, अवलोक्य च) स्वागतम् **(इत्यर्धोक्ते इव मूर्छति)**

आफताबः– अहं रक्तदानाय आगतोऽस्मि।

दीपकस्य माता– किं तस्मै स्वकीयान् प्राणान् दातुं समुद्यतः ?

दीपकस्य पिता– इयं भवतः महती अनुकम्पा किन्तु......।

आफताबः–(वचनमाक्षिप्य) इदानीं प्राणानां मोहः नैव कर्तव्यः। मित्रमेव जनस्य सर्वदा साहाय्यं विदधाति, सर्वं मनस्तापम् आधिं व्याधिं वा हरति।

(ततः चिकित्सकः आगच्छति, आफताबस्य रक्तनिरीक्षणं करोति च। तस्य रक्तं दीपकस्य रक्तवर्गस्यैव निर्गच्छति। आफताबः सहर्षं स्वरक्तं दीपकाय ददाति, तस्य जीवनमेव रक्षति। सर्वे आनन्दमनुभवन्ति)

जसविन्दरः – मित्र दीपक! त्वं येन सह कदापि भोजनं नाकरोत्, तस्यैव आफताबस्य रक्तदानेनैव त्वं जीवनमलभः।

दीपकः–मित्र अफताब! साधु, श्लाघनीयम् तवाचरणम्। त्वं वस्तुतः मम सन्मित्रमसि।

जसविन्दरः– **''आपद्गतं च न जहाति ददाति काले**
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।''

(कतिपयदिवसानन्तरं आफताबः दीपकस्य गृहं गच्छति)

आफताबः – मित्र दीपक! श्वः मम ईदमहोत्सवो भविष्यति। किं त्वं मम गृहम् आगमिष्यसि ?

दीपकः – अवश्यमेव आगमिष्याम्यहम्। मित्र! अहं तु पूर्वमेव लज्जितोऽस्मि। मया त्वया सह समुचितं नाचरितम्। **(सुन्दराणि वस्त्राणि धारयित्वा तस्य मित्राणि आफताबस्य गृहं गच्छन्ति। तत्र ते परस्परमालिङ्गन्ति। आफताबः तान् दीर्घसूत्रिकामिष्टान्नानि भोजयति।)**

दीपकः – ईदमहोत्सवः जनेषु भ्रातृभावं वर्धयति, वर्गविभेदं, जातिभेदं, धनिकनिर्धनभेदं च दूरीकरोति। दिवसेऽस्मिन् जनाः परस्परद्वेषभावं विहाय ''सर्वे वयं भ्रातरः'' इति शोभनभावनया परस्परमालिङ्गन्ति।

(ते सर्वे स्वगृहं गच्छन्ति)

(कतिपयमासानन्तरं होलिकोत्सवः आयाति। आफताबः होलिकायाः साधुवादं दातुं दीपकस्य गृहं गच्छति।)

दीपकः – मित्र आफताब! माम् गाढं परिष्वजस्व। **(तौ प्रीत्या परस्परामालिङ्गतः। दीपकः तं विविधानि व्यञ्जनानि भोजयति)**

आफताबः – होलिकोत्सवस्य उल्लासमयः कालः कस्य मनो नावर्जयति। सकला गृहवीथिकामार्गाः मनोहरगुलालादिरञ्जनरागरञ्जिताः भवन्ति।

दीपकः – सत्यमेव। गगने पटवासः प्रसरति, मनसि प्रीतिः जायते। जनाः 'पिचकारीयन्त्रेण' जनेषु न केवलं अबीरगुलालकुङ्कुमादीनां रागाणां जलं प्रक्षिपन्ति, अपितु स्नेहस्य वृष्टिं कुर्वन्ति।

आफताबः – यथा ईदमहोत्सवे तथैव होलिकोत्सवेऽपि जनाः परस्पररागद्वेषादीन् परित्यज्य महता सौहार्देन परस्परमालिङ्गन्ति। महोत्सवोऽयं जनेषु प्रेमभावं च जनयति।

दीपकस्य पिता – भो बालकाः! विविधानां धर्माणां मार्गाः विविधाः; किन्तु तेषां गन्तव्यमेकमेव। सर्वेषां जनानां शिरासु समानमेव रक्तं प्रवहति। संसारस्य सर्वेऽपि मानवाः समानाः। सर्वेषां धर्माणां सारभूततत्त्वानां एकत्रसञ्चयेनैव विश्वधर्मत्वं सम्भवति।

''ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति'' इति गीतायामप्युक्तम्।

शब्दार्थः

परिहारः = निवारण (दूर करना)। **उपादेयाः** = उपयोगी। **सत्यास्तेय** = सत्य बोलना और चोरी न करना। **ख्रीष्टधर्मप्रवर्तक** = ईसाई-धर्म को आगे बढ़ानेवाले। **आर्तजनानाम्** – दुःखी लोगों के। **आर्तिहरणाय** = दुःख को दूर करने के लिए। **परित्राणाय** = रक्षा के लिए। **आत्मोसर्गस्य** = अपने बलिदान (त्याग) का। **निदर्शनम्** = उदाहरण। **अपसर्पति** = दूर हट जाता है। **अतिरुग्णः** =

अधिक बीमार। **चलचित्रावलोकनाय** = सिनेमा देखने के लिए। **भण** = कहो। **शल्यचिकित्सायाः** = ऑपरेशन के लिए। **बम्बप्रक्षेपः** = बम फेंका। **विरमन्ति** = छिप जाते हैं या दूर हट जाते हैं। **व्याजेन** = बहाने से। **पर्यङ्कोपरि** = पलंग के ऊपर। **चिन्तानिमग्नौ** = चिन्ता में डूबे हुए। **समाश्वसिहि** = धैर्य (सन्तोष) रखिए। **सुहृद्वरौ** = दोनों मित्र। **आधिं व्याधिम्** = मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा। **रक्तवर्गः** = खून का वर्ग (ब्लड ग्रुप)। **आपद्गतम्** = आपत्ति पड़ने पर। **जहाति** = छोड़ते हैं। **परिष्वजस्व** = गले लगा लो। **नावर्जयति** = आकर्षित नहीं करता है। **वीथिकाः** = गली। **पटवासः** = सुगन्धित चूर्ण।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) महात्मा बुद्धः कस्य खण्डनम् अकरोत् ?

(ख) सिखधर्मस्य दशमो गुरुः कः आसीत् ?

(ग) ख्रीष्टधर्मप्रवर्त्तकः कः आसीत् ?

(घ) ईदमहोत्सवः जनेषु कं भावं वर्धयति ?

(ङ) होलिकोत्सवे जनाः कथं मनोरञ्जनं कुर्वन्ति ?

2. अधोलिखितान् प्रश्नान् संस्कृतभाषया उत्तरत–

(क) गुरुगोविन्द सिंहः किमर्थं पूज्यः?

(ख) सन्मित्रलक्षणं किम् ?

(ग) आफताबः दीपकस्य जीवनरक्षार्थं किम् अकरोत् ?

(घ) होलिकोत्सवे गृहवीथिकामार्गाः कथं भवन्ति ?

(ङ) ईदमहोत्सवे जनाः किं किं कुर्वन्ति ?

3. पाठमधिकृत्य शुद्धवाक्यानां समक्षम् 'आम्', अशुद्धवाक्यानां समक्षं 'न' इति लिखत–

(क) महात्मा बुद्धः संसारगतदुःखस्य परिहारविषये चिन्तयति।..................

(ख) ईसामसीहः जन्मभूमेः रक्षार्थं आत्मोत्सर्गमकरोत्।..................।

(ग) दीपकः पीटरं परीक्षाशुल्काय धनमददात्।.................।

(घ) पीटरस्योपरि बम्बप्रक्षेपणम् अभवत्। ....।

(ङ) जसविन्दरः स्वरक्तदानेन आफताबस्य जीवनरक्षणम् अकरोत्....................।

4. अधोलिखितानां पदानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धिनामानि लिखत–

(क) अद्याहम् (ख) कश्च (ग) तथैव (घ) सन्मित्रम् (ङ) मुखान्वलोकयति

5. 'वयं भारतीयाः' पाठमधिकृत्य अधोलिखितानां चरित्रचित्रण हिन्दी भाषा कुरुत–

(क) आफताब (ख) दीपकः (ग) पीटरः

6. पाठमधिकृत्य समीचीनं विकल्पं चिनुत–

(i) अध्यापकः आफताबं कस्य चरितविषये प्रश्नम् अपृच्छत् ?

(क) ईसामसीहस्य (ख) बुद्धस्य (ग) मर्यादापुरुषोत्तमरामस्य (घ) गुरुगोविन्दस्य

(ii) 'निर्धनोऽहं क्षुत्प्रपीडितोऽस्मि' इति कः अकथयत् ?

(क) जसविन्दरः (ख) पीटरः (ग) दीपकः (घ) आफताबः

(iii) 'सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः' इति कः अकथयत् ?

(क) दीपकः (ख) जसविन्दरः (ग) पीटरः (घ) आफताबः

(iv) 'ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति' इति कस्मिन् ग्रन्थे उक्तम् ?

(क) रामायणे (ख) महाभारते (ग) पुराणे (घ) गीतायाम्

■

संस्कृतव्याकरणम्

अनुवादः रचना च

1 प्रत्याहार एवं वर्णों का उच्चारण-स्थान

'संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः' *अर्थात् महर्षियों ने देवताओं की वाणी को संस्कृत कहा है। संस्कृत का अर्थ होता है शुद्ध, परिमार्जित, परिष्कृत। अतः व्याकरण द्वारा जिसका संस्कार किया गया हो ऐसी अत्यन्त परिष्कृत भाषा को संस्कृत कहते हैं। अपने व्याकरण की वैज्ञानिकता के कारण ही विश्व की सर्वप्राचीन, विशाल वाङ्मय से समृद्ध और सभी भाषाओं की जननी कही जाने वाली यह संस्कृत भाषा आज कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा मानी जाती है।*

व्याकरण–''व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते प्रकृति-प्रत्ययविभागद्वारा शब्दाः येन तत् शास्त्रं व्याकरणम्'' अर्थात् जिसके द्वारा प्रकृति और प्रत्यय को अलग-अलग करके शब्द व्युत्पन्न किये जाते हैं, उस शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।[1]

प्रकृति			**+ प्रत्यय**	**= व्युत्पन्न शब्द**
सम्	+ सुट्	+ कृ	+ क्त	= संस्कृतम्
वि	+ आ	+ कृ	+ ल्युट्	= व्याकरणम्

यद्यपि संस्कृत के आठ प्रकार के व्याकरण बताये गये हैं, तथापि सर्वाधिक प्रचलित व्याकरण महर्षि पाणिनि के अष्टाध्यायी (आठ अध्यायों वाले) ग्रन्थ पर आधारित है। अतः इसे पाणिनीय व्याकरण कहा जाता है। पाणिनीय-व्याकरण में वार्तिक (अतिरिक्त नियम) जोड़ने वाले वररुचि कात्यायन और इस व्याकरण पर भाष्य लिखने वाले पतञ्जलि का योगदान होने के कारण इसे 'त्रिमुनि-व्याकरण' भी कहते हैं।

माहेश्वर सूत्र—संस्कृत व्याकरण अत्यन्त वैज्ञानिक है और यह माहेश्वर सूत्रों पर आधारित है। कथा प्रसिद्ध है कि भगवान् शिव ने ताण्डव नृत्त करने के पश्चात् चौदह बार डमरू बजाया और उससे जो ध्वनियाँ निकलीं, वे चौदह सूत्रों के रूप में ''माहेश्वर (महेश्वर का) सूत्र'' के नाम से विख्यात हैं। वे सूत्र इस प्रकार हैं—

1. अइउण्, 2. ऋऌक्, 3. एओङ्, 4. ऐऔच्, 5. हयवरट्, 6. लण्, 7. ञमङणनम्, 8. झभञ्, 9. घढधष्, 10. जबगडदश्, 11. खफछठथचटतव्, 12. कपय्, 13. शषसर्, 14. हल्।

---

1. नामरूपे व्याकरवाणि। (छान्दोग्योपनिषद्)

इन चौदह सूत्रों को 'संस्कृत-वर्णमाला', 'वर्णसमाम्नाय', 'प्रत्याहार–सूत्र' और 'शिवसूत्र' भी कहते हैं। यह वर्णमाला भाषाविज्ञान पर आधारित है और किसी भी अन्य भाषा की तुलना में सर्वाधिक वैज्ञानिक है।

प्रत्याहार— **''प्रत्याह्रियन्ते सङ्क्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र सः प्रत्याहारः''** अर्थात् जिसके द्वारा अनेक वर्णों को सङ्क्षेप में कहा जाता है, उसे प्रत्याहार कहते हैं। यथा— अ, इ, उ, ऋ, लृ — इन वर्णों को सङ्क्षेप में 'अक्' कहते हैं।

प्रत्याहार बनाने की विधि— उपर्युक्त सभी चौदह सूत्रों में अन्तिम वर्ण हल् (व्यञ्जन) हैं, उन्हें जोड़कर ही प्रत्याहार बनाया जाता है; किन्तु उनकी गिनती नहीं होती। यथा— यदि अ, इ, उ, ऋ, लृ— इन वर्णों का प्रत्याहार बनाना है तो 'अ' से लेकर 'क्' के पूर्ववर्ती 'लृ' तक सभी वर्ण लिये जायेंगे; किन्तु सूत्रों के अन्त में विद्यमान हल् संज्ञक— ण्, क् वर्णों की गिनती नहीं होती। ये केवल प्रत्याहारों के नाम बनाने के लिये हैं यथा—

1. **अक्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ।
2. **अच्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ = सभी स्वर।
3. **अट्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्।
4. **अण्** = अ, इ, उ।
5. **अण्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्।
6. **अम्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्।
7. **अश्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्।
8. **अल्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्। = सभी स्वर-व्यञ्जन।
9. **इक्** = इ, उ, ऋ, लृ।
10. **इच्** = इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ।
11. **इण्** = इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्।
12. **उक्** = उ, ऋ, लृ।
13. **एङ्** = ए, ओ।
14. **एच्** = ए, ओ, ऐ, औ।
15. **ऐच्** = ऐ, औ।

16. **खय्** = ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्।
17. **खर्** = ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्।
18. **ङम्** = ङ्, ण्, न्।
19. **चर्** = च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्।
20. **छव्** = छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्।
21. **जश्** = ज्, ब्, ग्, ड्, द्।
22. **झय्** = झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्।
23. **झर्** = झ, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्।
24. **झल्** = झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्।
25. **झश्** = झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्।
26. **झष्** = झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्।
27. **बश्** = ब्, ग्, ड्, द्।
28. **भष्** = भ्, घ्, ढ्, ध्।
29. **मय्** = म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्।
30. **यञ्** = य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्।
31. **यण्** = य्, व्, र्, ल्।
32. **यम्** = य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्।
33. **यच्** = य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्।
34. **यर्** = य्, व्, र्, ल्, ञ्, म, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्।
35. **रल्** = र, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्।
36. **वश्** = व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्।
37. **वल्** = व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्।

38. **शर्** = श्, ष्, स्।

39. **शल्** = श्, ष्, स्, ह्।

40. **हश्** = ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्।

41. **हल्** = ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह् = सभी व्यञ्जन।

42. **चय्** = च्, ट्, त्, क्, प्।

नोट—पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्रों में स्थित प्रत्याहारों की संख्या 42 है; किन्तु **'र'** (र्,ल्) प्रत्याहार का उल्लेख पाणिनिसूत्र 'उरण् रपरः' में हुआ है जिसको मानने पर 43 प्रत्याहार होते हैं, तथा उणादिसूत्र 'ञमन्ताड्डः' के **'ञम्'** (ञ्, म्, ङ्, ण्, न्) की गिनती करने पर प्रत्याहार 44 हो जाते हैं।

वर्ण-विचार

भाषा की लघुतम इकाई शब्द है और शब्द की लघुतम इकाई वर्ण है।

वर्ण— **'वृणोति ध्वनिम्'** इस परिभाषा के अनुसार वह छोटी सी छोटी अविनाशी ध्वनि जिसके टुकड़े न किये जा सकें उसे 'वर्ण' या अक्षर कहते हैं।

संस्कृत व्याकरण में वर्ण या अक्षर में कोई तात्त्विक भेद नहीं मानते। वर्ण का आशय ध्वनि के लिखित रूप से है—**''वर्ण्यते लिख्यते लघुतमो ध्वनिः येन असौ वर्णः।''** वर्ण् धातु का अर्थ है रंगना या लिखना, उससे अच् प्रत्यय होकर 'वर्ण' शब्द निष्पन्न होता है। अक्षर का आशय ध्वनि के उच्चारित रूप से है—**''न क्षरः क्षरणं यस्य तद् अक्षरम्।''** अर्थात् वह ध्वनि जिसका नाश नहीं होता।

वर्ण के दो भेद होते हैं—(1) स्वर (2) व्यञ्जन।

1. स्वर—**''स्वयं राजन्ते इति स्वराः''** अर्थात् जिनका उच्चारण विना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के होता है उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर के तीन भेद होते हैं—

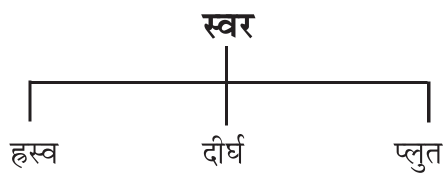

(क) ह्रस्व—**''एकमात्रो भवेद् ह्रस्वः''** अर्थात् जिनके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये 5 हैं—अ, इ, उ, ऋ, लृ।

(ख) दीर्घ—**''द्विमात्रो दीर्घ उच्यते''** अर्थात् जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये 8 हैं—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ।

(ग) प्लुत—''त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयः'' अर्थात् जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। उदाहरण के लिए 'ओ३म्' के 'ओ' के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है अतः 'ओ' के आगे संख्या '३' लिखकर इसके प्लुत होने को प्रकट करते हैं। प्लुत स्वर 9 हैं—अ३, इ३, उ३, ऋ३, लृ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३।

''निमेषकाला मात्रा स्यात्'' अर्थात् पलक गिराने में अथवा चुटकी बजाने (अङ्गुलीस्फोटनं यावान् तावान् कालस्तु मात्रिकः) में जो समय लगता है, उसे एक मात्रा कहते हैं। व्यञ्जन के उच्चारण में आधी मात्रा का समय लगता है—

एकमात्रो भवेद्ध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रकम्।।

2. व्यञ्जन—''व्यज्यन्ते स्वरसंयोगेन इति व्यञ्जनानि'' अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है उन्हें व्यञ्जन कहते हैं। इनके मूलतः तीन भेद हैं—

(क) स्पर्श (ख) अन्तःस्थ (ग) ऊष्म

(क) स्पर्श व्यञ्जन—''स्पृशन्ति स्वानि स्वान्युच्चारणस्थानानि इति स्पर्शाः'' अर्थात् जो उच्चारण के समय अपने-अपने उच्चारण स्थानों का स्पर्श करते हैं, उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। ये 25 हैं (**कादयो मावसानाः स्पर्शाः**— क् से लेकर म् तक)।

कु = कवर्ग — क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
चु = चवर्ग — च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
टु = टवर्ग — ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
तु = तवर्ग — त्, थ्, द्, ध्, न्
पु = पवर्ग — प्, फ्, ब्, भ्, म्

(ख) अन्तःस्थ व्यञ्जन—''अन्तः स्वरव्यञ्जनयोर्मध्ये तिष्ठन्ति इति अन्तःस्थाः'' अर्थात् जो स्वर और व्यञ्जन के बीच में स्थित हैं, उन्हें अन्तःस्थ व्यञ्जन कहते हैं। य्, व्, र्, ल् सम्प्रसारण में क्रमशः इ, उ, ऋ, लृ हो जाते हैं और इ, उ, ऋ, लृ स्वरों के समीप आने पर य्, व्, र्, ल् हो जाते हैं। अतः इन्हें अन्तःस्थ कहते हैं। ये चार हैं **(यणोऽन्तस्थाः)**—

य्, व्, र्, ल्

(ग) ऊष्म व्यञ्जन—''ओषतीति ऊष्मा'' अथवा **''ऊष्मा वायुस्तत्प्रधानवर्णा ऊष्माणः''** अर्थात् जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से गर्म वायु निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यञ्जन कहते हैं। ये भी चार हैं **(शल ऊष्माणः)**

श्, ष्, स्, ह्

(**'स्वरव्यवधानरहितानाम् अनेकव्यञ्जनानां संयोजनेन संयुक्तव्यञ्जनानि भवन्ति।'** अर्थात् स्वर के व्यवधान से रहित अनेक व्यञ्जनों को जोड़ देने से संयुक्त व्यञ्जन बनते हैं।)

यथा— क् + ष् + अ = क्ष
त् + र् + अ = त्र
ज् + ञ् + अ = ज्ञ
श् + र् + अ = श्र
प् + र् + अ = प्र
ह् + ल् + अ = ह्ल
ह् + र् + अ = ह्र
स् + र् + अ = स्र इत्यादि।

अयोगवाह—''माहेश्वरसूत्रेषु अयुक्ता अपि प्रयोगं वहन्ति इति अयोगवाहाः।'' अर्थात् माहेश्वर सूत्र में योग न होने (अयोग) के बाद भी जो भाषा में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें अयोगवाह कहते हैं। ये पाँच हैं—

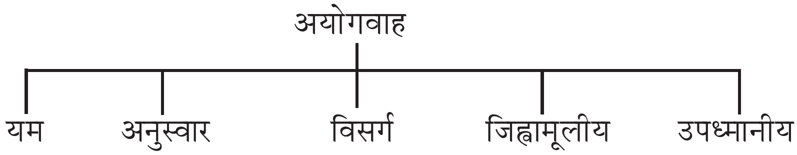

(क) यम— कवर्गादि से पञ्चम वर्ण (ङ् ञ् ण् न् म्) के परे रहते पूर्व सदृश वर्ण यम कहा जाता है जिनकी संख्या चार होती है तथापि प्रत्येक वर्ग के प्रथम को कुँ, द्वितीय को खुँ, तृतीय को गुँ तथा चतुर्थ को घुँ होता है।

(ख) अनुस्वारः—''स्वरेभ्यः अनु पश्चाद् एव नासिकया उच्चार्यते इति अनुस्वारः'' अर्थात् जिसका स्वरों के पश्चात् नासिका से उच्चारण होता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। अनुस्वार हमेशा किसी-न-किसी स्वर के बाद आता है। इसे बिन्दु (कं) के रूप में शिरोरेखा के ऊपर लिखा जाता है। यथा—अं, कं, चं, टं, तं, पं इत्यादि।

(ग) विसर्गः—''स्वरेभ्यः पश्चात् यस्योच्चारणे मुखात् वायुः तीव्रतया विसृज्यते असौ विसर्गः'' अर्थात् स्वर के पश्चात् जिसके उच्चारण में मुख से तेजी से वायु को विसर्जित किया जाता है, उसे विसर्ग कहते हैं। इसे स्वर के पश्चात् दो बिन्दुओं (:) के रूप में लिखा जाता है। अयोगवाह होने के कारण अकार के बाद विसर्ग के आने पर उसका उच्चारण स्थान कण्ठ तथा इकार के बाद विसर्ग के आने पर उस विसर्ग का उच्चारण स्थान तालु होगा। जैसे—

मुनिः — यहाँ विसर्ग का उच्चारण स्थान तालु
गुरुः — यहाँ विसर्ग का उच्चारण स्थान ओष्ठ
रामः — यहाँ विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ

(घ) जिह्वामूलीयः—'ᳵक ᳵख इति कखाभ्यां प्रागर्द्धविसर्गसदृशः जिह्वामूलीयः' अर्थात् 'क' और 'ख' से पहले आने वाले विसर्ग का उच्चारण आधे विसर्ग के समान जिह्वा के मूल भाग से होता है। अतः इसे जिह्वामूलीय कहते हैं। यथा—बालक ᳵ करोति। राम ᳵ खादति।

(ङ) उपध्मानीयः—'ᳵप ᳵफ इति पफाभ्यां प्रागर्द्धविसर्गसदृशः उपध्मानीयः' अर्थात् 'प' और 'फ' से पहले आने वाले विसर्ग का उच्चारण आधे विसर्ग के समान फूँकने जैसी (उपध्मा) ध्वनि के साथ होता है। अतः इसे उपध्मानीय कहते हैं। यथा—

बालक ᳵ पिबति। वृक्ष ᳵ फलति।

वर्णों की संख्या

'त्रिषष्टिश्चतुष्षष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः' अर्थात् आचार्य महेश्वर के मत में संस्कृत-वर्णमाला में 63 या 64 वर्ण कहे गये हैं। ह्रस्व स्वर 5 + दीर्घ 8 + प्लुत 8 (प्लुत ऌ३ को छोड़कर) = 21 स्वर और स्पर्श 25 + अन्तःस्थ 4 + ऊष्म 4 = 33 व्यञ्जन मिलाकर 54 वर्ण हो जाते हैं। यम वर्ण 4 (कुँ, खुँ, गुँ, घुँ), अनुस्वार व विसर्ग तथा जिह्वामूलीय और उपध्मानीय जोड़ देने से वर्णों की संख्या 62 हो जाती है। इनमें एक दुःस्पृष्ट (ळ) तथा प्लुत ऌ३ जोड़ देने पर संस्कृत में 64 वर्ण हो जाते हैं।

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः।।
अनुस्वारो विसर्गश्च ᳵ क ᳵ पौ चापि पराश्रितौ।
दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च।।

(पाणिनीयशिक्षा 4-5)

वर्णों के उच्चारण स्थान

वर्णों के उच्चारण स्थान 8 हैं[1]—कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका और जिह्वामूल।

सूत्र — **वर्ण** — **उच्चारण स्थान**

1. **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः** — अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्, विसर्ग — कण्ठ
2. **इचुयशानां तालु** — इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श् — तालु
3. **ऋटुरषाणां मूर्धा** — ऋ, ॠ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष् — मूर्धा
4. **ऌतुलसानां दन्ताः** — ऌ, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स् — दन्त
5. **उपूपध्मानीयानामोष्ठौ** — उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्, उपध्मानीय ᳵ प, ᳵ फ — दोनों ओष्ठ।

1. अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलश्च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।।

6. ञमङणनानां नासिका च—ञ्, म्, ङ्, ण्, न् — अपने-अपने उच्चारण स्थान और नासिका (इन वर्णों को अनुनासिक कहते हैं।) **(मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः)**।

7. एदैतोः कण्ठतालु—ए, ऐ — कण्ठ और तालु।

8. ओदौतोः कण्ठोष्ठम्—ओ, औ—कण्ठ और ओष्ठ।

9. वकारस्य दन्तोष्ठम्—व् — दन्त और ओष्ठ।

10. नासिका अनुस्वारस्य—अनुस्वार (—̇) — नासिका।

11. जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्— जिह्वामूलीय — जिह्वा का मूलभाग।

उच्चारण-यत्न

वर्णों के उच्चारण में जो यत्न (चेष्टाएँ) होता हैं, उन्हें उच्चारण यत्न कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—1. आभ्यन्तर और 2. बाह्य।

(1) आभ्यन्तर यत्न

वर्णों के स्पष्ट उच्चारण से पूर्व अथवा मुख के भीतर किये जाने वाले यत्न को आभ्यन्तर यत्न कहते हैं। प्रकृष्ट यत्न होने से यह 'प्रयत्न' कहा जाता है। ये पाँच हैं—

1. स्पृष्ट—स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्—स्पर्श (क् से म् तक) व्यञ्जनों का आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट है। इसमें जिह्वा उच्चारण स्थानों का पूर्ण स्पर्श करती है।

2. ईषत् स्पृष्ट—ईषत्स्पृष्टमन्तःस्थानाम्—अन्तःस्थ (य्, व्, र, ल्) व्यञ्जनों का आभ्यन्तर प्रयत्न ईषत् स्पृष्ट है। इसमें जिह्वा उच्चारण स्थानों का ईषत् (थोड़ा) स्पर्श करती है।

3. ईषद् विवृत—ईषद्विवृतमूष्मणाम्—ऊष्म (श्, ष्, स्, ह्) व्यञ्जनों का आभ्यन्तर प्रयत्न ईषद् विवृत है। इसमें जिह्वा के अवयवों एवं उच्चारण स्थानों के बीच का थोड़ा खुला (ईषद् विवृत) रखना पड़ता है।

4. विवृत—विवृतं स्वराणाम्—स्वरों का आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत है। इसमें जिह्वा के अवयवों एवं उच्चारण स्थानों के बीच का वायुमार्ग विवृत (खुला) रहता है।

5. संवृत—ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्। प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव—ह्रस्व 'अ' का आभ्यन्तर प्रयत्न प्रयोग (उच्चारण) की अवस्था में संवृत होता है। इसमें जिह्वा के अवयवों को उच्चारण स्थान (कण्ठ) से सटाना पड़ता है जिससे वायुमार्ग बन्द-सा (संवृत) हो जाता है; किन्तु सन्धि आदि की प्रक्रिया दशा में इसका आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत ही है।

स्वरों के बाह्य प्रयत्न उदात्त, अनुदात्त और स्वरित होते हैं।

(2) बाह्य यत्न

वर्णों के उच्चारण के पूर्व मुख के बाहर (कण्ठ से भीतर) स्वरयन्त्र में होने वाले यत्न को बाह्य यत्न कहते हैं। बाह्य यत्न 11 हैं—(1) विवार, (2) संवार, (3) श्वास, (4) नाद, (5) घोष, (6) अघोष, (7) अल्पप्राण, (8) महाप्राण, (9) उदात्त, (10) अनुदात्त और (11) स्वरित।

1. खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च— खर् अर्थात् वर्गों के पहले, दूसरे वर्ण और श ष स (क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श्, ष्, स्) वर्णों का बाह्य प्रयत्न विवार (स्वर यन्त्र का खुला रहना), श्वास (वायु का अत्यधिक प्रयोग) और अघोष (गूँज का अभाव) है।

2. हशः संवारा नादा घोषाश्च— हश् अर्थात् वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण, अन्तःस्थ और ह (ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, ब्, भ्, म्, य्, व्, र्, ल्, ह्) वर्णों का बाह्य यत्न संवार (स्वर यन्त्र का कम खुला रहना), नाद और घोष (गूँज, स्वरयन्त्र का झङ्कृत होना) है।

3. वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः—वर्गों के पहले, तीसरे, पाँचवें वर्ण और यण् (य्, व्, र्, ल्) वर्णों का बाह्य प्रयत्न अल्पप्राण (प्राणवायु का अल्प प्रयोग) है।

4. वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः—वर्गों के दूसरे, चौथे और शल् (श्, ष्, स्, ह्) वर्णों का बाह्य प्रयत्न महाप्राण (प्राणवायु का अधिक प्रयोग) है।

अभ्यासकार्यम्

1. एकपदेन उत्तरत—

(क) माहेश्वरसूत्राणां सङ्ख्या कियती?

(ख) ह्रस्वः स्वरः कियन्मात्रः?

(ग) सर्वे स्वराः कस्मिन् प्रत्याहारे आयान्ति?

(घ) सर्वाणि व्यञ्जनानि कस्मिन् प्रत्याहारे सन्ति?

(ङ) अवर्णस्य उच्चारणस्थानं किम्?

(च) नासिका कस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति?

(छ) विसर्गस्य उच्चारणस्थानं किम्?

(ज) ज्, ब्, ग्, ड्, द् — इत्येतेषां वर्णानां कृते कः प्रत्याहारः?

2. एकवाक्येन उत्तरत—

(क) वर्णः कः?

(ख) स्वरस्य परिभाषा का?

(ग) किं नाम व्यञ्जनम्?

(घ) प्रत्याहारस्य कः अर्थः?

(ङ) कः प्लुतः ज्ञेयः?

(च) अनुस्वार: क:?

(छ) शम्भुमते कति वर्णा: मता:?

(ज) अनुनासिक: क?

3. रिक्तस्थानानि पूरयत—

(क) .... भवेद्ध्रस्व:।

(ख) व्यञ्जनं ....।

(ग) अक्प्रत्याहारे वर्णा: .... सन्ति।

(घ) कखाभ्यां .... जिह्वामूलीय:।

(ङ) .... स्वरेभ्य: पश्चात् नासिकया उच्चार्यते।

4. उचितं विकल्पं चिनुत—

(i) इक्-प्रत्याहारे के के वर्णा आगच्छन्ति?

(क) इ, उ, ऋ (ख) इ, उ, ऋ, लृ

(ग) इ, उ, ऋ, लृ, क् (घ) उ, ऋ, लृ, क्

(ii) यण्प्रत्याहारे इमे वर्णा: आगच्छन्ति—

(क) य्, व्, र्, ण् (ख) य्, व्, र्, ल्, ण्

(ग) य्, व्, र्, ल् (घ) व्, र्, ल्, ण्

(iii) ऊष्मव्यञ्जनवर्णानां कृते क: प्रत्याहार:?

(क) शल् (ख) हल् (ग) यण् (घ) जश्

(iv) टवर्गस्य उच्चारणस्थानं किम्?

(क) कण्ठ: (ख) तालु (ग) दन्ता: (घ) मूर्धा

(v) 'ए' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति—

(क) कण्ठोष्ठम् (ख) दन्तोष्ठम् (ग) कण्ठतालु (घ) मूर्धा

(vi) स्पर्शव्यञ्जनानि सन्ति—

(क) 20 (ख) 25 (ग) 33 (घ) 48

(vii) ऋकारस्य उच्चारणस्थानं किम्?

(क) मूर्धा (ख) दन्ता: (ग) तालु (घ) ओष्ठौ

■

2 सन्धि (हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि)

दो वर्णों या अक्षरों के मेल को सन्धि कहते हैं। जब दो शब्द पास-पास आते हैं तो एक दूसरे की निकटता के कारण पहले शब्द के अन्तिम वर्ण में, दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में अथवा दोनों के स्थान पर जो विकार या परिवर्तन होता है उसे सन्धि कहा जाता है। यथा– उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः, गज + इन्द्रः = गजेन्द्रः, दैत्य + अरिः = दैत्यारिः।

सन्धि के भेद– सन्धि के तीन भेद होते हैं– स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि, विसर्ग सन्धि।

(1) स्वर सन्धि– जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर के साथ ह्रस्व या दीर्घ स्वर का मेल होता है अर्थात् जब पहले शब्द का अन्तिम स्वर दूसरे शब्द के पहले स्वर से मिलता है तो वहाँ स्वर सन्धि होती है। यथा– हिम + आलयः = हिमालयः = अ + आ = आ। दैत्य + अरिः = दैत्यारिः = अ + अ = आ

(2) व्यञ्जन सन्धि– जब व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन अथवा स्वर वर्ण आये, अर्थात् प्रथम शब्द के अन्तिम व्यञ्जन का दूसरे शब्द के प्रथम व्यञ्जन या स्वर से मेल हो तथा उसके कारण कोई विकार हो, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। यथा– हरिस् + शेते = हरिश्शेते (स् के स्थान पर श्)। क्वचित् + च = क्वचिच्च (त् के स्थान पर च्)।

(3) विसर्ग सन्धि– जब पूर्ववर्ती शब्द के अन्त में प्रयुक्त स्, र्, विसर्ग (:) में परिवर्तन या विकार होता है, उसें विसर्ग सन्धि कहते हैं। यथा– रामः + त्राता = रामस्त्राता।

व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन अथवा स्वर आने पर व्यञ्जन सन्धि होती है। यथा– सद् + जनः = सज्जनः = द् + ज् = ज्। तत् + टीका = तट्टीका = त् + ट् = ट्। जगत् + ईशः = जगदीशः = त् + ई = द्। उपर्युक्त उदाहरणों में द् के बाद व्यञ्जन, दूसरे में त् के बाद व्यञ्जन तथा तीसरे उदाहरण में त् के बाद स्वर आने पर व्यञ्जन सन्धि हुई है। अर्थात् जहाँ व्यञ्जन में बदलाव हो वहाँ व्यञ्जन सन्धि होती है।

व्यञ्जन सन्धि के भेद– व्यंजन सन्धि के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं–

1. श्चुत्व सन्धि
2. ष्टुत्व सन्धि
3. जश्त्व सन्धि
4. चर्त्व सन्धि
5. अनुस्वार सन्धि
6. परसवर्ण सन्धि

अनुस्वार सन्धि

मोऽनुस्वारः—जब पदान्त 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन वर्ण आये तो उस पदान्त मकार के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।

यथा— हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे।
गृहम् + गच्छामि = गृहं गच्छामि।
अहम् + हसामि = अहं हसामि।
त्वम् + पठ = त्वं पठ।

किन्तु यदि पदान्त मकार के बाद यदि कोई स्वर आता है तो मकार के स्थान पर अनुस्वार नहीं होता अपितु वह अपने आगे के स्वर में मिल जाता है।

यथा – गृहम् + अगच्छत् = गृहमगच्छत्।
जलम् + आनय = जलमानय।
जलम् + अपतत् = जलमपतत्।

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए –
कथं त्वमत्र, रामं नमामि, त्वं चलसि।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि का नामोल्लेखपूर्वक सन्धि कीजिए—
रामम् + प्रणमामि, गृहम् + चल, त्वम् + गच्छसि, हरिम् + वन्दे।

परसवर्ण सन्धि

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः— यदि अपदान्त (किसी पद के मध्य में स्थित) अनुस्वार के बाद यय् प्रत्याहार का वर्ण (अर्थात् श्, ष्, स् और ह् को छोड़कर कोई भी व्यञ्जन) आये, तो अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है। यह नियम पदान्त में कभी नहीं लगता।

यथा— गं + गा = गङ्गा
शां + तिः = शान्तिः
रं + जिता = रञ्जिता
सं + जनाः = सञ्जनाः
अं + कितः = अङ्कितः
कुं + ठितः = कुण्ठितः
सं + कल्पः = सङ्कल्पः
कुरं + गः = कुरङ्गः
विरं + चिः = विरञ्चिः

वा पदान्तस्य— यदि अनुस्वार किसी पद के अन्त में रहे तो पूर्व सूत्र वाला नियम विकल्प से लगता है— जैसे—

त्वम् + करोषि = त्वं करोषि, त्वङ्करोषि।
पुस्तकम् + पठति = पुस्तकं पठति, पुस्तकम्पठति।

विसर्गसन्धि

जब पूर्ववर्ती शब्द के अन्त में प्रयुक्त स्, र् या विसर्ग (:) में परिवर्तन या विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

जैसे – विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता
भुजङ्गः + सरति = भुजङ्गस्सरति
नमः + करोति = नमस्करोति

विसर्जनीयस्य सः – यदि विसर्ग के बाद खर् प्रत्याहार (अर्थात् ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्) का कोई वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है।

जैसे– हरिः + सरति = हरिस्सरति
नमः + ते = नमस्ते
यशः + तनोति = यशस्तनोति

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद करते हुए सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
शिवस्तारयति, नद्यास्तटे, गुरुस्त्वम्, मतिस्तव, इतस्ततः, तरुस्तलः।

2. निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
रामः + त्राता, पुरुषः + तरति, वृक्षः + तले, रामः + सुनोति।

3. 'विसर्जनीयस्य सः' का अर्थ लिखिए।

ससजुषो रुः– यदि पद के अन्त में 'स्' या 'सजुष्' शब्द हो तो पदान्त स् और सजुष्' शब्द के षकार के स्थान पर 'रु' आदेश हो जाता है और इस आदेश हुए 'रु' के उकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'र्' शेष बचता है।

जैसे– निस् + दयः = निर्दयः
निस् + आश्रितः = निराश्रितः
गुरुः + जयति = गुरुर्जयति
शिशुः + अपतत् = शिशुरपतत्
भानुः + उदेति = भानुरुदेति
हरिः + इव = हरिरिव
देवैः + अपि = देवैरपि
दुस् + लभः = दुर्लभः
कविः + अयम् = कविरयम्
निस् + आश्रितः = निराश्रितः

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
भानुः + उदेति, देवः + अपि, हरिः + जयति, कवेः + रचना, हरेः + मन्दिरम्।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद करते हुए सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
दुर्लभः, भानुरुदेति, निराश्रितः, गुरोरपि, निर्दयः, आविर्भावः, देवैरपि, गौरयम्।

अतो रोरप्लुतादप्लुते– यदि (र्) से पूर्व ह्रस्व अ और पश्चात् ह्रस्व 'अ' आवे तो रु (र्) के रेफ के स्थान पर 'उ' आदेश हो जाता है और आदेशित 'उकार' को गुण (ओ) हो जाता है।

जैसे–

शिवस् + अर्च्यः = शिवर् + अर्च्यः = शिव उ अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः

रामस् + अस्ति = रामोऽस्ति मूर्खस् + अपि = मूर्खोऽपि
सस् + अपि = सोऽपि कस् + अपि = कोऽपि
बालस् + अवदत् = बालोऽवदत् बालस् + अस्ति = बालोऽस्ति
एषस् + अब्रवीत् = एषोऽब्रवीत् रामस् + अस्ति = रामोऽस्ति

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

बालोऽत्र, हस्तोऽस्य, छात्रोऽयम्, ज्येष्ठोऽनुजः, नृपोऽहम्, शुद्धोऽहम्

2. निम्नलिखित में सन्धि का नामोल्लेखपूर्वक सन्धि कीजिए–

शुभस् + अस्ति, देवस् + अपि, शुद्धस् + अहम्।

हशि च– यदि 'र' से पहले 'अप्लुत' 'अ' तथा 'र' के पश्चात् हश् प्रत्याहार अर्थात् (वर्णों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह्) में से कोई वर्ण होता है, तो विसर्ग के स्थान पर 'उ' तदुपरान्त 'उ' के स्थान पर 'ओ' (गुण) हो जाता है।

जैसे– रामस् + हसति = रामर् + हसति = राम + उ + हसति= रामो हसति
बालस् + याति = बाल + उ + याति = बालो याति
मृगस् + धावति = मृग + उ + धावति = मृगो धावति
नृपस् + दास्यति = नृप + उ + दास्यति = नृपो दास्यति
नरस् + गच्छति = नर + उ + गच्छति = नरो गच्छति

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित शब्दों में नामोल्लेखपूर्वक सन्धि कीजिए–

बालः + रोदिति, सुरेशः + लिखति, मूर्खः + हसति, मयूरः + नृत्यति।

2. निम्नलिखित शब्दों में नामोल्लेखपूर्वक सन्धि–विच्छेद कीजिए–

मनोयोगः, यशोधनः, सूर्यो भाति, रामो वदति।

बहुविकल्पीयप्रश्नाः

1. 'हरिं वन्दे' में सन्धि है –
(क) अनुस्वार सन्धि (ख) स्वर सन्धि (ग) विसर्ग सन्धि (घ) कोई नहीं
2. 'जलमानय' में सन्धि विच्छेद होगा –
(क) जलमा + नय (ख) जलम् + आनय (ग) जल + मानय (घ) जल + नय
3. 'अङ्कितः' में सन्धि है –
(क) विसर्ग (ख) स्वर (ग) अनुस्वार दीर्घ (घ) परसवर्ण सन्धिः
4. 'अहं गच्छामि' में किस सूत्र से सन्धि हुई है ?
(क) मोऽनुस्वारः (ख) परसवर्णः (ग) श्चुत्व सन्धि (घ) वा पदान्तस्य

5. 'मनोरोगः' में कौन-सी सन्धि है ?
(क) विसर्ग सन्धि (ख) श्चुत्व सन्धि (ग) दीर्घ सन्धि (घ) अनुस्वार सन्धि
6. 'नमस्ते' में सन्धि है –
(क) विसर्ग सन्धि (ख) हल् सन्धि (ग) दीर्घ सन्धि (घ) व्यञ्जन सन्धि
7. 'धनुष्टंकार' का सन्धि विच्छेद होगा –
(क) धनुषि + टंकार (ख) धनु + टंकार (ग) धनुः + टंकार (घ) धनुष्ट + कार
8. 'यशस्तनोति' का सन्धि विच्छेद होगा –
(क) यशः + तनोति (ख) यश + तनोति (ग) यशस्य + तनोति (घ) कोई नहीं
9. 'कविरागतः' का सन्धि विच्छेद होगा –
(क) कविर् + आगतः (ख) कवि + आगतः (ग) कविः + आगतः (घ) कोई नहीं
10. 'गुरुर्जयति' का सन्धि विच्छेद होगा –
(क) गुरुर + जयति (ख) गुरुः + जयति (ग) गुरो + जयति (घ) गुरुणा + जयति
11. 'भानुः + उदेति' का सन्धि होगा –
(क) भानुरुदेति (ख) भानोरुदेति (ग) भानुदेति (घ) कोई नहीं
12. 'रात्रिर्गच्छति' का सन्धि विच्छेद होगा–
(क) रात्रिः + गच्छति (ख) रात्रिषु + गच्छति (ग) रात्रि + गच्छति (घ) रात्रि + र्गच्छति
13. देवः + अपि की सन्धि होगा–
(क) देवोऽपि (ख) देवाअपि (ग) देवरुअपि (घ) देवसअपि
14. हरे + अव में सन्धि होगी–
(क) हरेअव (ख) हरेऽव (ग) हरौ (घ) हरौइति
15. 'शुकोऽस्ति' का सन्धि विच्छेद होगा–
(क) शुकः + अस्ति (ख) शुका + अस्ति (ग) शुकौ + अस्ति (घ) शुके + अस्ति
16. 'बालोऽत्र' में सन्धि है–
(क) विसर्ग सन्धि (ख) स्वर सन्धि (ग) व्यञ्जन सन्धि (घ) अनुस्वार सन्धि।
17. 'बालः रोदिति' में सन्धि होगी–
(क) बालो रोदिति (ख) बाला रोदिति (ग) बाले रोदिति (घ) बालौ रोदिति
18. 'जनः + वदति' का सन्धि होगा–
(क) जनो वदति (ख) जना वदति (ग) जने वदति (घ) जनास् वदति।
19. 'मनस् + योगः' में सन्धि होगी–
(क) मनोयोगः (ख) मनौयोगः (ग) मनेयोगः (घ) मना योगः।
20. 'रामो गच्छति' का सन्धि विच्छेद होगा–
(क) रामे + गच्छति (ख) रामस् + गच्छति (ग) राम + गच्छ (घ) रामौ + गच्छति।

3 शब्दरूप

संस्कृत व्याकरण में शब्दरूपों का बड़ा महत्त्व है। शब्दरूपों को कंठस्थ कर लेने, उनकी रूपरेखा को ठीक प्रकार समझ लेने से संस्कृत-भाषा में वाक्य–निर्माण या अनुवाद सहज हो जाता है। व्याकरणीय दृष्टि से शब्दरूपों के दो भेद किए जा सकते हैं– अजन्त और हलन्त।

स्वरों से अन्त होने वाले शब्दों को अजन्त (अच् + अन्त) कहते हैं यथा–पितृ, बालक, गुरु इत्यादि। पितृ में ऋ, बालक में अ' तथा गुरु में 'उ' अन्त में है जो कि अच् (स्वर) है। अतः ये अजन्त हुए। इसी प्रकार व्यञ्जन से अन्त होने वाले शब्दों को हलन्त कहते हैं। यथा— करिन्, वाक् सरित्, राजन् इत्यादि। प्रस्तुत उदाहरण में करिन् में 'न्' वाक् में 'क्', सरित् में 'त्' तथा राजन् में 'न्' अन्त में है अतः ये हलन्त कहे जाते हैं।

(अ) पुंलिङ्ग

1. पितृ (पिता) ऋकारान्त

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

नोट– (1) भ्रातृ, जामातृ आदि ऋकारान्त पुंलिङ्ग हैं। इनके रूप 'पितृ' शब्द के समान ही चलते हैं।

(2) 'मातृ' (स्त्रीलिङ्ग) शब्द के रूप भी 'पितृ' के समान चलते हैं। केवल द्वितीया के बहुवचन में 'मातॄः' रूप बनता है।

2. गो (बैल) ओकारान्त

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः

तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः!	हे गावौ!	हे गावः!

3. राजन् (राजा) नकारान्त

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

4. भगवत् (भगवान्) तकारान्त

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वितीया	भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवतः
तृतीया	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
चतुर्थी	भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
पञ्चमी	भगवतः	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
षष्ठी	भगवतः	भगवतोः	भगवताम्
सप्तमी	भगवति	भगवतोः	भगवत्सु
सम्बोधन	हे भगवन्!	हे भगवन्तौ!	हे भगवन्तः!

नोट– इसी प्रकार भवत्, बुद्धिमत् (बुद्धिमान्), बलवत्, श्रुतवत्, गुणवत्, धनवत्, श्रीमत्, शीलवत्, रूपवत्, शक्तिमत् आदि वत्-मत् प्रत्ययान्त तकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'भगवत्' शब्द के समान चलते हैं।

5. करिन् (हाथी) नकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	करी	करिणौ	करिणः
द्वितीया	करिणम्	करिणौ	करिणः
तृतीया	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
चतुर्थी	करिणे	करिभ्याम्	करिभ्यः
पञ्चमी	करिणः	करिभ्याम्	करिभ्यः
षष्ठी	करिणः	करिणोः	करिणाम्
सप्तमी	करिणि	करिणोः	करिषु
सम्बोधन	हे करिन्!	हे करिणौ!	हे करिणः!

नोट– इसी प्रकार संन्यासिन्, दण्डिन्, तपस्विन्, धनिन्, स्वामिन्, यशस्विन्, दानिन्, ज्ञानिन्, विद्यार्थिन्, हस्तिन्, गुणिन्, मन्त्रिन्, पक्षिन्, सुखिन् आदि 'इन्' प्रत्ययान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'करिन्' शब्द के समान चलते हैं।

(ब) स्त्रीलिङ्ग

1. नदी (नदी) ईकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

नोट–इसी प्रकार जानकी, गौरी, गायत्री, सावित्री, पृथ्वी, राज्ञी, रजनी, पत्नी, गोपी, पुत्री, जननी आदि शब्दों के रूप चलेंगे, किन्तु लक्ष्मीः, तरीः, तन्त्रीः आदि के प्रथमा एकवचन में विसर्ग भी लगाया जाता है।

2 धेनु (गाय) उकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे, धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेनोः, धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः, धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ, धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

नोट– इसी प्रकार तनुः (शरीर), रेणुः (धूलि), हनुः (ठोड़ी) आदि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'धेनु' शब्द के समान चलते हैं।

3. वधू (बहू) ऊकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

4. सरित् (नदी) तकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पञ्चमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्!	हे सरितौ!	हे सरितः!

(स) नपुंसकलिङ्ग

1. वारि (जल) इकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारे! हे वारि!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

2. मधु (शहद) उकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु! मधो!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

नोट–इसी प्रकार जानु (घुटना), दारु (लकड़ी), तालु, वस्तु, सानु (पर्वत की चोटी) उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप 'मधु' की तरह ही चलेंगे।

3. नामन् (नाम) नकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पञ्चमी	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
षष्ठी	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्

सप्तमी	नाम्नि, नामनि,	नाम्नोः	नामसु
सम्बोधन	हे नाम! नामन्!	हे नाम्नी, नामनी!	हे नामानि!

नोट– व्योमन्, धामन्, प्रेमन्, सामन् आदि शब्दों के भी रूप 'नामन्' शब्द के समान चलते हैं।

4. मनस् (मन) सकारान्त

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मनः	मनसी	मनांसि
द्वितीया	मनः	मनसी	मनांसि
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
चतुर्थी	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पञ्चमी	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
षष्ठी	मनसः	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	मनसोः	मनस्सु
सम्बोधन	हे मनः!	हे मनसी!	हे मनांसि!

5. किम् (कौन, क्या) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

6. यद् (जो) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

7. अदस् (वह) पुंलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

अदस् (वह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

अदस् (वह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

संस्कृत के एक से सौ तक संख्यावाचक शब्द

1. एकम् (एकः, एका, एकम्)
2. द्वे (द्वौ, द्वे, द्वे)
3. त्रीणि (त्रयः, तिस्रः, त्रीणि)
4. चत्वारि (चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि)
5. पञ्च
6. षड्
7. सप्त
8. अष्ट
9. नव
10. दश
11. एकादश
12. द्वादश
13. त्रयोदश
14. चतुर्दश
15. पञ्चदश
16. षोडश
17. सप्तदश
18. अष्टादश
19. नवदश (एकोनविंशतिः, ऊनविंशतिः)
20. विंशतिः
21. एकविंशतिः
22. द्वाविंशतिः
23. त्रयोविंशतिः
24. चतुर्विंशतिः
25. पञ्चविंशतिः
26. षड्विंशतिः
27. सप्तविंशतिः
28. अष्टाविंशतिः
29. नवविंशतिः (एकोनत्रिंशत्, ऊनत्रिंशत्)
30. त्रिंशत्
31. एकत्रिंशत्
32. द्वात्रिंशत्
33. त्रयस्त्रिंशत्
34. चतुस्त्रिंशत्
35. पञ्चत्रिंशत्
36. षट्त्रिंशत्
37. सप्तत्रिंशत्
38. अष्टात्रिंशत्
39. नवत्रिंशत्
40. चत्वारिंशत्
41. एकचत्वारिंशत्
42. द्विचत्वारिंशत् (द्वाचत्वारिंशत्)
43. त्रिचत्वारिंशत् (त्रयश्चत्वारिंशत्)
44. चतुश्चत्वारिंशत्
45. पञ्चचत्वारिंशत्
46. षट्चत्वारिंशत्
47. सप्तचत्वारिंशत्
48. अष्टचत्वारिंशत् (अष्टाचत्वारिंशत्)
49. नवचत्वारिंशत् (ऊनपञ्चाशत्, एकोनपञ्चाशत्)
50. पञ्चाशत्
51. एकपञ्चाशत्
52. द्विपञ्चाशत् (द्वापञ्चाशत्)
53. त्रिपञ्चाशत् (त्रयः पञ्चाशत्)
54. 'चतुःपञ्चाशत्'
55. पञ्चपञ्चाशत्

56. षट्पञ्चाशत्
57. सप्तपञ्चाशत्
58. अष्टापञ्चाशत् (अष्टपञ्चाशत्)
59. नवपञ्चाशत् (ऊनषष्टिः, एकोनषष्टिः)
60. षष्टिः
61. एकषष्टिः
62. द्विषष्टिः (द्वाषष्टिः)
63. त्रिषष्टिः (त्रयःषष्टिः)
64. चतुष्षष्टिः
65. पञ्चषष्टिः
66. षट्षष्टिः
67. सप्तषष्टिः
68. अष्टषष्टिः (अष्टाषष्टिः)
69. नवषष्टिः (ऊनसप्ततिः, एकोनसप्ततिः)
70. सप्ततिः
71. एकसप्ततिः
72. द्विसप्ततिः (द्वासप्ततिः)
73. त्रिसप्ततिः (त्रयस्सप्तति)
74. चतुस्सप्ततिः
75. पञ्चसप्ततिः
76. षट्सप्ततिः
77. सप्तसप्ततिः
78. अष्टसप्ततिः (अष्टासप्ततिः)
79. नवसप्ततिः (ऊनाशीतिः, एकोनाशीतिः)
80. अशीतिः
81. एकाशीतिः
82. द्व्यशीतिः
83. त्र्यशीतिः
84. चतुरशीतिः
85. पञ्चाशीतिः
86. षडशीतिः
87. सप्ताशीतिः
88. अष्टाशीतिः
89. नवाशीतिः (ऊननवतिः, एकोननवतिः)
90. नवतिः
91. एकनवतिः
92. द्विनवतिः (द्वानवतिः)
93. त्रिनवतिः (त्रयोनवतिः)
94. चतुर्णवतिः
95. पञ्चनवतिः
96. षण्णवतिः
97. सप्तनवतिः
98. अष्टनवतिः (अष्टानवतिः)
99. नवनवतिः (एकोनशतम्)
100. शतम्।

सौ से अधिक कोटि (करोड़) तक संख्यावाची शब्द

100	–	शतम् (सौ)
1,000	–	सहस्रम् (हजार)
10,000	–	अयुतम् (दस हजार)
1,00,000	–	लक्षम् (लाख)
10,00,00	–	प्रयुतम् (दस लाख)
1,00,00,000	–	कोटिः (करोड़)

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए –

(क) 'वारि' शब्द के तृतीया विभक्ति के एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

(ख) 'वधू' शब्द के चतुर्थी विभक्ति के एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

(ग) 'भगवत्' शब्द के द्वितीया विभक्ति के एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

2. निम्नलिखित मे से किसी एक का शब्द-रूप लिखिए –

(क) 'हरि' शब्द के तृतीया विभक्ति के सभी वचनों में।

(ख) 'मति' शब्द के पञ्चमी विभक्ति के सभी वचनों में।

(ग) 'यत्' शब्द के चतुर्थी विभक्ति के सभी वचनों में।

3. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए –

(क) 'अस्मद्' शब्द के चतुर्थी विभक्ति के सभी वचनों के रूप।

(ख) 'गुरु' शब्द के द्वितीया विभक्ति के सभी वचनों के रूप।

(ग) 'युष्मद्' शब्द के तृतीया विभक्ति के तीनों वचनों व षष्ठी एकवचन का रूप।

4. निम्नलिखित शब्दों के पञ्चमी विभक्ति के तीनों वचनों में रूप लिखिए –

वधू, धेनु, करिन्, सरित्, इदम्, राजन् हरि, मति।

5. निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के रूप लिखिए –

(क) 'भगवत्' शब्द के षष्ठी, एकवचन।

(ख) 'नदी' शब्द के षष्ठी, द्विवचन।

(ग) 'वारि' शब्द के चतुर्थी, बहुवचन।

6. निम्नलिखित में से किसी एक का एकवचन और बहुवचन का रूप लिखिए –

(क) 'पितृ' शब्द के तृतीया विभक्ति।

(ख) 'वारि' शब्द के सप्तमी विभक्ति।

(ग) 'मनस्' शब्द के षष्ठी विभक्ति।

7. निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का रूप लिखिए –

(क) 'लता' शब्द का तृतीया, बहुवचन में।

(ख) 'वारि' शब्द का चतुर्थी, एकवचन में।

(ग) 'हरि' शब्द का तृतीया, बहुवचन में।

(ब) सही विकल्प चुनिए –

1. 'मतिभिः' रूप किस विभक्ति व वचन का है ?

(क) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (ख) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन

(ग) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन (घ) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन

2. 'नद्याः' रूप है, नदी शब्द का –

(क) तृतीया, एकवचन (ख) द्वितीया, एकवचन

(ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) षष्ठी, एकवचन

3 'राज्ञोः' रूप किस विभक्ति व वचन का रूप है ?

(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) षष्ठी, सप्तमी विभक्ति, द्विवचन

(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन (घ) प्रथमा विभक्ति, द्विवचन

4. 'मनस्' शब्द के षष्ठी बहुवचन का रूप है ?

(क) मनस्य (ख) मनसात् (ग) मनसः (घ) मनसाम्

5. 'पितुः' किस विभक्ति व वचन का रूप है ?

(क) द्वितीया, द्विवचन (ख) तृतीया, द्विवचन

(ग) पञ्चमी, एकवचन (घ) सप्तमी, एकवचन

6. 'मनोभिः' रूप किस विभक्ति और वचन का है ?

(क) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

(ग) षष्ठी विभक्ति, द्विवचन (घ) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन

7. 'राजन्' शब्द का 'राज्ञि' रूप किस विभक्ति में बनता है ?

(क) षष्ठी में (ख) पञ्चमी में (ग) सप्तमी में (घ) चतुर्थी में

8. 'नदी' शब्द के तृतीया एकवचन का रूप है –

(क) नदीभ्याम् (ख) नदीभिः (ग) नद्या (घ) नद्याम्

■

4 धातुरूप

क्रिया वह है जो किसी वस्तु के सम्बन्ध में कुछ बतलावे अर्थात् होना, जाना, खाना, पढ़ना, सोना, जागना आदि क्रियायें हैं। 'रामः पठति', 'देवदत्तो गच्छति' में 'पठति' और 'गच्छति' क्रियाएँ हैं। क्रिया तिङन्त और कृदन्त होती हैं। 'तिप् तस् झि' इत्यादि प्रत्ययों से जुड़कर जो क्रिया पद बनते हैं, उन्हें 'तिङ्न्त' कहते हैं तथा 'क्त', 'क्तवतु' आदि कृत् प्रत्ययों से जुड़कर जो क्रियापद बनते हैं उन्हें कृदन्त कहा जाता है।

यथा– सः पुस्तकं पठति में 'पठति' तिङन्त है तथा सः पुस्तकं पठितवान् में 'पठितवान्' कृदन्त है।

धातुओं से ही क्रिया पदों का निर्माण होता है। धातुएँ मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं– परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी; लेकिन कुछ धातुएँ परस्मैपदी एवं आत्मनेपदी दोनों होती हैं जिन्हें उभयपदी कहा जाता है। जैसे–

परस्मैपदी – भू – भवति भवतः भवन्ति
आत्मनेपदी – वृत् – वर्तते वर्तेते वर्तन्ते
उभयपदी – कृ – करोति कुरुतः कुर्वन्ति (परस्मैपद)
कृ – कुरुते – कुर्वाते कुर्वते (आत्मनेपद)

क्रिया के दो भेद– सकर्मक तथा अकर्मक। सकर्मक क्रिया वह होती है, जिस क्रिया का कोई कर्म हुआ करता है – जैसे – 'रामः विद्यालयं गच्छति' में गच्छति क्रिया का कर्म विद्यालय है। लेकिन 'रामः शेते' में शयन क्रिया का कोई कर्म नहीं है।

अतः 'गच्छति' सकर्मक क्रिया है तथा 'शेते' अकर्मक क्रिया है। इसका कोई कर्म नहीं होता।

भूत, वर्तमान, भविष्य इत्यादि काल को सूचित करने वाले क्रिया के दस लकार होते हैं।

1. **लट् लकार**–वर्तमान काल – सः पठति।
2. **लिट् लकार**– परोक्षभूत – छिन्नभूतस्तरुः पपात।
3. **लुट् लकार**– अनद्यतन भविष्यत्– श्वः पण्डितनेहरुः आगन्ता।
4. **लृट् लकार**– सामान्य भविष्यत्– अद्य पिता प्रयागं गमिष्यति।
5. **लेट् लकार** – वेदमात्र में प्रयुक्त।
6. **लोट् लकार**– आज्ञार्थक– मह्यं जलमानय।
7. **लङ् लकार**– अनद्यतन भूतकाल – सः एवमब्रवीत्।
8. **लिङ् लकार**– (क) विधिलिङ्– अति सर्वत्र वर्जयेत्
   (ख) आशीर्लिङ्– पुत्रस्ते सुचिरं जीयात्।

9 **लुङ् लकार**– सामान्य भूतकाल– सः पुस्तकम् अपाठीत्।

10. **लृङ् लकार** – हेतुहेतुमद्भूत (क्रियातिपत्ति)– देवश्चेद् अवर्षिष्यत् धान्यम् अभविष्यत्।

धातु-रूप (परस्मैपद)

1. भू (होना)

लट्‌लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लृट्‌लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लङ्‌लकार (भूत काल)

प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लोट्‌लकार (आज्ञार्थक)

प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए अर्थ में)

प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

2. वस् (निवास करना)

लट्‌लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वसति	वसतः	वसन्ति
मध्यम पुरुष	वससि	वसथः	वसथ
उत्तम पुरुष	वसामि	वसावः	वसामः

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	वत्स्यसि	वत्स्यथः	वत्स्यथ
उत्तम पुरुष	वत्स्यामि	वत्स्यावः	वत्स्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अवसत्	अवसताम्	अवसन्
मध्यम पुरुष	अवसः	अवसतम्	अवसत
उत्तम पुरुष	अवसम्	अवसाव	अवसाम

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	वसतु	वसताम्	वसन्तु
मध्यम पुरुष	वस	वसतम्	वसत
उत्तम पुरुष	वसानि	वसाव	वसाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	वसेत्	वसेताम्	वसेयुः
मध्यम पुरुष	वसेः	वसेतम्	वसेत
उत्तम पुरुष	वसेयम्	वसेव	वसेम

3. स्था – तिष्ठ् (ठहरना)

लट्लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

4. पा – पिब् (पीना)

लट्लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

5. नश् (नष्ट होना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	नंक्ष्यति	नंक्ष्यतः	नंक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नंक्ष्यसि	नंक्ष्यथः	नंक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नंक्ष्यामि	नंक्ष्यावः	नंक्ष्यामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

6. आप् (प्राप्त करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

7. इष् (इच्छा करना)

लट्लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

धातु-रूप (आत्मनेपद)

1. वृध् (बढ़ना)

लट्लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धसे	वर्धेसे	वर्धध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
मध्यम पुरुष	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धे	वर्धावहै	वर्धामहै

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
मध्यम पुरुष	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

2. जन् (उत्पन्न करना)

लट्लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

धातुरूप (उभयपद)

1. नी – ले जाना (परस्मैपद)

लट्लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयावः	नयामः

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनयः	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
मध्यम पुरुष	नयेः	नयेतम्	नयेत
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

(आत्मनेपद)

लट्लकार

प्रथम पुरुष	नयते	नयेते	नयन्ते
मध्यम पुरुष	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उत्तम पुरुष	नये	नयावहे	नयामहे

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
मध्यम पुरुष	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उत्तम पुरुष	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
मध्यम पुरुष	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उत्तम पुरुष	अनये	अनयावहि	अनयामहि

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
मध्यम पुरुष	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उत्तम पुरुष	नयै	नयावहै	नयामहै

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
मध्यम पुरुष	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उत्तम पुरुष	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

2. दा (देना)

(परस्मैपद)

लट्लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	ददातु	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

(आत्मनेपद)

लट्लकार

प्रथम पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यम पुरुष	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तम पुरुष	ददे	दद्वहे	दद्महे

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यम पुरुष	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तम पुरुष	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
मध्यम पुरुष	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यम पुरुष	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तम पुरुष	ददै	ददावहै	ददामहै

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यम पुरुष	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उत्तम पुरुष	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

3. ज्ञा (जानना)

(परस्मैपद)

लट्लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानाति	जानीतः	जानन्ति
मध्यम पुरुष	जानासि	जानीथः	जानीथ
उत्तम पुरुष	जानामि	जानीवः	जानीमः

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उत्तम पुरुष	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
मध्यम पुरुष	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उत्तम पुरुष	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	जानातु, जानीतात्	जानीताम्	जानन्तु
मध्यम पुरुष	जानीहि, जानीतात्	जानीतम्	जानीत
उत्तम पुरुष	जानानि	जानाव	जानाम

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
मध्यम पुरुष	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उत्तम पुरुष	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

(आत्मनेपद)

लट्लकार

प्रथम पुरुष	जानीते	जानाते	जानते
मध्यम पुरुष	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उत्तम पुरुष	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लृट्लकार

प्रथम पुरुष	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उत्तम पुरुष	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

लङ्लकार

प्रथम पुरुष	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
मध्यम पुरुष	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उत्तम पुरुष	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

लोट्लकार

प्रथम पुरुष	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
मध्यम पुरुष	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानै	जानावहै	जानामहै

विधिलिङ्लकार

प्रथम पुरुष	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
मध्यम पुरुष	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

4. चुर् (चुराना) (परस्मैपद)

लट्लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चारेयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

(आत्मनेपद)

लट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उत्तम पुरुष	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
मध्यम पुरुष	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
मध्यम पुरुष	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

अभ्यासकार्यम्

1. 'भवामः' धातु रूप का पुरुष व वचन है –
(क) प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) उत्तम पुरुष, बहुवचन (घ) प्रथम पुरुष, एकवचन

2. 'अभवत्' किस लकार का रूप है ?
(क) लृट् (ख) लट् (ग) लङ् (घ) लोट्

3. 'इच्छेत्' रूप किस लकार का है ?
(क) लृट्लकार का (ख) लङ्लकार का (ग) विधिलिङ्लकार का (घ) लोट्लकार का

4. 'भविष्यति' किस लकार का रूप है ?
(क) लट् (ख) लङ् (ग) लृट् (घ) लोट्

5. 'लोट्' लकार सम्बन्धित है–
(क) वर्तमान काल से (ख) भविष्यत् काल से (ग) आज्ञार्थक से (घ) भूतकाल से

6. 'नंक्ष्यति' किस लकार का रूप है ?
(क) लोट् लकार (ख) लृट् लकार (ग) लट् लकार (घ) लङ् लकार

7. 'वसामि' धातुरूप का पुरुष और वचन है –
(क) प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) प्रथम पुरुष, बहुवचन

8. 'अतिष्ठत्' रूप किस लकार का है ?
(क) लट् लकार (ख) लोट् लकार (ग) लङ् लकार (घ) विधिलिङ् लकार

9. 'पा' धातु के लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का सही रूप होगा–
(क) पिबामि (ख) पिबावः (ग) पिबामः (घ) अपिबत्

10. 'अचोरयत्' धातुरूप का पुरुष व वचन है–
(क) प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) उत्तम पुरुष, द्विवचन (घ) इनमें से कोई नहीं

11. 'अभवम्' किस पुरुष और वचन का रूप है ?
(क) प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) मध्यम पुरुष, बहुवचन
(ग) उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) उत्तम पुरुष, द्विवचन

12. 'भवेम' रूप किस लकार का है ?
(क) विधिलिङ्लकार (ख) लोट्लकार (ग) लङ्लकार (घ) लृट्लकार

13. 'आप्नुवन्तु' रूप में पुरुष एवं वचन बताइए।
(क) उत्तम पुरुष, बहुवचन (ख) प्रथम पुरुष, बहुवचन
(ग) मध्यम पुरुष, बहुवचन (घ) उत्तम पुरुष, एकवचन

14. 'ज्ञास्यति' रूप किस लकार का है ?
(क) लट्लकार का (ख) लृटलकार का (ग) लोट्लकार का (घ) लङ्लकार का

15. 'ददति' रूप 'दा' धातु के लट् लकार के किस वचन का है ?
(क) एकवचन (ख) द्विवचन (ग) बहुवचन (घ) इनमें से कोई नहीं

16. 'तिष्ठतु' रूप किस लकार का है ?
(क) लट् लकार (ख) लोट् लकार (ग) लृट् लकार (घ) लङ् लकार

17. 'नयेयुः' रूप किस लकार के किस पुरुष तथा किस वचन का है ?
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
(ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन (घ) विधिलिङ लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

18. 'आसीत्' रूप किस लकार का है ?
(क) लट् लकार (ख) लोट् लकार (ग) लङ् लकार (घ) लृट लकार

19. 'द्रक्ष्यन्ति' रूप किस लकार के किस पुरुष व वचन का है ?
(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
(ग) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (घ) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन

20. 'अभवम्' किस पुरुष व वचन का रूप है ?
(क) प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) उत्तम पुरुष, बहुवचन (घ) मध्यम पुरुष, एकवचन

21. 'भवेत्' किस लकार, पुरुष, वचन का रूप है –
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
(ग) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

22. 'पिबताम्' में कौन-सा लकार, पुरुष व वचन है ?
(क) लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन (ख) लोट लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन
(ग) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन

23. 'पठेत्' किस लकार का रूप है ?
(क) लट् (ख) विधिलिङ् (ग) लृट् (घ) लोट्

24. 'भवथ' किस लकार का रूप है ?
(क) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
(ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन (घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन

25. 'नश्येत्' किस लकार का रूप है ?
(क) लट् लकार, एकवचन (ख) विधिलिङ् लकार, एकवचन
(ग) लोट् लकार, एकवचन (घ) लङ् लकार, एकवचन

■

5 समास

समास का अर्थ है : संक्षेप।

'समसनं समासः' : अर्थात् पदों को जोड़कर उन्हें संक्षिप्त बना देने को समास कहते हैं। **'समसनम् अनेकेषां पदानाम् एकपदीभवनं समासः'**। अर्थात् जब अनेक (एक से अधिक) पद परस्पर मिलकर संक्षिप्त होकर एक पद बन जायें, तो उसे समास कहते हैं।

समास (पदसंक्षेप) करते समय पदों के बीच की विभक्तियाँ हटा दी जाती है और समास होने के बाद संक्षिप्त पद को समस्त पद या सामासिक पद कहते हैं।

विग्रह– 'वृत्त्यर्थावबोधकवाक्यं विग्रहः' अर्थात् समास के अर्थ को स्पष्ट करने वाले अलग पदों को विग्रह पद कहते हैं।

इस प्रकार पदों को जोड़ने को समास और समस्त (सामासिक) पदों को अलग करना 'विग्रह' कहा जाता है। जैसे–

विग्रह पद	**समस्त (सामासिक) पद**
राज्ञः पुत्रः	राजपुत्रः
पीतम् अम्बरं यस्य सः	पीताम्बरः

उपर्युक्त उदाहरणों में राज्ञः पुत्रः और पीतम् अम्बरं यस्य सः– ये दोनों पदसमूह विग्रह पद हैं तथा 'राजपुत्रः' और 'पीताम्बरः'– ये दोनों समस्त (सामासिक) पद हैं।

समास के भेद

लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार समास के पाँच भेद हैं– केवल समास, अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, बहुव्रीहि समास और द्वन्द्व समास।

तत्पुरुष का भेद कर्मधारय समास और कर्मधारय का भेद द्विगु समास को मिलाकर कुल छह भेद कहे जाते हैं–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

इसका उल्लेख अधोलिखित श्लोक में भी प्राप्त होता है।

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं गेहे मे नित्यमव्ययीभावः।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्याम्बहुव्रीहिः।।

अव्ययीभाव समास

'अनव्ययम् अव्ययं भवति इति अव्ययीभावः' अर्थात् अव्ययीभाव का अर्थ है जो पद अव्यय न हों, उसका अव्यय हो जाना। इस प्रकार अव्ययीभाव समास हो जाने के बाद समस्त (समास किया हुआ) पद अव्यय हो जाता है।

अव्ययीभाव समास–'प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिस समास में प्रायः पूर्व पद का अर्थ प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

अव्ययं-विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव–पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु।

हरौ इति	= अधिहरि (हरि में)
कृष्णस्य समीपम्	= उपकृष्णम् (कृष्ण के समीप)
ग्रामस्य समीपम्	= उपग्रामम् (ग्राम के समीप)
नगरस्य समीपम्	= उपनगरम् (नगर के समीप)
गङ्गायाः समीपम्	= उपगङ्गम् (गङ्गा के समीप)
नद्याः समीपम्	= उपनदम्, उपनदि (नदी के समीप)
मद्राणां समृद्धिः	= सुमद्रम् (मद्रों की समृद्धि)
यवनानां व्यृद्धिः	= दुर्यवनम् (यवनों का नाश)
मक्षिकाणाम् अभावः	= निर्मक्षिकम् (मक्खियों का अभाव)
विघ्नानाम् अभावः	= निर्विघ्नम् (विघ्नों का अभाव)
हिमस्य अत्ययः	= अतिहिमम् (हिम का नाश)
निद्रा सम्प्रति न युज्यते	= अतिनिद्रम् (निद्रा का अनुचित समय)
हरिशब्दस्य प्रकाशः	= इतिहरि (हरि शब्द का प्रादुर्भाव)
विष्णोः पश्चात्	= अनुविष्णु (विष्णु के पीछे)
शक्तिम् अनतिक्रम्य	= यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)
रूपस्य योग्यम्	= अनुरूपम् (रूप के योग्य)
दिनं दिनं प्रति	= प्रतिदिनम् (प्रत्येक दिन)
दिशं दिशं प्रति	= प्रतिदिशम् (प्रत्येक दिशा में)
एकम् एकं प्रति	= प्रत्येकम् (प्रत्येक को)
अक्षम् अक्षम् प्रति	= प्रत्यक्षम् (इन्द्रियों से होने वाला ज्ञान)
ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	= अनुज्येष्ठम् (ज्येष्ठ के क्रम के अनुसार)
चक्रेण युगपत्	= सचक्रम् (चक्र के साथ)
हरेः सादृश्यम्	= सहरि (हरि के समान)

क्षत्राणां सम्पत्तिः = सक्षत्रम् (क्षत्रियों की सम्पत्ति)

तृणम् अपि अपरित्यज्य = सतृणम् (तिनके को भी न छोड़कर)

बालकाण्डपर्यन्तम् = सबालकाण्डम् (बालकाण्ड तक)

नदीभिश्च—नदी वाचक शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। यथा—

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम् (पाँच गंगाओं का समाहार)

द्वयोः यमुनयोः समाहारः = द्वियमुनम् (दो यमुनाओं का समाहार)

द्विगु समास

द्विगु समास—'संख्यापूर्वो द्विगुः' अर्थात् जब तत्पुरुष समास में पूर्व (पहला) पद संख्यावाचक होता है तो उसे द्विगु समास कहते हैं।

समाहार द्विगु समास—समाहार (समूह) अर्थ में संख्यावाचक पद का उत्तर पद के साथ समास होने के कारण इसे समाहार द्विगु समास कहते हैं। यथा—

पञ्चानां गवां समाहारः = पञ्चगवम् (पाँच गायों का समूह)

पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी (पाँच वटवृक्षों का समूह)

पञ्चानां मूलानां समाहारः = पञ्चमूली (पाँच मूलों का समूह)

तिसृणां वेणीनां समाहारः = त्रिवेणी (तीन जलधाराओं का समूह)

त्रयाणां फलानां समाहार = त्रिफला (तीन फलों का समूह)

त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी (तीन लोकों का समूह)

त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम् (तीन भुवनों का समूह)

पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः = पञ्चामृतम् (पाँच अमृतों का समूह)

पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम् (पाँच पात्रों का समूह)

शतानाम् अब्दानां समाहारः = शताब्दी (सौ वर्षों का समूह)

अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः = अष्टाध्यायी (आठ अध्यायों का समूह)

सप्तानाम् अह्नां समाहारः = सप्ताहः (सात दिनों का समूह)

नवानां रात्रीणां समाहारः = नवरात्रम् (नौ रातों का समूह)

बहुव्रीहि समास

बहुव्रीहि समास—प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः अर्थात् जिस समास में प्रायः समस्यमान (समास किये जाने वाले) पदों से भिन्न किसी अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। विग्रह में अन्य पद को 'यस्य सः' इत्यादि से सूचित करते हैं। यथा—लम्बम् उदरं यस्य सः = लम्बोदरः (लम्बा पेट हो जिसका वह), यहाँ 'लम्बम्' और 'उदरम्' दोनों समस्यमान पद किसी (यस्य सः) अन्य (लम्बे पेटवाला, गणेश) की प्रधानता बता रहे हैं। बहुव्रीहि समास के निम्नलिखित भेद बताये गये हैं।

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि– जिस बहुव्रीहि समास के समस्यमान दोनों पदों में समान विभक्तियाँ होती हैं, उसे समानाधिकरण बहुव्रीहि समास कहते हैं। यथा–

पीतम् अम्बरं यस्य सः	= पीताम्बरः (पीला वस्त्र हो जिसका वह, श्रीकृष्ण)
श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	= श्वेताम्बरः (श्वेत वस्त्र है जिसका वह, साधु)
दिक् अम्बरं यस्य सः	= दिगम्बरः (दिशा ही वस्त्र हो जिसकी वह शिव)
लम्बम् उदरं यस्य सः	= लम्बोदरः (लम्बा है उदर जिसका वह, गणेश)
जितानि इन्द्रियाणि येन सः	= जितेन्द्रियः (जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने वह मुनि)
नीलः कण्ठः यस्य सः	= नीलकण्ठः (नीला है कण्ठ जिसका वह, शिव)
चत्वारि आननानि यस्य सः	= चतुराननः (चार मुख हों जिसके वह, ब्रह्मा)
पञ्च आननानि यस्य सः	= पञ्चाननः (पाँच मुख हों जिसके वह, शिव)
षड् आननानि यस्य सः	= षडाननः (छह मुख हों जिसके वह, कार्तिकेय)
दश आननानि यस्य सः	= दशाननः (दस मुख हों जिसके वह, दशानन)
लब्धा प्रतिष्ठा येन सः	= लब्धप्रतिष्ठः (प्राप्त की है प्रतिष्ठा जिसने वह, प्रतिष्ठित)
प्राप्तम् उदकं यं सः	= प्राप्तोदकः (प्राप्त है जल जिसको वह)
महान् आशय यस्य सः	= महाशयः (महान् आशय हो जिसका वह)

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि–जिस बहुव्रीहि समास के समस्यमान दोनों पदों में भिन्न–भिन्न विभक्तियाँ होती हैं, उसे व्यधिकरण बहुव्रीहि समास कहते हैं। यथा–

चक्रं पाणौ यस्य सः	= चक्रपाणिः (चक्र है पाणि में जिसके वह, विष्णु)
शूलं पाणौ यस्य सः	= शूलपाणिः (शूल है पाणि में जिसके वह, शिव)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	= चन्द्रशेखरः (चन्द्र है सिर पर जिसके वह, शिव)
दाम उदरे यस्य सः	= दामोदरः (रस्सी है उदर पर जिसके वह, श्रीकृष्ण)
पीयूषं पाणौ यस्य सः	= पीयूषपाणि (पीयूष है पाणि में जिसके यह, विष्णु)
गजस्य आननम् इव आननं यस्य सः	= गजाननः (हाथी के मुख के समान मुख हो जिसका वह, गणेश)
मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा	= मृगनयनी (मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके वह, स्त्री)

(ग) तुल्ययोग बहुव्रीहि समास–जिस बहुव्रीहि समास में 'साथ अर्थ में' सह (स) का दूसरे पद के साथ समास होता है जिसे क्रिया के साथ अन्वय होने पर समान योग होने के कारण तुल्ययोग बहुव्रीहि समास कहते हैं। यथा–

अर्जुनेन सहितः	= सार्जुनः (अर्जुन के साथ)
लक्ष्मणेन सह	= सलक्ष्मणः (लक्ष्मण के साथ)
भार्यया सह	= सभार्यः (पत्नी सहित)
पत्न्या सह	= सपत्नीकः (पत्नी सहित)
पुत्रेण सहिता	= सपुत्रा (पुत्र सहित स्त्री)

■

6 कारक एवं विभक्ति

संस्कृत भाषा में कारकों का बहुत ही महत्त्व है, कारकों के ज्ञान के बिना संस्कृत भाषा के यथार्थस्वरूप का ज्ञान सम्भव नही है। **"क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्"** अथवा **"क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्"** अर्थात् जो क्रिया का जनक होता है या क्रिया का जिसमें अन्वय होता है, उसे कारक कहते हैं। कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, ये कारक छह होते हैं। सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता है।

कर्ता कर्म च करणं च सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्।।

विभक्ति–'संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः' जिसके द्वारा संख्या एवं कारक का बोध कराया जाता है, उसे विभक्ति कहते हैं। कारकों के अर्थ का बोध कराने वाली विभक्तियाँ होती हैं। विभक्तियाँ सात होती हैं– प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, सम्बोधन। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

कर्ताकारक, प्रथमा विभक्ति

स्वतन्त्रः कर्ता– क्रिया को स्वतन्त्र रूप से करने वाले को कर्ता कहते हैं। कर्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

यथा– राम घर जाता है। रामः गृहं गच्छति।

यहाँ गृहगमन क्रिया करने में राम स्वतन्त्र है, अतः राम कर्ता हुआ तथा कर्ता में प्रथमा विभक्ति का विधान किया गया, जिससे 'रामः' बन जाता है।

सम्बोधने च– सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है। स्वाभिमुखीकरण को सम्बोधन कहते हैं। यथा– हे राम! मां पाहि।

कर्मकारक, द्वितीया विभक्ति

कर्तुरीप्सिततमं कर्म– कर्ता का अपनी क्रिया के द्वारा जो सर्वाधिक अभीष्ट होता है, उसकी **'कर्म'** संज्ञा होती है।

कर्मणि द्वितीया– अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'को' होता है।

यथा– रमेश कानपुर जाता है। रमेशः कर्णपुरं गच्छति।

इस उदाहरण में रमेश की गमन क्रिया के द्वारा कानपुर जाना अभीष्ट है, अतः कानपुर की कर्मसंज्ञा **'कर्तुरीप्सिततमं कर्म'** सूत्र से होकर **'कर्मणि द्वितीया'** से द्वितीया विभक्ति का विधान किया जाता है।

उदाहरण–

राम रावण को मारते हैं।	रामः रावणं हन्ति।
सीता भोजन पकाती है।	सीता भोजनं पचति।
हरि भक्त का उद्धार करते हैं।	हरिः भक्तं समुद्धरति।
अर्जुन गीता पढ़ता है।	अर्जुनः गीतां पठति।

करण कारक, तृतीया विभक्ति

साधकतमं करणम्– किसी कार्य को करने में जो अत्यन्त सहायक होता है, उसे 'करण' कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'से' या 'के द्वारा' होता है।

कर्तृकरणयोस्तृतीया– अनुक्त कर्ता एवं करण में तृतीया विभक्ति होती है। यथा– रामः नेत्राभ्यां पश्यति। यहाँ देखने का कार्य नेत्रों से हो रहा है, अतः नेत्र करण कारक है, करणसंज्ञक होने के कारण **'कर्तृकरणयोस्तृतीया'** सूत्र से तृतीया विभक्ति हो जाती है।

उदाहरण–

वह वाहन से जाता है।	सः वाहनेन गच्छति।
मैं हाथ से लिखता हूँ।	अहं हस्तेन लिखामि।
बालक गेंद से खेलता है।	बालकः कन्दुकेन क्रीडति।

सम्प्रदान कारक, चतुर्थी विभक्ति

कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्– कर्ता दान कर्म के द्वारा जिसको चाहता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। (अपने अधिकार को समाप्त करके दूसरे के अधिकार को स्थापित करना सम्प्रदान कहलाता है) इसका चिह्न 'के लिये' होता है।

चतुर्थी सम्प्रदाने– सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

यथा– राघव विप्र को गाय देता है।   राघवः विप्राय गां ददाति।

यहाँ कर्ता राघव 'गाम्' (गाय) इस कर्म के द्वारा 'विप्र' को चाहता है, अतः विप्र की सम्प्रदान संज्ञा होती है तथा चतुर्थी सम्प्रदाने से विप्र में चतुर्थी विभक्ति होने पर 'विप्राय' बन जाता है।

उदाहरण–

राजा भिक्षुक को भिक्षा देता है।	राजा भिक्षुकाय भिक्षां ददाति।
रमा निर्धन को वस्त्र देती है।	रमा निर्धनाय वस्त्रं ददाति।
मैं छात्र को पुस्तक देती हूँ।	अहं छात्राय पुस्तकं ददामि।
गीता सीता को फल देती है।	गीता सीतायै फलं ददाति।

अपादान कारक, पञ्चमी विभक्ति

ध्रुवमपायेऽपादानम्– पृथक् (अलग) होने की क्रिया में जो स्थिर होता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है। इसका चिह्न 'से' (अलग होने के अर्थ में) होता है।

अपादाने पञ्चमी– अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

यथा– वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

इस उदाहरण में पत्ते वृक्ष से अलग हो रहे हैं, अतः वृक्ष की अपादान संज्ञा होकर **'अपादाने पञ्चमी'** से पञ्चमी विभक्ति का विधान किया जाता है।

उदाहरण–

आकाश से जल गिरता है।	आकाशात् जलं पतति।
वृक्ष से फल गिरता है।	वृक्षात् फलं पतति।
मोहन गाँव से जाता है।	मोहनः ग्रामात् गच्छति।
बालक विद्यालय से निकलता है।	बालकः विद्यालयात् निर्गच्छति।

सम्बन्ध, षष्ठी विभक्ति

षष्ठी शेषे– कारक एवं प्रातिपदिकार्थ से भिन्न स्वस्वामिभावादि सम्बन्ध शेष कहलाता है। शेष में षष्ठी विभक्ति होती है। सम्बन्ध कारक नहीं होता है, क्योंकि इसमें क्रिया का अन्वय नहीं होता है।

यथा– रामस्य गृहम्।
भारतस्य राजधानी।
मम विद्यालयः।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में षष्ठ्यन्त पदों में सम्बन्ध में षष्ठी का विधान किया गया है।

अधिकरण कारक, सप्तमी विभक्ति

आधारोऽधिकरणम्– कर्ता या कर्म के द्वारा क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं।

अधिकरण तीन प्रकार का होता है– औपश्लेषिक, वैषयिक, अभिव्यापक।

सप्तम्यधिकरणे च– अधिकरण में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

यथा– देवदत्त चटाई पर बैठता है। देवदत्तः कटे तिष्ठति।

यहाँ पर चटाई आधार है, अतः उसकी **'आधारोऽधिकरणम्'** से अधिकरण सञ्ज्ञा होकर **'सप्तम्यधिकरणे च'** से सप्तमी विभक्ति का विधान किया जाता है।

उदाहरण– वह गाँव में रहता है।	सः ग्रामे वसति।
छात्र विद्यालय में पढता है।	छात्रः विद्यालये पठति।
सीता नदी में स्नान करती है।	सीता नद्यां स्नानं करोति।
मोहन घर में रहता है।	मोहनः गृहे वसति।

अभ्यासकार्यम्

1. कारक के भेद होते हैं।
   (क) पाँच (ख) छह (ग) सात (घ) आठ
2. कर्ता में कौन सी विभक्ति होती है?
   (क) पञ्चमी (ख) द्वितीया (ग) प्रथमा (घ) सप्तमी
3. 'रामः ग्रामं गच्छति' में राम मे कौन सी विभक्ति है।
   (क) द्वितीया (ख) पञ्चमी (ग) तृतीया (घ) प्रथमा
4. करण में किस विभक्ति का प्रयोग होता है।
   (क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) द्वितीया (घ) कोई नहीं
5. 'नेत्राभ्यां पश्यति' इस वाक्य में तृतीया विभक्ति करने वाला सूत्र है–
   (क) कर्तृकरणयोस्तृतीया (ख) कर्मणि द्वितीया (ग) सप्तम्यधिकरणे च (घ) इनमें से कोई नहीं
6. 'साधकतमं करणम्' किस विभक्ति का सूत्र है–
   (क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) सप्तमी
7. 'वृक्षात् पत्राणि पतन्ति' में किस सूत्र से पञ्चमी होती है।
   (क) कर्तृकरणयोस्तृतीया (ख) कर्मणि द्वितीया (ग) सप्तम्यधिकरणे च (घ) अपादाने पञ्चमी
8. अधिकरण में कौन सी विभक्ति होती है?
   (क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) सप्तमी
9. 'काव्येषु नाटकम्' यहाँ काव्येषु में कौन सी विभक्ति है?
   (क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) सप्तमी
10. अधिकरण कितने प्रकार का होता है?
   (क) एक (ख) तीन (ग) दो (घ) सात
11. इनमें से कारक नहीं होता है।
   (क) कर्ता (ख) करण (ग) सम्प्रदान (घ) शेष

■

7 प्रत्यय

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं – कृत् एवं तद्धित।

कृत् प्रत्यय हमेशा धातुओं में जुड़ते है जबकि तद्धित प्रत्यय किसी संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया में जुड़ते हैं।

1. 'कृत्' प्रत्यय

कृत् प्रत्यय धातुओं में जुड़ते हैं तथा इनसे बने पदों को कृदन्त कहा जाता है। कृदन्त शब्दों को तीन प्रकार से विभाजित किया जा सकता है। कुछ कृदन्त अव्यय कहलाते हैं, कुछ विशेषण और कुछ संज्ञा।

(क) क्त प्रत्यय – भूतकाल में धातुमात्र से 'क्त' प्रत्यय होता है। क्त प्रत्यय में **'त'** मात्र शेष बचता है।

यथा–	उसने पुस्तक पढ़ी।	तेन पुस्तकं पठितम्।
	राम ने बाण से रावण को मारा।	रामेण बाणेन हतो बाली।
	मैंने पढ़ा।	मया पठितम्।
	मैंने खाया।	मया भुक्तम्।
	राम ने गीता लिखी।	रामेण लिखिता गीता।

नियम– 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग कर्मवाच्य एवं भाववाच्य की क्रियाओं में होता है। यहाँ कर्ता में तृतीया विभक्ति एवं कर्म में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। क्रिया में कर्मानुसार लिङ्ग वचन होते हैं।

'क्त' प्रत्ययान्त शब्द

धातु + क्त	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
कृ + क्त	कृतः	कृता	कृतम्
ज्ञा + क्त	ज्ञातः	ज्ञाता	ज्ञातम्
पा + क्त	पीतः	पीता	पीतम्
पच् + क्त	पक्वः	पक्वा	पक्वम्
ग्रह् + क्त	गृहीतः	गृहीता	गृहीतम्
हन् + क्त	हतः	हता	हतम्
वच् + क्त	उक्तः	उक्ता	उक्तम्

भिद् + क्त	भिन्नः	भिन्ना	भिन्नम्
शुष् + क्त	शुष्कः	शुष्का	शुष्कम्
दृश् + क्त	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्

(ख) 'क्तवतु' प्रत्यय— 'क्तवतु' प्रत्यय भूतकाल में धातुमात्र से होता है। क्तवतु प्रत्यय कर्ता अर्थ में होता है। क्तवतु में 'क्' और 'उ' की इत्सञ्ज्ञा एवं लोप होने से 'तवत्' शेष बचता है। 'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है अतः कर्ता के अनुसार ही 'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्दों में लिङ्ग और वचन का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण –	राम ने रावण को मारा।	रामः रावणं हतवान्।
	बालक गाँव को गया।	बालकः ग्रामं गतवान्।
	उसने जल पिया।	सः जलं पीतवान्।
	उसने गीता पढ़ी।	सा गीतां पठितवती।
	रमा ने रामायण सुनी।	रमा रामायणं श्रुतवती।
	मैंने भोजन किया।	अहं भोजनं कृतवान्।

'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्द

धातु + क्तवतु	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
श्रु + क्तवतु	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
कृ + क्तवतु	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
मृ + क्तवतु	मृतवान्	मृतवती	मृतवत्
दृश् + क्तवतु	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्
प्रच्छ + क्तवतु	पृष्टवान्	पृष्टवती	पृष्टवत्
वच् + क्तवतु	उक्तवान्	उक्तवती	उक्तवत्
वप् + क्तवतु	उप्तवान्	उप्तवती	उप्तवत्
ज्ञा + क्तवतु	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
पा + क्तवतु	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
हृ + क्तवतु	हृतवान्	हृतवती	हृतवत्

(ग) 'क्त्वा' प्रत्यय– 'क्त्वा' प्रत्यय से निर्मित पदों को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं, क्योंकि वे प्रधान क्रिया से पहले की क्रिया को द्योतित करते हैं। जब एक कर्ता प्रथमतः एक क्रिया को समाप्त करके दूसरी क्रिया करता है तब 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा– ''बालकः भोजनं करोति, विद्यालयं गच्छति''।

'बालकः भोजनं कृत्वा विद्यालयं गच्छति'।

इसमें बालक दो कार्य कर रहा है। पहले वह भोजन करता है फिर वह विद्यालय जाता है। यहाँ भोजन क्रिया पहले हुई, अतः **'करोति'** के स्थान पर कृ धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय हुआ है।

नियम– क्त्वा प्रत्यय धातु के बाद लगता है, इसमें केवल 'त्वा' शेष रहता है।

'क्त्वा' प्रत्ययान्त शब्द

धातु + प्रत्यय	क्त्वान्त रूप	अर्थ
पठ् + क्त्वा	पठित्वा	पढ़ करके
गम् + क्त्वा	गत्वा	जाकर
हस् + क्त्वा	हसित्वा	हंसकर
नम् + क्त्वा	नत्वा	प्रणाम करके
पच् + क्त्वा	पक्त्वा	पकाकर
स्ना + क्त्वा	स्नात्वा	स्नान करके
ज्ञा + क्त्वा	ज्ञात्वा	जानकर
दृश् + क्त्वा	दृष्ट्वा	देखकर
स्वप् + क्त्वा	सुप्त्वा	सोकर
छिद् + क्त्वा	छित्त्वा	काटकर

(घ) 'ल्यप्' प्रत्यय– 'ल्यप्' प्रत्यय भी पूर्वकालिक क्रिया को द्योतित करता है। 'ल्यप्' प्रत्यय धातु में तब लगता है जब धातु उपसर्ग से युक्त हो। ल्यप् का केवल 'य' शेष रहता है।

'ल्यप्' प्रत्ययान्त शब्द

उपसर्ग	धातु	प्रत्यय	प्रत्ययान्त पद
अनु	भू	ल्यप्	अनुभूय
प्र	नम्	ल्यप्	प्रणम्य
उत्	तृ	ल्यप्	उत्तीर्य
प्र	कृ	ल्यप्	प्रकीर्य
वि	नी	ल्यप्	विनीय
आ	गम्	ल्यप्	आगम्य/आगत्य
अनु	कृ	ल्यप्	अनुकृत्य

(ङ) 'शतृ' एवं 'शानच्' प्रत्यय– वर्तमान काल में धातु से लट्–स्थानीय 'तिप्' 'त'-प्रत्यय के स्थान पर 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। भविष्यत् काल में धातु से होने वाले लृट्-स्थानीय 'तिप्' एवं 'त' प्रत्यय के स्थान पर भी 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। परस्मैपद धातुओं से 'शतृ' प्रत्यय और आत्मनेपद धातुओं से 'शानच्' प्रत्यय होता है तथा उभयपद धातुओं से 'शतृ' और 'शानच्' दोनों होते हैं।

'शतृ' प्रत्ययान्त और 'शानच्' प्रत्ययान्त शब्द विशेषण शब्द कहलाते हैं।

'शतृ' प्रत्यय में 'श्' तथा 'ऋ' का लोप होने पर 'अत्' शेष होता है–

'शतृ' प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द

धातु + शतृ	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
क्रीड् + शतृ	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
पत् + शतृ	पतन्	पतन्ती	पतत्
पठ् + शतृ	पठन्	पठन्ती	पठत्
गम् + शतृ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
हस् + शतृ	हसन्	हसन्ती	हसत्
दृश् + शतृ	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्

1. बालकः हसन् क्रीडति। बालक हँसता हुआ खेलता है।
2. रामः पश्यन् गच्छति। राम देखते हुए जाता है।
3. सा कथयन्ती हसति। वह कहते हुए हँसती है।
4. सः शृण्वन् आगच्छति। वह सुनते हुए आता है।
5. बालिका स्मरन्ती गच्छति। बालिका स्मरण करती हुई जाती है।

'शानच्' प्रत्यय में 'श्' और 'च्' का लोप होने पर 'आन' शेष रहता है।

'शानच्' प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द

धातु + शानच्	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
यत् + शानच्	यतमानः	यतमाना	यतमानम्
मुद् + शानच्	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
सेव् + शानच्	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
लभ् + शानच्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
शी + शानच्	शयानः	शयाना	शयानम्
भज् + शानच्	भजमानः	भजमाना	भजमानम्
पच् + शानच्	पचमानः	पचमाना	पचमानम्

दा	+ शानच्	ददानः	ददाना	ददानम्
कृ	+ शानच्	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
ब्रू	+ शानच्	ब्रुवाणः	ब्रुवाणा	ब्रुवाणम्

वाक्य–प्रयोग

1. माँगते हुए पुरुषों का कोई आदर नहीं करता।
   याचमानानां पुरुषाणां न कश्चित् आदरं करोति।
2. यत्न करते हुए बालक बढ़ता है।
   यतमानः बालकः वर्धते।
3. पकाती हुई बालिका जाती है।
   पचमाना बालिका गच्छति।
4. दान देते हुए राम वन को गये है।
   ददानः रामः वनं गतः।

(च) 'तुमुन्' प्रत्यय– 'तुमुन्' प्रत्ययान्त शब्द 'अव्यय' कहलाते हैं। 'तुमुन्' प्रत्यय धातु से जुड़कर चतुर्थी विभक्ति का अर्थ 'के लिए' प्रदान करता है। जैसे– 'गम्' धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय लगकर 'गन्तुम्' पद बनता है, जिसका अर्थ है 'जाने के लिए'।

1.	बालिका पढ़ने के लिए जाती है।	बालिका पठितुं गच्छति।
2.	राजा देने के लिए आते हैं।	राजा दातुम् आगच्छति।
3.	रमा स्नान के लिए तट पर जाती है।	रमा स्नातुं तटं गच्छति।
4.	बालक खेलने के लिए बाहर जाता है।	बालकः क्रीडितुं बहिः गच्छति।
5-	गुरु बोलना चाहते हैं।	गुरुः वक्तुम् इच्छति।

धातु	**+ तुमुन्**	**शब्द**
भू	+ तुमुन्	भवितुम्
पा	+ तुमुन्	पातुम्
दृश्	+ तुमुन्	द्रष्टुम्
दा	+ तुमुन्	दातुम्
वन्द्	+ तुमुन्	वन्दितुम्
गै	+ तुमुन्	गातुम्
खाद्	+ तुमुन्	खादितुम्
क्रीड्	+ तुमुन्	क्रीडितुम्

(छ) 'क्तिन्' प्रत्यय– धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय जोड़ने से भाववाचक स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं। 'क्तिन्' में 'ति' मात्र शेष रहता है।

यथा–	**धातु + क्तिन्**	**शब्द**
	मन् + क्तिन्	मतिः
	गै + क्तिन्	गीतिः
	पुष् + क्तिन्	पुष्टिः
	बुध् + क्तिन्	बुद्धिः
	श्रु + क्तिन्	श्रुतिः
	स्तु + क्तिन्	स्तुतिः
	गम् + क्तिन्	गतिः

(ज) 'अनीयर्' प्रत्यय– 'अनीयर्' प्रत्यय में 'अनीय' शेष रहता है। यह प्रत्यय 'चाहिए' के अर्थ में होता है। इस प्रत्यय का प्रयोग सकर्मक धातु से कर्मवाच्य में एवं अकर्मक धातु से भाववाच्य में किया जाता है। कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया एवं कर्म में प्रथमा होती है। क्रिया का लिङ्ग वचन कर्मानुसार होता है। भाववाच्य के कर्ता में तृतीया तथा क्रिया एकवचन में होती है।

अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द

	पुं0	**स्त्री0**	**नपुं0**
गम् + अनीयर्	गमनीयः	गमनीया	गमनीयम्
कृ + अनीयर्	करणीयः	करणीया	करणीयम्
पठ् + अनीयर्	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्
चि + अनीयर्	चयनीयः	चयनीया	चयनीयम्
लिख् + अनीयर्	लेखनीयः	लेखनीया	लेखनीयम्
कथ् + अनीयर्	कथनीयः	कथनीया	कथनीयम्
दृश् + अनीयर्	दर्शनीयः	दर्शनीया	दर्शनीयम्

2. तद्धित प्रत्यय

तद्धित प्रत्यय धातुओं से न होकर शब्दों से होते हैं।

शब्द दो प्रकार के होते हैं–(1) स्त्री प्रत्ययान्त शब्द, (2) प्रातिपदिक शब्द।

प्रातिपदिक शब्द चार प्रकार के होते हैं–

1. अर्थवान्, अव्युत्पन्न शब्द (डित्थ, डवित्थ)
2. कृत्प्रत्ययान्त शब्द (कारक, कर्ता, कार्य)
3. तद्धित प्रत्ययान्त शब्द (शैव, मनुष्य, धनवान्)
4. समस्त (समासयुक्त) शब्द (राजपुरुष, उपनगर)

इसी प्रकार स्त्री-प्रत्ययान्त शब्दों और चारों प्रकार के प्रातिपादिकों से तद्धित प्रत्यय लगते हैं।

(क) 'मतुप्' प्रत्यय– 'मतुप्' प्रत्यय में 'मत्' शेष रहता है। 'मतुप्'– वह उसका है अथवा वह उसमें है। इन दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है। यह प्रत्यय 'वाला' अर्थ को प्रकट करता है।

'मतुप्' प्रत्ययान्त शब्द

गो	+ मतुप्	गोमान्	गौ वाला
बुद्धि	+ मतुप्	बुद्धिमान्	बुद्धि वाला
धी	+ मतुप्	धीमान्	बुद्धि वाला
आयुः	+ मतुप्	आयुष्मान्	दीर्घायु वाला
धन	+ मतुप्	धनवान्	धन वाला
गुण	+ मतुप्	गुणवान्	गुण वाला
रस	+ मतुप्	रसवान्	रस वाला
रूप	+ मतुप्	रूपवान्	रूप वाला

इस प्रकार ये रूप तीनों लिङ्गों मे चलते हैं।

(ख) 'इनि' प्रत्यय– अकारान्त शब्दों के पश्चात् 'इनि' प्रत्यय 'वान्' या 'वाला' अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा–

चक्र	+ इनि	चक्रिन्	चक्री
धन	+ इनि	धनिन्	धनी
बल	+ इनि	बलिन्	बली
दुःख	+ इनि	दुःखिन्	दुःखी

गुण	+ इनि	गुणिन्	गुणी
कर	+ इनि	करिन्	करी
हस्त	+ इनि	हस्तिन्	हस्ती
दण्ड	+ इनि	दण्डिन्	दण्डी
शिखा	+ इनि	शिखिन्	शिखी
सुख	+ इनि	सुखिन्	सुखी
कर्म	+ इनि	कर्मिन्	कर्मी
प्रणय	+ इनि	प्रणयिन्	प्रणयी

(ग) 'त्व' तथा 'तल्' प्रत्यय— भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्दों में 'त्व' एवं 'तल्' प्रत्यय लगाए जाते हैं। 'त्व' प्रत्ययान्त शब्द सदैव नपुंसकलिङ्ग में होते हैं और 'तल्' प्रत्ययान्त शब्द सदैव स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। जैसे—

शब्द	**+ प्रत्यय**	**नपुंसकलिङ्ग शब्द**	**शब्द**	**+ प्रत्यय**	**स्त्रीलिङ्ग शब्द**
कुशल	+ त्व	कुशलत्वम्	कुशल	+ तल्	कुशलता
गुरु	+ त्व	गुरुत्वम्	गुरु	+ तल्	गुरुता
मित्र	+ त्व	मित्रत्वम्	मित्र	+ तल्	मित्रता
देव	+ त्व	देवत्वम्	देव	+ तल्	देवता
सुन्दर	+ त्व	सुन्दरत्वम्	सुन्दर	+ तल्	सुन्दरता
मनुष्य	+ त्व	मनुष्यत्वम्	मनुष्य	+ तल्	मनुष्यता

(घ) 'ठक्' प्रत्यय— शब्द के साथ 'ठक्' प्रत्यय जुड़कर 'ठक्' को 'इक' हो जाता है। शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि हो जाती है। यथा – 'अ' का 'आ', 'इ' का 'ऐ' और 'उ' का 'औ' हो जाता है—

शब्द	**+**	**ठक् (इक)**	**प्रत्ययान्त रूप**
धर्म	+	ठक् (इक)	धार्मिकः
अस्ति	+	ठक् (इक)	आस्तिकः
अश्व	+	ठक् (इक)	आश्विकः
सप्ताह	+	ठक् (इक)	साप्ताहिकः
संस्कृति	+	ठक् (इक)	सांस्कृतिकः
साहित्य	+	ठक् (इक)	साहित्यिकः
लोक	+	ठक् (इक)	लौकिकः
दिन	+	ठक् (इक)	दैनिकः

(ङ) 'टाप्' प्रत्यय– 'टाप्' प्रत्यय में 'ट्' और 'प्' का लोप हो जाता है। केवल 'आ' शेष बचता है। जैसे–

शब्द + प्रत्यय	प्रत्ययान्त रुप
चटक + टाप् (आ)	चटका
अज + टाप् (आ)	अजा
प्रथम + टाप् (आ)	प्रथमा
सुत + टाप् (आ)	सुता
शूद्र + टाप् (आ)	शूद्रा

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्ययों के नाम लिखिए –

कृतः	पीतः	दृष्टः	हतः
श्रुतवान्	दृष्टवान्	ज्ञातवान्	पीतवान्
पठन्	श्रुत्वा	स्नात्वा	हसित्वा
अनुभूय	आगत्य	प्रणम्य	पुरस्कृत्य
यतमानः	मोदमानः	शयानः	कुर्वाणः
द्रष्टुम्	दातुम्	क्रीडितुम्	नेतुम्
नीतिः	श्रुतिः	स्तुतिः	पुष्टिः
करणीयः	पठनीयः	दर्शनीयः	वदनीयः
बुद्धिमान्	धनवान्	ज्ञानवान्	रूपवान्
चक्री	करी	दण्डी	सुखी
देवत्वम्	धार्मिकः	लौकिकः	अजा

2. सही विकल्प चुनिए –

(i) 'गतिः' में कौन-सा प्रत्यय है ?
(क) क्त्वा (ख) क्तिन् (ग) क्तः (घ) क्तवतु

(ii) 'दृष्टः' में कौन-सा प्रत्यय है ? सही विकल्प चुनकर लिखिए –
(क) क्त (ख) क्त्वा (ग) क्तवतु (घ) यत्

(iii) 'नीतिः' में कौन-सा प्रत्यय है ?
(क) क्त (ख) क्तिन् (ग) शतृ (घ) क्त्वा

(iv) 'गच्छन्' में कौन-सा प्रत्यय है ?
(क) शानच् (ख) शतृ (ग) क्तिन् (घ) तुमुन्

(v) 'हसितुम्' में कौन-सा प्रत्यय है –
(क) क्त (ख) शतृ (ग) तुमुन् (घ) ल्यप्

■

8 वाच्य–परिवर्तन

सार्थक शब्द समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य ही भाषा की न्यूनतम सार्थक इकाई है। संस्कृत में कर्ता, कर्म और भाव की प्रधानता के आधार पर तीन प्रकार के वाच्य होते हैं – कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

1. कर्तृवाच्य– जब वाक्य की क्रिया कर्ता के अनुसार होती है, तो ऐसे वाक्य को कर्तृवाच्य कहते हैं।

उदाहरण– 'रामः ग्रामं गच्छति' इस वाक्य में 'गच्छति' क्रिया, कर्ता 'रामः' के अनुसार प्रथम पुरुष एकवचन की है।

2. कर्मवाच्य– इसमें कर्त्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। क्रिया में यक् (य) प्रत्यय आत्मनेपद के रूप में कर्म के अनुसार लिखते हैं। कर्मवाच्य में क्रियापद कर्म के अनुसार होता है। क्रियापद के वचन और पुरुष, कर्म के वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं।

उदाहरण – मया ग्रन्थः पठ्यते।

3. भाववाच्य– इसमें कर्म का सदा अभाव रहता है और क्रिया की प्रधानता रहती है। इसमें कर्त्ता में तृतीया और क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन की ही होती है, क्रिया सदा आत्मनेपद में होती है। भाववाच्य में भाव या क्रिया की प्रधानता रहती है, कर्त्ता की प्रधानता नहीं होती है।

उदाहरण– तेन क्रीड्यते।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन के नियम –

1. कर्त्ता को तृतीया विभक्ति में परिवर्तित किया जाता है।

2. कर्म को प्रथमा विभक्ति में परिवर्तित किया जाता है।

3. क्रिया के मूलरूप में 'यक्' (य) प्रत्यय जोड़कर उसका रूप आत्मनेपद की धातुओं के समान चलाना चाहिए तथा कर्म के पुरुष एवं वचन के अनुसार क्रिया को निश्चित करना चाहिए–

जैसे– 'त्वं वृक्षं पश्यसि' इस वाक्य में कर्त्ता 'त्वं' को तृतीया में परिवर्तित करने पर 'त्वया' हो जाता है। 'पश्यसि' क्रिया का मूलरूप 'दृश्' है। 'दृश्' में 'यक्' जोड़ने पर 'दृश्य' होगा। इसका रूप आत्मनेपद धातु 'लभ्' की तरह चलाने पर लट्लकार प्रथम पुरुष, एकवचन में 'दृश्यते' होगा। कर्म 'वृक्षम्' के स्थान पर प्रथमा विभक्ति में 'वृक्षः' होगा। इस प्रकार कर्मवाच्य का वाक्य 'त्वया वृक्षः दृश्यते' होगा।

4. लृट्लकार में धातु से 'यक्' का योग नहीं किया जाता है तथा धातुरूप को आत्मनेपद की धातुओं के समान चलाने है। जैसे– हस् धातु में हसिष्यति (कर्तृवाच्य), हसिष्यते (कर्मवाच्य)।

उदाहरणस्वरूप कुछ वाक्यों के वाच्य–परिवर्तन निम्नवत् हैं –

लट् लकार

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः वेदं पठति।	रामेण वेदः पठ्यते।
बालकः चन्द्रं पश्यति।	बालकेन चन्द्रः दृश्यते।
रमा गीतां पठति।	रमया गीता पठ्यते।
वयं दुग्धं पिबामः।	अस्माभिः दुग्धं पीयते।
रामः पत्रं लिखति।	रामेण पत्रं लिख्यते।
सः मां पाठयति।	तेन अहं पाठ्ये।

लृट् लकार

रामः वेदं पठिष्यति।	रामेण वेदः पठिष्यते।
वयं जलं पास्यामः।	अस्माभिः जलं पास्यते।

लोट् लकार

त्वं मां पश्यसि।	त्वया अहं दृश्ये।
बालकः चन्द्रं पश्यतु।	बालकेन चन्द्रः दृश्यताम्।

लङ् लकार

रामः वेदम् अपठत्।	रामेण वेदः अपठ्यत्।
त्वं माम् अपश्यः।	त्वया अहम् अदृश्ये।

भूतकाल की क्रियाओं में जहाँ 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग होता है वहाँ कर्मवाच्य में 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है जैसे–

सः	गृहम्	गतवान्।	कर्तृवाच्य
तेन	गृहं	गतम्।	कर्मवाच्य
बालिका	ग्रन्थान्	पठितवती।	कर्तृवाच्य
बालिकया	ग्रन्थाः	पठिताः।	कर्मवाच्य
वयं	शिक्षकम्	उक्तवन्तः।	कर्तृवाच्य
अस्माभिः	शिक्षकः	उक्तः।	कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन

1. कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में आत्मनेपद की क्रिया प्रयुक्त होती है।

2. कर्त्ता को तृतीया विभक्ति में परिवर्तित किया जाता है।

3. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य बनाते समय सार्वधातुक लकारों में धातु मे 'यक्' प्रत्यय लगाते हैं, जिसका 'य' शेष रहता है। 'य' जोड़ने के पश्चात् धातु के आत्मनेपद में रूप चलते हैं। अन्य लकारों में 'य' नहीं जुड़ता और रूप केवल आत्मनेपद में ही चलते हैं।

उदाहरणार्थ– गम् + यक् = गम् + य = गम्य

गम्य के लट्, लोट्, लङ् एवं विधिलिङ् लकारों में प्रथम पुरुष, एकवचन के रूप क्रमशः निम्नवत् होंगे– गम्यते, गम्यताम्, अगम्यत एवं गम्येत। लृट्लकार में साधारण धातु से गमिष्यते इत्यादि रूप बनेंगे।

उदाहरणार्थ–

कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
त्वं तिष्ठसि।	त्वया स्थीयते।
सा हसति।	तया हस्यते।
सः बिभेति।	तेन भीयते।
ताः जीवन्ति।	ताभिः जीव्यते।

अभ्यासकार्यम्

1. उचितविकल्पं चित्वा उत्तराणि लिखत–

(i) कर्मवाच्ये कर्तरि विभक्तिः भवति–

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

(ii) कर्तृवाच्ये कर्तरि विभक्तिः भवति–

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

(iii) कर्मवाच्ये क्रिया भवति–

(क) कर्त्रनुसारिणी (ख) कर्मानुसारिणी (ग) भावानुसारिणी (घ) समुदायानुसारिणी

(iv) त्वया पुस्तकं ....।

(क) पठ्यते (ख) पठ्येताम् (ग) पठ्यसे (घ) पठ्ये

(v) ....विद्यालयः गम्यते।

(क) अहम् (ख) माम् (ग) मया (घ) मह्यम्

2. अधोलिखितान् कर्मवाच्ये परिवर्तयत –

(क) सः ग्रन्थं पठति। ....

(ख) ते विद्यालयं गच्छन्ति। ....

(ग) वयं लेखान् लिखामः।......................

(घ) यूयं रसगोलकानि खादथ। ....

(ङ) अहं पुस्तकम् अपठम्।................

3. भाववाच्ये परिवर्तयत–

(क) सः लज्जते। ....

(ख) बालकः शेते। ....

(ग) ते तिष्ठन्ति। ....

(घ) माता स्वपिति............................

■

9 अनुवादः

'उक्तस्य पुनः कथनम् अनुवादः' अर्थात् कहे गये को फिर से अन्य भाषा में कहने को अनुवाद कहते हैं। जिस प्रकार परस्पर पर्यायवाची होते हुए भी प्रत्येक शब्द का मूल अर्थ एक-दूसरे से भिन्न होता है उसी प्रकार प्रत्येक कथन का अनुवाद (भाषारूपान्तरण) हू-ब-हू नहीं होता है। अतः ऐसे स्थलों पर भावानुवाद का सहारा लेना पड़ता है। इस अध्याय में हम हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कैसे करें, इसकी सरलतम विधि बताने का प्रयास करेंगे।

'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्' अर्थात् क्रिया को उत्पन्न करने वाले को कारक कहते हैं अथवा **'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** अर्थात् जिसका क्रिया से साक्षात् अथवा परम्परया अन्वय हो, उसे कारक कहते हैं। अतः संस्कृत व्याकरण में कारक छह हैं।

विभक्ति– 'सङ्ख्याकारबोधयित्री विभक्तिः'

अर्थात् कारक एवं संख्या का बोध कराने के कारण इसे विभक्ति कहते हैं। विभक्तियाँ सात हैं। अधोलिखित तालिका से इनका प्रयोग समझा जा सकता है–

विभक्ति	**कारक**	**चिह्न**
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी
सप्तमी	अधिकरण	में, पर,
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, रे, अरे, अये

1. कर्ता कारक, प्रथमा विभक्ति

कर्ता– 'स्वतन्त्रः कर्ता' अर्थात् क्रिया करने में जो स्वतन्त्र (प्रधान) विवक्षित होता है। वह कर्ता है। कारक का निर्धारण वक्ता की इच्छा पर निर्भर करता है। **'विवक्षातः कारकाणि भवन्ति'**, यथा–

यानं चलति (गाड़ी चलती है।)

चालकः यानं चालयति। (ड्राइवर गाड़ी चलाता है।)

उपर्युक्त वाक्यों में पहले वाक्य में 'चलने' की क्रिया में वक्ता द्वारा स्वतन्त्र कहे जाने के कारण यानम् (गाड़ी) कर्ता कारक है और दूसरे में चालक (ड्राइवर) का क्रिया के द्वारा सर्वाधिक अभीष्ट होने के कारण 'यानम्' (गाड़ी) कर्म कारक है।

वाक्य में आने वाले कर्ता का विभाजन पुरुष एवं वचन में किया जाता है।

मध्यम पुरुष : युष्मद् शब्द (त्वम्, युवाम्, यूयम्) के साथ मध्यम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे– त्वं गच्छसि, युवां गच्छथः, यूयं गच्छथ।

उत्तम पुरुष : अस्मद् शब्द (अहम्, आवाम्, वयम्) के साथ उत्तम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे अहं गच्छामि, आवां गच्छावः, वयं गच्छामः।

प्रथम पुरुष : शेष सभी शब्दों के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे– सः गच्छति, तौ गच्छतः, ते गच्छन्ति। सा गच्छति, ते गच्छतः, ताः गच्छन्ति, बालकः गच्छति, बालकौः गच्छतः, बालकाः गच्छन्ति इत्यादि।

उपर्युक्त तीनों पुरुषों के कर्ता का विभाजन संख्या के आधार पर एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन के रूप में 9 प्रकारों में किया गया है। उदाहरण के लिए –

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम लोग)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम लोग)

इसी प्रकार संस्कृतभाषा में क्रिया का विभाजन भी 9 प्रकार का हो जाता है। उदाहरण के लिए लट्लकार में–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति (पढ़ता है।)	पठतः (दो पढ़ते हैं।)	पठन्ति (सब पढ़ते हैं।)
मध्यम पुरुष	पठसि (पढ़ते हो।)	पठथः (दो पढ़ते हो।)	पठथ (सब पढ़ते हो।)
उत्तम पुरुष	पठामि (पढ़ता हूँ।)	पठावः (हम दो पढ़ते हैं।)	पठामः (हम सब पढ़ते हैं।)

अनुवाद बनाने के लिए उपर्युक्त कर्ता के 9 प्रकारों को क्रिया के 9 रूपों से क्रमशः जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार 9 प्रकार के अनुवाद बनते हैं। यथा–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः पठति।	तौ पठतः।	ते पठन्ति।
	(वह पढ़ता है।)	(वे सब पढ़ते है।)	(वे सब पढ़ते हैं।)
मध्यम पुरुष	त्वं पठसि।	युवां पठथः।	यूयं पठथ।
	(तुम पढ़ते हो।)	(तुम दोनों पढ़ते हो।)	(तुम सब पढ़ते हो।)
उत्तम पुरुष	अहं पठामि।	आवां पठावः।	वयं पठामः।
	(मैं पढ़ता हूँ।)	(हम दोनों पढ़ते हैं।)	(हम सब पढ़ते हैं।)

संस्कृत भाषा में जो भी वाक्य आते हैं, वे उपर्युक्त 9 वर्गों में वर्गीकृत किये जा सकते हैं।

अनुवाद के नियम

1. कर्तृवाच्य के वाक्य में जिस पुरुष एवं वचन का कर्ता होगा, उसी पुरुष एवं वचन की क्रिया उसके साथ रखी जायेगी।

2. क्रिया के काल के अनुसार लकार के धातुरूपों का प्रयोग करते हैं। वर्तमानकाल की क्रिया के लिए लट्लकार के धातुरूपों का प्रयोग करते हैं।

3. अनुवाद बनाते समय 'म्' के बाद व्यञ्जन आने पर सन्धि करते हुए उसके स्थान पर अनुस्वार (ं) लिखते हैं।

4. कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा–

वह जाता है।	सः गच्छति।
वे दोनों खेलते हैं।	तौ क्रीडतः।
वे लोग हँसते हैं।	ते हसन्ति।
तुम बोलते हो।	त्वं वदसि।
तुम दोनों खाते हो।	युवां खादथः।
तुम लोग पढ़ते हो।	यूयं पठथ।
मैं लिखता हूँ।	अहं लिखामि।
हम दोनों चलते हैं।	आवां चलावः।
हम लोग देखते हैं।	वयं पश्यामः।
राम जाता है।	रामः गच्छति।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. राम पढ़ता है। 2. दो छात्र लिखते हैं। 3. घोड़े दौड़ते हैं। 4. तुम खेलते हो। 5. तुम दोनों बोलते हो। 6. तुम सब खाते हो। 7. मैं जाता हूँ। 8. हम दोनों देखते हैं। 9. हम लोग चलते हैं। 10. सीता पूछती है।

2. कर्मकारक, द्वितीया विभक्ति

1. कर्ता क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक चाहता है उसे कर्मकारक कहते हैं। कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा– राम विद्यालय जाता है – रामः विद्यालयं गच्छति।

इसमें 'विद्यालय' कर्म है, अतः द्वितीया विभक्ति हुई है।

छात्र पुस्तक पढ़ता है। छात्रः पुस्तकं पठति।

2. दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड् (दण्ड देना), रुध् (रोकना), चि (चुनना), पृच्छ् (पूछना), शास् (अनुशासन), जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् (चोरी करना), ब्रू (बोलना), नी (ले जाना) और हृ (चुराना), कृष् (जोतना), वह् (ले जाना) इत्यादि अर्थों वाली द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि से अविवक्षित कारक कर्म होते हैं और उनमें भी द्वितीया विभक्ति होती है। यथा– ग्वाला गाय से दूध दुहता है। गोपः धेनुं दुग्धं दोग्धि। इस वाक्य में 'दुह्ना' द्विकर्मक धातु है। अतः अपादान (गाय से) की अविवक्षा में कर्मकारक होने के कारण 'धेनुम्' में द्वितीया विभक्ति हुई है। इसी प्रकार–

वामन बलि से पृथ्वी मांगते हैं।	वामनः बलिं पृथ्वीं याचते।
रसोइया चावलों से भात पकाता है।	सूदः तण्डुलान् ओदनं पचति।
गुरु शिष्य से प्रश्न पूछते हैं।	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।
वह गाँव में बकरी ले जाता है।	सः ग्रामम् अजां नयति।

3. शीङ् (सोना), स्था (ठहरना) और आस् (बैठना)– इन धातुओं के पहले यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इनका आधार कर्मकारक होता है और उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–

राजा पलंग पर सोता है।	राजा पर्यङ्कम् अधिशेते।
हरि वैकुण्ठ में रहते हैं।	हरिः वैकुण्ठम् अधितिष्ठति।
राजा सिंहासन पर बैठता है।	नृपः सिंहासनम् अध्यास्ते।

4. अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर) समया (समीप), निकषा (निकट), हा (हाय) और प्रति (की ओर) के साथ ही उभयतः (दोनों ओर), सर्वतः (सब ओर) इत्यादि शब्दों का जिनसे योग (सम्बन्ध) रहता है, उनमें द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–

सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं।	मार्गम् अभितः वृक्षाः सन्ति।
गाँव के चारों ओर खेत हैं।	ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति।
गाँव के निकट नदी बहती है।	ग्रामं निकषा नदी प्रवहति।
हाय पापी।	हा पापिनम्।
भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता।	बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्।

5. अत्यन्तसंयोग अर्थात् क्रिया की निरन्तरता में काल (समय) वाचक और मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–

वह महीने भर व्याकरण पढ़ता है।	सः मासं व्याकरणम् अधीते।
राम चौदह वर्षों तक वन में रहे।	रामः चतुर्दश वर्षाणि वने न्यवसत्।
नदी कोस भर टेढ़ी है।	क्रोशं कुटिला नदी।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. मैं घर जाता हूँ। 2. तुम पत्र लिखते हो। 3. वे लोग गाँव जाते हैं। 4. अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछते हैं। 5. वह आसन पर बैठता है। 6. नगर के समीप उद्यान है। 7. विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं। 8. वह महीने भर रामायण पढ़ता है। 9. कोस भर रास्ता टेढ़ा है। 10. तुम शिक्षक से प्रश्न पूछते हो।

3. करण कारक, तृतीया विभक्ति

क्रिया को करने में जो सर्वाधिक सहायक हो उसे करण कारक कहते हैं। जैसे– 'मोहन लेखनी से लिखता है।' इस वाक्य में लिखने की क्रिया में सर्वाधिक सहायक 'लेखनी' है, अतः वह करण कारक है।

अनुवाद के नियम

1. करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–

मोहन कलम से लिखता है।	मोहनः लेखन्या लिखति।
किसान हल से खेत जोतता है।	कृषकः हलेन क्षेत्रं कर्षति।
मैं आँखों से देखता हूँ।	अहं नेत्राभ्यां पश्यामि।
राम ने रावण को बाण से मारा।	रामः रावणं बाणेन हतवान्।
वह गेंद से खेलता है।	सः कन्दुकेन क्रीडति।

2. साथ के अर्थ में प्रयुक्त होने वाले 'सह', 'साकम्', 'समम्' और 'सार्धम्' शब्दों का जिससे योग (सम्बन्ध) रहता है वह अप्रधान होता है। उस अप्रधान कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

राम लक्ष्मण के साथ वन गये।	रामः लक्ष्मणेन सह वनम् अगच्छत्।
पिता पुत्र के साथ आया।	पिता पुत्रेण सह आगतः।
मैं मोहन के साथ जाऊँगा।	अहं मोहनेन सार्द्धं गमिष्यामि।

3. जिस अंग से शरीरधारी विकारयुक्त लक्षित हो। वह अंगवाचक शब्द विशेष में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–

वह आँख से काना है।	सः नेत्रेण काणः।
वह पीठ से कुबड़ा है।	सः पृष्ठेन कुब्जः।
वह पैर से लंगड़ा है।	सः पादेन खञ्जः।

4. निषेध अर्थ में 'अलम्' के योग में तृतीया होती है। यथा–

विवाद मत करो।	अलं विवादेन।

अभ्यासकार्यम्

संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत–

1. राम ने बाण से बालि को मारा। 2. हम पैरों से चलते हैं। 3. सीता राम के साथ वन गयीं। 4. वह कान से बहरा है। 5. वह सिर से गंजा है। 6. व्यर्थ परिश्रम मत करो। 7. गाली मत दो। 8. वह रेलगाड़ी से दिल्ली जाता है। 9. छात्र मुख से उत्तर देता है। 10. तुम मोहन के साथ बाजार जाते हो।

4. सम्प्रदानकारक, चतुर्थी विभक्ति

कर्ता दान कर्म के द्वारा जिसे चाहता है (जिसको कोई वस्तु दान स्वरूप दी जाती है), उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे– 'राजा ब्राह्मण को गाय देता है।' इस वाक्य में कर्ता राजा देने की क्रिया द्वारा ब्राह्मण को चाहता है। अतः 'ब्राह्मण' सम्प्रदान कारक है।

अनुवाद के नियम

1. सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–

राजा ब्राह्मण को गाय देता है।	राजा ब्राह्मणाय गां ददाति।
धनी निर्धन को धन देता है।	धनिकः निर्धनाय धनं ददाति।
प्यासे को पानी दो।	पिपासिताय जलं देहि।
भूखे को भोजन दो।	बुभुक्षिताय अन्नं देहि।
राम मोहन को कलम देता है।	रामः मोहनाय लेखनीं ददाति।
वह गरीब को कपड़ा देता है।	सः दरिद्राय वस्त्रं ददाति।

परन्तु यहाँ यह ध्यातव्य है कि यदि कोई वस्तु वापस ले लेने हेतु दी जाती है तो वहां चतुर्थी न होकर शेष में षष्ठी होती है। यथा –

वह धोबी को कपड़ा देता है। सः रजकस्य वस्त्रं ददाति।

यहाँ कपड़ा दान में नहीं दिया जा रहा, अतः षष्ठी विभक्ति हुई है।

2. रुच् (अच्छा लगना) – अर्थवाली धातुओं के योग में जो 'प्रीयमाण' (जिसे वस्तु अच्छी लगती है) हो वह सम्प्रदान कारक होता है और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–

बालक को लड्डू अच्छा लगता है। बालकाय मोदकः रोचते।

मुझे मिठाई अच्छी लगती है। मह्यं मिष्टान्नं रोचते।

हरि को भक्ति अच्छी लगती है। हरये रोचते भक्तिः।

3. स्पृह् (चाह करना) धातु के प्रयोग में जो ईप्सित हो (जिस वस्तु की चाह की जाय) वह सम्प्रदान कारक होता है। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–

बालिका फूलों की चाह करती है। बालिका पुष्पेभ्यः स्पृह्यति।

बालक मिठाई की चाह करता है। बालकः मिष्टान्नाय स्पृह्यति।

4. क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना) और असूय् (निन्दा करना) इन अर्थवाली धातुओं के योग में जिसके प्रति कोप किया जाय, वह सम्प्रदान कारक होता है। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–

गुरु शिष्य पर क्रोध करते हैं। गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।

दैत्य हरि से द्रोह करते हैं। दैत्याः हरये द्रुहयन्ति।

दुर्योधन पाण्डवों से ईर्ष्या करता है। दुर्योधनः पाण्डवेभ्यः ईर्ष्यति।

दानव देवताओं की निन्दा करते हैं। दानवाः देवताभ्यः असूयन्ति।

5. नमः (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण), स्वाहा (देवों को आहुति), स्वधा (पितरों को आहुति), अलम् (पर्याप्त) और वषट् (अर्पण)– इन पदों का जिससे योग (सम्बन्ध) हो उनमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–

श्री गणेश को नमस्कार है। श्रीगणेशाय नमः।

प्रजाओं का कल्याण हो। प्रजाभ्यः स्वस्ति।

अग्नि को आहुति। अग्नये स्वाहा।

पितरों को आहुति। पितृभ्यः स्वधा।

इन्द्र को अर्पण। इन्द्राय वषट्।

दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त है। दैत्येभ्यः हरिः अलम्।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. वह भिखारी को अन्न देता है। 2. बालक को खेलना अच्छा लगता है। 3. तुम्हें पढ़ना अच्छा लगता है। 4. प्यासा जल की चाह करता है। 5. शिक्षक छात्र पर क्रोध करते है। 6. शिवजी को नमस्कार है। 7. पिता पुत्र पर क्रोध करता है। 8. दुर्जन सज्जनों की निन्दा करते हैं। 9. असुर देवताओं से द्रोह करते हैं। 10. राम रावण पर क्रोध करते हैं।

5. अपादान कारक, पञ्चमी विभक्ति

अलग होने में जो ध्रुव (चल या अचल अवधिभूत) हो अर्थात् जिससे कोई वस्तु अलग हो उसे अपादान कारक कहते हैं। यथा 'वृक्ष से पत्ता गिरता है' इस वाक्य में पत्ता वृक्ष से अलग हो रहा है अतः वृक्ष अपादान कारक है।

अनुवाद के नियम

1. अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा–

वृक्ष से पत्ता गिरता है।	वृक्षात् पत्रं पतति।
आकाश से जल बरसता है।	आकाशात् जलं वर्षति।
वह गांव से आता है।	सः ग्रामात् आगच्छति।
बालक दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।	बालकः धावतः अश्वात् पतति।
यात्री विमान से उतरते हैं।	यात्रिणः विमानात् अवतरन्ति।

2. जुगुप्सा (घृणा करना), विराम (रुकना, हटना), प्रमाद (आलस्य करना)– इन अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में जिनका अर्थ घृणा, विराम या प्रमाद हो, वह भी अपादान कारक होता है। यथा –

वह पाप से घृणा करता है।	सः पापात् जुगुप्सते।
वह कार्य से रुकता है।	सः कार्यात् विरमति।
छात्र अध्ययन से आलस्य करता है।	छात्रः अध्ययनात् प्रमाद्यति।

3. भी (डरना) और त्रै (रक्षा करना) अर्थवाली धातुओं में जो भय तथा रक्षा का कारण हो वह अपादान कारक होता है और उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा –

मनुष्य साँप से डरता है।	मनुष्यः सर्पात् बिभेति।
वह मित्र को पाप से बचाता है।	सः मित्रं पापात् त्रायते।
माता सिंह से पुत्र की रक्षा करती है।	माता पुत्रं सिंहात् रक्षति।

4. जिससे नियमपूर्वक विद्या ग्रहण की जाय, वह अपादान कारक होता है और उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा –

वह आचार्य से व्याकरण पढ़ता है।	सः आचार्यात् व्याकरणम् अधीते।
छात्र अध्यापक से संस्कृत पढ़ते हैं।	छात्राः अध्यापकात् संस्कृतं पठन्ति।
वह गुरु से शास्त्र जानता है।	सा गुरोः शास्त्रं जानाति।
वह गुरु से सङ्गीत सीखती है।	सा गुरोः सङ्गीतं शिक्षते।

संस्कृभाषायाम् अनुवादं कुरुत –

1. छात्र विद्यालय से घर जाता है। 2. बालक सीढ़ी से गिरता है। 3. गङ्गा हिमालय से निकलती है। 4. वह हिंसा से विरत होता है। 5. देवदत्त उपाध्याय से पढ़ता है। 6. साधु पाप से डरता है। 7. ग्रामीण जन चोर से डरते हैं। 8. पेड़ से फल गिरता है। 9. शिशु आसन से गिरता है। 10. श्रद्धा के बिना ज्ञान नहीं होता।

6. सम्बन्ध, षष्ठी विभक्ति

कारकों एवं प्रतिपदिकार्थ से (भिन्न) स्वस्वामिभावादि सम्बन्ध को 'शेष' कहते हैं शेष (सम्बन्ध) में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा– 'मोहन की पुस्तक है।' इस वाक्य मे मोहन 'स्वामी' है और पुस्तक 'स्व' है। मोहन एवं पुस्तक में 'स्वस्वामिभाव' सम्बन्ध है।

अनुवाद के नियम

1. सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा –

यह मोहन की पुस्तक है।	इदं मोहनस्य पुस्तकम् अस्ति।
दशरथ के पुत्र राम थे।	दशरथस्य पुत्रः रामः आसीत्।
यह मिट्टी का घड़ा है।	अयं मृत्तिकायाः घटः अस्ति।

2. कर्म आदि कारकों की सम्बन्ध-विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–

वह माता का स्मरण करता है।	सः मातुः स्मरति।
शम्भु के चरणों को भजता हूँ।	भजे शम्भोः चरणयोः।

3. किसी वस्तु की कारणता प्रकट करने में यदि 'हेतु' शब्द का प्रयोग किया गया हो तो उस हेतु और वाचक 'हेतु' शब्द– दोनों में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–

वह अन्न के लिए रहता है।	सः अन्नस्य हेतोः वसति।
वह अध्ययन के हेतु काशी में रहता है।	सः अध्ययनस्य हेतोः काश्यां वसति।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. यह राम का नौकर है। 2. यह मेरी कलम है। 3. वह तुम्हारी पुस्तक है। 4. यह गङ्गा का जल है। 5. लक्ष्मण राम के भाई थे। 6. वह धन के हेतु सेवा करता है। 7. छात्र अध्ययन के हेतु प्रयागराज में रहता है। 8. यह मोहन का घर है। 9. हमारे देश का नाम भारतवर्ष है। 10. तुम्हारा प्रयत्न बेकार नहीं होगा।

7. अधिकरण कारक, सप्तमी विभक्ति

कर्ता या कर्म के द्वारा क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं। यथा – 'बालक चटाई पर बैठता है।' इस वाक्य में बैठने की क्रिया का आधार (चटाई) है, अतः 'चटाई' अधिकरण कारक है।

अनुवाद के नियम

1. अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–

बालक चटाई पर बैठता है।	बालकः कटे उपविशति।
मोक्ष में इच्छा है।	मोक्षे इच्छा अस्ति।
तिलों में तेल है।	तिलेषु तैलम् अस्ति।

2. जिसके प्रति साधुता या असाधुता प्रकट की जाय उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। यथा –

कृष्ण माता के प्रति अच्छे हैं।	कृष्णः मातरि साधुः।
कृष्ण मामा के प्रति असाधु हैं।	कृष्णः मातुले असाधुः।

3. जिस क्रिया से कोई दूसरी क्रिया लक्षित हो तो उसमें सप्तमी विभक्ति हो। यथा–

गायें के दुहे जाने पर वह गया।	गोषु दुह्यमानासु सः गतः।
सूर्य के उदित होने पर प्रकाश हो गया।	उदिते सूर्ये प्रकाशः जातः।

4. अनादर अर्थ प्रकट करने में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है। यथा–

शिशु के रोते रहने पर भी माता नहाने चली गयी।

रुदतः शिशोः/रुदिते शिशौ माता स्नातुं गता।

पुत्र के रोते रहने पर भी उन्होंने संन्यास ले लिया।

रुदतः पुत्रस्य/रुदिते पुत्रे सः संन्यासं गृहीतवान्।

बन्धुजन के विलाप करने पर भी वह विदेश चला गया।

विलपतः बन्धुजनस्य/विलपति बन्धुजने सः विदेशं प्रस्थितः।

4. जाति, गुण, क्रिया अथवा संज्ञा के आधार पर किसी को समूह से अलग किया जाय तो उस समूहवाचक शब्द में षष्ठी अथवा सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–

मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।	नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः।
गायों में कृष्णा अधिक दूध देती है।	गवां/गोषु कृष्णा बहुक्षीरा।
जाने वालों में दौड़ने वाला तेज है।	गच्छतां/गच्छत्सु धावन् शीघ्रः।
छात्रों में देवदत्त तेज है।	छात्राणां/छात्रेषु देवदत्तः पटुः।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. वह गाँव में रहता है। 2. तुम शहर में रहते हो। 3. सिंह जंगल में रहता है। 4. पक्षी पेड़ पर निवास करते हैं। 5. बन्दर डाल पर कूदता है। 6. सीता का राम में अनुराग था। 7. आत्मा सबमें है। 8. अध्ययन में रुचि है। 9. गङ्गा नदियों में सबसे अधिक पवित्र हैं। 10. हिमालय पर्वतों में सबसे अधिक ऊँचा है। 11. कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं। 12. बच्चे के रोते रहने पर भी माता स्नान करने चली गयी।

8. प्रश्नवाचक वाक्य

दो प्रकार के प्रश्नात्मक वाक्य होते हैं। एक जिनमें वाक्य के आरम्भ में 'क्या' लगाकर क्रिया के होने या न होने के विषय में प्रश्न किया जाता है। यथा– क्या वह पढ़ता है ? और दूसरे वाक्य जिनमें वाक्य के भीतर क्या, क्यों कैसे, किस लिए इत्यादि शब्दों का प्रयोग कर प्रश्न किया जाता है। यथा– वह क्या पढ़ता है ?

अनुवाद के नियम

1. जब वाक्यगत क्रिया के विषय में प्रश्न हो तो वाक्य के आरम्भ में 'अपि' अव्यय का प्रयोग होता है। यथा–

क्या वह पढ़ता है ?	अपि सः पठति ?
क्या वे लोग जाते हैं ?	अपि ते गच्छन्ति ?
क्या तुम वहाँ जाते हो ?	अपि त्वं तत्र गच्छसि ?
क्या तुम लोग गेंद से नहीं खेलते हो ?	अपि यूयं कन्दुकेन न क्रीडथ ?

2. जब वाक्यगत अन्य कारकों से सम्बन्धित प्रश्न हो तो वहाँ किम, कुत्र, कथम् इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। यथा–

वह क्या पढ़ता है ?	सः किं पठति ?
वे लोग कहाँ जाते हैं ?	ते कुत्र गच्छन्ति ?
तुम क्यों नहीं पढ़ते हो ?	त्वं कथं न पठसि ?
कौन खेल रहा है ?	कः क्रीडति ?

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. क्या मैं झूठ बोलता हूँ ? 2. क्या घोड़ा नहीं दौड़ता है ? 3. क्या वे लोग जल पीते हैं? 4. लड़के क्यों हँसते हैं ? 5. वे लोग किसको देखते हैं ? 6. लड़कियाँ क्या पढ़ती हैं ? 7. मेघ क्यों गरजते हैं ? 8. पेड़ क्या खाते हैं ? 9. वे सब कहाँ जाते हैं ? 10. किसान क्या करते हैं?

9. 'च' और 'वा' का प्रयोग

1. यदि प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के कर्ता 'च' से जुड़े हों तो क्रिया मध्यम पुरुष के अनुसार, प्रथम पुरुष और उत्तम पुरुष के कर्ता 'च' से जुड़े हों तो क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के कर्ता 'च' से जुड़े हों तो क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार और यादि तीनों पुरुषों के कर्ता च से जुड़े हों। तो क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार होगी।

2. कर्ता की संख्या दो हैं तो क्रिया द्विवचन में और तीन या उससे अधिक हैं तो क्रिया बहुवचन में होगी।

राम और श्याम दौडते हैं।	रामः श्यामः च धावतः।
वह और तुम लिखते हो।	सः त्वं च लिखथः।
तुम और मैं देखता हूँ।	त्वम् अहं च पश्यावः।
तुम, मैं और राम पढ़ते हैं।	त्वम् अहं रामश्च पठामः।
वे लोग और तुम पूछते हो।	ते त्वं च पृच्छथ।

3. यदि अनेक कर्ता 'वा' से जुड़े हों तो क्रिया अपने निकटवर्ती कर्ता के पुरुष एवं वचन के अनुसार होगी।

राम या श्याम जाता है।	रामः श्यामः वा गच्छति।
मोहन या तुम खेलते हो।	मोहनः त्वं वा क्रीडसि।
मैं या तुम पढ़ते हो।	अहं त्वं वा पठसि।
तुम या मैं पढ़ता हूँ।	त्वम् अहं वा पठामि।
या तो तुम या मैं अथवा हरि जायेगा।	त्वं वा अहं वा हरिः वा गमिष्यति।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. हरि, मोहन और सुरेश दौड़ते हैं। 2. श्याम और तुम पूछते हो। 3. वे दोनों और हम दोनों पढ़ते हैं। 4. तुम और मैं देखता हूँ। 5. सीता और गीता जाती हैं। 6. तुम या वह देखता है। 7. हम लोग या वे लोग पढ़ते हैं। 8. मैं या तुम जाते हो। 9. वह या मैं खेलता हूँ। 10. तुम या मैं या वे लोग जाते हैं।

10. लट्‌लकार (वर्तमान काल) का प्रयोग

वर्तमान काल में लट्‌लकार का प्रयोग किया जाता है।

वह पुस्तक पढ़ता है।	सः पुस्तकं पठति।
हम घर जाते हैं।	वयं गृहं गच्छामः।
तुम कानपुर में रहते हो।	त्वं कर्णपुरे निवससि।
मैं रामायण देखता हूँ।	अहं रामायणं पश्यामि।
रमेश खेलता है।	रमेशः क्रीडति।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. राम भोजन करता है। 2. हम विद्यालय जाते हैं। 3. मोहन गाँव में रहता है। 4. रमा गाना गाती है। 5. गीता खेलती है। 6. सीता छात्रों को पढ़ाती है। 7. हम भारत में रहते हैं। 8. तुम सब छात्रावास में रहते हो।

11. लङ्‌लकार (भूतकाल) का प्रयोग

अनद्यतन भूतकाल अर्थात् जो क्रिया आज नहीं हुई है उसके लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है। सामान्य भूत के लिए लुङ् लकार और परोक्ष भूत के लिए लिट् लकार का प्रयोग होता है। यथा– जो क्रिया आज से पहले हो चुकी है उसके लिए लङ् लकार का प्रयोग करेंगे। यथा–

वे लोग घर चले गये।	ते गृहम् अगच्छन्।
हम लोगों ने पाठ पढ़ा।	वयं पाठम् अपठाम।
मैंने पत्र लिखा।	अहं पत्रम् अलिखम्।
तुम लोगों ने दुर्घटना देखी।	यूयं दुर्घटनाम् अपश्यत।
उसने रामायण पढ़ी।	सः रामायणम् अपठत्।
राम घर गया।	रामः गृहम् अगच्छत्।

2. यदि सामान्य भूतकाल की क्रिया हो तो उसमें लट् लकार की क्रिया के साथ 'स्म' का प्रयोग कर अनुवाद बनाया जा सकता है। यथा–

वह गाँव जाता था।	सः ग्रामं गच्छति स्म।
मैं पुस्तकें पढ़ता था।	अहं पुस्तकं पठामि स्म।
वे लोग प्रति दिन क्रिकेट खेलते थे।	ते प्रतिदिनं दण्डकन्दुकं क्रीडन्ति स्म।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. उन लोगों ने पुस्तक पढ़ी। 2. सीता घर गयी। 3. राम ने रावण को मारा। 4. भगवान् ने भक्त की रक्षा की। 5. उन लोगों ने पत्र लिखा। 6. हम लोगों ने अपना पाठ पढ़ा। 7. मैं प्रतिदिन स्कूल जाता था। 8. मेरे पिताजी प्रतिदिन गीता पढ़ते थे। 9. तुम लोगों ने क्या देखा ? 10. मैं वहाँ चढ़ गया। 11. पेड़ से फल गिरा।

12. लृट्लकार (भविष्यत्काल) का प्रयोग

सामान्य भविष्यत्काल में लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है। अनद्यन भविष्यत् के लिए लुट्लकार का प्रयोग होता है। यहाँ हम सामान्य भविष्यत्काल में लृट् का प्रयोग जानेंगे। यथा–

लड़के स्कूल जायेंगे।	बालकाः विद्यालयं गमिष्यन्ति।
वह अपना पाठ याद करेगा।	सः स्वपाठं स्मरिष्यति।
सीता गीत गायेगी।	सीता गीतं गास्यति।
छात्र प्रश्न पूछेगा।	छात्रः प्रश्नं प्रक्ष्यति।
हम दोनों वहाँ ठहरेंगे।	वयं तत्र स्थास्यावः।
तुम दोनों पुस्तक दोगे।	युवां पुस्तकं दास्यथः।
वे लोग सिनेमा देखेंगे।	ते चलचित्रं द्रक्ष्यन्ति।
हम लोग रामायण सुनेंगे।	वयं रामायणं श्रोष्यामः।
तुम उदाहरण जानोगे।	त्वम् उदाहरणं ज्ञास्यथ।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. क्या तुम वहाँ जाओगे ? 2. मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। 3. वे लोग घर जायेंगे। 4. हम लोग पुस्तक पढ़ेंगे। 5. क्या तुम जल पियोगे ? 6. मैं फल खाऊँगा। 7. मोहन हँसेगा। 8. बालक रोटी खायेगा। 9. हम दोनों पुस्तक ले जायेंगे। 10. तुम दोनों जल लाओगे। 11. तुम लोग यहाँ कब आओगे।

13. लोट्लकार (आज्ञार्थक) का प्रयोग

इच्छा, प्रार्थना और आर्शीवाद इत्यादि अर्थों में लोट् लकार का प्रयोग होता है। यथा –

तुम यहाँ ठहरो।	त्वम् अत्र तिष्ठ।
आप लोग समाचार कहें।	भवन्तः वार्तां कथयन्तु।
क्या मैं रामायण पढ़ूँ ?	अपि अहं रामायणं पठानि ?
बालक वहाँ खेलें।	बालकाः तत्र क्रीडन्तु।
लड़के वहाँ न जायें।	बालकाः तत्र न गच्छन्तु।

तुम दोनों यहाँ आओ	युवाम् अत्र आगच्छतम्।
बादल बरसे।	मेघः वर्षतु।
तुम दीर्घायु होओ।	त्वं चिरञ्जीवी भव।
आप प्रसन्न हो।	भवान् प्रसीदतु।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. तुम जल लाओ। 2. छात्र पुस्तक पढ़ें। 3. राम विद्यालय जाये। 4. तुम लोग यहाँ मत आओ। 5. क्या मैं फल खाऊँ ? 6. वे लोग यहाँ ठहरें। 7. बालक हमें देखें। 8. तुम रामायण की कथा सुनो। 9. बच्चे फुटबाल खेलें। 10. वे दोनों चित्र देखें।

14. विधिलिङ्लकार ('चाहिए' अर्थ) का प्रयोग

विधिलिङ् का प्रयोग चाहिए, अनुमति, उपदेश और सम्भावना, निमन्त्रण, आमन्त्रण आदि के अर्थ में होता है। यथा–

उसे घर जाना चाहिए।	सः गृहं गच्छेत् ?
क्या वे वहाँ जायें ?	अपि ते तत्र गच्छेयुः ?
तुम्हें नहीं हँसना चाहिए।	त्वं न हसेः।
यदि वह पढ़े तो अवश्य सफल होगा।	यदि सः पठेत् तर्हि नूनं सफलः भवेत्।
हमेशा सत्य बोलना चाहिए।	सदा सत्यं वदेत्।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. तुम लोगों को पुस्तक पढ़नी चाहिए। 2. छात्रों को विद्यालय जाना चाहिए। 3. उसे पत्र लिखना चाहिए। 4. हम लोगों को घर से बाहर दौड़ना चाहिए। 5. यदि लड़के जायें तो तुम भी चले जाना। 6. मुझे फल खाना चाहिए। 7. छात्रों को अपना पाठ याद करना चाहिए। 8. गर्मी में लोगों को जल पीना चाहिए। 9. शायद बालक वहाँ हो। 10. तुम लोगों को हमेशा सुबह जल्दी उठना चाहिए।

15. विशेषण का प्रयोग

संस्कृत भाषा में विशेषणों का प्रयोग विशेष (जिसकी विशेषता बतायी जाय) की लिङ्ग विभक्ति एवं वचन के अनुसार होता है। अर्थात् जो लिङ्ग, वचन एवं विभाक्ति विशेष्य की होगी, वहीं लिङ्ग, वचन एवं विभक्ति विशेषण की होगी–

यल्लिङ्गं यद् वचनं या च विभक्तिः विशेष्यस्य।
तल्लिङ्गं तद् वचनं सा च विभक्तिः विशेषणस्यापि।।

यथा– सुन्दर बालक पढ़ता है। सुन्दरः बालकः पठति।
सुन्दर बालिका पढ़ती है। सुन्दरी बालिका पठति।
सुन्दर दृश्य मन को हरता है। सुन्दरं दृश्यं मनः हरति।
सुन्दर बालक को देखो। सुन्दरं बालकं पश्य।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. सुन्दर लड़के खेलते हैं। 2. सुन्दर लड़कियाँ पढ़ती हैं। 3. गङ्गा का जल पवित्र है। 4. आम का फल मीठा होता है। 5. संस्कृत मीठी भाषा है। 6. यह मन्दिर विशाल है। 7. यह पाठशाला विशाल है। 8. सभी बालक स्वस्थ हैं। 9. लड़का ज्ञानवान् है। 10. लड़की बुद्धिमती है। 11. मनोहर चित्र को देखो।

16. 'तुमुन्' (के लिए) प्रत्यय का प्रयोग

1. चतुर्थी (के लिए) के अर्थ में 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। यह अव्यय पद है अतः शब्द रूपों के समान इसके विविध रूप नहीं होते। यह सर्वत्र एक समान रहता है। यथा–

वह पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है। सः पठितुं विद्यालयं गच्छति।

2. चाहना, सकना, आरम्भ करना इत्यादि के मुख्य क्रिया के रूप में, रहने पर गौण क्रिया के रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

वह जाना चाहता है। सः गन्तुम् इच्छति।
वह जा सकता है। सः गन्तुं शक्नोति।
उसने पढ़ना आरम्भ किया। सः पठितुम् आरभत।

3. पर्याप्त अर्थ में 'अलम्', प्रभुः, क्षमः, आदि के साथ प्रयुक्त होता है।

वह लड़ने में समर्थ है। सः योद्धुं क्षमः।
वह खाने में समर्थ है। सः भोक्तुं समर्थः।
वह प्रहार करने में समर्थ है। सः प्रहर्तुं क्षमः।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. वह भोजन करने के लिए घर जाता है। 2. वह पढ़ना चाहता है। 3. उसने लिखना आरम्भ किया। 4. यह कार्य करने में समर्थ है। 5. मैं घर जाना चाहता हूँ। 6. तुम लोग खेलना चाहता हूँ। 7. मोहन पढ़ने में समर्थ है। 8. उसने जाना आरम्भ किया। 9. वह बोलने में समर्थ है। 10. मैं पाठ याद कर सकता हूँ।

17. 'क्त्वा' और 'ल्यप्' (करके) प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग

जब एक क्रिया की समाप्ति के पश्चात् दूसरी क्रिया की जाती है तो पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

1. पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्ययान्त अव्यय शब्दों का प्रयोग होता है। यथा–

वह विद्यालय जाकर पढ़ता है।	सः विद्यालयं गत्वा पठति।
राजा देशों को जीतकर राजधानी आया।	राजा देशान् विजित्य राजधानीम् आगतः।

संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत–

1. छात्र खाकर विद्यालय जाते हैं। 2. मैं पढ़कर सोता हूँ। 3. वह मुँह धोकर जलपान (अल्पाहार) करता है। 4. पैरों को धुलकर घर में प्रवेश करो। 5. घर जाकर भोजन करो। 6. विद्यालय जाकर पढ़ो। 7. वे लोग नदी पारकर विद्यालय जाते हैं। 8. स्नान करके भोजन करना चाहिए। 9. सोच-समझकर कार्य करना चाहिए। 10. वह क्रिकेटस्पर्धा जीतकर देश वापस लौटता है।

■

(10) संस्कृत–निबन्ध

1. विद्या

1. ज्ञानार्थकाद् विद् – धातोः विद्याशब्दः निष्पन्नः भवति।
2. कस्यापि वस्तुनः यथार्थज्ञानं विद्या इति कथ्यते।
3. विद्याधनं संसारे श्रेष्ठं धनमस्ति।
4. विद्यया सुवर्णादिकं सर्वं प्राप्तुं शक्यते किन्तु सुवर्णादिना विद्या न प्राप्यते।
5. विद्याविहीनः जनः मूर्खः इव आदरं न प्राप्नोति।
6. विद्यासम्पन्नाः जनाः 'विद्वांसः' इति प्रसिद्धा भवन्ति।
7. विद्वान् पुरुषः विवेकेन धर्मानुसारम् आचरति।
8. विद्वान् पुरुषः धर्मम् आचरति, अधर्मं परित्यजति।
9. चौराः अपि विद्यां हर्तुं न शक्नुवन्ति।
10. विद्यासम्पन्नः जनः स्वदेशे विदेशे च पूज्यः भवति।

2. सदाचारः

1. सतां (सज्जनानां) आचारः सदाचारः कथ्यते।
2. सदाचारिजनाः यद् यद् आचरन्ति तदेव सदाचारस्य प्रमाणं भवति।
3. सज्जनाः सर्वेभ्यः आदरं ददति, ज्येष्ठान् अभिवादयन्ति।
4. सज्जनः उत्तमं जीवनं यापयति, आचारहीनः दुःखं प्राप्नोति।
5. सदाचारेण समाजे राष्ट्रे च गौरवं मिलति।
6. सदाचारेण उत्तमः समाजः राष्ट्रं च निर्मितं भवति।
7. सदाचारेण मनसि सर्वदा पुण्यविचाराः प्रसरन्ति।
8. विचारशीलजनः सर्वदा राष्ट्रस्य उन्नतिं चिन्तयति।
9. अस्माकं राष्ट्रे श्रीरामसदृशाः अनेके सदाचारिणः अभवन्।
10. कथितमस्ति – रामादिवद् वर्तितव्यं न रावणादिवत्।

3. परोपकारः

1. संसारे परेषाम् उपकारः 'परोपकारः' इति कथ्यते।
2. यः पुरुषः स्वार्थं विहाय अन्यस्य कल्याणमिच्छति, सः परोपकारी अस्ति।
3. परोपकारः श्रेष्ठः धर्मः अस्ति, नास्ति अस्मिन् सन्देहः।
4. परोपकारिजनः जीवने मृतेऽपि यशः कीर्तिं च लभते।
5. प्रकृतिरपि परोपकाराय प्रेरयति, परोपकाराय वृक्षाः फलन्ति, नद्यः वहन्ति च।
6. परोपकारेण मनसि 'इदं न मम' इति भावना सुदृढा भवति।
7. परोपकारशून्यस्य जनस्य जीवनं पृथिव्यां भारस्वरूपं प्रतीयते।
8. वस्तुतः परोपकारः पुण्याय, परपीडनं पापाय भवति।
9. अस्माकं देशे शरीरक्लेशमनुभूयापि सन्तः परेषाम् उपकारे संलग्नाः दृश्यन्ते।
10. महर्षिदधीचिः, महाराजः शिविः, रन्तिदेवश्च परोपकारायैव स्वशरीराणि त्यक्तवन्तः।

4. सत्सङ्गतिः

1. सदाचारिणां सङ्गतिः 'सत्सङ्गतिः' इति वयं जानीमः।
2. मानवः सामान्यरूपेण अनुकरणशीलः बाल्यकालादेव।
3. समीपस्थजनस्य अनुकरणेन सः समुन्नतिमवनतिं च प्राप्नोति।
4. ये जनाः मनसा वाचा कर्मणा शुभकार्याणि सम्पादयन्ति ते एव अनुकरणीयाः।
5. सत्पुरुषाणां सङ्गत्याः बुद्धिः निर्मला भवति, कीर्तिरपि प्रसरति।
6. दुर्जनानां सङ्गत्या बुद्धिः विषाक्ता भवति, अपयशः प्राप्नोति जनः।
7. बाल्यकाले बुद्धिः परिपक्वा न भवति अतः पितृभिः विशेषरूपेण ध्यानं दातव्यम्।
8. दरिद्रः सुदामा श्रीकृष्णस्य सङ्गतिं प्राप्य ऐश्वर्यशाली अभवत्।
9. वाल्मीकिः ऋषीणां सङ्गतिं प्राप्य महर्षिवाल्मीकिः अभवत्।
10. नद्यः गङ्गायाः सङ्गत्या समुद्रं प्राप्नुवन्ति अतः सर्वदा सद्भिः सह स्थातव्यम्।

5. अहिंसा परमो धर्मः

1. विश्वस्य सर्वेषु धर्मेषु सम्प्रदायेषु च अहिंसा श्रेष्ठा इति स्वीक्रियते।
2. मनसा वाचा कर्मणा परपीडनं हिंसा, तस्याः अभावः अहिंसा अस्ति।
3. मनसा दुर्विचारः, वाचा कटुवाक्यम्, कर्मणा क्रूरकर्मं न कर्त्तव्यम्।
4. अहिंसया न केवलं मानवजातिः अपितु पशुपक्षिणोऽपि वशे तिष्ठन्ति।
5. अहिंसायाः प्रचारेण विश्वबन्धुत्वं विश्वहितसाधनञ्च सम्भाव्यते।
6. हिंसा न हि मात्रं प्राणिवधः, एषा हि द्वेषमूला अपि भवति।

7. यथा कश्चित् अग्निं जलेन शाम्यति, तथैव अहिंसया मैत्रीं प्रदर्श्य रिपून् शाम्यति।
8. अहिंसा मनांसि पुनाति, आत्मबलं ददाति।
9. सम्प्रति जगति युद्धमाध्यमेन हिंसायाः साम्राज्यं दृश्यते।
10. भारतदेशे महात्मा बुद्धः, महावीरः अशोकश्च अहिंसां प्रचारितवन्तः।

6. मातृभूमिः

1. मम मातृभूमिः स्वर्गादपि गरीयसी, इति गौरवविषयम्।
2. मम मातृभूमिः 'भारत' इति नाम्ना प्रसिद्धा वर्तते।
3. संस्कृतिसभ्यतायाः च प्रथम उद्घोषः अत्रैव सम्पादितः।
4. नगाधिराजः हिमालयः अस्य किरीटः अस्ति।
5. हिन्दमहासागरः मम मातृभूमेः पादौ प्रक्षालयति।
6. अन्नजलवायुप्रदानेन मम मातृभूमिः अस्मान् पोषयति।
7. अत्रैव सरस्वतीतीरे ऋषिजनाः वेदान् उद्घोषितवन्तः।
8. भगीरथप्रयत्नेन गङ्गा मम मातृभूमिं पुनाति।
9. मम मातृभूमिः श्रीरामकृष्णबुद्धमहावीरप्रतापसुभाषगान्धिमहोदयानां जननी अस्ति।
10. 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' इति सर्वदा स्मरणीयम्।

7. वसुधैव कुटुम्बकम्

1. सकला वसुधा अस्माकं परिवारः इति (वाग्) ऋषिभिः उद्घोषिता।
2. परिवारे एकसदस्यस्य दुःखं सर्वेषां दुःखं भवति, तद्वत् सुखमपि।
3. तथैव भूमण्डले प्रत्येकं राष्ट्रं, राष्ट्रस्य प्रत्येकं जनः अस्माकं परिवारजनोऽस्ति।
4. विश्वस्य स्रष्टा एकैवास्ति, वयं सर्वे तस्य पुत्राः स्मः।
5. यत्र विश्वम् एकनीडं भवति, एवम्भूतस्य परिकल्पनस्य आनयनं मनस्सु भवेत्।
6. भारतीयेतिहासः दर्शयति यदत्र परविजयाकांक्षा कदापि नासीत्।
7. विश्वशान्त्यर्थं विद्वेषं, कलहं विरोधञ्च विहाय सद्भावः वर्धयितव्यः।
8. सर्वेषां मङ्गलमस्माकं मूलभावना भवेत्।
9. विश्वधर्मभावनया जगदिदं स्वर्णवद् भास्वरं भविष्यति।
10. अभेददृष्ट्या 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' इत्येषा प्रार्थना करणीया।

8. राष्ट्रिया एकता

1. अस्माकं भारतराष्ट्रं विशालं वर्तते।
2. अत्र विविधधर्मभाषावलम्बिनां निवासोऽस्ति।
3. विविधाः मानवजातयः स्नेहमये वातावरणेऽत्र वसन्ति।
4. भारतस्य भौगोलिकसीमा राष्ट्रम् एकसूत्रे बध्नाति।
5. संस्कृतिदृष्ट्यापि भारतराष्ट्रं सर्वदा अखण्डमस्ति।
6. भारतराष्ट्रस्य पर्वाणि उत्सवाश्च एकतां सूचयन्ति।
7. तीर्थस्थानानि मन्दिराणि च सर्वत्र सर्वैः आद्रियन्ते।
8. भाषादृष्ट्यापि संस्कृतभाषा सर्वासां भाषाणां जननीति आद्रियते।
9. 'वयं भारतीयाः' अतएव राष्ट्रस्याखण्डता अस्माभिरेव रक्षणीया।
10. अखण्डं राष्ट्रम् एकतासूत्रे बद्धं सत् समुन्नतिं गमिष्यति अत्र नास्ति सन्देहः।

9. अनुशासनम्

1. प्रकृतिनियमाः अनुशासनबद्धाः दृश्यन्ते।
2. सूर्यः समयेन आयाति याति च, पर्जन्यः समयेन वर्षति।
3. सूर्यस्यास्तङ्गते चन्द्रः आयाति, रात्रिः भवति, पुनः प्रातः प्रकाशः जायते।
4. वस्तुतः निर्धारितानां नियमानां पालनमेवानुशासनम् अस्ति।
5. जीवनस्य प्रत्येकपदे अनुशासनस्य महत्त्वं वर्तते।
6. बाल्यकाले मातृपितॄणामनुशासनं तदनन्तरं गुरोरनुशासनं भवत्येव।
7. अनुशासितो जनः निरन्तरं समुन्नतिं गच्छति।
8. अनुशासनाभावे जीवनं व्यवस्थितं न भवति।
9. सेनायाः अनुशासनमस्य उत्कृष्टमुदाहरणं वर्तते।
10. दीक्षान्तसमारोहे 'सत्यं वद, धर्मं चर' इति सर्वोत्तमम् अनुशासनं उपदिश्यते।

10. राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी

1. विश्ववन्द्योऽयं महात्मा गान्धिमहोदयः 'राष्ट्रपिता' उच्यते।
2. सः गुर्जरप्रदेशे पोरबन्दरनगरे 2 अक्टूबर, 1869 ईसवीये अजायत।
3. तस्य पितृवर्यः 'करमचन्दगान्धी' जननी 'पुतलीबाई' आस्ताम्।
4. अस्य प्राथमिकी शिक्षा स्वनगरे उच्चशिक्षा च इंग्लैण्डदेशे अभवत्।
5. विधिशिक्षां समाप्य सः प्राड्विवाककर्म कर्तुं प्रारभत।

6. द्वादशवर्षीयया कस्तूरबानाम्न्या बालिकया सह अस्य विवाहः सञ्जातः।
7. भारतीयानां पराधीनां दशां दृष्ट्वा दयार्द्रः सः सत्याग्रहान्दोलनं प्रारभत।
8. तस्य प्रयासेन 15 अगस्त, 1947 ईस्वीये भारतं स्वतन्त्रम् उद्घोषितम्।
9. 30 जनवरी, 1948 ईसवीये सायंकाले षड्वादने गोलिकाघातेन सः प्राणान् तत्याज।
10. वयं सर्वे हस्तौ संयोज्य तस्मै श्रद्धाञ्जलिं समर्पयेम।

11. संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

1. भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती।
2. सम् उपसर्गपूर्वकं 'कृ' धातोः संस्कृतशब्दः निष्पन्नः भवति।
3. व्याकरणादिदोषैः रहिता भाषा सुसंस्कारिता संस्कृतम् इति प्रसिध्यति।
4. संस्कृतभाषा सर्वासां भाषाणां जन्मदात्री अस्ति।
5. भारतदेशस्य प्राचीनसाहित्यं संस्कृते निबद्धमस्ति।
6. विश्वस्य प्राचीनतमाः ग्रन्थाः 'वेदाः' अस्यामेव भाषायां लिखिताः सन्ति।
7. षोडशसंस्काराणामेषा भाषा राष्ट्रम् एकतासूत्रे बध्नाति।
8. रामायणमहाभारतं कालिदासादीनां कवीनाञ्च साहित्यमस्यामेव भाषायां राजते।
9. अस्याः वर्णमाला वैज्ञानिकी, वर्णानां स्थानं, निश्चितं वर्तते।
10. विपुलशब्दभण्डारेण समृद्धा संस्कृतभाषा पुराकाले व्यवहारभाषा आसीत् साम्प्रतमपि जनाः परस्परं व्यवहरन्ति।

12. भारतीयः कृषकः

1. भारतभूमौ कृषिकार्यकर्ता 'कृषकः' इति शब्देन आहूयते।
2. भारतदेशः कृषिप्रधानदेशः अस्ति।
3. वयं कृषिकर्मणैव आवर्षं खाद्यान्नं प्राप्नुमः।
4. कृषकः आतपे शीते वर्षाकाले च परिश्रमेण अन्नादिकमुपजनयति।
5. कृषकः परिश्रमशीलः सरलस्वभावसम्पन्नः भवति।
6. सः सुखशान्तिसन्तोषेण च जीवनं यापयति।
7. सः मितव्ययी अपि भवति।
8. कृषकः पशुसाहाय्येन कृषिकार्यं सम्पादयति।
9. कृषकः सम्प्रति नूतनकृषियन्त्रैरपि कृषिं करोति।
10. धन्यवादार्हाः भारतीयाः कृषकाः, येऽस्माकमुदरं पूरयन्ति, बुभुक्षां च शाम्यन्ति।

13. हिमालयः

1. उत्तरदिशि 'हिमालयः' इति नामधेयो नगाधिराजः शोभते।
2. हिमेन आच्छादितानि अस्य शिखराणि राष्ट्रस्य प्रहरी इव, तिष्ठन्ति।
3. हिमालयः विश्वेषु पर्वतेषु उच्चतमः अतः 'पर्वतराजः' इति नाम्ना प्रसिद्धः।
4. हिमालयस्य गिरिगह्वरेषु सघनाच्छादितानि वनानि सन्ति।
5. हिमालयस्य वनानि ओषधिवृक्षैः आच्छादितानि सन्ति।
6. हिमालयस्य कन्दरासु ऋषिमुनयः तपस्यारताः दृश्यन्ते।
7. हिमालयस्य उच्चतमः शिखरः 'एवरेस्ट' इति नाम्ना ज्ञायते।
8. हिमालयस्य 'कैलाश' इति शिखरः उच्चतया अजेयः अस्ति।
9. हिमालयस्य कन्दराभ्यः गङगादयः अनेकाः नद्यः प्रभवन्ति।
10. हिमालयः 'मानसून' वातमवरुध्य पर्जन्यवर्षणे सहायतां ददाति।

14. तीर्थराज़प्रयागः

1. प्रकृष्टः यागः सृष्टिकाले अत्रायोजितः ब्रह्मणा अतोऽयं 'प्रयागः' इति कथ्यते।
2. प्रयागक्षेत्रे गङ्गायमुनासरस्वतीनद्यः सङ्गच्छन्ते।
3. नदीनां सङ्गमनेन प्रयागः पुण्यतमं क्षेत्रमिति जनाः जानन्ति।
4. ऐलसम्राज्ये नगरीयं 'इलावर्त' नाम्ना आसीत् प्राचीनकाले।
5. मुगलसम्राट् अकबरः अस्य नाम 'इलाहाबाद' इति परिवर्तितवान्।
6. प्रयागे प्रतिवर्षं माघमासे 'माघमेला' सङ्गमतटे आयोजितं भवति।
7. द्वादशवर्षानन्तरं विशालकुम्भमेलापकः अत्रैव आयोज्यते।
8. कुम्भमेलापके दूरदेशात् यात्रिणः आगत्य स्नात्वा आत्मानं पुनन्ति।
9. प्रयागस्य भरद्वाजाश्रमः विश्वविद्यालयश्च विद्याकेन्द्रे स्तः।
10. प्रयागजाः अनेके महापुरुषाः प्रयागगौरवं वर्धितवन्तः वर्धयन्ति च।
11. अष्टादशोत्तरद्विसहस्त्रतमे वर्षे अक्टूबरमासस्य षोडशदिनाङ्के प्रदेशस्य मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथः पुनः 'इलाहाबाद' इत्यस्य नाम प्रयागराजं परिवर्तिवान्।

15. वनसम्पत्

1. सघनवृक्षाणां समूहः 'वनम्' इति वयं जानीमः।
2. मानवजीवने वनानि महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्वहन्ति।
3. वनवृक्षेभ्यः वयं फलानि, पुष्पाणि, काष्ठं च प्राप्नुमः।
4. वनवृक्षेभ्यः वयं प्राणवायुं (ऑक्सीज़न) गृहीत्वा जीवनं धारयामः।
5. सघनवनेषु शशहरिणहस्तिश्रृगालसिंहादयः विविधाः पशवः वसन्ति।

6. वनवृक्षेषु विभिन्नजातीयाः पक्षिणः मधुरस्वरेण कूजन्ति।
7. वनोद्भववृक्षेभ्यः वैद्यजनाः ओषधीः संगृह्णन्ति।
8. सघनवनपंक्तिषु प्राचीनकालादेव ऋषयः तपः तपन्ति।
9. सम्प्रति जनसङ्ख्याबाहुल्येन वनवृक्षाणां कर्तनम् अधिकं जातम्।
10. हरितवृक्षाणां कर्तनं पापाय भवति, इति वृद्धजनाः वदन्ति।

16. पर्यावरणम्

1. जीवनं परितः प्राकृतिकावरणं पर्यावरणमिति कथ्यते।
2. मृत्तिका–जल–वायु–वनस्पति–खग–कीट–पशवः पर्यावरणस्य घटकाः सन्ति।
3. मानवजीवनाय शुद्धपर्यावरणस्य अतीव महत्त्वं वर्तते।
4. शुद्धपर्यावरणेन प्राणवायुं गृहीत्वा मानवः स्वस्थः भवति।
5. सम्प्रति नूतनोद्योगानां विस्तारेण पर्यावरणम् असन्तुलितमस्ति।
6. कलयन्त्राणां दूषितं जलं नदीषु प्रवहत् जलं प्रदूषयति।
7. उद्योगेभ्यः निसृतो धूमः वायुं प्रदूषयति।
8. काररेलवायुयानादीनां वाहनानां तैलादिकणाः भूमण्डले वातावरणं प्रदूषयन्ति।
9. प्रदूषणेन विभिन्नानां रोगाणाम् आक्रमणं मानवोपरि दृश्यते।
10. प्रदूषणं शोधयितुं सर्वकारैः निरन्तरं प्रयत्यते।

17. परिवारकल्याणम्

1. प्राचीनकालादेव सभ्यदेशे भारते 'परिवारसंस्था' विद्यते।
2. एकस्मिन् परिवारे ज्येष्ठाः वयस्काः प्रौढाः बालकाः शिशवः सर्वे भवन्ति।
3. कनिष्ठसदस्याः ज्येष्ठैः स्नेहं प्राप्य तेभ्यः आदरं ददति।
4. एकस्य सदस्यस्य सुखे दुःखे वा प्रत्येकं सुखं चिन्तां वा अनुभवति।
5. पर्वसु उत्सवेषु संस्कारेषु च मङ्गलायोजनं सर्वेषामानन्दाय भवति।
6. सम्प्रति संयुक्तपरिवारः समाप्तप्रायः दृश्यते।
7. नगरेषु एकलपरिवाराः प्रचलने सन्ति।
8. वर्धमाना जनसंख्यापि परिवारकल्याणं प्रदूषयति।
9. खाद्यान्नजीविकासमस्या विवाहं विच्छेदयन्ती परिवारं त्रोटयति।
10. परिवारकल्याणायैव सर्वकारेण परिवारनियोजनं सञ्चाल्यते।

18. राष्ट्रियपक्षिमयूरः

1. सौन्दर्येण परिपूरितः खगानां राजा मयूरः राष्ट्रियः पक्षी अस्ति।
2. चन्द्रकवलयचित्रितम् अस्य पिच्छजालमतीव मनोहरं प्रतीयते।
3. अस्य नीलग्रीवा शिरसि मुकुटम् इव पक्षाश्च चित्तमाकर्षयतः।
4. वर्षर्तौ पिच्छं प्रसार्यास्य नर्तनम् अलौकिकं दृश्यं सर्जयति।
5. मयूरस्य भोजनं कीटाः विषधराश्च सन्ति।
6. मयूरस्य वाणी 'केका' ध्वनिः इति कथ्यते।
7. श्वेतरक्तनीलवर्णानां मयूराणां विभिन्ना जातयः समग्रदेशे मिलन्ति।
8. सघनवृक्षेषु मयूराः परिवारैः सह निवसन्ति।
9. जनसंख्याकोलाहलेन मयूराणां सङ्ख्या निरन्तरं क्षीयमाणा अस्ति।
10. भगवान् श्रीकृष्णः मयूरस्य सुन्दरं पक्षं स्वकिरीटमिव धरति।

19. यौतुकम्

1. पिता कौमारे पुत्रीम् अतिस्नेहेन पालयति।
2. विवाहकाले सः स्वसामर्थ्यानुसारं यौतुकं सहर्षं ददाति।
3. पितृपक्षात् स्वेच्छया दत्ताः उपहाराः वस्तूनि धनञ्च यौतुकमिति मन्यते।
4. अधुना भौतिकचाकचिक्येण प्रभाविताः युवकाः अधिकाधिकं यौतुकमिच्छन्ति।
5. यदि वरपक्षाय इच्छानुसारं यौतुकं न मिलति तदा तु कन्यायाः महाननर्थः भवति।
6. आजीवनं पीडिता कन्या यौतुकस्य बलिवेदीम् आरोहति।
7. विकृतयौतुकप्रथायाः एकमात्रविकल्पः स्त्रीशिक्षा प्रतीयते।
8. शिक्षिता नारी यौतुकयाचकेभ्यः कठोरनिर्णयं स्वीकरिष्यति।
9. प्रशासनमपि तस्याः साहाय्यार्थमुद्यतं भविष्यति।
10. यौतुकयाचनं भिक्षायाचनमिव इति समाजेऽपि सन्देशः प्रसारणीयः।

20. दूरदर्शनम्

1. आधुनिकयुगे निरन्तरं नूतनाविष्काराणि क्रियन्ते।
2. दूरदर्शनं मानवजीवने उपहार इव यन्त्रं विद्यते।
3. 1915 ईसवीये ब्रिटेनदेशस्थः 'जान एल बेयर्ड' दूरदर्शनं निर्मितवान्।
4. 1972 ईसवीये देहली-कोलकाता-चेन्नई-मुम्बई-पुणेनगरेषु दूरदर्शनकेन्द्राणि स्थापितानि।
5. दृश्यमाध्यमेन दूरदर्शनं मनोरञ्जनस्य उत्तमं साधनमस्ति।
6. केन्द्रेषु चित्रं स्वीकृत्य सर्वत्र विद्युत्तरङ्गः प्रेष्यते।
7. प्रथमं तु श्वेतकृष्णवर्णचित्राणि परमधुना विविधवर्णचित्राणि अस्मान् मनोरञ्जयन्ति।

8. दूरदर्शने गृहे उपविश्य विविधकार्यक्रमान् दृष्ट्वा वयमानन्दमनुभवामः।
9. दूरदर्शने धारावाहिकाः, गीतानि, चलचित्राणि कृषिदर्शनादिकार्यक्रमाः प्रसार्यन्ते।
10. नेत्रदृष्टिः क्षीणतां याति अतः अधिकं समयं यावद् दूरदर्शनं न द्रष्टव्यम्।

21. क्रिकेटक्रीडनम्

1. क्रिकेटक्रीडनम् आंग्लप्रशासकानां क्रीडनमस्ति।
2. बहुकालानन्तरं क्रीडनमिदं भारतीयेषु प्रियम् अभवत्।
3. 1878 ईसवीये 'प्रसीडेन्सी कॉलेज क्रिकेट क्लब' मध्ये प्रथमां प्रतियोगितामायोजिवान्।
4. श्वेतवर्णवेशं धृत्वा पक्षद्वये एकादश-एकादश क्रीडकाः क्रीडन्ति।
5. टेस्टक्रिकेटप्रतियोगिता पञ्चदिनात्मिका भवति स्म।
6. एकपक्षतः एकः क्रीडकः कन्दुकं क्षिपति।
7. अपरपक्षस्य एकः क्रीडकः काष्ठदण्डस्याघातेन तं कन्दुकं दूरं क्षिपति तथैवापरपक्षोऽपि करोति।
8. धावन् (रन) सङ्ख्यानुसारेण अधिकधावनसंख्यावान् पक्षः विजयी उद्घोषितः भवति।
9. सम्प्रति समयाभावेन एकदिनात्मकं क्रीडनं देशयोः मध्ये चलति।
10. 1983 ईसवीये कपिलदेवमहोदयस्य नायकत्वे विश्वकपप्रतियोगितायाम् अस्माकं भारदेशः प्रथमवारं विजयी उद्घोषितः।

22. जनसङ्ख्या

1. भारते जनसङ्ख्या विकराला जाता।
2. भारते निरन्तरं जनसङ्ख्यावर्धनेन खाद्यान्नस्य सङ्कटः वर्धमानोऽस्ति
3. भारते भूक्षेत्रसीमितं जनसङ्ख्या असन्तुलितास्ति।
4. सीमिते भूक्षेत्रे अन्नोत्पादनसमस्या, जीविकासमस्या त्रासयतः।
5. सीमावर्तितदेशेभ्योऽपि जनाः अनधिकारं प्रविश्य जनसंख्यां वर्धयन्ति।
6. जनसङ्ख्यावर्धनेन प्राकृतिकसंसाधनानां दोहनं भवति।
7. क्रुद्धा प्रकृतिः भूकम्पजलप्लावनमित्यादिकम् उपद्रवं करोति।
8. परिवारनियोजनस्य कठोरतया पालनमेकमात्रमुपायः अस्ति।
9. 'सीमितः परिवारः सुखी परिवारः' ईदृशी विचारधारा समाजस्य भवेत्।
10. जनसङ्ख्यानियन्त्रणे राष्ट्रस्य प्रत्येकं नागरिकः सहयोगं दद्यात्।

23. यातायातसुरक्षा

1. मनुष्यः स्वाभावेन भ्रमणशीलः अस्ति।
2. प्राचीनकालादेव सः एकस्थानात् अपरस्थानं गन्तुमिच्छति।
3. गमनाय यातायातस्य साधनानि आवश्यकानि सन्ति।
4. यातायातसाधनैः अल्पे समये न्यूने परिश्रमे अधिका यात्रा सम्भाव्यते।
5. यातायाताय 'चक्र' निर्माणम् अस्यां दिशायां महत्त्वपूर्णमासीत्।
6. सम्प्रति शकटयानम्, अश्वयानम्, कारयानं रेलयानादिकं चक्रेणैव धावन्ति।
7. यातायातयानैः देशाटनमपि सुलभं जातम्।
8. यातायातयानानां सुविधया स्थानकृतं दूरत्वं तु समाप्तप्रायमस्ति।
9. रेलयानेन वेगेन दूरदेशं गच्छामः, नौकया समुद्रं तरामः, वायुयानेन स्वच्छन्दं आकाशे विचरामः।
10. अनुभूयते यद् 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इत्युक्तिः सम्प्रति सार्थिका अभवत्।

24. स्वास्थ्य-शिक्षा

1. स्वास्थ्यम् एव वास्तविकं धनमिति आंग्लोक्तिः।
2. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनमिति भारतीयोक्तिः।
3. स्वस्थे शरीरे बलमुत्साहस्फूर्तिशक्तिलघुतादयः भवन्ति।
4. स्वस्थे शरीरे उन्नते मस्तिष्के हीनविचाराः न आयान्ति।
5. स्वस्थशरीराय समुचिताहारविहारव्यायामाश्च आवश्यकाः सन्ति।
6. आरोग्यार्थं प्रतिदिनं शरीरस्य अङ्गानां सञ्चालनं व्यायामः भवति।
7. नियमतः व्यायामाचरणेन बहवः लाभाः भवन्ति।
8. स्वस्थशरीराय धावनकूर्दनतरणभ्रमणादयः गतिविधयो लाभकारिणः सन्ति।
9. प्रत्येकं नगरे ग्रामे व्यायामशालायां मल्लयुद्धस्य अन्यासां च क्रीडानां व्यवस्था भवितव्या।
10. विद्यालयेषु छात्रेभ्यः नियमितसामूहिकव्यायामशिक्षा स्वास्थ्यलाभाय दातव्या।

(11) संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग

1. हिन्दी के समान संस्कृत भाषा में भी विभिन्न प्रकार के पदों का प्रयोग वाक्यों में किया जाता है। संज्ञा पद, सर्वनाम पद, विशेषण पद, क्रियापद, अव्यय पद इत्यादि।

1. संज्ञा शब्दों का वाक्य में प्रयोग

	पद	**वाक्य-प्रयोग**
1.	राजा	राजा धनं ददाति।
2.	शिक्षकः	शिक्षकः पाठयति।
3.	गङ्गा	गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।
4.	चौरः	चौरः धनं हरति।
5.	अर्कः	अर्कः उदेति।
6.	बालकाः	बालकाः नृत्यन्ति।
7.	पत्राणि	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
8.	जलम्	जलं वर्षति।
9.	भोजनम्	बालकः भोजनं कृत्वा आगच्छति।
10.	लेखकः	लेखकः ग्रन्थं लिखति।

2. सर्वनाम शब्दों का वाक्यों में प्रयोग

	शब्द (पद)	**वाक्य-प्रयोग**
1.	तत्	तत् फलं मधुरम् अस्ति।
2.	युष्माकम्	अहं युष्माकं लेखनीं स्वीकरोमि।
3.	सर्वाणि	सर्वाणि पत्राणि पतन्ति।
4.	केन	केन सह लता गच्छति ?
5.	मम	मम पुस्तकं पठ।
6.	भवान्	भवान् गृहं गच्छति।
7.	सा	सा कदा आगच्छति ?
8.	अस्माकम्	अस्माकं गृहं प्रयागे अस्ति।
9.	तौ	तौ शुकौ वसतः।
10.	मम	मम नाम दिनेशः

3. विशेषण शब्दों का प्रयोग

शब्द (पद)	वाक्य-प्रयोग
1. मधुरम्	जलं मधुरं वर्तते।
2. सुन्दरी	सीमा सुन्दरी अस्ति।
3. बुद्धिमती	बुद्धिमती बालिका पठति।
4. सुन्दरम्	सुन्दरं पुष्पम् अस्ति।
5. मनोहरः	अयं पद्यांशः मनोहरः अस्ति।
6. ज्येष्ठः	एषः ज्येष्ठः भ्राता अस्ति।
7. उष्णम्	उष्णं दुग्धं न पिबामि।
8. निर्मलम्	गङ्गायाः निर्मलं जलम् अस्ति।
9. लघु	लघुः पुत्रः आगच्छति।
10. चतुरः	चतुरः बालकः अस्ति।

4. अव्यय-पदों (शब्दों) का प्रयोग

शब्द (पद)	वाक्य-प्रयोग
1. सर्वत्र	ईश्वरः सर्वत्र अस्ति।
2. प्रातः	प्रातः काले सूर्यः उदेति।
3. दिवा	मोहनः दिवा न भुङ्क्ते।
4. उपरि	संसारस्य उपरि द्युलोकः अस्ति।
5. यदा तदा	यदा सः आगच्छति तदा अहं गच्छामि।
6. श्वः	अहं श्वः विद्यालयं गच्छामि।
7. कथम्	अहम् अद्य कथं गमिष्यामि।
8. यथाशक्ति	रामः यथाशक्ति सत्यं वदति।
9. स्वस्ति	स्वस्ति भवत्यै।
10. अधुना	वर्षा अधुना न भवति।
11. अन्योऽन्यम्	मूढाः अन्योऽन्यं चिन्तनं न कुर्वन्ति।
12. सह	पिता पुत्रेण सह गृहं गच्छति।
13. एकदा	एकदा मम गृहं मित्रम् आगच्छत्।
14. इह	इह लोके जनाः निवसन्ति।
15. परितः	मां परितः पर्यावरणम् अस्ति।

संख्यावाची शब्दों का प्रयोग

शब्द (पद)	वाक्य-प्रयोग
1. एकम्	एकं पत्रम् अस्ति।
2. द्वौ	द्वौ बालकौ विद्यालयं गच्छतः।
3. चत्वारः	चत्वारः पुरुषाः शनैः शनैः आगच्छन्ति।
4. चत्वारि	ते चत्वारि वस्त्राणि नयन्ति।
5. अष्टौ	अष्टौ पुरुषाः धर्मम् आचरन्ति।
6. शतम्	सः शतं वर्षाणि जीवतु।
7. द्वाभ्याम्	द्वाभ्यां वृक्षाभ्यां पत्राणि पतन्ति।
8. एका	एका बालिका किमपि न शृणोति।
9. त्रयः	त्रयः बालकाः किमपि न शृण्वन्ति।
10. एकः	एकः पुत्रः धर्मम् आचरति।
11. त्रिषु	त्रिषु दिवसेषु सः पारायणं करोति।
12. त्रयः	त्रयः भ्रातरः पितुः आदेशं स्वीकुर्वन्ति।

क्रिया का प्रयोग

शब्द (पद)	वाक्य-प्रयोग
1. गच्छति	बालकः गच्छति।
2. पठति	भवान् पठति।
3. लिखति	सीता न लिखति।
4. कुर्वन्ति	सर्वे नित्यकर्मं कुर्वन्ति।
5. पश्य	भवान् उत्सुकं पश्यतु।
6. रोचते	मह्यं मोदकं रोचते।
7. क्रुध्यति	रावणः रामाय क्रुध्यति।
8. पतन्ति	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
9. क्रीडति	बालकः कन्दुकेन क्रीडति।
10. हन्ति	रामः बाणेन रावणं हन्ति।
11. रक्षति	धर्मो रक्षति रक्षितः।
12. उद्गच्छति	गङ्गा हिमालायाद् उद्गच्छति।

प्रत्यय-प्रयोग

शब्द (पद)	वाक्य-प्रयोग
1. पीत्वा	सः चायं पीत्वा आगच्छति।
2. हसन्	हसन् बालकः पठति।
3. गतवान्	रामः वनं गतवान्।
4. पातुम्	सः जलं पातुं गच्छति।
5. प्रष्टुम्	शिक्षकः प्रश्नं प्रष्टुम् आगच्छति।
6. आदाय	चौराः धनम् आदाय पलायन्ते।
7. गन्तव्यम्	त्वया गृहं गन्तव्यम्।
8. लब्ध्वा	सः धनं लब्ध्वा गच्छति।
9. आलोक्य	सा पुण्यम् आलोक्य गतवती।
10. दानीयम्	रामेण पुस्तकं दानीयम्।
11. श्रुत्वा	सः कथां श्रुत्वा वदति।
12. विहाय	जलं विहाय न संसारः।
13. लिखित्वा	पत्रं लिखित्वा विद्यालयं गतवान्।
14. दानीयः	दानीयो विप्रः।
15. प्रहर्तुम्	निरपराधे बाणं प्रहर्तुं नोचितः।

अभ्यासकार्यम्

1. निम्नलिखित पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

बालकः	सः	मधुरम्	एकदा	अपठत्
वृक्षे	वयम्	मनोहराः	सायम्	गच्छामि
काकः	मया	उत्तमः	नमः	लिखेत्
उद्याने	भवतः	निर्मलम्	अधुना	रोचते
नद्यः	सा	क्रन्दनम्	हयः	रक्षति
गणेशाय	यूयम्	उष्णम्	कदा	पतन्ति
वृक्षात्	वयम्	शीतलता	यथा	दृष्ट्वा
कृषकः	अस्माकम्	सदा	अद्यैव	पीत्वा
सिंहात्	भवतः	सर्वत्र	त्रयः	दातुम्
रामस्य	तस्य	एवम्	शतम्	आगच्छ

■